राधास्वामी सहाय

प्रेम पत्र राधास्वामी

भाग ४

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

राधास्वामी गाय कर जनम सुफल कर ले
यही नाम निज नाम है मन अपने धर ले

प्रेम पत्र राधास्वामी

चौथा भाग

हित उपदेश

जिसको

परम सन्त सतगुरु हुज़ूर महाराज ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

आठवीं बार) सन् 2017 (1000 प्रतियाँ

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट,
स्वामीबाग़, आगरा 282005

All rights reserved

कोई साहब बिना इजाज़त इस पोथी को नहीं छाप सकते

तीसरी बार	सन् 1956	1000 प्रतियाँ
चौथी बार	सन् 1974	1000 प्रतियाँ
पाँचवीं बार	सन् 1983	1000 प्रतियाँ
छटी बार	सन् 1992	3000 प्रतियाँ
सातवीं बार	सन् 2004	3000 प्रतियाँ

आठवीं बार)	सन् 2017	(1000 प्रतियाँ

40 रुपये

संगणक लेखक :
कोमल डेस्क टॉप प्रिंटिंग,
रामकृष्ण नगर, तुमसर 441912

मुद्रक :
इमेजिनेशन डिज़ाइंस, 509/B एटलान्टिस हाईट्स
साराभाई मेन रोड, वडीवाडी, वडोदरा 390017
फोन 0265-2337808 मो 9898707808

राधास्वामी मौज से प्रेमपत्र जारी।
दृढ़ विश्वास होय चरन में और प्रीत गाढ़ी।।
सुमिरन ध्यान और भजन में नित नया आनंद पाय।
सतसंगी सब उमँग २ राधास्वामी महिमा गाय।।

प्रेम पत्र चौथा भाग जो कि पहली मई सन् १८९६ ईसवी से ३० अप्रैल सन् १८९७ तक समाप्त हुआ उसके बचनों का

सूचीपत्र

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
१	सुरत और मन नौ द्वारों के वसीले से जो पिंड में हैं, इस संसार में बर्त रहे हैं और यहाँ के भोगों का तुच्छ रस लेते हैं। उनको चाहिये कि दसवें द्वार की तरफ़ भी (जो घट में है) झाँक कर ऊँचे देश का विशेष आनन्द लेवें।। -- --	२
२	चैतन्य को जड़ पदार्थों से मेल कम कर के विशेष चैतन्य और फिर महा विशेष चैतन्य से मिलने का जतन वास्ते अपनी तरक़्क़ी और सुख और आराम के ज़रूर करना चाहिये।। --	५
३	अपने से ज़्यादा बल्कि सब से ज़्यादा जो ताक़त वाला और समर्थ होवे यानी कुल मालिक, उसकी सरन लेकर और उसके निज भेदी जो संत सतगुरु हैं, उनसे मिल कर बैरियों को जो सबल और ज़बरदस्त हैं, जीत कर निज घर में जाना चाहिये, तब अपना काम पूरा बनेगा।। -- --	९
४	सुरत अंस को जो सत्त सिंध की बूँद है और इस संसार में देह और भोगों के साथ जो जड़ और असत्य हैं, भूल और भरम करके बँध गई है, उसके निज भण्डार में पहुँचाने का जतन हर एक शख़्स को चाहे औरत होवे या मर्द, करना चाहिये, नहीं तो जन्म मरन का कष्ट और देह के संग दुख सुख हमेशा सहना पड़ेगा।। -- --	१४
५	सुजाती यानी उत्तम को कुजाती यानी नीच से हट कर अपने हम-जौहर यानी महा उत्तम से मिलना चाहिये।। --	१९
६	कुटुम्बी मौत के वक़्त मालिक के नाम की याद दिलाते हैं, लेकिन जब कि उमर भर धन और स्त्री वग़ैरा में फँसे रहे, तो उस वक़्त	

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	मालिक का नाम कैसे याद आ सकता है, इस वास्ते जीते जी मालिक का नाम लेना और उसके चरनों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाना मुनासिब है।। -- --	२४
७	दुनिया के सब आसरे जिनको तुमने दृढ़ करके पकड़ा है, नाशमान और झूठे हैं। इस वास्ते सच्चे और पूरे और सर्व समर्थ का आसरा लेना चाहिये कि जो हर वक़्त अंग संग रह कर सहायता और मदद कर सकता है और दुनिया के आसरे अक्सर वक़्त ज़रूरत के दग़ा देने वाले हैं।। -- --	२९
८	संतों के दया पात्र जीव, और जीवों के मुवाफ़िक़ ब्रह्म और माया के देश में पैदा होकर परवरिश पाते हैं, और जब संत प्रकट होते हैं तब मौज से उन जीवों को अपने सन्मुख खींच कर बचन सुनाते और निज घर का भेद और रास्ता और चलने की जुगत समझा कर और मुनासिब करनी करा कर उनको निज धाम में पहुँचाते हैं।। -- --	३४
९	दुनिया में जहाँ जिसका प्यार है, वहीं उसका चित्त जाता है और चित्त के साथ वह आप मौजूद है। जो दुनिया से छूटना चाहे, उसको चाहिये कि अपने चित्त को प्यार के साथ कुल मालिक राधास्वामी के चरनों में बारम्बार जोड़े तो जितनी देर ऐसा अभ्यास करेगा, उतनी देर को उसका मालिक के चरनों में संग रहेगा और फिर इस संग को आहिस्ते आहिस्ते बढ़ाते जाना चाहिये।। -- --	४०
१०	जीव दुनिया में सिवाय कुटुम्ब परिवार के और बहुत से लोगों से जिनसे उनका कुछ कारज निकलता है और बहुत सी चीज़ों से जो कभी कभी उनके कुछ काम आती हैं, प्रीति करते हैं और अपना मन उनमें थोड़ा बहुत बाँधते हैं। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम मालूम होता है कि वह मालिक-कुल के चरनों में भी जो कि उनके घट में मौजूद है और सदा उनके अंग संग रहता है, थोड़ी बहुत प्रीति, उसका भेद भाव लेकर, करें जिससे सख़्त तकलीफ़ और भारी दुख और क्लेश दूर या हलके हो जावें और ख़ास कर मौत के वक़्त उनकी सहायता होवे और मदद मिले।।--	४६

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
११	कुल मालिक का असल में प्रेम और आनंद और सत्त और चैतन्य स्वरूप है और ऊँचे से ऊँचे देश में उसका निज धाम है और वह सदा निरबंध और हमेशा एक रस क़ायम है, इस वास्ते सुरत चैतन्य को जो उसकी अंस है, अपने अंसी के मुवाफ़िक़ होने का जतन करना चाहिये यानी देह और दुनिया के बंधन तोड़ कर निरबंध और सत-चित-आनंद और प्रेम स्वरूप से मिलना चाहिये।। -- --	५१
१२	सुरत चैतन्य को जो निज सूरज महा चैतन्य की रोशन किरन है, माया यानी अन्धकार के देश को छोड़ कर अपने महा प्रकाश स्वरूप भंडार में पहुँचना चाहिये और रास्ते में जहाँ तक अन्धेरा और उजेला मिला हुआ है, ठहरना नहीं चाहिये।। --	५७
१३	दुनिया में चार भारी दुख सब पर आते हैं यानी रोग सोग मौत और कामना का पूरा न होना। इनका पूरा इलाज आदमी के हाथ में नहीं है। लेकिन राधास्वामी मत के अभ्यास की कमाई से यह चारों दुख हलके बल्कि दूर हो सकते हैं। इस वास्ते इस अभ्यास की कमाई हर एक को थोड़ी बहुत करना वास्ते अपनी बेहतरी के ज़रूर और मुनासिब मालूम होता है। -- --	६२
१४	सुरत चैतन्य ऊँचे और गहरे देश की बासी है और अब यहाँ मलीन माया के देश में तन मन और इंद्रियों के साथ फँस गई है सो हर एक आदमी को लाज़िम है कि उसके छुड़ाने का जतन दुरुस्ती के साथ करे।। -- --	६७
१५	दुनिया में सब लोग अपने और कुटुम्ब परिवार और प्यारों के तन और मन के आराम के वास्ते अनेक तरह के जतन बहुत मेहनत के साथ उमर भर करते हैं और उस का फ़ायदा सिर्फ़ इस क़दर होता है कि थोड़े दिन के लिये या हद ज़िंदगी भर के वास्ते थोड़ा या बहुत आराम मिल जाता है लेकिन बाद छोड़ने इस देह और देश और कुटुम्ब परिवार के, कहाँ जाना है और रहना होगा और वहाँ सुख मिलेगा या दुख, उसकी ख़बर बहुत कम है और इसके वास्ते जतन भी कम करते हैं। इस वास्ते सब को मुनासिब और लाज़िम है कि वास्ते हमेशा के आराम और सुख के भेदी और	

प्रकार　　सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन　　पृष्ठ

बा-ख़बर लोगों से हाल दरियाफ़्त करके थोड़ा बहुत जतन ज़रूर करें तो इस ज़िंदगी में उनको उस अमर सुख और आनन्द की जो संतों की जुगत कमाने से हासिल होना मुमकिन है, थोड़ी बहुत ख़बर पड़ जावेगी और उसकी कुछ परीक्षा और जाँच करके बहुत ख़ुशी हासिल होगी।। -- -- ७१

१६ तीन क़िस्म की शक्ति हर एक आदमी में मौजूद हैं। इनमें से एक या दो अक्सर लोग जगाते हैं पर तीसरी सुरत यानी रूहानी शक्ति का थोड़ा बहुत यक़ीन करके जगाना हर एक आदमी पर वास्ते उसके जीव के कल्यान के मुनासिब और ज़रूर है।। -- -- ७६

१७ तीन बड़ी इन्द्रियों के रस में जीव दुनिया में फँसा हुआ है। इन तीनों को विशेष और फिर महा रस अंतर में मिल सकता है जो सुरत शब्द का अभ्यास किया जावे। और यहाँ के सब रस तुच्छ और नाशमान हैं और बा-वजूद मेहनत और मशक़्क़त और धन ख़र्च करने के पूरे पूरे नहीं मिल सकते।। -- -- ८१

१८ सैर और तमाशे का शौक़ सब के दिल में रहता है और उसके वास्ते तन, मन, धन ख़ुशी से ख़र्च करते हैं। अन्तर में अभ्यास करने से बहुत भारी सैर क़ुदरत की नज़र आ सकती है। इस वास्ते उस तरफ़ भी सब को थोड़ी बहुत तवज्जह करना ज़रूर है।। -- -- ८६

१९ तन बीमार का इलाज सब कोई कराते हैं पर मन की बीमारी की ख़बर किसी को नहीं है। उसके मुआलिज संत और साध हैं। उनसे मिल कर इलाज कराना चाहिये। नहीं तो, देह बिगड़ जावेगी यानी नीचे की जोनों में बारम्बार जनम धरना और दुख सुख भोगना पड़ेगा।। -- -- ९१

२० जिस किसी से संतों की जुगत याने सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास कोई वजह करके दुरुस्ती से न बन सके तो उसको चाहिये कि जिस क़दर और जैसा तैसा अभ्यास उससे बन सके, उतना ही करता रहे और सन्त सतगुरु और उनके सतसंग से सच्चा और

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ

पक्का नाता जोड़े यानी उनमें थोड़ी या बहुत सच्ची और पक्की प्रीत करे तो वे अख़ीर वक़्त पर अपनी दया से उसकी सहायता करेंगे और अपना बल देकर आइन्दे उससे करनी जिस क़दर मुनासिब और ज़रूर होगी करा कर उसका पूरा काम बनावेंगे।।--९८

२१ ज़मीन की चोटी यानी क़ुतुब और नये नये मुल्कों और जंगलों और पहाड़ों का हाल दरियाफ़्त करने के लिये, और भी वास्ते बनाने नई नई कलें और सवारियाँ हवा में और पानी और ज़मीन पर चलने की, बहुत कोशिश और मेहनत और तन, मन, धन का ख़र्च हिम्मत वाले लोग कर रहे हैं। इसके सिवाय हाल आसमानी रचना और इल्म कीमियागरी और क़ुव्वत बर्क़ी वग़ैरा की तहक़ीक़ात करके बहुत सी बातें ईजाद कर चुके हैं और करते जाते हैं कि जिनके सबब से अवाम को थोड़ा बहुत फ़ायदा दुनियावी पहुँचना मुमकिन है। लेकिन घट के भेद की बहुत कम वाक़फ़ियत है। इस तरफ़ भी यानी अपने अन्तर में तवज्जह करके कुछ हाल दरियाफ़्त करना मुनासिब मालूम होता है कि जिससे भारी फ़ायदा जीवों का वास्ते हासिल होने मुक्ति और परम आनन्द बाद मरने के मुतसव्वर है।। -- १०५

२२ दुनिया का कोई काम सीखने या करने के वास्ते शौक़ और सिखाने वाला और सीखने वालों का संग दरकार है। इसी तरह परमार्थ की कार्रवाई के वास्ते मालिक के चरनों का प्रेम और सतगुरु और प्रेमी जन का संग ज़रूर है। तब दुरुस्ती के साथ अभ्यास बन पड़ेगा और आहिस्ते आहिस्ते तरक़्क़ी होती जावेगी।। -- -- ११२

२३ जड़ चैतन्य की गाँठ क़ुदरती लगी हुई है और इस संसार में बहुत जगह जीवों ने आप बन्धन लगाये हैं, सो हर एक को मुनासिब है कि मरने से पेश्तर उस गाँठ के खोलने का जतन शुरू कर दे और जगत के बन्धन जहाँ तक मुमकिन हो, ढीले करे ताकि अख़ीर वक़्त पर काल की खींचातानी का दुख और क्लेश न सहना पड़े और सहज में छुटकारा होकर सुरत अपने देश की तरफ़ सिधारे।। -- -- ११७

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
२४	इस लोक में मनुष्य स्वरूप सब से उत्तम है और उसके स्वरूप का ख़ाका बराबर नीचे की जोनों में थोड़ी कमी बेशी के साथ चला गया है तो खोजी को दरियाफ़्त करना चाहिये कि यह मनुष्य स्वरूप कहाँ से आया यानी ऊँचे लोकों में यह स्वरूप दरजे-ब-दरजे ज़्यादा लतीफ़ और नूरानी और ताक़त वाला ज़रूर होगा और जहाँ कि प्रथम ज़हूर स्वरूप का हुआ, उसके परे असली अरूप है, सो उस आदि स्वरूप और उसके परे असली अरूप से मिलना चाहिये और वही कुल मालिक का धाम है और वहीं पहुँच कर सुरत को पूरा २ सुख और अमर आनंद प्राप्त होगा।। -- --	१२३
२५	तीन अवस्था में सब जीव बर्त रहे हैं, चौथी यानी तुरिया में अपना रूप (जैसा कि पिंड में है) नज़र आवेगा और वहाँ से ब्रह्म की तीन अवस्था में जो कि ब्रह्माण्ड में है, बर्त कर और दसवें द्वार में सुरत का निज रूप देख कर आगे दयाल देश में चढ़ कर अपने कुल मालिक और सच्चे माता पिता सत्त पुरुष राधास्वामी का दर्शन करना चाहिये, वही निज धाम है और वहीं सुरत को सच्चा और पूरा आराम मिलेगा।। -- --	१२९
२६	हर एक शख़्स सुख हासिल करने और दुख दूर करने के लिये कोशिश और जतन करता है। लेकिन इस दुनिया में पूरा पूरा सुख हासिल नहीं हो सकता। खोजी दर्दी को दरियाफ़्त करना चाहिये कि ऐसा मुक़ाम भी कोई है कि जहाँ अमर सुख प्राप्त हो और कष्ट और क्लेश बिलकुल न हो। इसका पता सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सकता है और सुरत शब्द मार्ग की कमाई और राधास्वामी दयाल की सरन लेने से वह मुक़ाम सहज में प्राप्त हो सकता है।। -- --	१३४
२७	इस दुनिया में जिस क़दर कार्रवाई है, वह शौक़ या प्रीत के सबब से जारी है यानी जिस की जहाँ प्रीत है या जिस बात का जिसको शौक़ है, वह वहीं अपना तन, मन, धन लगाता है, लेकिन इस दुनिया के कुल पदार्थ, और भी मनुष्य और जानवर, सब नाशमान हैं और उनकी हालत भी हमेशा बदलती रहती है, इस सबब से	

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	हालत बदलने पर और अभाव या नाश होने पर ज़रूर झटका और झकोला प्रीत करने वाले, और भी उसको जिससे प्रीत करी है, लगता है यानी दोनों दुख सुख भोगते हैं और जुदा होने पर फिर मिलने का भरोसा नहीं है, इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि साधारण प्रीत संसार में रक्खो और मुख्य प्रीत कुल मालिक के चरनों में लाओ कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है और महा सुख और महा आनन्द और महा प्रेम और महा चैतन्य का भंडार है और हर दम जीव के संग है।। --	१४२
२८	इस दुनिया में दो पदार्थ हैं - चैतन्य और जड़। चैतन्य कुल रचना की कार्रवाई कर रहा है और मनुष्य स्वरूप में कई परदे यानी देहियों के अन्दर गुप्त है और इन देहियों का संग करके दुख सुख और जनम मरन भोगता है सो जब तक उलट कर अपने भंडार में नहीं पहुँचेगा, सुखी नहीं होगा। राधास्वामी मत का मतलब यही है कि इस बुंद और अंस रूप चैतन्य को उसके सिंध में पहुँचा कर परम आनंद को प्राप्त कराना।।	१४७
२९	यह देश पाप और पुन्य और मेहनत और मशक्कत और जनम मरन का है। जो कोई इससे बचना चाहे, उसको मुनासिब है कि घट का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अपने अन्तर में चले तो एक दिन निःकर्म होकर अमर देश में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा कि जहाँ किसी तरह का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का दुख नहीं है।। --	१५३
३०	इस देश में जीव आसा, मंसा, तृष्णा, भय, चिन्ता और परिश्रम से नहीं बच सकता। जो इनसे न्यारा होना चाहें, वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल के देश में पहुँचने का जतन अपने घट में करें तो एक दिन सब झगड़े और बखेड़े और दुख सुख से बच कर परम आनन्द को प्राप्त होंगे।।--	१५८
३१	इस देश में चैतन्य सुरत की धार उलटी बह रही है और इन्द्रिय द्वारे बाहर बिखर रही है। इसलिये इसको पूरा और निर्मल सुख नहीं मिल सकता और इसकी एकसी हालत नहीं रह सकती। इस वास्ते चाहिये कि इस धारा को सुलटा बहावे यानी ऊँचे की तरफ़	

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	को घट में चढ़ावे तो इसको एक दिन अपने भंडार में पहुँच कर पूरन और अमर आनंद प्राप्त होगा।। -- --	१६३
३२	यह देश भूल और भरम का है और इस सबब से यहाँ जीव हमेशा दुख सुख और जनम मरन के चक्कर में भरमते रहते हैं। जो कोई उससे बचना चाहें और परम सुख और अमर आनंद के देश में पहुँचना चाहें, वह राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करें तो राधास्वामी दयाल की दया और सतगुरु की कृपा से एक दिन काम उनका बन जावेगा। -- --	१७०
३३	दुनिया में देखा जाता है कि सब लोग बड़ी से बड़ी चीज़ के हासिल करने की ख़्वाहिश करते हैं तो परमार्थ में भी चाहिये कि ऊँचे से ऊँचे देश में पहुँच कर सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों के दर्शन का परम आनंद हासिल करने के लिये कोशिश और जतन दिल और जान से करें और मूरत या निशान की पूजा या विद्या बुद्धि की समझौती पर राज़ी होकर अपना अकाज नहीं करना चाहिये।। -- --	१७४
३४	जगत में सब जीव मान बड़ाई के वास्ते तन मन धन ख़र्च करते हैं बल्कि जान तक दे देते हैं और फिर भी पूरी और पायदार मान बड़ाई हासिल नहीं होती लेकिन सच्चे परमार्थी को जो राधास्वामी दयाल के चरनों में लगा है और एक दिन उनके निज धाम में पहुँचने की आसा करके जतन कर रहा है, बे-माँगे और बे-चाहे इस जनम में और भी चोला छोड़ने के बाद भारी शोहरत और बड़ाई बल्कि पूजा और प्रतिष्ठा एक शहर में नहीं, बल्कि देशों में हासिल होती है कि जिसका अन्दाज़ा और हिसाब कोई नहीं कर सकता।। -- --	१७९
३५	यह संसार अगिन भंडार है और यहाँ सब कामों और सब बातों में तपन होती है। जो कोई इस तपन के स्थान से बचना चाहे, उसको चाहिये कि आकाश यानी ऊँचे देश की तरफ़ भागे और महा सीतल और आनन्द के स्थान में जो कुल मालिक का धाम है, पहुँच कर बासा करे। रास्ता इस धाम का घट में है और उसके भेदी संत सतगुरु हैं। -- --	१८६

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
३६	दुनिया के लोग बड़े शौक़ से चाहते हैं कि बड़े आदमियों, राजा और महाराजा से मिलें और जब वह मिल जाते हैं तो बहुत ख़ुश होते हैं और उसमें अपनी बड़ाई समझते हैं लेकिन जो प्रेमी कि संतों का परमार्थ कमावे तो उस को आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, पार-ब्रह्म और सत्त पुरुष और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के अपने घट में दर्शन मिल सकते हैं और यह दर्शन पा कर ऐसी ख़ुशी हमेशा के वास्ते होगी कि जिसका कोई अन्दाज़ा नहीं कर सकता।। -- --	१९१
३७	जीव इस संसार में निहायत निबल और लाचार है। अपने बल से पूरे उद्धार का जतन दुरुस्त नहीं कर सकता। पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया अपार है। जो कोई उनका बचन माने, उससे वे अपनी दया से ज़रूरी करनी करा कर उसका कारज सहज में बनाते हैं। इस दया की महिमा नहीं की जा सकती है।। -- --	१९९
३८	सब लोग चाहते हैं कि आज्ञाकारी और नामवर औलाद होवे और ऐसा उपकारी काम बन आवे कि जिससे उनकी यादगारी दुनिया में रहे। मगर यह बड़ी दुर्लभ बात है। पर जिस किसी ने सच्चा परमार्थ कमाया तो बग़ैर उसकी ख़्वाहिश के बे-शुमार सेवक उसके चरन में आवेंगे कि जो दिलोजान से आज्ञा में बरतेंगे और उसके नाम और उपदेश की शोहरत जगह जगह करेंगे और यह सिलसिला उसकी यादगार का देश देश में हज़ारो बरस तक जारी रहेगा।। -- --	२१२
३९	हर एक आदमी चाहता है कि किसी को अपना ऐसा संगी और मददगार बनावे कि वह उसको हर वक़्त मदद दे और रक्षा करे पर कोई भी सच्चा और पूरा मददगार और हर मौक़े पर सहायता करने वाला नहीं मिल सक्ता लेकिन जिस किसी ने सच्चे गुरू और नाम यानी शब्द की सरन ली और उनको अपने घट में बसाया और प्रकट किया तो वह उसके दम दम के सहाई और मददगार हैं और किसी वक़्त और किसी हालत में उससे जुदा नहीं होते।। -- --	२१८

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
४०	लोग अनेक तरह के अभ्यास करते हैं। शुरू में कोई दिन रस आता है, फिर आहिस्ते आहिस्ते वह अभ्यास साधारन और फीके हो जाते हैं और उनका फल भी जैसा चाहिये, हासिल नहीं होता। लेकिन राधास्वामी मत के अभ्यासी को ब-सबब चलने चाल और तै करने रास्ते के हमेशा नवीन रस और आनंद मिलता है और इस तरह इसका शौक़ और प्यार दिन दिन बढ़ता जाता है, यहाँ तक कि एक दिन कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो कि महा सुख और महा आनंद का अमर और अजर भंडार है, पहुँच कर हमेशा को मगन और निःचिन्त हो जावेगा।। -- --	२२३
४१	अपने तन की सफ़ाई और सिंगार बहुत तवज्जह के साथ हर कोई करता है,पर अपने अंतरी स्वरूप की भी सफ़ाई और आरास्तगी ज़रूर करना लाज़िम है, क्योंकि यह तन दुनियादारों के दिखाने को है और वह आपा मालिक के सन्मुख जावेगा।। -- --	२२७
४२	वास्ते बनाव परमार्थ यानी जीव के सच्चे कल्यान और उद्धार के सतगुरु और सतसंग और सत्त शब्द की ज़रूरत है। लेकिन प्रेम और शौक़ भी दरकार है और यह मन में पैदा होता है। इस वास्ते पहिले मन की गढ़त और सफ़ाई चाहिये और यह सतगुरु की दया और सतसंग और शब्द के अभ्यास से हासिल होगी और फिर दिन दिन शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा।। -- --	२३२
४३	पाँचों तत्त्व जो रचना के कारण हैं, हर एक का मंडल जुदा जुदा है, जैसे कि स्थूल तत्त्वों का यहाँ आँख से दीखता है। इसी तरह सूक्ष्म तत्त्वों का मंडल जुदा जुदा है। फिर दो भारी तत्त्व सुरत और शब्द जो कुल रचना के कारन और करता हैं, उनका भी मंडल जुदा जुदा है। सुरत तत्त्व पाँचों तत्त्व का कारन है और शब्द तत्त्व सुरत तत्त्व का कारन और कुल रचना का करतार है। और जीव, सुरत रूप है और शब्द की निज अंस और धार है। सो वह जब तक कि अपने कारज से यानी पाँच तत्त्व की रचना से न्यारी होकर अपने कारन के निज मंडल यानी शब्द भंडार में	

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	चढ़ कर न पहुँचेगी, तब तक परम सुख को प्राप्त न होवेगी।। -- --	२३८
४४	हर कोई बड़े आदमी और ख़ास कर अपने प्यारे से एकान्त में मिलना और बात चीत करना चाहता है। इसी तरह सच्चे प्रेमी और परमार्थी को संत सतगुरु और कुल मालिक से एकान्त में मिलने की अभिलाषा रख के संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ जतन करना चाहिये।। -- --	२४१
४५	इस देह में नौ दरवाज़े हैं और उन में से हर दम मैल और ग़िलाज़त निकलती रहती है और इन्हीं द्वारों पर सुरत की धार उतर कर देह की कार्रवाई करती है। नापाक स्थान को कोई नहीं पसन्द करता। इस वास्ते पवित्र स्थान की तरफ़ जो घट में ऊँचे की तरफ़ है, चलना शुरू करे तो एक दिन देह और इन्द्रियों और मन और माया के बंधनों से छुटकारा हो जावे और कुल मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होवे।। --	२४५
४६	कुल जीवों के दिल में शौक़ देखने अच्छे रूप रंग और सुनने उम्दा बाजे और आवाज़ का रहता है और जब कहीं यह दोनों चीज़ें देखने और सुनने में आती हैं, वहीं मन फ़ौरन लग जाता है और हाल यह है कि इस दुनिया के रूप रंग और आवाज़ें निहायत ओछे और कसीफ़ और नाशमान हैं और घट में ऊँची तरफ़ बहुत बढ़ कर और निहायत ख़ूबी और नूरानियत के साथ रूप और आवाज़ें मौजूद हैं। इस वास्ते उनका देखना और सुनना भी ज़रूर चाहिये, ख़ास कर जब कि उनकी तरफ़ तवज्जह करने से गहिरा आनंद और रस मिलता है और सच्चा उद्धार और जनम मरन से निवृति और अमर आनन्द की प्राप्ति सहज में हो सकती है।। --	२५०
४७	दुनिया में जीव दो क़िस्म के काम कर रहे हैं, एक स्वार्थ, दूसरा परमार्थ। लेकिन असली परमार्थ की कार्रवाई से (जिससे सच्चा उद्धार मुमकिन है) बे-ख़बर हैं । यह राधास्वामी मत में जारी है। और सच्चे परमार्थी को थोड़े दिन अभ्यास करने से फ़ायदा उसका मालूम हो सकता है और आख़िर को परम धाम प्राप्त	

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	होगा।।	-- --२५५
४८	जो कि इस दुनिया का सब सामान नाशमान है और यहाँ सुख कम और दुख ज़्यादा है और अख़ीर वक्त़ पर आँखों के मुक़ाम से सुरत का खिंचाव होता है, इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है कि इसी ज़िन्दगी में इस रास्ते पर चलने का अभ्यास शुरू कर दे तो अन्तर में दरजे-ब-दरजे विशेष सुख मिलेगा और तकलीफ़ और दुखों से, ख़ास कर मौत के वक़्त, बचाव हो जावेगा।।	-- --२६०
४९	संसार की दौलत और मान बड़ाई बग़ैर शौक़ और मेहनत और मशक्कत के हासिल नहीं होती और फिर भी वह नाशमान है। लेकिन जो कोई परमार्थ की दौलत और बड़ाई हासिल करे, वह हमेशा क़ायम रह सक्ती है और जिस क़दर बाँटी जावे, उसी क़दर बढ़ती है।।	-- -- २६५
५०	दुनिया में लोग नशा खाते और पीते हैं कि जिससे रंज और तकलीफ़ न व्यापे और मज़ा और सरूर हासिल होवे। लेकिन उसके पीछे ख़ुमार और सुस्ती और अक्सर बीमारी पैदा होती है। जो कोई घट में शब्द का अभ्यास करे, उसको ठहराऊ आनंद सहज में प्राप्त हो सकता है और दुनिया के दुख और चिन्ता भी कम व्याप सकते हैं और आख़िर को सच्चा उद्धार मुफ़्त में हो जावेगा।।	-- -- २७०
५१	मनुष्य को अक़्ल और समझ और ताक़त मालिक ने दी है कि जिससे यह अपने और अपने मालिक के स्वरूप और धाम का पता और खोज लगा कर दर्शन कर सकता है और जो यह काम न किया जावेगा तो नर देही मुफ़्त बरबाद जावेगी और जनम मरन और देहियों के दुख सुख से छुटकारा नहीं होगा।।	- २७५
५२	प्रीत और शौक़ से कुल कार्रवाई दुनिया की होती है, मगर यहाँ का सब सामान नाशमान है, इस वास्ते वह प्रीत भी जाती रहती है, लेकिन जो कोई मालिक के चरनों में प्रेम लावे, वह दिन दिन तरक़्क़ी पा कर एक दिन प्रेम भंडार में पहुँचा देगा और आइंदा को जनम मरन और देहियों के बंधन से छुटकारा कर देगा।।	--२८०

प्रकार सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन पृष्ठ

५३ दुनिया में बहुत से लोग जवाँमर्दी और बहादुरी का काम वास्ते प्राप्ति धन और नामवरी के करते हैं, बल्कि जान तक दे देते हैं, पर उसका फ़ायदा चंद रोज़ का है। लेकिन जो कोई मन और माया और काल और कर्म से लड़े, उसको सच्चे मालिक का धाम और चरनों में बासा मिल सकता है कि जहाँ अमर और परम आनंद प्राप्त होगा और जनम मरन का दुख और किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश नहीं है।। -- -- २८७

५४ दुनिया के भारी काम और दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई करके लोग चाहते हैं कि वह सब पर प्रकट होवे ताकि लोग उनकी और उन कामों की महिमा करें। लेकिन राधास्वामी मत के सतसंगी जो कुछ सेवा और काम भक्ति के ज़ाहिर में और भजन और ध्यान अन्तर में करते हैं, वे उन को गुप्त रखना चाहते हैं और प्रकट करने में डरते हैं कि उनका अकाज न हो जावे और सच्चे परमार्थ की कार्रवाई का गुप्त रहना ही मुनासिब है।। -- २९२

५५ दुनिया में जीव अनेक तरह के ख़ौफ़ मान रहे हैं और अनेक तरह के शौक़ कर रहे हैं, लेकिन जिस के मन में सच्चे मालिक का खौफ़ और दर्शनों का शौक़ पैदा हुआ, वही सतगुरु से मिल कर एक दिन कुल मालिक के धाम में बासा पावेगा। बग़ैर सतगुरु के कोई माया के जाल से नहीं निकल सकता है।। -- -- ३००

५६ जड़ पदार्थों में प्रीत करने से जड़ का संग मिलेगा और चैतन्य के संग से जो संत सतगुरु हैं, सच्चे मालिक का संग पावेगा।।--३०५

५७ जीव बड़े ख़ूँख़ार और ख़तरनाक जानवरों को क़ाबू में लाकर उन से अनेक तरह के काम लेते हैं लेकिन जो कोई मन और इंद्रियों को अपने बस में लावे, वह परमार्थ का पूरा दरजा हासिल कर सकता है।। -- -- ३११

५८ दुनिया में हर एक शख़्स अपने जात पाँत हसब नसब और गुन और जौहर और धन और माल वग़ैरा का अहंकार रखता है और अपने ख़ानदानी रस्म और तरीक़े की मज़बूत पक्ष और बर्ताव करता है। लेकिन अफ़सोस है कि हरचंद संत सतगुरु जीवों को पुकार कर कहते हैं कि तुम सत्त पुरुष राधास्वामी की अन्श यानी

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	बालक हो और दयाल देश में तुम्हारा निज घर है, यहाँ ऐसी चाल चलो कि जिसमें जम की चोट न खानी पड़े और अपने पिता के दर्शन के वास्ते शौक़ के साथ जतन करते रहो ताकि एक दिन अपने धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त हो, पर जीव उनके बचन को बहुत कम मानते हैं, बल्कि उलटी उनकी निंदा करते हैं और उन से दूर रह कर अपना अकाज करते हैं।। -- --	३१८
५९	जो जीव दुनिया के सामान के वास्ते तड़प रहे हैं और अनेक तरह के जतन और मेहनत कर रहे हैं, उनको थोड़ा बहुत संसारी सामान हासिल हो जाता है। इसी तरह से जो मालिक के दर्शन की विरह रखते हैं और उस के वास्ते जतन करते हैं, उनको भी सतगुरु द्वारा सत्त पुरुष के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं और यह काम ब-निसबत दुनिया के कामों के ज़्यादा ज़रूरी है।। -	३२६
६०	बाहरमुख शब्द के वसीले से यह जीव देह, इंद्रिय और मन और भोगों के रस में बँध गया है और दुख सुख भोगता है। अब जो कोई अन्तर के शब्द में सतगुरु से भेद लेकर चित्त लगावे तो वह आहिस्ते आहिस्ते चढ़ कर एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त हो सकता है।। -- --	३३३
६१	दुनिया के भोगों और पदार्थों के लिये हर कोई सच्ची दीनता और मेहनत और हुकम बरदारी करता है, लेकिन परमार्थ के हासिल करने के लिये ऐसी कार्रवाई मुश्किल है, पर सच्चे खोजी और दर्दी से बन पड़ेगी और वही सतगुरु के सतसंग और उपदेश से पूरा पूरा फ़ायदा उठावेगा यानी मेहर और दया और नाम की बख़्शिश उसको मिलेगी।। -- --	३३८
६२	संसार में बाहर और अन्तरमुख करनी परमार्थ की, वास्ते हासिल करने अपने मत के सिद्धान्त के, बाज़े लोग करते हैं और तन मन धन भी लगाते हैं बल्कि कोई कोई निहायत कष्ट धारन करते हैं, लेकिन पूरा कारज उनका नहीं बनता, पर जो कोई इसी क़दर बल्कि थोड़ी उससे कम कार्रवाई संत सतगुरु के चरनों में करे तो उसको सच्चा परमार्थ हासिल होवे यानी अमर धाम में परम	

प्रकार	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	पृष्ठ
	आनन्द को प्राप्त होवे।।	-- -- ३४५
६३	कुल जीव मालिक को मान कर और अपने अपने मत के मुवाफ़िक़ उसका निश्चय करके थोड़ी बहुत कार्रवाई भी कर रहे हैं, पर हालत किसी की नहीं बदलती यानी मन के विकार दूर नहीं होते और प्रेम का रंग नहीं चढ़ता, लेकिन जो जीव कि संत सतगुरु का निश्चय करके उनके सतसंग और सरन में आये हैं, उनकी हालत भी आहिस्ते आहिस्ते बदलती जाती है और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीति और प्रतीत भी उनके मन में बढ़ती और मज़बूत होती जाती है और जोकि यह हालत बिना सतसंग सतगुरु के हासिल नहीं हो सकती, इस वास्ते सब से पहिले खोज करके संत सतगुरु या उनकी संगत से मिलना चाहिये और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करना चाहिये।।	-- -- ३५३
६४	बहुत से लोग मुक्ति के वास्ते अनेक तरह के कर्म करते हैं और तन मन धन भी ख़र्च करते हैं, फिर भी सच्ची मुक्ति प्राप्त नहीं होती। लेकिन जो कोई संतों के बचन के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत करनी करे तो वह अपनी मुक्ति होती हुई कोई दिन में अपनी आँख से देख कर निचिन्त हो जावेगा और अन्तर में दिन दिन आनंद और सरूर बढ़ता जावेगा।	-- -- ३६१
६५	दुनिया में लोग अनेक प्रकार के बाजे बजाते हैं और उनके साथ गाते हैं और हर एक की आवाज़ सुहावनी और प्यारी लगती है और जब कई बाजे सुर मिला कर इकट्ठे बजाते हैं और गाना होता है, उस वक़्त गहरा आनंद मालूम होता है। अब जो कोई अन्तर के बाजे और राग सुने, उसके आनन्द की सिफ़त क्या वर्णन की जावे। मन और सुरत दोनों लीन होकर ऊँचे की तरफ़ चढ़ेंगे और एक दिन महा आनन्द के भंडार में पहुँच जावेंगे।	-- -- ३६६

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

प्रेम पत्र राधास्वामी

चौथा भाग

हित उपदेश

उपदेश अनेक प्रकार से, वास्ते उलटाने और चढ़ाने मन और सुरत के, निज घट में, ऊँचे को यानी दसवें द्वार की तरफ़, और फिर वहाँ से पहुँचाना सुरत का, निज घर यानी राधास्वामी धाम में, इसी का नाम सच्चा और पूरा उद्धार है।।

प्रकार पहिला

सुरत और मन नौ द्वारों के वसीले से जो पिंड में हैं, इस संसार में बर्त रहे हैं और यहाँ के भोगों का तुच्छ रस लेते हैं। उनको चाहिये कि दसवें द्वार की तरफ़ भी (जो घट में है) झाँक कर ऊँचे देश का विशेष आनन्द लेवें।।

१ - सब जीव स्वाभाविक नौ द्वार में जो पिंड में हैं, बर्त रहे हैं और वह नौ द्वार यह हैं- दो आँखों के, दो कानों के, दो नाक के, एक मुख का, एक इन्द्री यानी पेशाब का मुक़ाम और एक पाख़ाने का मुक़ाम और इन्हीं द्वारों पर धार आकर भोगों का रस लेती है।।

२ - यह इन्द्रियों के भोग ऐसे ज़बर हैं कि सब जीव इन्हीं के रस में फँस गये हैं, और उनसे छूटना निहायत कठिन हो गया है।।

३ - कोई जीव एक या दो इन्द्रियों के रस में ऐसे लिपट गये कि उसी में अपनी जान दे दी, और ज़रा भी सोच अपने जीव के कल्याण का या अपने कुटुम्ब परिवार के नफ़े और नुक़सान का न किया और उसी बासना और भोग की आदत से नीचे के दरजों में उतर गये जहाँ से फिर नर देही और ऊँचे दरजों में उलट कर आना निहायत मुश्किल हो गया।।

४ - इन्द्रिय भोगों का रस लेना और उन्हीं की बासना चित्त में धरना, हमेशा सुरत और मन को नीचे और बाहर की तरफ़ बहाते हैं, और रफ़्ते रफ़्ते नीचे की जोनों में बास देते हैं जहाँ से अपनी ताक़त से कोई

जीव उलट कर नर देह में नहीं आ सकता, जब तक कि संत सतगुरु दया करके न निकालें।।

५ - इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब है कि इन्द्रिय भोगों में एहतियात के साथ बर्ताव करें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर अपने निज घर की सुध सम्हालें यानी जुगत दरियाफ़्त करके रास्ता तै करना शुरू कर दें, तब कोई अर्से में जीव का कारज बनना मुमकिन है।।

६ - रास्ता तै करने से मतलब यह है कि निज घर का भेद लेकर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश हासिल करके, शब्द और स्वरूप के आसरे मन और सुरत को अपने घट में दसवें द्वार की तरफ़ उलटाना और चढ़ाना शुरू करें, तब जिस क़दर कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से अंतर में रस और आनन्द मिलता जावेगा, उसी क़दर शौक़ के साथ चाल चलती जावेगी।।

७ - अंतर में जो स्वरूप और शब्द का रस मिलना मुमकिन है वह स्वतन्त्र है, यानी अभ्यासी जब चाहे जब अपने अंतर में झाँक कर थोड़ा बहुत आनन्द ले सकता है और संसार के भोगों का रस परतन्त्र है यानी दूसरे के आधीन है क्योंकि जब तक धन ख़र्च करके वह विषय और भोग प्राप्त न होवें, तब तक उनका रस नहीं मिल सकता और धन हासिल करने के वास्ते पहिले मेहनत करनी पड़ेगी।।

८ - इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि कुल जीवों को चाहे स्त्री होवे या पुरुष, अपनी सुरत, रूह, के कल्यान के वास्ते अपने घट में दसवें द्वार की तरफ़ उलटने

और चलने की जुगत सुरत शब्द मार्ग करके ज़रूर थोड़ा बहुत कमाना चाहिये यानी जिस क़दर बन सके उसका अभ्यास नेम से हर रोज़ करना चाहिये तो भारी तकलीफ़ या खौफ़ या चिन्ता के वक़्त और भी मौत के समय बहुत रफ़ाहियत[1] होगी यानी दुख सुख कम व्यापेगा और अंतरी सुख विशेष मिलेगा।।

९ - सिवाय ऊपर के लिखे हुए फ़ायदे के राधास्वामी मत के अभ्यासी को कुल मालिक का थोड़ा बहुत जलवा अंतर में नज़र आवेगा और उसकी दया और रक्षा के परचे मिलते जावेंगे कि जिसके सबब से अभ्यासी की प्रीति और प्रतीत दिन दिन चरनों में बढ़ती जावेगी और रफ़्ता रफ़्ता सुरत, तन मन से न्यारी होकर, कुल मालिक और संत सतगुरु की दया से एक दिन अपने निज घर में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होगी और जो यह काम नहीं किया जावेगा तो मन और इन्द्रियों के साथ नीचे देश और जोनों में भरमती रहेगी।।

१० - इस काम के करने के वास्ते यह ज़रूर नहीं है कि प्रेमी अभ्यासी अपना घरबार या रोज़गार छोड़े, बल्कि गृहस्थ में रहकर सब काम दुनियादारी के ब-दस्तूर थोड़ी एहतियात और होशियारी के साथ करता रहे और राधास्वामी मत की जुगत का अभ्यास भी थोड़ा बहुत हर रोज़ करता रहे, तो दोनों काम यानी स्वार्थ और परमार्थ सहज में बन जावेंगे।।

१ सहायता

प्रकार दूसरा

चैतन्य को जड़ पदार्थों से मेल कम कर के विशेष चैतन्य और फिर महा विशेष चैतन्य से मिलने का जतन वास्ते अपनी तरक़्क़ी और सुख और आराम के ज़रूर करना चाहिये।।

१ - दुनिया में हर एक शख़्स अपने से बड़े आदमियों से, जैसे महाराजा राजा अमीर और सेठ साहूकार और विद्यावान और हुनरमंद से मिलना चाहता है, और चाहे कुछ मतलब उनसे निकले या नहीं, सिर्फ़ उनसे मुलाक़ात या जान पहिचान करने में ही बहुत मगन होता है और जो कुछ इस काम में धन ख़र्च पड़े उस को भी खुशी से ख़र्च करता है।।

२ - और जो कोई अपने बराबर का है या अपने से कमतर है तो उससे मिलने के वास्ते कोई जतन नहीं करता, बल्कि जो वह आप ही इस शख़्स से मिलने की ख़्वाहिश करके इसके पास आवें तो भी उसके मिलने से ऐसा ख़ुश नहीं होता जैसा कि अपने से बड़े आदमियों से।।

३ - अब ग़ौर का मुक़ाम है कि दुनिया के मतलब के वास्ते या सिर्फ़ मान बड़ाई के लिये दुनिया के बड़े आदमियों को तलाश करके उनसे मेल करें और परमार्थ के वास्ते निहायत नादान या अनपढ़ बंसावली गुरुओं को अपना गुरु धारन करें और वास्ते अपने उद्धार के धातु या पाषाण की बनाई हुई मूर्तों को या दरियाओं

और दरख़्तों और जानवरों को जोकि मनुष्य से निहायत ओछे और छोटे यानी कम दरजे के हैं और जिनसे किसी क़िस्म का परमार्थी मतलब या काम नहीं निकल सकता, परमेश्वर मान कर पूजें।।

४ - और यह जीव आप अपनी नज़र से देखते हैं कि मूरत के इष्ट वाले के कभी संशय और बिपर्जय दूर नहीं होते और मूर्त या तीर्थ और दरख़्त वग़ैरा कोई संशय या भरम दूर करने की ताक़त नहीं रखते और न कोई भेद और जुगत बता सकते हैं।।

५ - फिर बड़े अफ़सोस का मुक़ाम है कि यह लोग सच्चे परमार्थ से ऐसे बे-ख़बर और बे-परवाह हैं कि चाहे कुछ फ़ायदा होवे या नहीं, मूर्त और दरिया वग़ैरा की पूजा हरगिज़ नहीं छोड़ते और सच्चे परमार्थ का न तो उनके दिल में खोज है और न उसके जानने वाले की तलाश है, फिर ऐसे जीवों को क्या परमार्थी फ़ायदा हासिल होवे और किस तरह उनकी आँख खुले।।

६ - इन जीवों में जो कोई अधिकारी और संस्कारी हैं और बे-ख़बरी से आम जीवों के संग तीर्थ मूर्त और व्रत वग़ैरा में लग गये हैं उनके वास्ते संत यह बचन फ़रमाते हैं कि जब कोई संसारी काम बग़ैर अपने फ़ायदे या नफ़े की जाँच किये हुए नहीं करते और अपने से छोटों से किसी क़िस्म की मदद लेना नहीं चाहते तो परमार्थ में ऐसी ग़फ़लत और बे-परवाही कैसे कर रहे हो कि बंसावली या नादान गुरु से उपदेश लेते हो और तीर्थ और मूर्त वग़ैरा से आशा पापों के क्षय होने और मुक्ति की प्राप्ति की रखते हो, यह आशा तुम्हारी बिल्कुल झूठी और भरम है और तुम को आप अपनी

आँख से और थोड़ी बुद्धि की समझ से दिखाई देता है कि यह सब तुम्हारी किसी क़िस्म की मदद परमार्थी न तो यहाँ कर सकते हैं और न आगे करने की ताक़त रखते हैं, फिर वृथा अपना वक़्त और तन, मन, धन क्यों ख़र्च कर रहे हो? मुनासिब तो यह है कि सच्चे परमार्थ के भेदी और जानकार और अभ्यासी गुरू खोज कर उनकी सरन लो और जो वह उपदेश करें, उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करो और वे सुरत शब्द मार्ग का उपदेश देंगे, और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का इष्ट बँधावेंगे और घट में ही रास्ता और मंज़िलें लखावेंगे।।

७ - जब ऐसे सच्चे गुरू और उनका सतसंग मिल जावे तब प्रीति प्रतीत के साथ उनका संग करो और उनकी जुगत की कमाई उमंग के साथ घट में करते रहो। कोई दिन के अभ्यास में कुछ कैफ़ियत अंतर में मालूम पड़ेगी और उनकी दया और मेहर की परख आवेगी तब प्रेम और शौक़ आहिस्ते आहिस्ते बढ़ता जावेगा और दुनिया का परमार्थ बिल्कुल असार और ओछा नज़र आवेगा और भोग विलास भी कुछ २ रूखे और फीके मालूम होवेंगे और देह और दुनिया से आहिस्ते आहिस्ते सिलसिला और बंधन ढीला होता जावेगा, यानी अपनी सच्ची मुक्ति होती हुई के निशान इसी ज़िन्दगी में कुछ २ नज़र आवेंगे, तब अपने भागों की सराहना करोगे और बे-शुमार शुकर बजा लाओगे कि भूल और भरम और धोखे से कैसे सहज में सतगुरु ने न्यारा किया और माया और काल के जाल से निकाला।।

८ - इस वास्ते समझना चाहिये कि संत सतगुरु और साध गुरू ही इस संसार में सच्चे विशेष चैतन्य और जीवों के हितकारी हैं और कुल मालिक राधास्वामी दयाल महा विशेष चैतन्य हैं और उनका धाम और उसका रास्ता घट में है।।

९ - जब तक कि कोई विशेष चैतन्य यानी संत सतगुरु अथवा साध गुरू से नहीं मिलेगा, और उनकी दया का बल लेकर अपने अंतर में शब्द का अभ्यास नहीं करेगा, तब तक महा विशेष चैतन्य यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल से उसका सिलसिला या तार नहीं लगेगा, और न उनके धाम में उसको विश्राम मिलेगा।।

१० - संत सतगुरु कुल मालिक के निज भेदी या निज पुत्र या निज मुसाहब हैं। जो कोई सच्चे मन से उनका खोज और तलाश करेगा, उसका वे अपनी दया से संयोग चरनों मे लगावेंगे और सतसंग और अभ्यास कराते हुए उसका परमार्थी भाग जगावेंगे और एक दिन उसको धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेंगे।।

११ - मालूम होवे कि संत सतगुरु का मार्ग और उनका सतसंग सच्चा और पूरा है और जो कोई उसमें भाव और प्रेम के साथ शामिल होवे, उसको थोड़े अर्से में जाँच इस बात की और थोड़ी बहुत पहिचान सच्चे मालिक की हो सकती है, लेकिन मौज ऐसी है कि वास्ते छाँटने सच्चे परमार्थियों के और दूर रखने निपट संसारी और रोज़गारी और अहंकारी जीवों के, संत, अपनी और अपने सतसंग की निन्दा कराते हैं। इस सबब से कोई जीव उनके सतसंग में आसानी से

शामिल नहीं हो सकता, जब तक कि उसके दिल में सच्ची लाग सच्चे परमार्थ की न होवे। ऐसे अधिकारी जीव निन्दा का कुछ ख़्याल नहीं करते, बल्कि उसका भेद दरियाफ़्त करके निन्दकों को मूर्ख और नादान समझते हैं और शौक़ के साथ संतों का सतसंग और उनके अभ्यास की कार्रवाई करते हैं और अंतर और बाहर उनकी दया की परख करके प्रीति और प्रतीति चरनों में बढ़ाते हैं और फिर उन्हीं का एक दिन सच्चा और पूरा उद्धार होवेगा।।

१२ - बाक़ी जीव जो इत्तिफ़ाक़ से कभी सतसंग में आजावेंगे तो बचन सुन कर और अपने मन में क़ायल होकर इस ख़ौफ़ से कि शायद दुनिया उनसे न छूट जावे फिर सतसंग में सूरत नहीं दिखावेंगे, लेकिन इतनी ही कार्रवाई में दया का बीजा उनके हृदय में पड़ जावेगा और आइन्दा किसी वक़्त पर अपना असर दिखावेगा।।

प्रकार तीसरा

अपने से ज़्यादा बल्कि सब से ज़्यादा जो ताक़त वाला और समर्थ होवे यानी कुल मालिक, उसकी सरन लेकर और उसके निज भेदी जो संत सतगुरु हैं, उनसे मिल कर बैरियों को जो सबल और ज़बरदस्त हैं,

जीत कर निज घर में जाना चाहिये, तब अपना काम पूरा बनेगा।।

१ - इस दुनिया में काल और कर्म और मन और माया और उनकी सेना काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार और दसों इन्द्रियाँ और ईर्षा विरोध और नामवरी की चाह वग़ैरा बड़े बलवान हैं और हर एक जीव को इन में से एक एक अपनी तरफ़ खींच कर घुमाता है और दिन दिन माया के जाल में फँसाता है।।

२ - किसी की ताक़त नहीं है कि इन ज़बरदस्तों से अपना पीछा छुड़ा सके या उनको नीचा डाले, यानी जब जब जिसका ज़ोर होता है, उस वक़्त जीव और उसका मन उसी का रूप होकर इस संसार में बर्तता है। और जब कि मन और इन्द्रियों के भोग सन्मुख आवें, उस वक़्त बिल्कुल होश नहीं रहता और उनमें बर्तने को बे-धड़क और बग़ैर सोच और विचार के तैयार होजाता है।।

३ - सबब इसका यह है कि यह जीव या उस का मन पहिले ही से उन भोगों की चाह उठा कर अपने ख़्याल और गुनावन में उसका थोड़ा बहुत रस लेता रहता है, और जब कि इत्तिफ़ाक़ से वह भोग इसके सन्मुख आये तो उस वक़्त बे-इख़्तियार मगन होकर उनमें लिपटता है और मुनासिब और ना-मुनासिब का ख़्याल ज़रा भी मन में नहीं लाता।।

४ - बाद बर्तने के अलबत्ता कोई २ जीव जो सच्चे परमार्थी हैं, अपनी हालत पर अफ़सोस करते हैं और पछताते हैं और आइंदे को अपने बचाव के वास्ते दया

माँगते हैं। लेकिन अर्से तक ऐसा हाल रहता है कि ब-सबब असली चाह या आशक्ति किसी ख़ास ख़ास भोगों के, यह मन जब जब वे भोग सन्मुख होते हैं, गुरू के बचन और अपने इरादे को भूल कर उन में लिप्त हो जाता है और फिर पछताता है और प्रार्थना करता है।।

५ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु जीव के बचाने को हमेशा तैयार रहते हैं, लेकिन जब यह आपही भोगों की चाह उठा कर उनमें बर्तता है या बर्तने को तैयार हो जाता है, तब वे क्या करें क्योंकि ज़बरदस्ती के साथ किसी का किसी काम से छुड़ाना मंज़ूर नहीं है।।

६ - हाल यह है कि यह जीव जन्मान जन्म और जुगान जुग से अपने निज घर को छोड़ कर ब्रह्म और माया के देश में, जहाँ कि अनेक तरह के भोग रचे हुए हैं, आन कर फँस गया हैं और अनेक तरह की संसारी आसा मन में उठाकर और बाहर से भोगों में बर्त कर ख़ुश होता है और दिन दिन उन्हीं में लिपट कर गिरफ़्तार होता जाता है।।

७ - यह बासना और आसा जोकि संसारियों के संग से मज़बूत हो गई है, यकायक नहीं छूट सकती है। इस वास्ते कोई अर्से सतसंग अंतर और बाहर का दरकार है, तब कुछ सफ़ाई होवे यानी भोगों की चाह घटती जावे।।

८ - जब तक अंतर में कुछ सफ़ाई न होगी यानी भोगों की चाह कम न होगी, तब तक गुरू के बचन के मुआफ़िक़ बर्तना कठिन होगा क्योंकि बैरी बड़े ताक़त

वाले हैं और जीव अपने बल से उनके साथ मुक़ाबला नहीं कर सकता।।

९ - अब समझना चाहिये कि कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी सर्व समरथ और सब के करता धरता और हरता हैं और ब्रह्म और माया को त्रिलोकी का राज उन्होंने दिया है और सब रचना तीन लोक की इन दोनों की सुपुर्दगी में है।।

१० - और संत सतगुरु ख़ास अंस कुल मालिक के हैं या उसके ख़ास पुत्र या ख़ास मुसाहब समझना चाहिये। उनको वही इख़्तियार हासिल है जो कुल मालिक को यानी वे जो चाहें सो कर सकते हैं और चाहें जिस जीव को अपनी दया के बल से पार उतार सकते हैं। उन से भी कुल रचना पिंड और ब्रह्मांड की ऐसे ही डरती है जैसे कि कुल मालिक से।।

११ - इस वास्ते जो कोई कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल या उनके निज मुसाहब की सरन में आया, उस पर काल और कर्म और मन और माया वग़ैरा इस क़दर ज़ोर नहीं कर सकते जैसा कि आम जीवों पर, बल्कि उसको किसी क़दर मदद देते हुए अपनी हद्द के पार पहुँचावेंगे।।

१२ - अलबत्ता जिस क़दर कि उसको पिछले कर्मों के मुवाफ़िक़ क़र्ज़ा या हिसाब ब्रह्म यानी काल पुरुष का देना है, वह साफ़ और बेबाक़ कराया जावेगा। मगर इस सफ़ाई में भी सरन वाले जीवों पर ख़ास दया की जावेगी ताकि उनके पिछले कर्मों का भार जल्द उतर जावे और प्रेम और भक्ति चरनों में बढ़ती जावे और आइन्दा करम न चढ़ें।।

१३ - मालूम होवे कि वास्ते लेने और दृढ़ करने सरन के प्रीति और प्रतीत का चरनों में पैदा होना ज़रूर है और यह प्रीति और प्रतीत अन्तर और बाहर सतसंग करके हासिल होवेगी। इस वास्ते कुल जीवों को जो राधास्वामी मत में शामिल होवें, चाहिये कि पहिले बाहर का और फिर अंतर का या दोनों बराबर, सतसंग, चेत कर होशियारी के साथ करें, ताकि कोई संशय और भरम उनके चित्त में न रहे, नहीं तो प्रीति और प्रतीत में ख़लल पड़ेगा और फिर सरन भी जैसी चाहिये वैसी मज़बूत नहीं होगी।।

१४ - जो कोई जैसा तैसा नाता संत सतगुरु से जोड़ेगा उसको वे अपनी दया से एक दिन ज़रूर पार लगावेंगे यानी आहिस्ता २ चंद जन्म में उसकी प्रीति और प्रतीत बढ़ा कर और मुनासिब और ज़रूरी करनी करवा कर निज धाम में बासा देंगे।।

१५ - इस वास्ते जिन जीवों का रिश्ता संत सतगुरु या साध गुरू से लग गया है, उन्हीं को बड़भागी समझना चाहिये और एक दिन वेही मन और माया और काल और कर्म के मस्तक पर चरन रख कर संतों के निज देश में पहुँचेंगे क्योंकि संत सतगुरु का सूत धुर मुक़ाम से लगा हुआ है और जो उनसे प्रीति करेगा उसका भी रिश्ता कुल मालिक के चरनों से जोड़ देंगे और जोकि वे सर्व समर्थ और कुल रचना के मालिक हैं, इस वास्ते कोई उनका हुक्म टाल नहीं सकता।।

१६ - अब ग़ौर करना चाहिये कि आया कुल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द, सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल और उनके प्यारे संत सतगुरु की सरन जैसी

बने तैसी लेना चाहिये या कि मन और माया और भोगों के जाल में फँसे रह कर चौरासी में भरमते रहें और बारम्बार देह धर कर दुख सुख और जनम मरन का कष्ट और कलेश भोगते रहें।।

प्रकार चौथा

सुरत अंस को जो सत्त सिंध की बूँद है और इस संसार में देह और भोगों के साथ जो जड़ और असत्य हैं, भूल और भरम करके बँध गई है, उसके निज भण्डार में पहुँचाने का जतन हर एक शख़्स को चाहे औरत होवे या मर्द, करना चाहिये, नहीं तो जन्म मरन का कष्ट और देह के संग दुख सुख हमेशा सहना पड़ेगा।।

१ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल सत्त सिंध और परम आनन्द और महा चैतन्य स्वरूप अपार और अनंत हैं और जीव यानी सुरत उनकी बूँद और अंस है और वह त्रिलोकी में उतर कर और काल और माया के जाल में फँस कर मन और इन्द्रियों और देह में बँध गई है और अनेक भोगों और पदार्थों और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा में आशक्त होकर दुख सुख सहती है और जोकि देह माया के मसाले की बनी हुई है और वह असल में ग़ुबार रूप है और इस सबब से एक शकल में हमेशा

ठहर नहीं सकती, इस वास्ते उसको बारम्बार देह बदलने से जनम मरन की तकलीफ़ उठानी पड़ती है।।

२ - असल में सुरत, रूह, को जोकि मिस्ल अपने सिंध के सत्य और चैतन्य आनन्द स्वरूप है, कोई तकलीफ़ या दुख छू नहीं सकता यानी उस पर अपना असर पहुँचा नहीं सकता है, लेकिन ब-सबब बंधन और आशक्ति के देह और कुटुम्ब परिवार और भोग वग़ैरा में इसको सब तरह के कष्ट और कलेश और दुख सुख सहने पड़ते हैं, जैसा कि इसकी हालत जाग्रत और स्वप्न अवस्था के मिलान करने से ज़ाहिर है यानी जाग्रत अवस्था में जो इसकी बैठक नेत्रों में है और वहाँ बैठने से इसका सिलसिला देह और संसार के साथ पैदा होता है, तब इसको देह और दुनिया के दुख सुख और चिन्ता और फ़िकर व्यापते हैं और सुरत के नेत्रों के स्थान से सरकने पर यानी स्वप्न अवस्था में प्रवेश करने पर कोई दुख सुख या चिन्ता और फ़िकर देह और दुनिया के नहीं व्यापते। इस सबब से जब तक कि अज्ञानता करके सुरत की आशक्ति और बंधन दुनिया में रहेंगे और जब तक कि देह में मन और इन्द्रिय के घाट पर बासा रहेगा, तब तक दुख का भोग यानी असर दूर नहीं हो सकता है।।

३ - इस वास्ते संत सतगुरु जो कि कुल मालिक के धाम से आते हैं, दया करके जीवों को आम तौर पर समझाते हैं कि तुम्हारा निज घर सत्त पुरुष राधास्वामी धाम में है, और यह देश ब्रह्म और माया का है और यहाँ भूल और भरम और अज्ञानता का भारी ज़ोर है और मन और माया की धारें मिस्ल काम,क्रोध, लोभ,

मोह और अहंकार और दसों इन्द्रियों की हर वक़्त बड़े ज़ोर से जारी हैं कि जो मन और सुरत को हर वक़्त चंचल रखती हैं। इस सबब से झुकाव उनका बाहर की तरफ़ भोगों में जो कि जड़ पदार्थ हैं और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा में रहता है और कर्म के बस होकर बारम्बार दुख सुख सहना पड़ता है और एक दिन यानी मौत के वक़्त ज़रूर सब का संग छूटेगा और उस वक़्त भारी तकलीफ़ उठानी पड़ेगी और जो मन में देह और दुनिया की आशक्ति और बासना रही, तो फिर जन्म धारन करके वही दुख सुख भोगना पड़ेगा। इस वास्ते जो कोई इस कष्ट और कलेश से बचना चाहे, और अपने निज घर में जाकर परम और अमर आनन्द को प्राप्त होना चाहे, उसको चाहिये कि अपने निज घर और उसके रास्ते का भेद समझ कर यहाँ से चलने का जतन शुरू कर देवे तो एक दिन उसका सच्चा और पूरा छुटकारा काल और माया के जाल से हो जावेगा।।

४ - और भी सन्त फ़रमाते हैं कि जो सुरत चैतन्य की धार है और पिंड में नेत्र के स्थान पर ठहरी हुई है, इस वास्ते जो अपने घर को उलटना चाहे तो उसी धार पर सवार होकर चलना शुरू करे, यानी जो उस धार के साथ धुन और आवाज़ हो रही है, उसको पकड़ के घर की तरफ़ चले। सिवाय इसके और कोई रास्ता निज घर में जाने का रचा नहीं गया और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर इस रास्ते का तै करना मुमकिन है।।

५ - यह काम सब को, चाहे औरत होवे या मर्द, वास्ते अपने जीव के कल्यान के करना लाज़िम और

फ़र्ज़ है। लेकिन बग़ैर दया और मदद संत सतगुरु या साध गुरु के यह कार्रवाई किसी से बन नहीं सकती। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुरु का करना ज़रूर है। और जब भाग से वे या साध गुरू या कोई उनका सच्चा प्रेमी मिल जावे तो उनके साथ प्रीति भाव करना और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ नित्त अभ्यास करना चाहिये।।

६ - संत सतगुरु का उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का है, और उसकी चाल नेत्र के स्थान से चलती है और धुर मुक़ाम तक रास्ते में कितनी ही मंज़िलें हैं और हर एक मुक़ाम का शब्द जुदा है सो यह सब भेद लेकर विरह और प्रेम अंग के साथ अभ्यास शुरू करना चाहिये।।

७ - वास्ते दुरुस्ती से बनने अभ्यास के जीव को चाहिये कि संसार और उसके भोगों से किसी क़दर बैराग चित्त में लावे और चरनों में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के अनुराग पैदा करे, और यह दोनों बातें संत सतगुरु के सतसंग और उनकी दया से प्राप्त होंगी। इस वास्ते उनका सतसंग चेतकर यानी होशियारी और थोड़ा बहुत शौक़ के साथ करना चाहिये।।

८ - और अभ्यासी परमार्थी को इस बात का भी ख़याल ज़रूर रखना चाहिये कि जितने भोग बिलास और पदार्थ संसार में हैं, वे सब नाशमान हैं और एक दिन उनको ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, इस वास्ते उनमें बंधन और आशक्ति, ज़रूरत और कार्रवाई के मुवाफ़िक़ करना चाहिये। ज्यादा आशक्ति अभ्यास में विघ्न डालेगी और वक़्त वक़्त पर उसके सबब से दुख भी होवेगा।।

९ - और यह भी ख़याल रखना चाहिये कि सुरत, चैतन्य और आनन्द स्वरूप है और जितना सामान दुनिया का है, वह सब जड़ है। फिर इन दोनों का आपस में असली मेल नहीं हो सकता। सिर्फ़ देह की सम्हाल और गुज़ारे के वास्ते इनसे किसी क़दर मेल रखना ज़रूर है। बहुत आशक्ति अपने निज पद की तरफ़ से भूल और संसार में भरम पैदा करेगी और ऐसी कार्रवाई से दिन २ ग़फ़लत और अपने जीव के कल्यान की निस्बत बे-परवाही बढ़ती जावेगी और नतीजा उसका यह होगा कि जीव भोगों की प्राप्ति के निमित्त उमर भर पचता और खपता रहेगा और इसी आसा और बासना के अनुसार बारम्बार देह धर कर दुख सुख भोगता रहेगा और जन्म मरन की फाँसी नहीं काटी जावेगी।।

१० - इस वास्ते हर एक जीव को, चाहे औरत होवे या मर्द, मुनासिब और लाज़िम है कि अपने निज घर में पहुँचने और अपने अंशी यानी सिंध स्वरूप से मिलने का जतन संत सतगुरु की जुगत के मुवाफ़िक़ ज़रूर करे, तो एक दिन परम आनन्द को प्राप्त होगा और दुनिया और देह के बंधन से छुटकारा हो जावेगा।।

११ - इस कार्रवाई से अभ्यासी को दुनिया में भी उसका दुख सुख कम व्यापेगा और आशक्ति भी उसमें आहिस्ते आहिस्ते कम होती जावेगी और अख़ीर वक़्त पर अपने निज घर की तरफ़ सुखाला जावेगा यानी दुनियादारों के मुवाफ़िक़ उसको तकलीफ़ न होवेगी, क्योंकि वह जीते जी उस रास्ते को, जिस पर मौत के वक़्त सब को जाना पड़ता है, थोड़ा बहुत साफ़ कर लेगा और अपने मालिक की दया और क़ुदरत को

अंतर में परख लेगा और अख़ीर वक़्त पर वह दया उस पर विशेष होवेगी और संत सतगुरु का दर्शन मिलेगा, यानी वे आप प्रकट होकर अभ्यासी की सुरत को अपनी गोद में बैठा कर ऊँचे और सुख स्थान में पहुँचा कर बासा देवेंगे।।

प्रकार पाँचवाँ

सुजाती यानी उत्तम को कुजाती यानी नीच से हट कर अपने हम-जौहर यानी महा उत्तम से मिलना चाहिये।।

१ - मालूम होवे कि सुरत जो ऊँचे से ऊँचे और कुल मालिक के देश की बासी है, वहाँ से उतर कर यहाँ देह में मन और इन्द्रियों का संग करके भोगों और पदार्थों और कुटुम्ब परिवार में बँध गई है और असल में इसका वही जौहर है जो कुल मालिक का जौहर है यानी यह उसी की ज़ात है लेकिन यहाँ अपने से कमतर दरजे के जीवों में और जड़ पदार्थों के साथ नाता जोड़ कर उनकी और अपने मन और देह की हालत बदलने में दुखी सुखी होती है और अक्सर वक़्तों पर निहायत दरजे की तकलीफ़ सहती है और यह नतीजा[1] इसको ग़ैर-जिन्सों से मेल करने के सबब से मिला ।।

२ - मुनासिब तो यह था कि इस सुरत यानी जीव को शुरू में वक़्त सम्हालने होश के, ऐसी समझौती दी

१ - फल

जाती कि इस दुनिया में और जीवों और भोगों और पदार्थों के साथ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ यानी देह और गृहस्थ के गुज़ारे के मुवाफ़िक़ मेल और बर्ताव करे, और इसको पता और भेद उसके निज घर का, और भी इसके सच्चे माता पिता कुल मालिक राधास्वामी दयाल का, दिया जाता और जुगत चलने की समझाई जाती कि जिसके मुवाफ़िक़ यह उलटने का मज़बूत इरादा करके थोड़ा बहुत चलना शुरू कर देता तो अपने मालिक की गति और ताक़त और दया को अंतर में थोड़ा बहुत देख कर माया के जाल में न फँसता और अनमेल पदार्थों में आशक्ति करके उनकी हानि लाभ में विशेष दुख सुख न भोगता।।

३ - लेकिन इस दुनिया में किसी को खोज अपने निज घर और सच्चे करतार का नहीं है या बहुत कम है क्योंकि आम तौर पर सब जीव दुनिया के, विद्या पढ़ने या पेशा सीखने और सामान के जमा करने में अपना वक़्त ख़र्च करते नज़र आते हैं और कोई भी यह बात दरियाफ़्त नहीं करता कि (१) - मैं कौन हूँ, (२) - कहाँ से आया हूँ, (३) - कौन मेरा मालिक और करतार है, (४) - यह कौन देश है और (५) - यहाँ किस तरह से बर्तावा और क्या कार्रवाई करना चाहिये कि जिससे यहाँ और बाद छोड़ने देह और इस देश के, सुख मिले और बारम्बार जन्मने और मरने से बचाव हो जावे।।

४ - इस सबब से दुनिया में भूल और भर्म और काल और कर्म का ज़ोर भारी रहता है और कसरत से जीव दुखी रहते हैं और उस दुख में कोई उनका सच्चा सहाई और मददगार नहीं हो सकता।।

५ - इस वास्ते संत सतगुरु दया करके फ़रमाते हैं कि सब जीवों को अपने निज घर का भेद लेकर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करके थोड़ा बहुत चलना, उस तरफ़ को, ज़रूर और मुनासिब है और सब जीवों को जानना चाहिये कि वे कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस हैं और निज देश उनका पिंड और ब्रह्मांड के पार है और उसी को दयाल देश अथवा सत्त पुरुष राधास्वामी धाम कहते हैं, वहीं से आदि में सुरत की धार उतर कर पहिले ब्रह्मांड में और फिर पिंड में आकर ठहरी है और यहाँ अनेक इंद्रियों के विषयों का भोग करके और उनके रस की चाट पाकर बँध गई है। सो जब तक कि भेद अपने निज घर और रास्ते का मालूम न होगा और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके उस रास्ते को तै करना शुरू न किया जावेगा, तब तक माया के जाल और देहियों के बंधन से छुटकारा मुमकिन नहीं है और न निज घर अथवा परम पद की प्राप्ति मुमकिन है जोकि हमेशा एक-रस क़ायम रहता है और सर्व सुख का भंडार है।।

६ - यह भेद और जुगत चलने की संत सतगुरु और उनकी संगत से मालूम हो सकती है। इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है कि तलाश करके उनसे मिले और सतसंग और सेवा करके उनकी दया हासिल करे और उपदेश लेकर अभ्यास जिस क़दर बन सके, शुरू करदे और अपना इरादा राधास्वामी धाम में पहुँचने का मज़बूत बाँधे, तो मेहर और दया से उसका आहिस्ते आहिस्ते काम बनता जावेगा और एक दिन

ग़ैर-जिन्स की रचना के देश से हट कर अपने सच्चे माता पिता के धाम में बासा पावेगा।।

७ - जो संत सतगुरु से जल्दी मेला न होवे तो जो कोई उनका मेली और प्रेमी सतसंगी मिल जावे, तो उससे भेद और जुगत दरियाफ़्त करके वक़्त के संत सतगुरु की दया के आसरे कार्रवाई शुरू कर देना मुनासिब होगा और जो शौक़ सच्चा और पूरा होगा तो मौज से किसी वक़्त में उनसे भी मेला हो जावेगा या वे अपनी दया से उसको वहीं अंतर में दर्शन देकर अपने चरनों का प्रेम बख़्शेंगे और जिस तरह मुनासिब होगा उसकी सम्हाल करेंगे।।

८ - सब जीवों पर फ़र्ज़ है कि जो सवाल तीसरी दफ़ा में लिखे हैं, उनका जवाब यानी उनके मुवाफ़िक़ भेद सन्त मत का दरियाफ़्त करके खोज संत सतगुरु और उनकी संगत का लगाते रहें और जहाँ और जब पता मिल जावे, तब उनसे मिल कर जिस क़दर करनी मुनासिब होवे और बन सके, शुरू कर दें।।

९ - जो कि सुरत ऊँचे से ऊँचे देश की बासी और इसकी ज़ात यानी जौहर ऐन कुल मालिक की ज़ात या जौहर के मुवाफ़िक़ है, इस वास्ते इस को लाज़िम और मुनासिब है कि अपने असल की तरफ़ रुजू करे और ग़ैर ज़ात और ग़ैर-जिन्स से, जो कि अपने से निहायत नीचे दरजे की रचना में दाख़िल है, सिवाय ज़रूरत मात्र के मेल और मुहब्बत न करे, नहीं तो संग दोष करके इसका उतार नीचे के दरजों में होता चला जावेगा और दिन दिन इसकी चैतन्यता घटती जावेगी और निज घर दूर होता जावेगा और उसी क़दर दुख

ज़्यादा और जन्म मरन जल्द जल्द भोगना पड़ेगा और जो अपने असल की तरफ़ रुजू करेगी तो कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की मेहर से आहिस्ता आहिस्ता ऊँचा और विशेष सुख का स्थान मिलता जावेगा, आख़िर को निज धाम में पहुँच कर अमर आनन्द को प्राप्त होगी।।

१० - दुनिया में भी दस्तूर है कि हर एक अपनी ज़ात वालों से मेल रखता है और अपने से ऊँचे दरजे वालों से मिलने की ख़्वाहिश उठा कर उसके पूरे होने के निमित्त जतन करता है और ख़र्च करने को भी ख़ुशी से तैयार होता है लेकिन अपने से कम ज़ात या नीचे दरजे वालों से मिलना और उनके संग बैठना उठना और खाना पीना और शादी व्योहार वग़ैरा कोई नहीं मंज़ूर करता, फिर किस क़दर अफ़सोस और ताज्जुब की बात है कि सुरत जो कुल मालिक की अंश यानी बच्चा है, वह इस नाक़िस देश यानी मृत्यु लोक में निहायत ओछे जीवों और जड़ पदार्थों से मेल और मुहब्बत करे और उनके संग नित्त दुख और तकलीफ़ उठावे और अपना दरजा ज़्यादा से ज़्यादा घटाना मंज़ूर करे और अपने निज घर और सच्चे माता पिता कुल मालिक को इस क़दर भूल जावे कि उसका कभी ख़्याल भी न करे, और जो कोई याद दिलावे, उससे हुज्जत और तकरार करने को तैयार होवे और मूर्खता की हठ करके बचन न माने। यह भारी भूल और भरम जैसा कि ऊपर लिखा गया है, सिर्फ़ संत सतगुरु के बचन और बानी सुन कर और उनका सतसंग और सेवा करके दूर हो सकते हैं।।

* * * * *

प्रकार छठवाँ

कुटुम्बी मौत के वक़्त मालिक के नाम की याद दिलाते हैं, लेकिन जब कि उमर भर धन और स्त्री वग़ैरा में फँसे रहे, तो उस वक़्त मालिक का नाम कैसे याद आ सकता है, इस वास्ते जीते जी मालिक का नाम लेना और उसके चरनों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाना मुनासिब है।।

१ - सब मुल्कों में और सब क़ौमों में दस्तूर है कि मौत के वक़्त कुटुम्बी और दोस्त आशना और पुरोहित और पंडित और भेष और पादरी और मौलवी जो मौजूद होवें, सब मिल कर मरने वाले से यही कहते हैं कि अब कुटुम्ब परिवार और धन माल का मोह छोड़ कर अपना चित्त मालिक के चरनों में लगाओ और नाम लो और साफ़ यह कहते हैं कि इस वक़्त हमारी तरफ़ तवज्जह मत करो। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि अख़ीर वक़्त का सहाई और मददगार सिवाय मालिक के और कोई नहीं समझा जाता है और दुनिया और दुनियादारों की तरफ़ अख़ीर वक़्त पर तवज्जह लाने से मरने वाले का बहुत नुक़सान होता है।।

२ - लेकिन ग़ौर का मुक़ाम है कि जो कोई उमर भर कुटुम्ब परिवार और धन माल का संग और उन्हीं में प्रीति करता रहा, तब अख़ीर वक़्त पर जब कि अंग अंग और रग रग में से जान निकल कर ऊपर यानी सिर की तरफ़ खिंचेगी, किस तरह सब का मोह

यकायक छूट कर मालिक के चरनों में भाव और प्यार पैदा हो सकता है। ज़ाहिर है कि मरने वाला, मुवाफ़िक़ कहने सब लोगों के, जो किसी क़दर होश रहा तो नाम लेता है, लेकिन दिल पर उसके दुनिया और देह और कुटुम्ब परिवार के छोड़ने का सख़्त सदमा गुज़रता है जिस का हाल और कोई नहीं जान सकता।।

३ - इस वास्ते सन्त फरमाते हैं कि हर एक शख़्स को, चाहे औरत होवे या मर्द, अपने जीव के कल्यान के वास्ते लाज़िम और फ़र्ज़ है कि अपनी ज़िन्दगी में बाद होश सम्हालने के जिस क़दर जल्दी मुमकिन होवे, सच्चे कुल मालिक का पता और भेद घट में दरियाफ़्त करके उसके चरनों में थोड़ी बहुत प्रीति करना शुरू करे और अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का जोकि राधास्वामी दयाल ने उपदेश किया है और जोकि हर एक से यानी औरत और मर्द, लड़के जवान और बूढ़े से, आसानी से और बे-ख़तरे बन सकता है, थोड़ा बहुत जारी करदे, तो वक़्त किसी तकलीफ़ के, जीते जी इस देह में, और भी मरने के वक़्त, उसको अपनी सहायता होती हुई मालूम पड़ेगी और प्रीति और प्रतीत चरनों में बढ़ती जावेगी और मौत का कष्ट और क्लेश नहीं व्यापेगा, क्योंकि यह अभ्यास रूह या सुरत के ऊपर की तरफ़ चढ़ाने का है, जैसे कि मरते वक़्त खिंचाव होता है, सो जो कोई इस काम को जीते जी शुरू कर देगा, उसको अख़ीर वक़्त पर जब कि क़ुदरती खिंचाव होगा, अपने अभ्यास में बहुत मदद मिलेगी और मालिक की दया का जलवा या प्रकाश अंतर में नज़र पड़ेगा कि जिसके सबब से रूह या सुरत मगन होकर उमंग के साथ घट

में चढ़ेगी और सहज में बे-तकलीफ़ देह को छोड़ देगी।।

४ - मालूम होवे कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके भेजे हुए सन्तों ने जो अभ्यास जारी फ़रमाया, उसका मतलब यही है कि जैसे सुरत, रूह, मरने के वक़्त अंग अंग से खिंच कर मस्तक की तरफ़ चलती और चढ़ती है और जब पुतली आँख की चढ़ जाती है या उलट जाती है, उस वक़्त देह का त्याग हो जाता है, सो उसी तरह अभ्यास करके खिंचाव और सिमटाव और चढ़ाव सुरत का आहिस्ते आहिस्ते रोज़मर्रा होता जाता है, और जिस क़दर यह कार्रवाई दुरुस्त बनती जाती है उसी क़दर सुरत के सिमटाव और चढ़ाई का रस और आनंद अंतर में मिलता जाता है और स्वरूप और प्रकाश का दर्शन करके और शब्द की धुन सुन कर शौक़ बढ़ता जाता है और सुरत, रूह, मगन होकर ज़्यादा से ज़्यादा चढ़ाई चाहती रहती है और जोकि मौत के वक़्त यह चढ़ाई और खिंचाव क़ुदरती तौर पर ज़ोर के साथ होवेगा, इस वास्ते सुरत को उस वक़्त गहरी मदद वास्ते चढ़ाई के मिलेगी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल अपने निज स्वरूप यानी शब्द रूप से और सतगुरु दीन दयाल अपने सूक्ष्म स्वरूप से दर्शन देकर सुरत को निहायत प्यार से अपनी गोद में बैठा कर ऊँचे और सुख स्थान में लेजा कर बासा देवेंगे।।

५ - ज़ाहिर है कि सुरत का बंधन देह और दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास में दुनियादारों के संग के सबब से हुआ है और जो यही संग उमर भर

रहा तो यह बंधन बहुत मज़बूत हो जावेगा कि जिसका तोड़ना या छोड़ना अखीर वक्त़ पर निहायत मुशकिल होगा और जो कि काल सब बंधनों को तोड़ कर सुरत को देह में से निकालेगा, उस वक्त़ भारी तकलीफ़ अंदर में मरने वालों को मालूम पड़ेगी। इस वास्ते मुनासिब है कि जैसे और काम दुनिया के किये जाते हैं, ऐसे ही थोड़ा सा काम परमार्थ का भी संग २ किया जावे कि जिससे संसारी बंधन थोड़े बहुत ढीले होते रहें और मालिक के चरनों में प्रीति और प्रतीत पैदा होकर आहिस्ते आहिस्ते बढ़ती जावे तो अख़ीर वक्त़ पर मौत का कष्ट और कलेश कम व्यापेगा या बिल्कुल नहीं मालूम होवेगा और बजाय उसके अंतर में किसी क़दर रस और आनन्द मिलेगा और आइन्दे को सुख स्थान में बासा पावेगा।।

६ - जबकि यह बात साबित है कि भारी दुख और तकलीफ़ और चिन्ता और भी मौत के वक्त़ कोई शख़्स किसी का सहाई और मददगार नहीं हो सकता, फिर जीवों को लाज़िम पड़ा कि जीते जी सच्चे सहाई और मददगार का खोज करके उसका सच्चा और पूरा आसरा और भरोसा धारण करें, और ऐसा सच्चा और पूरा सहाई और मददगार सिवाय कुल मालिक राधास्वामी दयाल के दूसरा नहीं हो सकता, इस वास्ते उनके धाम और चरनों का भेद लेकर जो जुगत चलने को उन्होंने बताई है, उसका साधन शुरू करके उनके चरनों की सरन मज़बूत करें तो जीते जी उनकी दया की नज़र और परख आवेगी और फिर प्रीति और प्रतीत भी बढ़ती जावेगी, इस तरह कारज जीव का दुरुस्त बन जावेगा।।

७ - अक़्लमंद और विचारवान जीवों को मुनासिब है कि जो काम उनको अख़ीर में करना पड़ेगा, उसको पहिले ही से आहिस्ते आहिस्ते करना शुरू करें यानी जैसे उनके कुटुम्बी उनसे अख़ीर वक़्त पर अपना मोह तोड़ते हैं और उनसे भी मोह तोड़ने को कहते हैं और यह समझौती देते हैं कि अब मालिक के चरनों में चित्त लगाओ, तो चाहिये कि पहिले ही से एहतियात करें कि गहरा बंधन किसी में न होवे और मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्यार और भाव पैदा करके उसको आहिस्ते आहिस्ते बढ़ाते जावें तो तकलीफ़ से बचाव मुमकिन है और जो ऐसा नहीं करेंगे तो अख़ीर वक़्त पर भारी सदमा और झटका सहना पड़ेगा और अपनी ज़िन्दगी के स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़ फिर देह धारन करके और उन्हीं बंधनों में गिरफ़्तार होकर बारम्बार उसी किस्म के दुख और तकलीफ़ें सहनी पड़ेंगी।।

८ - यह दुख और तकलीफ़ें सिर्फ सन्तों के सतसंग और उनकी बानी के समझ समझ कर पाठ करने से, और भी उनकी जुगती के अभ्यास से दूर हो सकती हैं। इस वास्ते हर एक को जो अपना बचाव और आराम चाहे, राधास्वामी दयाल के सतसंग में जहाँ सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास इस वक़्त में जारी है, शामिल होकर अपने जीव के कल्यान के वास्ते कार्रवाई करना चाहिये। पिछले संतों के घराने में सिवाय ज़ाहिरी पूजा और पाठ के कोई अंतर की कार्रवाई जारी नहीं है और न उसके भेद और अभ्यास की जुगती से कोई वाक़िफ़ नज़र आता है।।

प्रकार सातवाँ

दुनिया के सब आसरे जिनको तुमने दृढ़ करके पकड़ा है, नाशमान और झूठे हैं। इस वास्ते सच्चे और पूरे और सर्व समर्थ का आसरा लेना चाहिये कि जो हर वक़्त अंग संग रह कर सहायता और मदद कर सकता है और दुनिया के आसरे अक्सर वक़्त ज़रूरत के दग़ा देने वाले हैं।।

१ - दुनिया में हर एक शख़्स किसी न किसी दुनिया के सामान या चीज़ का या किसी दूसरे जीवों का सहारा लेकर अपने मन में आशा बाँधता है कि वह वक़्त ज़रूरत के काम आवेंगे, जैसे अपने गुण और बल और हुकूमत का या धन और माल और असबाब और जायदाद और हथियारों और औज़ारों वग़ैरा का और ज़ात पाँत का या किसी दोस्त और मेली हाकिम या साहूकार या हकीम और वैद्य और वकील का और औलाद और कुटुम्बी और रिश्तेदारों और बिरादरी का सहारा और भरोसा हर एक के मन में बना रहता है लेकिन यह सब आसरे अक्सर वक़्तों में कुछ भी काम नहीं देते या दग़ा दे जाते हैं और ख़ास कर सख़्त बीमारी और भारी सदमे और मौत के वक़्त तो इनमें से कोई भी किसी तरह की मदद और सहायता नहीं कर सकता है।।

२ - यह सब दुनिया के सहारे आर्ज़ी यानी नाशमान हैं और हरचन्द बहुत से दुनिया के छोटे कामों में किसी

क़दर काम आते हैं, लेकिन वक़्त सख़्त मुसीबत के सिवाय कुल मालिक और सन्त सतगुरु के और कोई सच्ची और पूरी सहायता नहीं कर सकता ।।

३ - हाल यह है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त और सिंहासन हर एक जीव के निज घट में मौजूद है और जो जीव सन्त सतगुरु का उपदेश लेकर और मालिक का भेद मालूम करके उसके चरनों में अपने अंतर में प्रार्थना करता है और सुरत शब्द जोग का अभ्यास करके और थोड़ा बहुत सिमट कर और ऊँचे की तरफ़ चढ़ कर नित्त चरनों का स्पर्श करता है, वह वक़्त मुसीबत के जब अपने मन और सुरत को अंतर में मामूल के मुवाफ़िक़ लगाकर चरनों में, राधास्वामी दयाल के, प्रार्थना करेगा तो ज़रूर उसको थोड़ी बहुत शान्ति आवेगी और फिर वही जतन चंद बार करने से ज़्यादा सहारा अंतर में मिल सकता है।।

४ - इसी तरह जिस किसी को भाग से संत सतगुरु मिल गये हैं और वह जब उनके सन्मुख जाकर अपनी ख़ास तकलीफ़ या मुसीबत का हाल अर्ज़ करे या यह कि मन ही मन में अर्ज़ करे और बाहर कुछ न बोले तो उनके दर्शन और बचन और चरन स्पर्श से इसको किसी क़दर सहारा और शान्ति हासिल हो सकती है और इसी तरह दूरी की हालत में उनकी बानी और बचन मुनासिब वक़्त के पढ़ने और ग़ौर करके समझने से भी किसी क़दर सहारा और मदद मिल सकती है।।

५ - लेकिन इस बात का ख़्याल रखना चाहिये कि जो जीव कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत

सतगुरु की सरन में आये हैं और जिनको उन्होंने दया करके अपनाया है तो जो कुछ कि हालत ऐसे जीवों पर सख़्ती और नरमी और आराम और तकलीफ़ वग़ैरा की गुज़रती है, वह मौज से पैदा होती है और वे उस हालत से अपने जीव के किसी वक़्त बे-ख़बर नहीं हैं। फिर जब तक ऐसी हालत रखनी मंज़ूर है या जैसी मौज उस जीव की निस्बत हो रही है, उसी में उसका फ़ायदा और भलाई है और चाहे प्रार्थना करने या अर्ज़ हाल करने से या और क़िस्म के इलाज मुआलजा करने से थोड़ा बहुत इफ़ाक़ा और सहारा मिल जावे, पर जब तक कि वह मौज नहीं बदलेगी तब तक पूरा फ़ायदा और सहारा नहीं मिलेगा।।

६ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु जब कभी अपने भक्तों पर उनके परमार्थी फ़ायदे की नज़र से कोई तकलीफ़ ख़ास भेजते हैं, तब भी उसमें दया का हाथ संग रहता है यानी उन जीवों को ऐसी सख़्त तकलीफ़ नहीं होगी कि जिससे वे घबरा कर व्याकुल और निरास हो जावें और कुछ भी अपना मामूली परमार्थी काम न कर सकें, सिवाय उस हालत के कि जब उनका अख़ीर वक़्त आ पहुँचा है, उस वक्त अल्बत्ता बीमार की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ पूरा सहारा नहीं मिलेगा यानी तक़लीफ़ और बीमारी वग़ैरा दूर नहीं होगी। पर उसका असर कम व्यापेगा और अख़ीर वक़्त पर अंतर में मदद और सहारा पूरा मिलेगा।।

७ - मालूम होवे कि दुनिया के कामों में क़ायदे और दस्तूर के मुवाफ़िक़ तदबीर करना और जिसकी मार्फ़त कोई कारज सिद्ध होवे, उससे मदद चाहना, हर हाल

में ज़रूर है लेकिन परमार्थी शख़्स को चाहिये कि हमेशा मौज को निहारता रहे और जो कि राधास्वामी दयाल कुल के प्रेरक हैं तो कोई काम बिना उनकी प्रेरना और दया के न तो अपनी तदबीर से दुरुस्त हो सकता है और न दूसरे से जैसी मदद चाहिये, मिल सकती है। इस वास्ते परमार्थी को हमेशा अंतर में दया और मौज का आसरा और भरोसा रखना मुनासिब है और ज़ाहिर में तदबीर मुनासिब, और भी दूसरे शख़्सों की मदद, से कार्रवाई करना चाहिये। इस तरह से जो कोई परमार्थी शख़्स बर्ताव करेगा, उसको कभी रंज नहीं होगा क्योंकि वह किसी काम में सिवाय मालिक की दया के दूसरे का आसरा अपने मन में नहीं बाँधेगा और जब कभी कोई काम मर्जी के मुवाफ़िक़ दुरुस्त न होगा, तब किसी की शिकायत या किसीसे ग़ुस्सा नहीं करेगा, अपने मालिक की मौज समझ कर उसके साथ जिस क़दर बनेगा, मुवाफ़िक़त करेगा।।

८ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल अपने सच्चे भक्तों की हर तरह से सम्हाल फ़रमाते हैं और जो काम उनके संसारी और परमार्थी दर-पेश होवें, उनमें जो दया और मदद दरकार होवे, करते रहते हैं यानी अपने भक्त के काम वक़्त मुनासिब पर आप पूरे करते हैं या जिस जीव से बतौर औज़ार के उनका कराना मुनासिब है, उस को प्रेर कर वह काम फ़ौरन दुरुस्त कराते हैं। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को हर हाल में उनकी दया और मौज का भरोसा दृढ़ रखना चाहिये और ज़ाहिर में जो कार्रवाई मुनासिब या ज़रूरी मालूम पड़े, वह भी दस्तूर के मुवाफ़िक़ करना चाहिये।।

९ - जो कि मालिक की मौज ऐसी है कि वह अपनी दया और मौज की कार्रवाई गुप्त रखना चाहता है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी को लाज़िम है कि जो दया उस पर होवे या जो काम उसकी मौज और दया के आसरे दुरुस्ती से अंजाम पावें, उनका ज़िक्र खोल कर किसी के सामने न करे और अपने मन ही मन में शुक्र अदा करे। अलबत्ता किसी ख़ास मौक़े और वक़्त पर इस क़िस्म का ज़िक्र इशारे के साथ सच्चे परमार्थी और प्रेमियों के रू-ब-रू करना मना नहीं है क्योंकि वे भी ऐसी दया और मौज का बर्ताव अपने कामों में निहारते रहते हैं।।

१० - मालिक हर दम हर एक जीव के संग है। जो संसारी हैं वह उससे और उसके भेद से बे-ख़बर हैं और हर काम में अपनी अक़्ल की तदबीर और तजवीज़ का या दूसरे आदमियों की मदद वग़ैरा का आसरा रखते हैं और इसमें वक़्त ना-कामयाबी के दुख और झटके सहते हैं और इसकी उसकी शिकायत करते हैं लेकिन जो सच्चे परमार्थी हैं और मालिक के भेद से वाक़िफ़ हैं और उसके चरनों में पहुँचने के लिये नित्त जतन करते हैं, वे अपने मन में ख़ूब समझते हैं कि बग़ैर मालिक की दया और प्रेरना के कुछ नहीं हो सकता है और इस वास्ते उसकी मौज के आसरे सब काम करते हैं और हमेशा दया की निरख और परख करते रहते हैं।।

११ - बग़ैर संत सतगुरु और मालिक के चरनों में भक्ति धारन करने के, ऐसी समझ बूझ और प्रीति प्रतीत कि जिससे मालिक के प्रकाश के निहारने की नज़र

आवे और उसकी मेहर और दया की परख हासिल होवे, कोई शख़्स उसके चरनों का आसरा और भरोसा दृढ़ नहीं कर सकता। इस वास्ते सब को चाहिये कि थोड़ा बहुत सतसंग करके भक्ति में क़दम रक्खें और जो जुगत यानी अभ्यास का, राधास्वामी दयाल ने उपदेश किया है, उसकी थोड़ी बहुत कार्रवाई करें तब उनकी नज़र दुनिया और दुनियादारों के आसरे और भरोसे से हट कर मौज और दया का भरोसा धारन करेगी और तब उस सुख और आनन्द की जो कि सच्चे भक्तों को हासिल होता है, क़दर मालूम पड़ेगी।।

प्रकार आठवाँ

संतों के दया पात्र जीव, और जीवों के मुवाफ़िक़ ब्रह्म और माया के देश में पैदा होकर परवरिश पाते हैं, और जब संत प्रकट होते हैं तब मौज से उन जीवों को अपने सन्मुख खींच कर बचन सुनाते और निज घर का भेद और रास्ता और चलने की जुगत समझा कर और मुनासिब करनी करा कर उनको निज धाम में पहुँचाते हैं।।

१ - जो जीव कि संत सरन में आये हैं या संतों से मिले हैं या जिनको संत चरन में थोड़ा बहुत भाव और प्यार आया है या जिनके मन में दुनिया का हाल देखकर कुल मालिक और उसके निज धाम का खोज

पैदा हुआ है और उसके प्राप्ति के जतन की तलाश है या जिन्होंने सुरत शब्द मार्ग की करनी थोड़ी बहुत संत सतगुरु या साध गुरु से उपदेश लेकर शुरू करदी है, यह सब जीव दया-पात्र समझे जाते हैं और जोकि निज धाम में उलट कर जाने का जतन और अभ्यास सिर्फ़ नर देही में बन सकता है, इस वास्ते इन जीवों को संत अपनी दया से इस दुनिया में भेज कर आप भी उनकी सम्हाल के वास्ते संसार में प्रकट होते हैं।।

२ - यह सब जीव दस्तूर के मुवाफ़िक़ इस दुनिया यानी ब्रह्म और माया के देश में पैदा होते हैं और जब वे होशियार और समझ बूझ के लायक़ हो जाते हैं, तब सबेर अबेर संत उनको अपनी मेहर से संजोग मिला कर अपने सन्मुख बुला लेते हैं और अपने अमृत रूपी बचन अनुराग और बैराग और भेद और करनी वग़ैरा के सुना कर आहिस्ते आहिस्ते उनकी परमार्थी कार्रवाई में तरक़्क़ी फ़रमाते हैं।।

३ - यह जीव जिस क़दर संतों का सतसंग करते हैं और दर्शन और बचन और अभ्यास का रस लेते जाते हैं, उसी क़दर उनकी प्रीति और प्रतीत चरनों में संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और सुरत शब्द मार्ग के, बढ़ती जाती है और दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास से उनकी तबीयत किसी क़दर हटती जाती है।।

४ - संसारी लोग जिनकी विशेष प्रीति दुनिया और उसके ब्यौहार वग़ैरा में है और स्त्री, पुत्र और धन माल में जिनका बंधन ज़बर है और जोकि इस दुनिया और उसके सामान की तरक़्क़ी और मान बड़ाई वग़ैरा की

चाह उठा कर रात दिन मेहनत करते हैं, संतों के दया-पात्र यानी सतसंगी जीवों की चाल ढाल देख कर अचरज करते हैं और घबराते हैं कि किस तरह उनके मन में संसार का सामान और भोग बिलास ओछा नज़र आता है और कैसे उनको प्रीति संत सतगुरु में पैदा हो गई कि जिसके सबब से वे सिवाय उनके सतसंग के और दूसरी सोहबत पसन्द नहीं करते और रोज़-बरोज़ सतसंगियों के प्रेम की तरक़्क़ी देख कर ख़ौफ़ खाते हैं कि कहीं वे घरबार छोड़ कर दुनिया से अलेहदा न हो जावें और इस वास्ते जो इन सतसंगियों के कुटुम्बी या रिश्तेदार या बिरादरी या दोस्त आशना हैं, वे सब मिल कर, वास्ते हटाने उनके, संतों के सतसंग से, अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ कोशिश करते हैं और उनको धमका कर और तरह तरह के डर दिखा कर सतसंग से हटाना चाहते हैं।।

५ - और जब संसारी लोग देखते हैं कि उनकी धमकी और डर दिखाने से सतसंगी ने अपनी परमार्थी कार्रवाई नहीं छोड़ी, तब वे अपनी ओछी और मलीन समझ के मुवाफ़िक़ तरह तरह की झूठी सच्ची बातें बना कर संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन और सतसंग की बुराई भलाई यानी निंदा स्तुति करते हैं जिससे उनका रिश्तेदार या कुटुम्बी या बिरादरी वाला अपनी बदनामी का ख़ौफ़ करके सतसंग से बैठ रहे और अपना अभ्यास छोड़ दे लेकिन जो कि संतों के कृपा पात्र जीवों पर ख़ास दया उनकी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की है, इस सबब से संसारी जीवों की निंदा स्तुति और धमकी सड़की को मूर्खता और नादानी का कारज समझ कर सतसंगी जीव जिनकी आँख दिन २ खुलती

जाती है, कुछ भी ख़याल में नहीं लाते, बल्कि कोशिश करते हैं कि यह नादान संसारी जीव भी परमार्थी क़दर जानें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की गत मत की थोड़ी बहुत परख करें और निंदा के पाप से बच कर और सतसंग में शामिल होकर अपनी ज़िंदगी को सुफल करें।।

६ - जो कोई इन संसारी जीवों में से थोड़ा बहुत ख़ौफ़ मौत और चौरासी और नरकों के दुक्खों का लाता है वह सतसंगियों के बचन सुन कर उनका थोड़ा बहुत सतसंग करने को तैयार हो जाता है और बाक़ी के जीव अपनी कार्रवाई को वास्ते हटाने सतसंगी जीव के परमार्थ और सतसंग से, निष्फल देख कर क्रोध करते हैं और संत सतगुरु और उनके सतसंग से बे-वास्ते विरोध और दुश्मनी करने लगते हैं और जो कोई आदमी संसारी या परमार्थी उनसे मिले तो उनसे सख़्त निंदा के बचन और झूठी बातें बना कर कहते हैं कि जिससे उनका मन परमार्थ से बिलकुल फिर जावे और संत सतगुरु और उनके प्रेमियों की चाल ढाल से नफ़रत करने लगे।।

७ - हरचंद यह निंदक अपनी मूर्खता से सतसंग से अपने मन में विरोध बढ़ाते हैं और नये और कच्चे जीवों का अकाज कर देते हैं और तरह तरह की उपाधि सतसंग में ख़लल डालने की नज़र से उठाते रहते हैं, पर जो जीव कि मेहरी हैं उनका ज़रा भी नुक़सान नहीं कर सकते; क्योंकि संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया उनको भूल और भरम और धोखे की जगह से बराबर बचाती रहती है और यह

लोग उन सच्चे परमार्थी जीवों का ज़रा भी नुकसान नहीं कर सकते बल्कि निंदा और विरोध करने से अपने सिर पर पाप चढ़ाते हैं।।

८ - सिवाय संसारी और मूरख जीवों और निंदकों के मन और माया और काल भी तरह तरह के विघ्न परमार्थी जीवों के भक्ति और अभ्यास की कार्रवाई में डालते हैं, अनेक तरह के भरम और संशय निस्बत संत सतगुरु और उनके सतसंग और सुरत शब्द मार्ग के पैदा करके सतसंगियों के चित्त में उद्वेग और नाक़िस ख़याल वक़्त २ पर पैदा करते हैं पर राधास्वामी दयाल और सतगुरु की दया हर वक़्त सच्चे परमार्थी जीवों के मन और बुद्धि और चित्त वग़ैरा की सम्हाल रखती है कि जिससे वह क़तई भरमने न पावें बल्कि जिस क़दर निंदा वग़ैरा सुन कर अपने मत को ग़ौर से विचारें, उसी क़दर ज़्यादा रोशनी उनके हिरदे में पैदा होती है और चरनों में प्रीति और प्रतीत बढ़ती है और ज़्यादा उमंग के साथ भक्ति और सुरत शब्द अभ्यास की कार्रवाई करते हैं।।

९ - इन विघ्नों के वाक़ै होने से सतसंगी जीवों को ज़्यादा समझ, बारीकी और बड़ाई राधास्वामी मत की आती है और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया और मेहर ज़्यादा से ज़्यादा नज़र पड़ती है और उनकी ताक़त वास्ते हटाने विघ्नों और संसारी अंगों के दिन २ बढ़ती जाती है और मन और माया आहिस्ते २ ज़ईफ़ और कमज़ोर होते जाते हैं और प्रेम और विश्वास चरनों में बढ़ता जाता है।।

१० - ऐसे फ़ायदे हासिल होते हुए देख कर प्रेमी सतसंगी निंदकों की निंदा और मन और माया के विघ्नों को मेहर और दया का औज़ार वास्ते अपनी तरक़्क़ी के समझ कर उनसे ज़रा भी नहीं डरते बल्कि अपनी परमार्थी कार्रवाई के अंजाम देने में ज़्यादा शौक़ के साथ मशग़ूल होते हैं यानी दिन २ अपनी भक्ति और अभ्यास को बढ़ाते जाते हैं और राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ता के साथ मज़बूत करते जाते हैं और हर जगह और हर वक़्त दया और सहायता अपने अंग संग देख कर मगन होते हैं और निःचिन्त रहते हैं।।

११ - जिस क़दर जीव कि संतों के दया पात्र हैं वह चाहे जहाँ, नज़दीक या दूर देश में, पैदा होवें लेकिन उनका किसी तरह संजोग उनके चरनों में हाज़िर होने का लग जाता है और सब संत सतगुरु से मिल कर और उनका सतसंग कर २ अपना परमार्थी भाग बढ़ाते हैं।।

१२ - और फिर जहाँ और जिस क़ौम और क़बीले में यह जीव पैदा हुए हैं वहाँ इनकी मार्फ़त बहुत से नये जीवों पर असर संतों के परमार्थ का पहुँचता है और जो जीव कि सतोगुनी हैं, वे जल्द खिंच आते हैं और सतसंग करके सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में लग जाते हैं। फिर जहाँ २ इन जीवों का रिश्ता और मेल है, इनके वसीले से, और २ नये जीवों के हिरदे में बीजा परमार्थ का बोया जाता है, इस तरह तादाद जीवों की जो कि संतों के परमार्थ में शामिल होते हैं, दिन २ बढ़ती जाती है।।

१३ - संत मत में किसी जीव को धमका कर या लालच दिखा कर या बहका फुसला कर शामिल नहीं किया जाता, सिर्फ़ बचन सुना कर और उसकी समझ बूझ बढ़ा कर उसके हिरदे में भक्ति और प्रेम सच्चे मालिक के चरनों का बसाया जाता है और फिर अभ्यास करके वह प्रेम दिन २ बढ़ता जाता है और अंतर की आँख खुलती जाती है।।

१४ - वही जीव बड़भागी हैं जो कर्म धर्म और भर्म से हट कर और दुनिया के परमार्थ को असार देख कर और संसारी जीवों और लोक लाज का ख़ौफ़ न करके राधास्वामी दयाल की सरन में आवें और संत सतगुरु अथवा साध गुरू और उनके प्रेमी जन का संग करके दिन २ चरनों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाते जावें। वही जीव सतगुरु की दया और मेहर निहारते हैं और शुकराना करके अपने भागों को सराहते हैं और दिन २ प्रेम बढ़ा कर एक दिन निज धाम में बासा पाते हैं।।

प्रकार नवाँ

दुनिया में जहाँ जिसका प्यार है, वहीं उसका चित्त जाता है और चित्त के साथ वह आप मौजूद है। जो दुनिया से छूटना चाहे, उसको चाहिये कि अपने चित्त को प्यार के साथ कुल मालिक राधास्वामी के चरनों में बारम्बार जोड़े तो जितनी देर ऐसा अभ्यास

करेगा, उतनी देर को उसका मालिक के चरनों में संग रहेगा और फिर इस संग को आहिस्ते आहिस्ते बढ़ाते जाना चाहिये।।

१ - चित्त असल में सुरत का सीस या मुख है। जिस तरफ़ यह जाता है, उसी तरफ़ जीव का आपा और मन वग़ैरा भी खिंच जाते हैं और बोल चाल में लोग इसको ध्यान, ख़याल और तवज्जह कहते हैं।।

२ - अब ख़याल करो कि जिस तरफ़ किसी का चित्त जाता है, वह सर्व अंग से उधर की तरफ़ मुतवज्जह हो जाता है और हरचंद कि आँख और कान खुले हैं, पर वह कुछ नहीं देखता है और न कोई बचन जो उस वक़्त उससे कहा जावे, सुनता है।।

३ - जबकि चित्त का ऐसा हाल है, तब जो कोई इसको मालिक के चरनों में लगावे तो जितनी देर कि ऐसी हालत रहेगी, उतने अरसे तक चित्त चरनों में रहेगा और उस वक़्त दुनिया और उसके ख़यालों से न्यारा हो जावेगा।।

४ - इस कार्रवाई को अमल में लाने के वास्ते दो बात की ज़रूरत है, एक तो मालिक का भेद जानना कि वह और उसका धाम घट में कहाँ है, और उसके चरन का भेद क्या है, दूसरे किस तरह चित्त को चरनों में लगाना चाहिये, इसी को अभ्यास की जुगत कहते हैं।।

५ - सब लोग और सर्व मत कहते हैं कि मालिक सब जगह है और जो वह सब जगह है तो हमारे पिंड

यानी घट में भी ज़रूर मौजूद है और जहाँ उसका सिंहासन है, वहीं उसका धाम है।।

६ - अब मालूम होवे कि मालिक का तख़्त ऊँचे से ऊँचे स्थान में मन और माया की हद्द के पार है जहाँ से आदि में रचना का ज़हूर हुआ और आदि ज़हूरा कुल मालिक का शब्द यानी आवाज़ है। राधास्वामी मत में भेद मंज़िलों यानी स्थानों का खोल कर वर्णन किया है।।

७ - जीव यानी सुरत जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंश है, आदि धाम से उतर कर और ब्रह्मांड की रचना से गुज़र कर पिंड में उसके नाके पर जिसको तीसरा तिल कहते हैं, बैठी है और वहाँ से दो धारें दोनों आँखों के तिल में आकर ठहरी हैं और यहाँ से देह और दुनिया की कार्रवाई करती हैं। इसी स्थान से उसका उलटना, चित्त को चरनों में लगाने से मुमकिन है।।

८ - इस स्थान के नीचे पिंड है जिसमें छः चक्र हैं और यह स्थान छठे चक्र का है।।

९ - इसके ऊपर ब्रह्मांड है जिसमें तीन मुक़ाम हैं।।

१० - ब्रह्मांड के परे महासुन्न का मैदान है और उसके परे दयाल देश है और वहीं कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त है।।

११ - जितने स्थान कि छठे चक्र यानी तीसरे तिल और राधास्वामी धाम के बीच में हैं, वहाँ हर एक स्थान

पर अभ्यासी के वास्ते राधास्वामी दयाल का स्वरूप और चरन मौजूद हैं।।

१२ - जो कोई सतगुरु से भेद लेकर अभ्यास शुरू करे, वह स्वरूप या चरन का ध्यान हर एक मुक़ाम पर करता हुआ सत्तलोक तक अपने चित्त को पहुँचा सकता है और जितनी देर कि वह इस ध्यान में मशग़ूल रहे और दूसरा कोई ख़्याल उसके मन में न आवे तो उतनी देर उसका चित्त उसी स्थान पर जहाँ कि वह ध्यान लगा रहा है, ठहरेगा और उसके साथ उसका आपा भी वहीं मौजूद होगा और उस वक़्त दुनिया और देह से किसी क़दर अलेहदगी हो जावेगी।।

१३ - जो यह अभ्यास थोड़ी २ देर के वास्ते जैसे पाँच सात या दस मिनट किया जावे तो यक़ीन है कि उतनी देर गुनावन या कोई दुनिया का ख़याल अभ्यासी के मन में नहीं पैदा होगा और उतने अरसे का निर्मल ध्यान उससे बन पड़ेगा। इसी तरह दिन रात में जितनी दफ़े याद आजावे और यह ध्यान किया जावे तो उसका बहुत फ़ायदा अभ्यासी को मालूम होवेगा और यह काम आसानी के साथ हर एक शख़्स से और हर जगह और हर वक़्त बन सकता है।।

१४ - जो कोई शब्द का अभ्यास करे तो वह एक या दो मुक़ाम तक अपनी सुरत को तान सकता है और जो किसी को भाग से ऊँचे के मुक़ामों की आवाज़ें सुनाई देवें तो आगे भी अपनी सुरत को बढ़ा सकता है लेकिन यह बात किसी ख़ास २ सतसंगी को जो भारी संस्कारी है, हासिल हो सकती है। लेकिन ध्यान की

मदद से कम दरजे के संस्कारी जीव भी अपनी सुरत को किसी क़दर ऊँचे मुक़ामों तक पहुँचा सकते हैं।।

१५ - जो कोई ध्यान के साथ अपने चित्त को चरनों में जोड़ेगा और यह अभ्यास दिन रात में कई बार शौक़ के साथ करेगा तो उसके मन और सुरत का मुख्य अंग ऊँचे के मुक़ामों में बार २ फेरा करने से निर्मल और निश्चल होता जावेगा और कोई अरसे के बाद हालत ऐसे अभ्यासी की बदलती जावेगी यानी चरनों में राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के प्रेम बढ़ता जावेगा और संसार की तरफ़ से चित्त उदास होता जावेगा और फिर शब्द का अभ्यास भी ज़्यादा दुरुस्ती और आसानी से बन पड़ेगा।।

१६ - जो किसी को फ़ुरसत कम होती है या उसके मन में वक़्त अभ्यास के गुनावन या ख़याल बहुत उठते हैं तो उसको ज़रूर चाहिये कि वह दिन रात में दस या बारह दफ़े ध्यान पाँच पाँच मिनिट या सात मिनिट करे। उतने अरसे में गुनावन या दूसरा ख़याल दिल में नहीं पैदा होगा और यह अभ्यास हर वक़्त और हर जगह बैठे बैठे और लेटे लेटे और तनहाई में और भीड़ भाड़ में, और भी काम काज करते वक़्त, ज़रा देर के वास्ते आँखें बंद करके आसानी से बन सकता है और किसी दूसरे शख़्स को उसकी ख़बर भी नहीं हो सकती।।

१७ - जो अभ्यासी को थोड़ा बहुत सतगुरु के स्वरूप में भाव और प्यार है तो उसको मुनासिब है कि पहिले मुक़ामी स्वरूप का ख़याल करके फिर वहाँ पर सतगुरु के स्वरूप का ध्यान करे। इससे मन जल्दी

निश्चल होकर शौक़ के साथ अभ्यास में लगेगा और कुछ देर तक मुक़ाम पर ठहरेगा।।

१८ - लेकिन जो कोई मुक़ामी स्वरूप का ध्यान करना चाहे तो कुछ हर्ज नहीं है और जो वह थोड़े शौक़ से यह काम करेगा तो मौज से उसको उस स्वरूप का दर्शन अभ्यास के समय ख़्वाह स्वप्न में कभी २ मिलेगा और फिर प्रीति भी बढ़ती जावेगी।।

१९ - इसी तरह जो कोई सतगुरु के स्वरूप का ध्यान करेगा तो उसको भी मेहर और दया से कभी २ अंतर में दर्शन मिलेगा और शौक़ और प्यार बढ़ता जावेगा कि जिससे अभ्यास आसानी और दुरुस्ती से बनेगा।।

२० - जोकि दुनिया और उसका सामान नाशमान है और जीव की देह भी छिनभंगी है, इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीते जी इस क़दर अभ्यास पक्का कर लेवे कि जब चाहे जब अंतर में मन और सुरत को चढ़ा कर या तान कर थोड़ा बहुत रस ले सके यानी कुछ देर किसी ऊँचे मुक़ाम पर ठहर कर देह और दुनिया से थोड़ी बहुत अलेहदगी हासिल करे तो अख़ीर वक़्त पर यानी मौत के समय उसको कष्ट और क्लेश कम व्यापेगा या बिलकुल नहीं मालूम होगा और इसी तरह किसी सख़्त तकलीफ़ या दुख के वक़्त भी ज़िंदगी में इस अभ्यास से बहुत फ़ायदा हासिल होगा यानी वह तकलीफ़ और दुख कम व्यापेगा।।

२१ - इस कार्रवाई के दुरुस्ती से बनने के वास्ते अभ्यासी को ज़रूर चाहिये कि कुल मालिक राधास्वामी

दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर और उनकी मेहर और दया का आसरा और भरोसा मन में रख कर अभ्यास शुरू करे, तो उसका कारज सब तरह दुरुस्त बनेगा और अभ्यास में रस और आनन्द मिलता और बढ़ता जावेगा।।

प्रकार दसवाँ

जीव दुनिया में सिवाय कुटुम्ब परिवार के और बहुत से लोगों से जिनसे उनका कुछ कारज निकलता है और बहुत सी चीज़ों से जो कभी कभी उनके कुछ काम आती हैं, प्रीति करते हैं और अपना मन उनमें थोड़ा बहुत बाँधते हैं। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम मालूम होता है कि वह मालिक-कुल के चरनों में भी जो कि उनके घट में मौजूद है और सदा उनके अंग संग रहता है, थोड़ी बहुत प्रीति, उसका भेद भाव लेकर, करें जिससे सख़्त तकलीफ़ और भारी दुख और क्लेश दूर या हलके हो जावें और ख़ास कर मौत के वक़्त उनकी सहायता होवे और मदद मिले।।

१ - कुल जीव दुनिया में अपने कुटुम्ब परिवार के साथ प्रीति करते हैं और उनको अपना हम-दर्द और हितकारी समझते हैं कि वक़्त मुसीबत और तकलीफ़ वग़ैरा के मदद करेंगे और रिश्तेदारों और बिरादरी के लोगों से भी मुहब्बत रखते हैं कि वे भी वक़्त ज़रूरत और कारज व्यौहार वग़ैरा के शामिल होवें और दुख के समय हम-दर्दी करें।।

२ - सिवाय कुटुम्बी और रिश्तेदार और बिरादरी के और लोगों से भी जीव प्रीति करते हैं, जैसे पंडित, ज्योतिषी, डाक्टर, मास्टर, साहूकार और हर क़िस्म के दूकानदार और हाकिम और वकील और कितने ही पेशे वाले और नौकर चाकर वग़ैरा क्योंकि इन सब से जब तब काम पड़ता है और उनसे प्रीति रखने में वह काम सहज में बनते हैं।।

३ - सिवाय आदमियों के बहुत से जानवरों से भी लोग प्रीति करते हैं और उनसे काम सवारी और शिकार और खेल और तमाशा और दिल बहलाव वग़ैरा का लेते हैं और बाज़े उसमें अपनी शोहरत चाहते हैं या अपने नफ़े और आमदनी के मतलब से बहुत जानवर पालते हैं और उनकी सौदागरी करते हैं।।

४ - इसके सिवाय धन माल और ज़ेवर और कपड़ा और बरतन और असबाब और सामान आराइश वग़ैरा और ज़मीन और मकान और बाग़ और तालाब और कुए वग़ैरा में सब लोगों के मन का बंधन अमूमन बहुत मज़बूत रहता है, यहाँ तक कि ज़रा ज़रा से मुआमले में इन चीज़ों के सबब से लड़ाई झगड़ा और फ़िसाद और नालिश अदालत वग़ैरा में करते हैं।।

५ - अब ग़ौर करना चाहिये कि कितनी जगह जीवों का मन बँधा और फँसा है, गोया इतनी जगह उनका मन गिरवी हो रहा है और वे उसको वहाँ से आसानी से नहीं हटा सकते हैं।।

६ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल जो सब के सच्चे माता पिता हैं और हर एक के घट में बिराज रहे हैं और हर दम हर एक के अंग संग हैं और उसकी सहायता कर रहे हैं, उनकी तरफ़ निहायत दरजे की भूल संसार में पड़ रही है यानी कोई उनका ख़ोज नहीं करता और न उनका और उनके धाम का भेद जानता है।।

७ - जबकि दुनिया में आदमियों से अदना से आला दरजे वालों तक और भी जानवरों और जड़ पदार्थों से लोग भारी और मज़बूत प्रीति कर रहे हैं और उनसे बहुत कम या थोड़ा थोड़ा मतलब निकलता है, फिर कुल मालिक जो सर्व समर्थ और सब का पैदा करने वाला और पालन करने वाला है, उसके चरनों में प्रीति और प्रतीत न करना किस क़दर नुक़सान और हर्ज की बात है, लेकिन जीव अजान और मूरख हैं और इस क़दर तवज्जह उनकी दुनिया के कारोबार में लग रही है कि उनको अपने सच्चे मालिक की सुध भी नहीं है और न उसका भेद दरियाफ़्त करने का शौक़ है।।

८ - इसमें कुछ शक नहीं कि हर एक जीव को ज़रूरत मदद आसमानी की बहुत से दुनिया के कामों में और ख़ास कर वक़्त सख़्त तकलीफ़ और मुसीबत और मौत के पड़ती है, लेकिन लोगों ने बजाय कुल मालिक के और बहुत से वसीले मान रक्खे हैं कि

जिनसे वे ऐसे वक़्तों में मदद माँगते हैं और वक़्त पूरे होने उनके मतलब के कुछ ख़िदमत भी करते हैं, पर सच्चे मालिक का पता और भेद कोई नहीं जानता है और न उसके चरनों में कोई सिवाय सच्चे और निर्मल और भेदी भक्तों के दुआ या प्रार्थना करता है।।

९ - मालूम होवे कि सच्चे मालिक का तख़्त घट घट में मौजूद है और जो कोई उसके चरनों में प्रेम प्रीति करे और जो जुगत कि संतों ने (जो उस कुल मालिक के भेदी हैं) बताई है, उसके मुवाफ़िक़ अंतर में अभ्यास करके चरनों से मिलने की आसा रखता है, उस पर वह कुल मालिक अपनी ख़ास दया करता है और जब तब अपने नूर की झलक भी दिखलाता है कि जिससे उसकी प्रीति और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है।।

१० - जो सच्चे मालिक के भक्त हैं, वे अपने कुल कामों में अपने प्यारे मालिक की मौज को निहारते हैं और जो काम जैसा मौज से बने, उसी में राज़ी रहते हैं और जब कोई तकलीफ़ या मुशकिल पेश आती है, तब उसी मालिक के चरनों में दुआ और प्रार्थना करते हैं और दया माँगते हैं।।

११ - इसी तरह सब जीवों को मुनासिब है कि अपने कुल मालिक का पता और भेद अपने घट में दरियाफ़्त करके चित्त चरनों में जोड़ते रहें तो अलबत्ता हर मुआमले में थोड़ी बहुत सहायता उनको मालूम पड़ेगी और दूसरे आदमियों और चीज़ों में इस क़िस्म का भाव कि उनसे वक़्त ज़रूरत कुछ मतलब निकलेगा या कोई कारज बनेगा, अंतर में न रक्खें, क्योंकि बग़ैर

दया और प्रेरना मालिक-कुल के कोई कुछ नहीं कर सक्ता है लेकिन दुनिया के क़ायदे के ब-मूजिब जो तदबीरें मुनासिब हैं और जिन ज़ाहिरी वसीलों से उनका अंजाम पाना मुमकिन है, वह ब-दस्तूर करना चाहिये।।

१२ - मालिक की सहायता और दया हर वक़्त जारी है और जो प्रेमी भक्त हैं, वह उसको हर दम देखते हैं लेकिन आम लोगों को इस बात की नज़र नहीं है, इस सबब से वे अपने ज़ाहिरी वसीलों और अपनी अक़ल की बातों और तदबीरों का भरोसा रखते हैं और वक़्त बनने या न बनने काम के, उन्हीं शख़्सों या वसीलों की महिमा या बुराई करते हैं।।

१३ - जो लोग कि मालिक और उसके भेद से बे-ख़बर हैं, उनको वक़्त सख़्त तकलीफ़ और मौत के, उन दुनियावी आसरों से जिनका भरोसा वे मन में रखते हैं, कुछ मदद या सहारा नहीं मिलता, इस सबब से वे भारी दुख सहते हैं। जो अपनी ज़िन्दगी में मालिक का भेद लेकर अपने अंतर में कुछ तवज्जह और अभ्यास करते तो उस वक़्त उनको ज़रूर मदद मिलती।।

१४ - जीवों को मुनासिब है कि वास्ते अपनी सुरत के फ़ायदे के थोड़ी बहुत प्रीति कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लावें और दूसरी तरफ़ मन का बंधन जिस क़दर मुमकिन होवे, ढीला करें यानी कुटुम्बी और रिश्तेदार और बिरादरी और दूसरे लोगों और चीज़ों वग़ैरा में मन अपना उसी क़दर लगावें कि जिस क़दर ज़रूरत है और एहतियात रक्खें कि ज़बर भरोसा और आसरा राधास्वामी दयाल की दया का उनके मन

में क़ायम हो जावे और जिस क़दर मुमकिन होवे, अपने घट में चरनों से मेला करते रहें यानी जो जुगत कि संतों ने बताई है, उसका अभ्यास विरह और प्रेम अंग लेकर हर रोज़ करते रहें, तो उनको दुनिया के कामों में भी मदद मुनासिब मिलती रहेगी और तकलीफ़ और मौत के वक़्त उनकी विशेष सहायता होगी।।

१५ - यह कार्रवाई जो ऊपर बयान की गई, कुछ मुशकिल नहीं है क्योंकि जीव अनेक जगह प्रीति और सेवा करते हैं और उनका स्वभाव है कि जहाँ से कोई मतलब-बरारी की आस होवे, वहाँ खुशी-दिल से हाज़िरी और सेवा तन, मन, धन की करने को तैयार होते हैं। फिर जहाँ से कि थोड़ी बहुत सब कामों में मदद मिले और सख़्त तकलीफ़ और मौत के वक़्त ज़रूर सहायता होने का यक़ीन होवे, वहाँ किस क़दर तवज्जह के साथ प्रीति और सेवा करना मुनासिब है यानी ज़ाहिर में तो संत सतगुरु या साध गुरु और उनके प्रेमी जन और सतसंग से नाता जोड़ना और प्रीति भाव करना और अंतर में राधास्वामी दयाल के चरनों में पता और भेद और जुगती का उपदेश लेकर चित्त को चरनों में जोड़ना और प्रीति और प्रतीत बढ़ाना, इसी तरह सब कारज दुरुस्ती से बनना मुमकिन है।।

प्रकार ग्यारहवाँ

कुल मालिक का असल में प्रेम और आनंद और सत्त और चैतन्य स्वरूप है और

ऊँचे से ऊँचे देश में उसका निज धाम है और वह सदा निरबंध और हमेशा एक रस क़ायम है, इस वास्ते सुरत चैतन्य को जो उसकी अंस है, अपने अंसी के मुवाफ़िक़ होने का जतन करना चाहिये यानी देह और दुनिया के बंधन तोड़ कर निरबंध और सत-चित-आनंद और प्रेम स्वरूप से मिलना चाहिये।।

१ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम और आनन्द के सिंध और भंडार हैं और उनका देश ऊँचे से ऊँचा है। वहीं से सुरत चैतन्य की धार रवाँ होकर और कितने ही ठिकानों पर रास्ते में ठहरती हुई और रचना करती हुई नीचे उतर कर पिंड में आँखों के तिल में ठहरी है और यहाँ बैठकर देह और दुनिया की कार्रवाई मन और इंद्रियों के मार्फ़त कर रही है।।

२ - यह सुरत चैतन्य कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है यानी उनके चरनों से इसका निकास हुआ है और यह भी असल में मुवाफ़िक़ अपने भंडार के चैतन्य और प्रेम और आनंद स्वरूप है, पर माया के घेर में आकर अपने निज घर और निज रूप को भूल गई है और पाँच तत्व की बनी हुई देह को अपना रूप और इस दुनिया को अपना देश समझ कर और भोगों में आशक्त होकर दुख सुख सहती है और जोकि देह नाशमान है, इस सबब से जनम मरन का चक्कर इसका जारी रहता है।।

३ - राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं कि इस देश को माया का देश जान कर और भोगों को जड़ और ज़हर से मिले हुए पदार्थ समझ कर अपने निज घर और वहाँ के आनंद की सुध लेकर वह जतन करना चाहिये जिससे माया के जाल से निबेड़ा हो जावे और जो दुख सुख की मिलौनी की रचना उसके देश में है, उससे छुटकारा हो जावे यानी जनम मरन का चक्कर बच जावे, तब अपने निज धाम और असली स्वरूप का आनंद प्राप्त होगा।।

४ - यह समझ बूझ संत सतगुरु या साधगुरु या उनके सच्चे और प्रेमी सतसंगी के संग से आवेगी और उन्हीं से जतन और जुगत माया के घेर से निकलने की मालूम होवेगी। इस वास्ते पहिले उनका खोज करना ज़रूर है और जब वे भाग से मिल जावें, तब प्रेम प्रीति के साथ उनका संग करना और उनसे भेद निज घर और उसके रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करना मुनासिब है।।

५ - यह उपदेश उन जीवों के वास्ते है कि जो दुनिया और उसके सामान की नाशमानता देख कर और यहाँ की हालत दुख सुख और जनम मरन की मुलाहज़ा करके और अपने मन में विचार कर दरियाफ़्त करना चाहते हैं कि सच्चा और कुल मालिक कौन और कैसा है और उसका निज धाम कहाँ है और जीव यानी सुरत कौन है और कहाँ से आया और कहाँ को जाता है और कोई ऐसा भी मुक़ाम है कि जहाँ जाकर वह अमर हो जावे यानी जनम मरन से छूट जावे और सर्व सुख का भंडार उसको प्राप्त होवे और किसी क़िस्म का

कष्ट और कलेश वहाँ न होवे और जो ऐसा स्थान है (और रचना में ऊँचे नीचे दरजे देख कर ऐसे स्थान के मौजूद होने का ज़रुर यक़ीन होता है) तो वह कहाँ है और वहाँ कैसे पहुँचना होवे।।

६ - राधास्वामी मत में इन सब सवालों के जवाब माक़ूल मौजूद हैं, बल्कि यही इस मत का भेद है कि जो सच्चे खोजी और दरदी जीवों को जो इत्तिफ़ाक़ से सतसंग में आवें, पहिले ही मर्तबे सुनाया और समझाया जाता है और जब वे उसको समझ कर जुगत चलने की दरियाफ़्त करें तब उपदेश देकर अभ्यास शुरू कराया जाता है।।

७ - इस वास्ते जिस किसी के दिल में सच्चा खोज पैदा हुआ है, उसको चाहिये कि सब कर्म और भर्म और बाहरमुखी पूजा वग़ैरा छोड़ कर राधास्वामी संगत में जाकर दरियाफ़्त हाल करे और जब उसूल और शरायत राधास्वामी मत को सुन कर और समझ कर निश्चय हो जावे, तब मार्ग का भेद और अभ्यास की जुगत का उपदेश लेकर कार्रवाई शुरू करे, तब कोई दिन के अभ्यास से उसको आप मालूम हो जावेगा कि जिस बात की जीव के कल्यान के वास्ते ज़रूरत है, वह राधास्वामी मत के अभ्यास से हासिल हो सकती है। सिवाय उस तरकीब के जो राधास्वामी मत में जारी है, और कोई जुगत वास्ते पहुँचने निज धाम और प्राप्ति दर्शन कुल मालिक राधास्वामी दयाल के, रचना भर में नहीं है बल्कि रची भी नहीं गई है।।

८ - वह जुगत यह है कि जिस रास्ते से सुरत गुज़र कर पिंड मे उतरी है, उसी रास्ते से घर को

लौटना शुरू करे, तब यह बेगाना देश आहिस्ते आहिस्ते छूटता जावेगा और निज धाम की तरफ़ सुरत चलती जावेगी।।

९ - और रास्ते का भेद यह है कि कुल रचना धारों से हुई और धारों ही के वसीले से कार्रवाई उसकी जारी है, फिर जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी को पकड़ कर लौट सकती है और वह धार रूह और जान और अमृत और चैतन्य की धार है और चैतन्य का ज़हूरा शब्द यानी आवाज़ है, फिर वही धार शब्द की धार है और शब्द की बराबर कोई अँधेरे में प्रकाश करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है, इस वास्ते शब्द का भेद लेकर और उसकी धुन यानी आवाज़ को पकड़ कर निज घर की तरफ़ उलटना मुमकिन है।।

१० - शब्द का भेद बहुत भारी और आदि ज़हूरा कुल मालिक का शब्द है और यही शब्द की धार कुल रचना की करता है। जितने ठेके या मुक़ाम रास्ते में हैं हर एक मुक़ाम का शब्द अलेहदा है। जिस स्थान का जो शब्द है, उसकी धुन या आवाज़ को पकड़ के यानी तवज्जह के साथ सुनते हुए चलना होता है और वह आवाज़ उस मुक़ाम पर जहाँ से कि उसका निकास है, पहुँचाती है। इसी तरह एक शब्द से दूसरे, और दूसरे से तीसरे शब्द को पकड़ के अख़ीर मंज़िल तक पहुँचना मुमकिन है और यह भेद और जुगत चलने की, वक़्त उपदेश के, राधास्वामी मत में समझाई जाती है।।

११ - सिवाय शब्द के अभ्यास के राधास्वामी मत में ध्यान की जुगत भी बताई जाती है जिससे बिखरे हुए

मन और सुरत समेट कर एक स्थान पर ठहराये जाते हैं और इसी तरह हर एक स्थान पर ध्यान की जुगत से सुरत का उलटना और ठहराना (जहाँ तक कि रूप रंग है) आसानी के साथ मुमकिन है।।

१२ - इन दो तरकीब के साथ सुरत चैतन्य का, सत्त पुरुष राधास्वामी की मेहर और संत सतगुरु की दया से माया के देश से हट कर अपने निज धाम में उलट कर पहुँचना मुमकिन है और यह काम सब को, चाहे औरत होवे या मर्द, इसी ज़िन्दगी में शुरू कर देना और जिस क़दर बन सके उसको दुरुस्ती के साथ अंजाम देना, वास्ते अपने जीव के कल्यान के, मुनासिब और ज़रूर है, तो वह एक दिन अपने महा चैतन्य और महा आनन्द और महा प्रेम के भंडार में पहुँच कर अपने परम पिता राधास्वामी दयाल के दर्शनों का बिलास देखेगी और माया के जंजाल और काल के कष्ट और क्लेश से जिसने इसके प्रेम और आनंद और चैतन्यता को दबा रक्खा है, छूट जावेगी।।

१३ - यह सहज जुगत उलटाने सुरत की और भेद निज धाम का कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों पर अति दया करके इस समय में आप प्रकट किया है और जो कोई उनके चरनों की सरन लेकर इस अभ्यास को थोड़ा बहुत शौक़ के साथ करेगा, उसकी रक्षा और सम्हाल और तरक़्क़ी वे अपनी मेहर और दया से आप करेंगे और एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर विश्राम देंगे कि जहाँ सुरत अंस अपने अंसी का दर्शन पाकर परम और अमर आनन्द को प्राप्त होवेगी।।

प्रकार बारहवाँ

सुरत चैतन्य को जो निज सूरज महा चैतन्य की रोशन किरन है, माया यानी अन्धकार के देश को छोड़ कर अपने महा प्रकाश स्वरूप भंडार में पहुँचना चाहिये और रास्ते में जहाँ तक अन्धेरा और उजेला मिला हुआ है, ठहरना नहीं चाहिये।।

१ - सुरत जो कि महा चैतन्य कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है, जब से कि अपने निज घर से उतर कर माया के घेर में आई है, तब से इसका जनम मरन जारी है यानी माया एक बार उसको निगलती है और फिर उगलती है।।

२ - सिवाय जनम मरन के कष्ट के देह धर कर बहुत से दुख सुख इस दुनिया में सहने पड़ते हैं, सो जब तक कि सुरत माया के घेर के पार न जावेगी, तब तक उन दुक्खों से छुटकारा नहीं होगा।।

३ - देहियों के बंधन से छूटने और जनम मरन के चक्कर से बचने की तरकीब सिर्फ़ संत सतगुरु से मालूम हो सकती है। इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि संत सतगुरु का खोज करें और जब वे मिल जावें तो अपने भागों को सराहें और उनकी सेवा और बंदगी उमंग के साथ बजा लावें और जो उपदेश वह देवें, उसके मुवाफ़िक़ हर रोज़ अभ्यास करें।।

४ - मालूम होवे कि सुरत चैतन्य की धार जब से दूसरे और तीसरे दरजे में जिसको माया का घेर कहते हैं, उतरी है तब से उस पर माया के ख़ोल या ग़िलाफ़ चढ़ते चले आये हैं और यह ख़ोल या ग़िलाफ़ माया के मसाले के रचे हुए हैं, उनसे या उनके मसाले से सुरत चैतन्य को कोई ख़ास निसबत नहीं है, सिवाय इसके कि सुरत उनको अपना रूप समझ कर उनमें बँध गई है और जब कोई तकलीफ़ देह में होती है, तो उसको अपने ऊपर घटा कर दुख सुख भोगती है।।

५ - देह को अपना रूप मानना भरम है, क्योंकि जब सुरत की धार सोते वक़्त आँख के मुक़ाम से खिंच जाती है, तब देह के साथ सिलसिला ढीला हो जाता है और उसके दुख सुख की कुछ भी ख़बर नहीं रहती है, इस वास्ते मुनासिब है कि ऐसा जतन किया जावे कि जिससे यह भरम दूर हो जावे।।

६ - और वह जतन यह है कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सुमिरन और ध्यान और भजन का उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास रोज़मर्रा करे, तब सुरत और मन ऐसे अभ्यासी के, सिमट कर पहिले मुक़ाम यानी सहसदल कँवल की तरफ़ चढ़ेंगे और तब भाव और प्यार दुनिया और दुनियादारों और अपनी निज देह में घटता जावेगा और प्रीति और प्रतीत चरनों में कुल मालिक के बढ़ती जावेगी।।

७ - अब जानना चाहिये कि हर मुक़ाम पर सुरत उतरते वक़्त, एक एक क़िस्म की देह धरती चली आई है, सो सतगुरु से मिल कर और उनकी दया संग लेकर आहिस्ते आहिस्ते एक मुक़ाम से दूसरे और दूसरे

से तीसरे पर उलटती जावेगी और जिस मंडल के मसाले की देह धारन की है, वह वहीं छोड़ती जावेगी और उस देह से जो स्वभाव लगे हुए हैं, वह भी वहीं झड़ते चले जावेंगे।।

८ - अब समझना चाहिये कि जहाँ तक माया का घेर है, वहाँ तक थोड़ा बहुत अन्धेरा छाया रहता है सो जहाँ तक कि अन्धेरा और उजेला शामिल है, उस हद में सुरत चलने वाली को नहीं ठहरना चाहिये बल्कि जिस क़दर जल्द बन सके, उस देश और उस हद को पार करके दयाल देश में कि जहाँ सदा प्रकाश एक रस रहता है और अँधेरे की मिलौनी नहीं है, पहुँचना चाहिये, तब सच्चा छुटकारा होगा, सो यह काम दुरुस्ती के साथ राधास्वामी दयाल की दया और संत सतगुरु की कृपा से बन सकेगा। इस वास्ते शुरू में उनके चरनों में गहरी प्रीति और प्रतीत लाना चाहिये और उनके हुकम में ख़ुशी से बर्तना चाहिये, तब अभ्यास आसानी और दुरुस्ती के साथ बन पड़ेगा और थोड़ा बहुत रस भी अंतर में मिलेगा कि जिसके सबब से प्रीति और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनों में दिन दिन बढ़ती जावेगी और एक दिन काम पूरा बन जावेगा।।

९ - राधास्वामी धाम और दयाल देश महा प्रकाशवान है कि जिनकी रोशनी का अंदाज़ कहने में नहीं आ सकता और वहाँ की रचना भी निहायत रूहानी और शोभावान है कि जिसको देख कर सुरत अचरज में रह जावेगी और वहाँ की दया और कृपा को देख कर निहायत दरजे का शुकराना अदा करेगी कि बग़ैर ऐसी दया और कृपा राधास्वामी दयाल और सतगुरु के कोई

सुरत इस माया के देश से छूट कर उस आनन्द धाम में किसी सूरत में नहीं जा सकती।।

१० - जिन लोगों को कि इस दुनिया और इसके सामान की नाशमानता और दुख सुख के चक्कर का हाल देख कर ख़ौफ़ दिल में पैदा हुआ है और उससे बचने और परम और अमर सुख की प्राप्ति के वास्ते जतन करना चाहते हैं, उनसे यह कहा जाता है कि ऐसा सुख स्थान ज़रूर मौजूद है और उसके प्राप्ति का रास्ता हर एक के घट में जारी है सो जो कोई राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करे, वही उस रास्ते को आहिस्ते आहिस्ते तै कर के एक दिन निज घर में पहुँच सकता है।।

११ - यह अभ्यास हर एक शख़्स को, चाहे मर्द होवे या औरत, अपने जीव के कल्यान के वास्ते ज़रूर करना मुनासिब है और कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने निहायत दया फ़रमा कर इस अभ्यास को ऐसा आसान कर दिया है कि हर कोई उसको गृहस्थ में रह कर, बग़ैर छोड़ने कारोबार और गृहस्थ आश्रम के ब्यौहार के, आसानी से कर सकता है और फ़ायदा उसका इसी ज़िंदगी में थोड़ा बहुत देख सकता है और अख़ीर वक़्त पर राधास्वामी दयाल अपने जीवों को आप अंतर में प्रकट होकर सम्हालते हैं और अपने संग लेजा कर ऊँचे और सुख स्थान में बासा देते हैं और उस वक़्त सुरत को देह के छोड़ने में कुछ तकलीफ़ नहीं मालूम होती बल्कि शब्द और स्वरूप के दर्शन का इस क़दर आनन्द मिलता है कि जिसका बयान नहीं हो

सकता है बल्कि उसका असर मरने वाले के चेहरे पर घंटों तक, बाद देह छोड़ने के, नज़र आता है।।

१२ - ऐसी आसान जुगत रूह के घर की तरफ़ चढ़ाने की जो कि राधास्वामी दयाल ने अब जारी फ़रमाई है, किसी वक़्त में ज़ाहिर नहीं हुई और न ऐसी दया जो कि अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल जीवों पर फ़रमा रहे हैं, कभी किसी ने करी यानी मरने के वक़्त आप दर्शन देकर अपने जीव को सम्हालते हैं, क़ितै नज़र इसके कि, उससे चाहे पूरी तौर पर और क़ायदे से अभ्यास बना है या नहीं और मन और इन्द्रियों को उसने किसी क़दर बस किया है या नहीं।।

१३ - फिर ऐसे दया के भरे हुए समय में जो जीव राधास्वामी दयाल की सरन में नहीं आवेंगे और उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास नहीं करेंगे, तो जानना चाहिये कि वे जीव निहायत दरजे के अभागी हैं कि थोड़ा सा अभ्यास निहायत दरजे के आराम के साथ भी करना नहीं चाहते और संसारी और रसमी परमार्थ में बहुत काष्टा झेलते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं और फिर भी वहाँ से किसी तरह का परचा ज़िंदगी में नहीं मिलता और न अख़ीर वक़्त पर ख़ास सहायता होती नज़र आती है।।

१४ - इस वास्ते वही जीव महा बड़भागी हैं कि जो जैसे तैसे राधास्वामी दयाल की सरन में आ गये हैं या आते जाते हैं और उनके उपदेश का थोड़ा बहुत अभ्यास करते हैं और उनकी दया के परचे अपने अंतर में देखते हैं और बग़ैर मेहनत और तकलीफ़ और छोड़ने घरबार या रोज़गार के, दो या तीन जनम में,

अपने निज धाम में कि जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त है, आसानी से पहुँच जावेंगे। उस निज धाम की महिमा अपार है और आज तक किसी को उसकी ख़बर तक नहीं हुई और सिवाय संत के, न कोई वहाँ पहुँचा और न पहुँच सकता है,क्योंकि उस धाम का भेद और चलने की जुगत कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके इस समय में आप प्रकट की है।।

प्रकार तेरहवाँ

दुनिया में चार भारी दुख सब पर आते हैं यानी रोग सोग मौत और कामना का पूरा न होना। इनका पूरा इलाज आदमी के हाथ में नहीं है। लेकिन राधास्वामी मत के अभ्यास की कमाई से यह चारों दुख हलके बल्कि दूर हो सकते हैं। इस वास्ते इस अभ्यास की कमाई हर एक को थोड़ी बहुत करना वास्ते अपनी बेहतरी के ज़रूर और मुनासिब मालूम होता है।

१ - इस दुनिया में चाहे कोई अमीर होवे या ग़रीब इन चार दुक्खों से बच नहीं सक्ता और वह चार दुख यह हैं; पहिला रोग, दूसरा सोग, तीसरा मौत और चौथा कामना का पूरा न होना।।

२ - इन चारों दुक्खों का इलाज किसी के हाथ में नहीं है। छोटी और हलकी बीमारियाँ दवा करने से दूर हो जाती हैं, पर भारी रोगों का इलाज हकीमों और डाक्टरों के पास नहीं है।।

३ - जो कोई इन दुक्खों से बचना चाहे उसको मुनासिब है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर जो कुछ कि अभ्यास उन्होंने फ़रमाया है, जैसे सुमिरन और ध्यान और भजन, थोड़े बहुत ख़ौफ और शौक़ के साथ हर रोज़ नेम के साथ करे तो उसको अपने अभ्यास के दरजे के मुवाफ़िक़ विकारी अंग बहुत कम सतावेंगे और दुक्खों का भी चक्कर मेहर और दया से बहुत हलका हो जावेगा जैसा कि आगे लिखा जाता है।।

४ - जो कोई कि सुमिरन और ध्यान और भजन संत सतगुरु या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से उपदेश लेकर हर रोज़ करेगा तो उसके सुरत और मन किसी क़दर सिमटते और अंतर में ऊपर की तरफ़ को चढ़ते जावेंगे और आहिस्ते आहिस्ते मन और इंद्रियों का घाट छूटता जावेगा और उसका फ़ायदा यह होगा कि उस अभ्यासी को ब-सबब कम खाने और कम सोने के रोग बहुत कम सतावेगा और जो कभी किसी बे-एतदाली के सबब से कोई बीमारी थोड़ी बहुत आवेगी तो मेहर और दया से उसका असर किसी क़दर उलट जावेगा यानी उस वक़्त अभ्यास में ज़्यादा मन लगेगा और अंतर में शब्द और स्वरूप ज़्यादा साफ़ मालूम पड़ेंगे और मन और सुरत का सिमटाव और खिंचाव ऊँचे की तरफ़ को ज़्यादा होगा।।

५ - इसी तरह जिस क़दर अभ्यास ज़्यादा होगा उसी क़दर तवज्जह ऐसे अभ्यासी की दुनिया और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार की तरफ़ से आहिस्ते आहिस्ते हटती जावेगी और उनकी हानि लाभ में दुख सुख कम व्यापेगा यानी अपने प्यारे कुटुम्बी और रिश्तेदारों के वियोग में बहुत दुख नहीं होगा।।

६ - सब में भारी और बढ़ कर दुख मौत का है सो राधास्वामी दयाल की दया से वह भी हलका हो जावेगा यानी अभ्यासी को मौत के रास्ते पर चलने और वहाँ की सैर और कैफ़ियत देखने से जीते जी अभ्यास के समय बहुत आनन्द प्राप्त होता है और जब कि अख़ीर वक़्त पर सर्व अंग करके मन और सुरत उस तरफ़ को दौड़ेंगे तब निहायत दरजे का आनंद ब-सबब खुलने शब्द और प्राप्ति दर्शन स्वरूप के, हासिल होगा और मन और सुरत आप ही मगन होकर ऊँचे देश की तरफ़ को चलेंगे। इस तरह मौत का दुख बहुत हलका हो जावेगा बल्कि बिल्कुल नहीं व्यापेगा।।

७ - सब जीव संसार में हमेशा कोई न कोई कामना यानी इच्छा या तरंग उठाते रहते हैं और जिस क़दर बनता है उसके पूरा करने के निमित्त जतन भी करते हैं पर कोई कामना पूरी होती है और कोई अधूरी रहती है और किसी में बिल्कुल कामयाबी नहीं होती, इस निरासता का भारी झटका लगता है और जो जतन कि किया जाता है उसका भी ना-कामयाबी की हालत में बहुत दुख होता है और उसके साथ किसी क़दर नुक़सान भी आयद होता है।।

८ - अब मालूम होवे कि जो कोई राधास्वामी दयाल की सरन में आया है और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ हर रोज़ दुरुस्ती के साथ यानी विरह और प्रेम अंग लेकर सुमिरन ध्यान और भजन करता है तो मुवाफ़िक़ क़ायदे राधास्वामी मत के उसको लाज़िम और मुनासिब होगा कि फ़िज़ूल तरंगें वास्ते तरक़्क़ी संसार और उसके सामान के न उठावे और जो ज़रूरी ख़्वाहिशों के पूरे होने के वास्ते तरंग उठावे तो उसमें मौज का आसरा और भरोसा मुक़द्दम रक्खे यानी जो काम करे उसका फल मौज पर छोड़ देवे, जतन ब-दस्तूर दुरुस्ती के साथ करे लेकिन फल में अपना मन न बाँधे यानी जैसा फल मौज से होवे, उसको मंज़ूर और क़बूल करे और जो कोई ऐसा नहीं करेगा उसकी भक्ति में कसर पड़ेगी और उसी क़दर उसके जीव के पूरे उद्धार में देरी होगी।।

९ - ऊपर के लिखे से ज़ाहिर होगा कि राधास्वामी मत में किसी को इजाज़त फ़िज़ूल तरंगों के उठाने की नहीं है और जो ज़रूरी कामों के वास्ते तरंग उठाई जावें तो उनका फल मौज के ऊपर छोड़ने की हिदायत है। जो कामना पूरी होवे तो मालिक का शुकराना और जो नहीं होवे तो भी शुकराना इस बात का कि कोई ख़ास मसलहत के सबब से ना-कामयाबी हुई, करना चाहिये और वही उसके हक़ में बेहतर और मुनासिब था और वैसा ही ज़हूर में आया।।

१० - इस तरह चौथे दुख यानी कामना पूरा न होने की तकलीफ़ से बिल्कुल बचाव हो गया।।

११ - अब सब लोगों को चाहिये कि वास्ते कल्यान अपने जीव के, बाद मरने के, और भी वास्ते बचाव के, भारी दुक्खों से, इस ज़िन्दगी में ज़रूर राधास्वामी मत में शामिल होकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास जिस क़दर बन सके, थोड़े बहुत शौक़ और ख़ौफ़ के साथ हर रोज़ करें तो उसका भारी फ़ायदा इस दुनिया में और भी बाद चोला छोड़ने के, आइन्दे, हासिल होगा और जो कोई ऐसा नहीं करेगा वह जमदूतों के हाथ से तकलीफ़ उठावेगा और जनम मरन के चक्कर से नहीं बचेगा और इस दुनिया में भी तीन ताप और चार क़िस्म के दुख जिनका ज़िकर ऊपर हुआ, सहता रहेगा और वह तीन ताप यह हैं - (१) - मानसी दुख, (२) - देह का दुख और (३) - उपाधि यानी किसी से लड़ाई झगड़ा और क़ज़िया।।

१२ - अक़्लमन्द और विचारवान आदमी को चाहिये कि दुनिया का हाल और दुनियादारों की चाल देख कर होशियारी के साथ यहाँ गुज़ारा करें यानी अपना मन इस क़दर किसी शख़्स या चीज़ में न बाँधे कि जिससे दुख पैदा होवे लेकिन यह बात समझ में दुरुस्ती के साथ जब आवेगी और उसकी कार्रवाई दुरुस्त जब बन पड़ेगी जबकि वे लोग राधास्वामी मत में शामिल होकर और संत सतगुरु की दया संग लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करेंगे, तब दिन दिन उन की आँख खुलती जावेगी और दुनिया का हाल उनको आईने के मुवाफ़िक़ आहिस्ते आहिस्ते नज़र आता जावेगा।।

१३ - और जो कोई सिर्फ़ विद्या और बुद्धि के आसरे कार्रवाई करते हैं, उनसे अभ्यास जैसा चाहिये

नहीं बन पड़ेगा और न कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में उनसे जैसी चाहिये प्रीति और प्रतीत हो सकेगी और इस वास्ते फल भी उसका जैसा चाहिये नहीं मिलेगा यानी दुख सुख और जनम मरन का चक्कर ब-दस्तूर जारी रहेगा।।

प्रकार चौदहवाँ

सुरत चैतन्य ऊँचे और गहरे देश की बासी है और अब यहाँ मलीन माया के देश में तन मन और इंद्रियों के साथ फँस गई है सो हर एक आदमी को लाज़िम है कि उसके छुड़ाने का जतन दुरुस्ती के साथ करे।।

१ - मालूम होवे कि सुरत यानी रूह कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है यानी उनके चरनों से इसका निकास हुआ है और असल में चैतन्य और आनन्द और प्रेम स्वरूप है लेकिन नीचे उतर कर पिंड में बैठने से अनेक बंधन इस को लग गये हैं और इस मलीन माया के देश में हालत इसकी बहुत ख़राब हो रही है।।

२ - जब तक यह सुरत पिंड और माया के देश से न्यारी न होगी तब तक सफ़ाई नहीं होगी और न इसकी हालत बदलेगी और यह अलेहदगी और सफ़ाई और प्राप्ति आनंद की जब तक कि सच्चा परमार्थ न कमावे, मुमकिन नहीं है।।

३ - सच्चा परमार्थ उसको कहते हैं कि जिसमें सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का भेद होवे और उनके चरनों में पहुँचने का जतन साफ़ साफ़ और खोल कर समझाया जाता होवे।।

४ - और वह भेद संक्षेप करके इस तौर पर कहा जाता है कि राधास्वामी दयाल कुल मालिक और सर्व समर्थ हैं और उनका धाम ऊँचे से ऊँचा है। वहीं से आदि धार प्रकट हुई कि जिसको शब्द और चैतन्य की धार कहते हैं और उसी की मदद से सब रचना हुई सो उसी धार को पकड़ कर अपने घट में उलटना चाहिये।।

५ - यह उलटने की तरकीब राधास्वामी मत में खोल कर वर्णन करी है सो जिस किसी को चौरासी और नरकों का ख़ौफ़ है और इस दुख सुख की मिलौनी के देह और देश से अलेहदा होना मंज़ूर है और अपने निज भंडार में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होना चाहता है, उसको मुनासिब है कि राधास्वामी मत में शामिल होकर यानी उपदेश लेकर अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का शुरू करे तो उसकी सुरत आहिस्ते आहिस्ते मन और इन्द्रियों के घाट से हट कर आकाश की तरफ़ चलेगी।।

६ - जिस क़दर संत सतगुरु का सतसंग और सेवा और अन्तर में अभ्यास मेहर और दया से बनता जावेगा, उसी क़दर रस और आनन्द मिलता जावेगा और सुरत पिंड देश और माया के घेर से न्यारी होती जावेगी।।

७ - जोकि कुल जीवों का बन्धन देह और दुनिया के साथ बहुत मज़बूत हो रहा है और भोगों और पदार्थों

में रस पाकर फँस रहे हैं, इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने छुटकारे का जीते जी जतन करें और जो इस मामले में सहल-अंगारी[1] और बे-परवाही करेंगे तो हमेशा दुख सुख सहते रहेंगे और बारम्बार जनम मरन का क्लेश भोगेंगे।।

८ - जोकि यह रचना तीन लोक की, माया ब्रह्म की करी हुई है और वह नहीं चाहते कि जीव उनकी हद के पार जावे और इस वास्ते उन्होंने अनेक तरह के भोग और पदार्थ रचे हैं और जीवों को लुभा कर उनमें ख़ूब मज़बूती के साथ बाँधा है, इस सबब से सच्चे परमार्थियों को मुनासिब है कि संत सतगुरु की ओट लेवें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की चरन सरन धारन करें तो सहज में एक दिन निरवार होना मुमकिन है, नहीं तो किसी जीव की ताक़त नहीं है कि अपने बल और पौरुष से इस माया के घेर से निकल कर पार जा सके।।

९ - इस वास्ते संत सतगुरु का खोज हर एक को करना ज़रूर है और वे दया करके अक्सर जगत में मौजूद रहते हैं और जब किसी के दिल में सच्ची चाह और तड़प उनके मिलने की पैदा होती है तो वे दया करके उसके मिलने का संजोग आप लगा देते हैं और फिर अंतर और बाहर उसको मदद देकर एक दिन निज घर में पहुँचा देते हैं।।

१० - जिस किसी को संत सतगुरु मिल जावें वही जीव बड़भागी है और उसी का सच्चा और पूरा उद्धार अन-क़रीब होने वाला है और उसी के हिरदे में सच्चे

१ - ओछा समझना।

मालिक का प्रेम सतगुरु की दया से पैदा होकर दिन दिन बढ़ता जावेगा और दुनिया और उसके भोगों की तरफ़ से चित्त उदास होता जावेगा।।

११ - जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था के अहवाल से जिसमें सब जीव बर्त रहे हैं ज़ाहिर है कि सुरत का मुक़ाम बहुत गहरा और ऊँचा और तीनों अवस्थाओं के परे है। फिर जब तक जतन करके इन अवस्थाओं के पार पिंड में और फिर उन्हीं अवस्थाओं के पार ब्रह्माण्ड में न जावेगी तब तक उसको अपना रूप नहीं दरसेगा और वहाँ से जब तक अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के चरनों में न जावेगी, तब तक अपने निज घर में नहीं पहुँचेगी और उसको पूरा सुख और चैन नहीं मिलेगा और यह रास्ता चढ़ाई या उलटने का घट घट में जारी है, पर बिना मौज कुल मालिक राधास्वामी दयाल और दया और मेहर संत सतगुरु के, कोई उस रास्ते पर चल नहीं सकता और न मंज़िलों को तै करके धुर घर में पहुँच सकता है।।

१२ - इस वास्ते कुल जीवों को जो अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि पहले खोज लगा कर संत सतगुरु से मिलें और फिर उनकी दया और उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके, अपने घट में अभ्यास शुरू करें तो रफ़्ता रफ़्ता एक दिन काम बन जावेगा यानी सब परदे फोड़ कर सुरत अपने सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँच जावेगी।।

* * * * *

प्रकार पन्द्रहवाँ

दुनिया में सब लोग अपने और कुटुम्ब परिवार और प्यारों के तन और मन के आराम के वास्ते अनेक तरह के जतन बहुत मेहनत के साथ उमर भर करते हैं और उस का फ़ायदा सिर्फ़ इस क़दर होता है कि थोड़े दिन के लिये या हद ज़िंदगी भर के वास्ते थोड़ा या बहुत आराम मिल जाता है लेकिन बाद छोड़ने इस देह और देश और कुटुम्ब परिवार के, कहाँ जाना है और रहना होगा और वहाँ सुख मिलेगा या दुख, उसकी ख़बर बहुत कम है और इसके वास्ते जतन भी कम करते हैं। इस वास्ते सब को मुनासिब और लाज़िम है कि वास्ते हमेशा के आराम और सुख के भेदी और बा-ख़बर लोगों से हाल दरियाफ़्त करके थोड़ा बहुत जतन ज़रूर करें तो इस ज़िंदगी में उनको उस अमर सुख और आनन्द की जो संतों की जुगत कमाने से हासिल होना मुमकिन है, थोड़ी बहुत ख़बर पड़ जावेगी और उसकी कुछ परीक्षा और जाँच करके बहुत ख़ुशी हासिल होगी।।

१ - दुनिया में सब लोग वास्ते अपने और अपने कुटुम्ब परिवार के सुख के अनेक तरह के काम बहुत मेहनत के साथ उम्र भर करते हैं पर फ़ायदा उसका इसी दुनिया में थोड़े दिन के लिये या ज़िन्दगी भर के वास्ते मिल जाता है और उतने ही में तृप्त होकर मगन हो जाते हैं।।

२ - बाज़े जतन जो लोग कि करते हैं बड़े सख़्त होते हैं, यहाँ तक कि किसी किसी कामों में जान जाने का ख़ौफ़ रहता है जैसे कि सिपाहगरी और ख़तरनाक और दरिंदे जानवरों का पालना और नचाना और नट विद्या वग़ैरा।।

३ - इन कामों को लोग बड़ी ख़ुशी और शौक़ से करते हैं और जो वह दुरुस्त बन पड़े तो उनकी शोहरत और आमदनी भी बहुत होती है और इस सबब से मन बहुत ख़ुश होता है और उन कामों में तरक़्क़ी करता चला जाता है।

४ - लेकिन ऐसे बहुत कम जीव हैं कि जो थोड़ा बहुत जतन अपने अपने मत के मुवाफ़िक़ वास्ते प्राप्ति सुख के दूसरे जनम में या जहाँ कहीं आइंदा रहना होवे, करते हैं।।

५ - इनमें से बहुत से कर्मकांडी या शरीअत वाले हैं कि जो वास्ते प्राप्ति बैकुंठ या स्वर्ग या बहिश्त वग़ैरा के इस ज़िन्दगी में कर्म करते हैं।।

६ - और ऐसे जीव बहुत कम हैं कि जो तीन लोक के मालिक या परमेश्वर के चरनों में भक्ति वास्ते प्राप्ति उसके दर्शन और धाम के, करते हैं पर जो मुक़ाम या

सुख कि इनको प्राप्त होता है वह असल में अमर और पूरा नहीं है।।

७ - कोई कोई इनमें से अपने को ज्ञानी मान कर समझते हैं कि वे आपही ब्रह्म हैं और इस समझ के नशे में निःचिन्त और बे-ख़ौफ़ रहते हैं।।

८ - लेकिन इनमें से कोई भी सच्चे मालिक को नहीं जानता और न पहिचानता है क्योंकि अपना भेद उसने आप नर रूप यानी संत स्वरूप धारण करके प्रकट किया है और जुगत चलने की भी दया से इस क़दर आसान करदी है कि हर कोई उसकी कार्रवाई चाहे जवान होवे या बूढ़ा, आसानी से कर सक्ता है।।

९ - यह भेद और जुगत इस वक़्त में सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर कही है और राधास्वामी संगत से उसका उपदेश मिल सक्ता है।।

१० - जो कि भक्ति की कार्रवाई सब जगह एक सी है यानी चाहे देवताओं या औतारों या परमेश्वर या कुल मालिक की, सब जगह तन मन धन से सेवा और सच्ची दीनता और विरह और प्रेम अंग लेकर अन्तरी अभ्यास और संसार से किसी क़दर बैराग करना पड़ेगा, इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले निर्णय और तहक़ीक़ात करके सब में बड़े की भक्ति और सेवा इख़्तियार करे तो सब काम पूरा बनेगा यानी सच्चा और पूरा उद्धार होगा और जो ओछे और अधूरे की भक्ति और सेवा की जावेगी तो मेहनत और ख़र्च और बर्तावा उसी क़दर करना पड़ेगा लेकिन फल में कसर रहेगी यानी सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा और धुर धाम में बासा नहीं मिलेगा।।

११ - सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल को ज़ाहिर में संत सतगुरु की भक्ति और उनका सतसंग और अन्तर में कुल मालिक और संत सतगुरु के निज रूप यानी शब्द स्वरूप की भक्ति और उसका संग यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास मंज़ूर और पसन्द है। इस वास्ते सब को जो अपने जीव के हमेशा के सुख और आनन्द के वास्ते जतन करना चाहें, लाज़िम है कि संत सतगुरु का खोज लगा कर उनका सतसंग और सेवा और भक्ति वग़ैरा शुरू करें, और संत सतगुरु वही हैं, जो निज घर और उसके रास्ते का भेद और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश समझावें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के निज रूप यानी शब्द स्वरूप की भक्ति अन्तर में दृढ़ावें।।

१२ - जो कोई प्रीति और शौक़ के साथ संत गुरू का सतसंग और उनकी जुक्ति का अंतर में अभ्यास करेगा, उसको थोड़े दिन में इसी देह और दुनिया में कुछ अपने मालिक का जलवा नज़र आवेगा और उसकी दया और मेहर और रक्षा और सम्हाल अपने अन्तर और बाहर मालूम पड़ेगी और विश्वास और भरोसा कुल मालिक के चरनों का दिन दिन दृढ़ होता जावेगा और सरन पक्की होती जावेगी कि जिससे उसको आइन्दे के सुख और आनंद की प्राप्ति की आशा और प्रतीत गहरी हो जावेगी और चित्त उसका आहिस्ते आहिस्ते निःभरम और निरभय और निःचिन्त होता जावेगा।।

१३ - अब ख़याल करो कि दुनियादार थोड़े दिन के सुख या अपनी थोड़ी बहुत जीविका हासिल करने के

लिये किस क़दर मुश्किल और मेहनत और ख़तरे के काम शौक़ और ख़ुशी के साथ करते हैं और करमी और शरई लोग स्वर्ग और बैकुंठ वग़ैरा में कोई दिन के सुख और आनंद भोगने के वास्ते किस क़दर ख़र्च और मेहनत और काष्टा उठाते हैं और मूरत पूजने वाले और तीरथ बरत करने वाले और हठ जोग और मुद्रा वग़ैरा का अभ्यास करने वाले किस क़दर काष्टा और बैराग और मेहनत के साथ अभ्यास करते हैं और इन सब का फल कोई काल भोग कर फिर जनम धारन करके सुख दुख भोगना पड़ता है।।

१४ - फिर सबसे भारी और अमर सुख और आनंद की प्राप्ति के वास्ते किस क़दर शौक़ और तवज्जह और मेहनत के साथ सतसंग और भक्ति और अभ्यास करना ज़रूर है।।

१५ - लेकिन इस समय में कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को बलहीन और दुखी देख कर अति दया करके सहज जुगती और सहज भक्ति जारी फ़रमाई है कि जो हर कोई आसानी के साथ थोड़ी बहुत करके अपना परमार्थ का भाग बढ़ा सकता है और कोई अर्से में निज देश में पहुँच कर अमर और परम आनंद को प्राप्त हो सकता है।।

१६ - बा-बजूद इस क़दर आसानी के यानी थोड़े से तन, मन, धन, और तवज्जह और शौक़ लगाने से जो अपना पूरा काम बनवाने की चाह किसी के दिल में न पैदा होवे यानी वह संत सतगुरु का थोड़ा बहुत सतसंग और उनकी जुगती का अभ्यास न करे तो जानना चाहिये कि वह जीव बड़ा अभागी है कि और और कामों

में तन, मन, धन लगाता है और जो ख़ास उसके जीव के कल्यान की बात है, उसमें ज़रा भी तवज्जह नहीं करता, लेकिन संत सतगुरु के सन्मुख पहुँचने और उनके दर्शन और बचन से यह कसर भी आहिस्ते आहिस्ते दूर हो सकती है और वे अपनी दया से जीव का परमार्थी भाग जगा सकते हैं और आहिस्ते आहिस्ते उसको बढ़ा कर एक दिन अपनी दया से पूरा फल बख़्श सकते हैं।।

प्रकार सोलहवाँ

तीन क़िस्म की शक्ति हर एक आदमी में मौजूद हैं। इनमें से एक या दो अक्सर लोग जगाते हैं पर तीसरी सुरत यानी रूहानी शक्ति का थोड़ा बहुत यक़ीन करके जगाना हर एक आदमी पर वास्ते उसके जीव के कल्यान के मुनासिब और ज़रूर है।।

१ - मालूम होवे कि हर एक शख़्स में चाहे मर्द होवे या औरत, तीन क़िस्म की शक्ति मौजूद हैं। पहिली जिस्मानी यानी देह और इन्द्रियों की शक्ति, दूसरी मन और बुद्धि की शक्ति और तीसरी सुरत यानी रूह की शक्ति।।

२ - असल में एक शक्ति रूह की है और मन और बुद्धि और इन्द्रियाँ वग़ैरा औज़ार हैं सो वही रूह की शक्ति अंतःकरन के मुक़ाम पर मन और बुद्धि का काम

देती है और इन्द्रियों के घाट पर इन्द्रियों का काम देती है क्योंकि जिस वक़्त रूह की शक्ति खिंच जाती या सिमट जाती है यह सब औज़ार बेकार हो जाते हैं।।

३ - यह सब शक्तियाँ बग़ैर जगाने यानी मथन करने के पूरी पूरी नहीं जागती हैं यानी मामूली कार्रवाई करती रहती हैं मगर बढ़की और अचरजी कार्रवाई जब तक कि अभ्यास करके जगाई न जावें, नहीं कर सकती हैं।।

४ - जैसे एक गाँव का आदमी या जिस किसी को कुछ सिखाया नहीं गया, सिवाय बोझा उठाने या हल जोतने या दौड़ने या बोझे के जानवरों को हाँकने के और कोई काम नहीं कर सकता और उसकी मज़दूरी भी थोड़ी होती है लेकिन जिसने किसी इन्द्रिय की क़ुव्वत मश्क़ करके जगाई है, वह हाथ, पैर, आँख, ज़बान और गले से बड़े भारी और अचरजी काम कर सकता है, जैसे लिखना, पढ़ना, तसवीर खींचना, गाना, बजाना, नाचना और अनेक तरह की नट विद्या की कार्रवाई करना और जानवरों पर सवारी और सिपाहगरी और कारीगरी वग़ैरा और इन लोगों की आमदनी भी ज़्यादा होती है।।

५ - इसी तरह जिस किसी ने विद्या पढ़ कर मन और बुद्धि की क़ुव्वत जगाई, वह लोग अपनी अपनी लियाक़त के मुवाफ़िक़ बड़े बड़े ओहदों पर राज दरबार में नौकरी पाते हैं और सैकड़ों हज़ारों लाखों और करोड़ों आदमियों पर हुक्म चलाते हैं और शहरों और मुल्कों का बन्दोबस्त करते हैं और भारी २ तनख़्वाहें पाते हैं, लेकिन जिसने कि विद्या नहीं पढ़ी और अपने

मन और बुद्धि की ताक़त नहीं जगाई, वे लोग हाथ पैर यानी इंद्रियों की कार्रवाई के मुवाफ़िक़ काम और मज़दूरी पाते हैं या जिन्होंने थोड़ी विद्या और हिसाब किताब वग़ैरा सीखा, वह व्यापार और सौदागरी वग़ैरा का काम करते हैं पर हुकूमत और मुल्क का बन्दोबस्त उनके सुपुर्द नहीं होता।।

६ - इन दोनों क़िस्म की यानी जिस्मानी और अक़्ली क़ुव्वतें जगाने वालों को जो कुछ कि फ़ायदे होते हैं, वह संसारी हैं और उनका ठहराव थोड़े दिन के वास्ते या हद्द ज़िन्दगी भर के लिये होता है। बाद छोड़ने इस देह और देश के, उन फ़ायदों में से कोई भी जीव का संगी और मददगार नहीं हो सकता। इसी सबब से उनको तुच्छ और नाशमान कहा जाता है। लेकिन जो कोई कि अपना आइंदे और हमेशे के वास्ते फ़ायदा चाहता है, उसको चाहिये कि अपनी रूहानी यानी सुरत की ताक़त को जगाने का जतन करे, तब उसको दोनों दुनियावी और परमार्थी यानी इसी ज़िन्दगी में, और भी आइन्दे को, हमेशे के वास्ते भारी फ़ायदे हासिल हो सकते हैं।।

७ - सुरत यानी रूह की ताक़त जगाने से मतलब यह है कि उसको अपने घट में ऊँचे देश की तरफ़ तरकीब के साथ चलाना और चढ़ाना ताकि वह माया के घेर से जिसमें उतरने के वक़्त ग़ोता खा गई है, उबर आवे और अपनी असली ताक़त हासिल करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की कि जिनकी वह अंस है, प्यारी और दया-पात्र हो जावे।।

८ - जैसे कि पहिली और दूसरी शक्ति बग़ैर मश्क़ और मेहनत सीखने वाले और मदद उस्ताद के, नहीं जगाई जा सकती हैं, ऐसे ही यह कार्रवाई जगाने सुरत की ताक़त की भी, बग़ैर दया और मदद संत सतगुरु या उनके सच्चे अभ्यासी प्रेमी के संग के, नहीं बन सकती है, यानी जगवाने वाले को होशियारी के साथ सतसंग और सेवा सतगुरू और प्रेमी जनों की और नित्त अभ्यास उनकी जुगत, सुरत शब्द मार्ग, का करना ज़रूर है, तब आहिस्ते आहिस्ते सुरत सिमटेगी और चढ़ेगी और उसकी ताक़त जागती जावेगी।।

९ - जो कोई कि अपनी अपनी रूह की ताक़त जगवाना चाहे उसको चाहिये कि दुनिया और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार की मुहब्बत किसी क़दर कम करके अपना भाव और प्यार प्रतीत के साथ कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में लावे और सतसंग, होशियारी के साथ, करे यानी बचनों को चित्त से सुने और विचारे और जिस क़दर बन सके उनके मुवाफ़िक़ करनी इख़्तियार करे और उपदेश लेकर अंतरी अभ्यास यानी सुमिरन और ध्यान और भजन यानी शब्द का श्रवण थोड़ा बहुत विरह और प्रेम अंग लेकर नित्त नेम के साथ करे तो पहिले उसके मन और सुरत का सिमटाव और फिर आहिस्ते आहिस्ते चढ़ाव होता जावेगा और उसी क़दर रस और आनंद भी अन्तर में मिलता जावेगा।।

१० - जिस क़दर अभ्यास और सतसंग में रस मिलता जावेगा, उसी क़दर तरक़्क़ी मन और सुरत की चढ़ाई में होती जावेगी और उसी क़दर सुरत का उबार

माया के घेर से होता जावेगा यानी उसी क़दर सुरत की ताक़त जागती जावेगी।।

११ - जिस किसी ने कि अपनी सुरत को जिस क़दर जगाया, उसी से कुल मालिक उसी क़दर राज़ी हुआ और बग़ैर उसकी चाह और माँग के, उसको निहायत दरजे की बड़ाई और शोहरत बख़्शी और ज़माने में उसकी सैकड़ों और हज़ारों बरस तक यादगारी जारी रही, जैसे कि बड़े बड़े अवतार और भक्त जन और पैग़म्बरों और वलियों के हाल से जिसको सब लोग जानते हैं ज़ाहिर है, यहाँ तक कि बाद चोला छोड़ने के उनकी बड़ाई और पूजा और यादगारी ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ती चली जाती है।।

१२ - दुनिया के लोग थोड़ी सी मान बड़ाई और शोहरत और यादगार के लिये बहुत मेहनत और ख़र्च करते हैं और फिर भी यह बात उनको पूरी पूरी अपनी ज़िन्दगी में भी हासिल नहीं होती और बाद चोला छोड़ने के कोई उनका नाम भी नहीं लेता और न ज़िक्र करता है, लेकिन जिन्होंने कि मालिक के चरनों में भक्ति करके अपनी सुरत की ताक़त जगाई, उनका नाम और ज़िक्र दूर दूर देशों में दिन दिन ज़्यादा फैलता जाता है और मालिक अपनी दया से इस क़दर बड़ाई उनको देता है कि जो कहने में नहीं आ सकती।।

१३ - इस वास्ते कुल जीवों को चाहिये कि वास्ते अपने जीव के कल्यान के ज़रूर थोड़ा बहुत अभ्यास सुरत के समेटने और चढ़ाने का मुवाफ़िक़ क़ायदे राधास्वामी मत के नेम से करें तो जो यह काम उनसे थोड़े से थोड़ा भी बन पड़ेगा तो तीन या चार जनम में

उनका सच्चा और पूरा उद्धार हो जावेगा यानी देह और दुनिया और उसके दुख सुख और भी जनम मरन के चक्कर से छूट कर एक दिन दयाल देश में बासा पावेंगे और अमर और परम आनंद को प्राप्त होवेंगे।।

१४ - जो कोई गहरे प्रेम और उमंग के साथ यह कार्रवाई करेगा और सच्चे मालिक के दर्शनों की तड़प और बेकली और उमंग उसके हिरदे में विशेष होगी तो संत सतगुरु की दया से वह अपना काम बहुत जल्द बना लेवेगा। और कुल मालिक राधास्वामी दयाल उसको वह दरजा यानी संत गति बख़्शेंगे कि जो औतारों और पैग़म्बरों और वलियों के दरजे से बहुत ज़्यादा और ऊँची है और जिसको यह गति हासिल होगी वह सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की मौज से लाखों और करोड़ों जीवों का उद्धार कर सकेगा।।

१५ - जिन लोगों से यह कार्रवाई यानी सुरत की ताक़त के जगाने की बिल्कुल नहीं बन पड़ेगी और वे अपनी उम्र और ज़िन्दगी सिर्फ़ संसार के भोग बिलास में ख़र्च करेंगे तो वे चौरासी के चक्कर में पड़े रहेंगे यानी बारम्बार जन्मेंगे और मरेंगे और नीच ऊँच देशों और जोनों में दुख सुख भोगते रहेंगे और कोई उनका उस दुख में सहाई नहीं होगा।।

प्रकार सत्रहवाँ

तीन बड़ी इन्द्रियों के रस में जीव दुनिया में फँसा हुआ है। इन तीनों को विशेष और

फिर महा रस अंतर में मिल सकता है जो सुरत शब्द का अभ्यास किया जावे। और यहाँ के सब रस तुच्छ और नाशमान हैं और बा-वजूद मेहनत और मशक़्क़त और धन ख़र्च करने के पूरे पूरे नहीं मिल सकते।।

१ - ग़ौर से नज़र करने से मालूम होता है कि जीव दुनिया में बहुत करके तीन इन्द्रियों यानी आँख कान और ज़बान के सबब से ज़्यादा फँसे हैं और बाक़ी इन्द्रियों के भोगों में भी आशक्ति और बंधन ज़रूर होता है लेकिन इन तीन इन्द्रियों की कारवाई सब में ज़बर है।।

२ - आँखों से देख कर और कानों से सुन कर और ज़बान से रस और स्वाद लेकर जीव दिन दिन जगत में फैलता और फँसता चला जाता है और इन्हीं इन्द्रियों की कार्रवाई से अनेक तरह की तरंगें और चाहें भी मन में पैदा होती हैं और फिर उनके पूरा करने के वास्ते जतन किया जाता है और जतन के सिद्ध होने या न होने से दुख सुख भोगना पड़ता है।।

३ - इन तीन इंन्द्रियों के सिवाय चौथी काम इन्द्रिय का रस भी बहुत ज़बर है और इसके सबब से जो बंधन पैदा होते हैं, वह भी भारी हैं। बल्कि दुनिया का विस्तार इसी इन्द्रिय की कार्रवाई यानी पैदाइश औलाद वग़ैरा से होता है लेकिन किसी ख़ास वक़्त पर ज़िन्दगी में इस इन्द्रिय की ताक़त ज़ाहिर होती है और फिर किसी वक़्त पर इसका ज़ोर बहुत घट जाता है।।

४ - जोकि संसार के बंधनों से दुख सुख पैदा होता है और भोगों में ज़्यादा बर्तावा करने से रोग पैदा होता है और शुरूआत संसार के बंधनों और भोगों में रस लेने की इन्द्रियाँ हैं, इस वास्ते मनुष्य को मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले अपनी इन्द्रियों की सम्हाल करे और उनमें से तीन इन्द्रियों की जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ ज़्यादा एहतियात और सम्हाल दरकार है।।

५ - कुल सामान इस दुनिया का और सर्व इन्द्रियों के भोग नाशमान और हर दम बदलने वाले और पराधीन हैं और जो किसी का मन इन्हीं में बँधा रहा और इन्हीं के रस और स्वाद में मगन होता रहा और इन्हीं की प्राप्ति के लिये चाह उठा कर उम्र भर मेहनत के साथ जतन करता रहा तो इस स्वभाव और चाह के मुवाफ़िक़ वह हमेशा देह धरता रहेगा और उसके संग दुख सुख जो लाज़मी हैं, भोगता रहेगा।।

६ - अब जिसके मन में ऐसी हालत जगत की देख कर जनम मरन और दुक्खों का थोड़ा बहुत डर पैदा हुआ है, वह इस बात का खोज करेगा कि आया कुल रचना में कोई ऐसा भी स्थान है जो अमर और सर्व सुख का भंडार होवे और इसी ज़िन्दगी में जतन करने से कुछ उस की कैफ़ियत वास्ते दिलाने और पकाने यक़ीन के अपने अंतर में मालूम पड़े सो ऐसे खोजी को पूरा जवाब राधास्वामी मत में मिल सकता है और भेद और रास्ता उस अमर और महा सुख के स्थान का और भी जुगत चलने की वहाँ से मालूम हो सकती है।।

७ - मालूम होवे कि वह अमर और महा सुख का स्थान कुल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम है और

हर एक आदमी के घट में मौजूद है और रास्ता उसका नैन नगर से जहाँ जाग्रत अवस्था में जीव की बैठक है, जारी है। जो कोई सच्चा दर्दी और खोजी है, उसको कुल भेद रास्ते और मंज़िलों का और जुगत चलने की राधास्वामी संगत में समझाई जाती है।।

८ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जो सहज जुगत मन और सुरत के समेटने और चढ़ाने की सुरत शब्द के अभ्यास से दया करके अब जारी फ़रमाई है, उसमें उन तीन इन्द्रियों को जिनका कि ज़िक्र ऊपर हुआ, बहुत जल्द थोड़ा बहुत रस मिलना शुरू हो जाता है यानी सूक्ष्म आँखों को रूप और रोशनी का और सूक्ष्म कानों को शब्द और बाजे की धुनों का और सूक्ष्म ज़बान को अमृत की बूंदों का जो अभ्यास के समय ऊपर से झड़ती मालूम होती हैं। इस सबब से अभ्यास सुखाला बनता है और अभ्यासी का शौक़ बढ़ता जाता है।।

९ - और जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उनकी कार्रवाई अक्सर बाहरमुखी है और जो थोड़ा बहुत अन्तरमुखी अभ्यास रक्खा है, वह नीचे के देश का है, और उसमें रिआयत इस क़िस्म की जैसा कि राधास्वामी मत में क़ुदरती तौर पर जारी है, नहीं है और न कोई ख़ास मुक़ाम या मुक़ामों की ख़सूसियत है, इस सबब से अभ्यासी को मदद और सहारा कुछ नहीं मिलता है और जो कि भेद रास्ते और स्थानों का कुछ नहीं दिया जाता, इस सबब से उसकी चाल में तरक़्क़ी भी नहीं होती यानी मन और सुरत की चढ़ाई का ज़िक्र भी नहीं है यानी जो कोई कुछ अभ्यास करता है, वह

जहाँ का तहाँ रहता है और प्रेम का रंग इस पर नहीं चढ़ता।।

१० - राधास्वामी मत का अभ्यासी शब्द और रूप के सहारे ऊँचे से ऊँचे देश की तरफ़ रास्ते की मंज़िलें तै करता हुआ चल सकता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म और अति सूक्ष्म और महा सूक्ष्म रचना के मंडल से गुज़र कर माया के घेर के पार निरमल चैतन्य देश में कि जहाँ सिर्फ़ रूहानी रचना है और मलीनता माया की नहीं है, पहुँच कर विश्राम करता है और वहाँ अमर और परम आनंद उसको प्राप्त होता है और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से हमेशा को छुटकारा हो जाता है।।

११ - अब इस दुनिया और उसके सामान और भोगों का हाल नज़र ग़ौर से देख कर सब जीवों को लाज़िम और मुनासिब है कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ जुगती का उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करें और इसी ज़िंदगी में कुछ कैफ़ियत और फ़ायदा उस अभ्यास का देख लें ताकि आइन्दे के भारी फ़ायदे का निश्चय हो जावे और आसा राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने की मज़बूत हो जावे तो तीन या चार जनम में जीव का सच्चा और पूरा उद्धार होना मुमकिन है।।

१२ - इसमें कुछ शक नहीं कि जीव इस वक़्त में निहायत निबल और नाकारे हैं लेकिन राधास्वामी दयाल अपनी ख़ास मेहर और दया से सबका बेड़ा पार लगाते हैं और हर तरह की मदद उनको अभ्यास की हालत में वास्ते चढ़ाई सुरत के देते हैं और निहायत दरजे की महिमा और बड़ाई इस मत की यह है कि यह सब काम

बग़ैर छोड़ने घरबार और रोज़गार और व्यवहार के आसानी से बन सकता है। सिर्फ़ सच्चा शौक़ और प्रेम कुल मालिक के दर्शनों का दरकार है। जो यह शौक़ थोड़ा भी है तो राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु उसको अपनी मेहर और दया से बढ़ावेंगे और उस जीव को एक दिन निज घर में पहुँचा कर छोड़ेंगे।।

१३ - जो जीव कि ऊपर के बचन को नहीं मानेंगे और परमार्थ की तरफ़ से बे-परवाही करके संसार में लिपटे और फँसे रहेंगे, उनका जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा, ऊँच नीच देश में और ऊँची नीची देहियों के साथ दुख सुख भोगते रहेंगे।।

प्रकार अठारहवाँ

सैर और तमाशे का शौक़ सब के दिल में रहता है और उसके वास्ते तन, मन, धन ख़ुशी से ख़र्च करते हैं। अन्तर में अभ्यास करने से बहुत भारी सैर क़ुदरत की नज़र आ सकती है। इस वास्ते उस तरफ़ भी सब को थोड़ी बहुत तवज्जह करना ज़रूर है।।

१ - दुनिया में कुल आदमियों को, चाहे मर्द होवे या औरत, नये शहरों और पहाड़ों और नई नई चीज़ों के देखने का शौक़ रहता है और इस सबब से लोग हमेशा तीर्थ और मेले और तमाशे और सैर के वास्ते दुनिया भर में चलते फिरते रहते हैं और नये मकानों और

शहरों और पदार्थों और पुराने वक़्त की यादगार इमारत और चीज़ों को देख कर ख़ुश होते हैं।।

२ - इस कार्रवाई में ख़र्च भी बहुत पड़ता है और रास्ते में थोड़ी बहुत तकलीफ़ भी होती है, लेकिन इस सब को बरदाश्त करते हैं।।

३ - कोई कोई मुश्किल और ख़तरनाक रास्ते और और मुक़ामों में बहुत सा धन ख़र्च करके और तकलीफ़ उठा कर जाते हैं और वहाँ का हाल दरियाफ़्त करके राज दरबार और लोगों को ख़बर देते हैं।।

४ - जो कि मनुष्य की देह कुल रचना का नमूना है और जो कुछ कि बाहर रचना में है, वह सब नमूने के तौर पर हर एक आदमी के घट में मौजूद है, फिर जो कोई कि सच्चा शौक़ीन सैर तमाशे का है, उसको चाहिये कि अपने घट में चलना शुरू करे, तब ऐसी अचरजी सैर नज़र आवेगी कि जिसकी तारीफ़ कहने में नहीं आ सकती और जिसका अन्त और पार नहीं है यानी उम्र भर बल्कि दो तीन जनम तक चलता रहे और हमेशा नई कैफ़ियत देख कर मगन होता जावे।।

५ - इस सैर का कुछ इशारा और भेद संतों ने अपनी बानी में लिखा है, लेकिन जो कुछ कि कैफ़ियत है, वह देखने ही के ताल्लुक़ है, ज्यों की त्यों लिखने में नहीं आ सकती।।

६ - जो घट की यात्रा करना चाहे, उसको चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग में जाकर भेद सिद्धान्त स्थान यानी कुल मालिक राधास्वामी के धाम का और भी रास्ते और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का

दरियाफ़्त करे और सच्चे मन से कुल मालिक की सरन इख़्तियार करके विरह और प्रेम अंग के साथ अभ्यास उस जुगत का शुरू करे तो आहिस्ते आहिस्ते रास्ता तै होना शुरू होगा और कुछ कुछ कैफ़ियत भी अंतर में नज़र आती जावेगी।।

७ - संत सतगुरु के सतसंग में जीव को ख़बर पड़ेगी कि क्या क्या सामान सफ़र का उसको संग लेना चाहिये और क्या क्या फ़िज़ूल असबाब छोड़ देना मुनासिब है यानी कौन कौन अंग और ख़वास इसको धारन करने चाहिये और कौन कौन विकार हटाने चाहिये, तब रास्ते पर चलना आसानी से बन सकेगा।।

८ - जबकि दुनिया के सैर तमाशे और यात्रा वग़ैरा को लोग जाते हैं, तब अपना कारोबार और घरबार कुछ अर्से के लिये छोड़ देते हैं, लेकिन घट की यात्रा के वास्ते ज़रूरत ऐसी कार्रवाई की नहीं है यानी गृहस्थ में रहकर और रोज़गार करते हुए यह काम शुरू कर सकते हैं लेकिन सच्चा शौक़ कुल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का ज़रूर चाहिये, चाहे वह थोड़ा होवे, तो वह सतसंग और अभ्यास की मदद से आहिस्ते आहिस्ते बढ़ सकता है।।

९ - बिना सच्चे शौक़ के दुनिया में भी कोई सैर और तमाशे के वास्ते सफ़र की तक़लीफ़ और ख़र्च गवारा नहीं कर सकता, फिर परमार्थ में भी बिना सच्चे शौक़ कुल मालिक के दर्शनों के और संत सतगुरु की सेवा और सतसंग के, कोई घट में रास्ता तै नहीं कर सकता ।।

१० - दुनिया के सैर तमाशे में सिर्फ़ दृष्टि का भोग है और मन को नई चीज़ें देख कर कुछ आनंद मिलता है, लेकिन जो अपने घट में सैर करना शुरू करे तो उसको सिवाय क़ुदरत की नई नई और अचरजी रचना और खेल नज़र आने के, इस क़दर आनंद और रस दिन दिन प्राप्त होता जावेगा कि उसके मुक़ाबले में दुनिया के तमाशे और रस और स्वाद आहिस्ते आहिस्ते फीके पड़ते जावेंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का थोड़ा जलवा देख कर और उनकी दया की परख करके चरनों में प्रीत और प्रतीत जागती जावेगी और वह एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेंगे और वह धुर धाम अजर और अमर है और महा चैतन्य और महा आनंद और महा प्रेम का भंडार है कि जहाँ पहुँच कर जीव भी अमर और अजर हो जाता है और परम आनंद को प्राप्त होकर जनम मरन और देहियों के दुख सुख से हमेशा को बच जाता है। इसी का नाम सच्ची मुक्ति और पूरा उद्धार है, सो यह भारी दौलत घट में चलने वाले को मुफ़्त मिलेगी और सहज में उसका निरवार हो जावेगा।।

११ - इस वास्ते यह काम यानी अपने घट में सैर करना हर एक को थोड़ा बहुत करना मुनासिब है। इसमें दोनों मतलब बढ़ के प्राप्त होवेंगे यानी ऐसी सैर क़ुदरत की नज़र आवेगी कि जिसका नमूना इस दुनिया में नहीं है और बढ़का परमार्थ सहज में बन जावेगा कि जिससे माया के घेर और आवागवन के चक्कर से (कि जिसमें कुल जीव फँसे हुए दुख सुख भोगते हैं) क़ितई छुटकारा हो जावेगा।।

१२ - जब कि लोग दुनिया में ऐसे ऐसे मुश्किल मुक़ामों पर जाना मंज़ूर करते हैं कि जहाँ जान का ख़तरा भारी है, फिर बढ़की सैर ऊँचे से ऊँचे मुक़ामों के वास्ते निहायत आराम और आसानी के साथ घट में चलने की कार्रवाई ख़ुशी और शौक़ के साथ करना चाहिये ख़ास कर जब कि संत सतगुरु भेदी उन मुक़ामों के भाग से मिल जावें और अपनी दया और मेहर से रास्ता तै करने में मदद देते जावें।।

१३ - दुनिया के सैर और तमाशे का फ़ायदा और यादगारी बहुत कम और थोड़े दिन की है और उससे और लोगों को बहुत कम फ़ैज़ और फ़ायदा पहुँचता है, लेकिन जो कोई अपने घट में सैर करने का इरादा मज़बूत करके और संत सतगुरु की दया लेकर चलना शुरू करे, उसको जो ख़ुशी और फ़ायदे हासिल होंगे, वह बयान में नहीं आ सकते और जो कुछ कि फ़ैज़, और जीवों को उससे पहुँचेगा, वह भी बे-अंत है यानी उस एक चलने वाले के सबब से बहुत से आदमी उसी रास्ते पर चलना इख़्तियार करके सच्ची मुक्ति और पूरे आनंद को प्राप्त होंगे और जनमान जनम के दुक्खों से बच जावेंगे, फिर यह सिलसिला एक से दूसरे को फ़ैज़ पहुँचने का जारी होकर न मालूम कितने देश और किस क़दर अर्से तक और कितने जीवों को फ़ायदा पहुँचावेगा कि जिसका शुमार नहीं हो सकता।।

१४ - इस वास्ते जो कोई कि सूरमा और हिम्मत वाले जीव हैं और सख़्ती और नरमी और आराम और तकलीफ़ को वास्ते अपने और औरों के उपकार के ख़ुशी से बरदाश्त करने को तैयार हैं, उनको ज़रूर

इस तरफ़ तवज्जह लाना चाहिये यानी घट का भेद संत सतगुरु से लेकर ज़रूर इस रास्ते पर जवाँमर्दों के मुवाफ़िक़ क़दम रखना चाहिये तो ऐसी हालत उनकी देख कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल उन पर ख़ास दया फ़रमावेंगे यानी उनका काम सहज में पूरा करेंगे।।

१५ - ऐसे सूरमा और प्रेमी भक्तों की कार्रवाई की शोहरत और महिमा देशों में आपही आप फैलती है और अनेक जीव कुल मालिक की मौज से अपने कल्यान के निमित्त उनकी तरफ़ रुजू करते हैं और फ़ायदा उठाते हैं बल्कि बाद उनके देह और दुनिया के छोड़ने के भी जीवों का उपकार उनके सबब से जारी रहता है।।

प्रकार उन्नीसवाँ

तन बीमार का इलाज सब कोई कराते हैं पर मन की बीमारी की ख़बर किसी को नहीं है। उसके मुआलिज संत और साध हैं। उनसे मिल कर इलाज कराना चाहिये। नहीं तो, देह बिगड़ जावेगी यानी नीचे की जोनों में बारम्बार जनम धरना और दुख सुख भोगना पड़ेगा।।

१ - जब किसी को तन की बीमारी होती है तब वे हकीम वैद्य और डाक्टरों से इलाज कराते हैं और जो दवा और ग़िज़ा वे तजवीज़ करते हैं, वही खाते पीते हैं और जो परहेज़ वे बताते हैं, उसके मुवाफ़िक़ अमल

करते हैं यानी जिन चीज़ों और जिन कामों को वे मना करते हैं, उनमें नहीं बर्तते हैं, तब सबेर या अबेर जैसी बीमारी हलकी या भारी होवे, उनको आराम हो जाता है।।

२ - हर बीमारी में चाहे वो हलकी होवे या भारी, बीमार को हकीम या वैद्य या डॉक्टर का एतबार करके उसकी तजवीज़ के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना पड़ता है, तब उसको फ़ायदा मालूम होता है यानी बीमारी आहिस्ते आहिस्ते घटती जाती है और थोड़े अर्से में तन्दुरुस्त हो जाता है।।

३ - संत सतगुरु जो तीनों के यानी तन मन और सुरत के भेदी और वाक़िफ़कार और रखवार हैं, फ़रमाते हैं कि सब जीवों का मन थोड़ा बहुत बीमार है और उसकी बीमारी का इलाज करना इसी ज़िन्दगी में ज़रूर है और जो कोई बे-परवाही और ग़फ़लत करेगा, उसकी बीमारी दिन दिन बढ़ती जावेगी और अख़ीर को यह फल मिलेगा कि उसको चौरासी की ऊँच नीच जोनों में भरम कर हमेशा दुख सुख सहना पड़ेगा।।

४ - मन की बीमारी क्या है? दुनिया की मान बड़ाई और भोगों की चाह से भरा होना। जिसके मन का ऐसा हाल है कि बारम्बार नई नई चाहें और तरंगें उठाता रहता है फिर उनके पूरा करने के लिये जतन करता है तो वह दिन दिन कर्मों का भार अपने सिर पर चढ़ाता जाता है क्योंकि इस कार्रवाई में उससे दोनों क़िस्म के कर्म यानी पाप और पुन्य बनेंगे और फिर उनका फल दुख या सुख आइंदे के जनमों में भोगना पड़ेगा और यह सिलसिला जब तक कि मन की बीमारी यानी

अनेक क़िस्म की फ़िज़ूल दुनियावी चाहों का उठाना बंद न होगा, बराबर जारी रहेगा।।

५ - मन की बीमारी के मुआलिज(वैद्य) संत सतगुरु हैं सो जीवों को मुनासिब है कि उनके सन्मुख यानी उनके सतसंग में जाकर अपना इलाज करावें।।

६ - वह इलाज यह है कि संत सतगुरु के बचन सुन कर संसार और उसके सामान और भोग वग़ैरा की तरफ़ से चित्त आहिस्ते आहिस्ते हटता जावे और फ़िज़ूल चाहें मान बड़ाई और भोगों की न उठावे।।

७ - यह हालत मन की उस वक़्त बदलनी शुरू होगी जब कि यह जीव बचनों को चित्त देकर सुनेगा और संसार और उसके सामान को नाशमान देख कर सत्त पदार्थ की तरफ़ जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है और महा चैतन्य और प्रेम और आनन्द का भंडार है, रुजू करेगा और उसकी प्राप्ति के वास्ते मन और इन्द्रियों के घाट से हट कर राधास्वामी मत की जुगत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके चलना शुरू करेगा।।

८ - इस अभ्यास के दुरुस्ती से बनने के वास्ते ज़रूर है कि अभ्यासी संत सतगुरु के बचनों की प्रतीत करके विरह और प्रेम अंग लेकर कार्रवाई शुरू करे क्योंकि जो मन में किसी तरह का सन्देह और शक बाक़ी रहा या चरनों में संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के प्रीति न आई तो वह अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का जिसमें मन और सुरत घट में ऊँचे की तरफ़ चढ़ाये जाते हैं, नहीं बन पड़ेगा और इस तरह मन की बीमारी भी दूर नहीं होगी।।

९ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल हैं और संत सतगुरु जीव के सच्चे हितकारी हैं सो जो जीव कि दीनता के साथ उनकी सरन में आवे उस पर वे ज़रूर दया करते हैं यानी उसके हिरदे में अपने चरनों की प्रीति और प्रतीत आहिस्ते आहिस्ते बसाते जाते हैं और उसी के साथ उसके मन और इन्द्रियों की सफ़ाई भी करते जाते हैं।।

१० - लेकिन जीवों का ऐसा हाल है कि बजाय अपनी बीमारी के परखने और परहेज़ के साथ उसका इलाज करने के ऐसी कार्रवाई करते हैं कि जिससे बीमारी बढ़ती जावे और फिर आप इस हाल से बे-ख़बर या यह कि इलाज थोड़ा करते हैं और बद-परहेज़ी ज़्यादा करते हैं कि जिस से बे-मालूम बीमारी बढ़ती जाती है।।

११ - परमार्थी आदमी को जबसे अपने मन की बीमारी का इलाज कराना शुरू किया है एहतियात रखना चाहिये कि बे-ज़रूरत और बे-मतलब बड़े आदमियों से न मिले और न उनका संग करे क्योंकि उनसे मेल करने में अनेक तरह के ख़याल और चाहें नई और फ़िज़ूल दिल में पैदा होती हैं और उनके सबब से रंज और हसरत और ना-शुकरी करता है और यह बात बर-ख़िलाफ़ भक्ति के क़ायदे के है यानी इसमें मलिक और संत सतगुरु राज़ी नहीं होते हैं।।

१२ - इसी तरह मेले और तमाशे और सैर बाज़ार वग़ैरा में भी परमार्थी शख़्स को शामिल होना बग़ैर भारी ज़रूरत के नहीं चाहिये क्योंकि वहाँ भी इस मन की वैसी ही हालत होती है जैसी कि बड़े आदमियों से

मिलने और उनका संग करने से जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया।।

१३ - संसारी लोगों के संग बैठने और गप शप करने से भी परमार्थी आदमी को परहेज़ करना चाहिये क्योंकि ऐसे संग में झूठ सच्च बोलने और किसी की निंदा और किसी की स्तुति करने की आदत पड़ती है और वक़्त बे फ़ायदा ख़र्च होता है और यह बात परमार्थ में नुक़सान करने वाली है और मन की बीमारी की बढ़ाने वाली है।।

१४ - परमार्थी शख़्स को इस बात की भी एहतियात चाहिये कि अकेले बैठ कर मनोराज न करे यानी आइंदे के अपनी मान बड़ाई और भोग बिलास और तरक़्क़ी दुनिया और दौलत और हुकूमत और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा के ख़यालात उठा कर अपने मन को ख़ुश न करे क्योंकि ऐसी बातों का बार बार ख़याल करने से वह मन के स्वभाव में दाख़िल हो जाते हैं और अभ्यास में उसी क़दर हारिज होते हैं जैसा कि बाहर उन कामों के करने से नुक़सान पैदा होता है।।

१५ - जो बातें कि ऊपर लिखी गई हैं वे परमार्थ के हिसाब में बद-परहेज़ी में दाख़िल हैं। उनसे मन की बीमारी बढ़ती है। इस वास्ते जीवों को मुनासिब है कि सचौटी के संग इलाज अपनी बीमारी का करावें यानी हित चित से संत सतगुरु का संग करें और उनके बचनों को धारन करके अपनी रहनी दुरुस्त करते जावें।।

१६ - संत सतगुरु का सतसंग करके जीव की समझ और ख़याल बदलते हैं यानी संसार और उसके

सामान को तुच्छ और नाशमान देखकर चित्त उससे हटता जाता है और राधास्वामी धाम की महिमा और वहाँ के आनंद और बिलास का हाल सुनकर और उसका निर्णय समझकर मन में शौक़ पहुँचने उस धाम का और करने दर्शन कुल मालिक राधास्वामी दयाल का जागता है और जिस क़दर अभ्यासी रास्ता तै करके आनंद और सरूर पाता जाता है उसी क़दर शौक़ बढ़ता जाता है और सफ़ाई मन की होती जाती है और जिस क़दर प्रेम मन में भरता जाता है उसी क़दर बीमारी और मलीनता उस की हटती जाती है और यही कार्रवाई एक दिन प्रेमी अभ्यासी को माया के घेर के पार पहुँचा कर पूरा प्रेम बख़्शेगी और मन तन्दुरुस्त होकर अपने ठिकाने पर जो त्रिकुटी का मुक़ाम है रह जावेगा और वहाँ से सुरत अकेली सत्तलोक और राधास्वामी धाम की तरफ़ रवाना होगी।।

१७ - संसार और संसारी लोग इस कार्रवाई में बहुत विघ्न डालते हैं सो सच्चे शौक़ीन को चाहिये कि अपने परमार्थ के बनाने में इन मूर्ख जीवों की सलाह न माने और न उनकी निंदा स्तुति सुन कर अपने मन में घबरावे और अपना काम यानी अंतर और बाहर का सतसंग आहिस्ते आहिस्ते ब-दस्तूर जारी रक्खे तो उसको चंद रोज़ में कुछ रस और आनंद अपने अंतर में मिलेगा और फिर उसकी ताक़त दिन दिन बढ़ती जावेगी और प्रीत और प्रतीत भी चरनों में ज़्यादा होती जावेगी और अपने मन की सफ़ाई होती हुई नज़र आवेगी कि जिसको देख कर उसको यक़ीन हो जावेगा कि इसी कार्रवाई से एक दिन पूरा काम बन जावेगा।।

१८ - मालूम होवे कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु रचना भर में सच्चे हैं और या सुरत जोकि उनकी अंस है, सच्ची है, क्योंकि कुल कार्रवाई रचना की और उसका ठहराव इस लोक में सुरत के आसरे, जो घट घट में दयाल देश से उतर कर बैठी है, मालूम होता है, पर जिस सुरत ने कि संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करके राधास्वामी धाम में पहुँचने का जतन सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके शुरू किया, वही एक दिन सत्त पद में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगी और झूठे यानी माया और काया का संग कि जिसके सबब से हमेशा दुख सुख और जनम मरन भोगना पड़ता है, क़तई छूट जावेगा।।

१९ - लेकिन जो कोई कि काया और माया और उसके रचे हुये भोगों और पदार्थों में आशक्त रहेगा, उसकी प्रीत दिन दिन झूठे में और भी मन की बीमारी बढ़ती जावेगी और आख़िर को उनके वियोग का दुख सहना पड़ेगा और फिर स्वभाव और बासना अनुसार बारम्बार देह धारन करके उन्हीं भोगों में लिपट कर दुख सुख सहता रहेगा और चौरासी के चक्कर यानी माया के घेर से उसका छुटकारा नहीं होगा।।

२० - इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीव के बचाव और कल्यान के लिये इसी ज़िन्दगी में संत सतगुरु और उनके सतसंग से किसी क़दर नाता जोड़ कर थोड़ा बहुत अभ्यास उनकी जुगती का शुरू कर दें तो उनकी मेहर और दया से रफ़्ते रफ़्ते उनका कारज बन जावेगा यानी मन

की सफ़ाई होकर वह अपने निज पद यानी त्रिकुटी में पहुँच कर मगन हो जावेगा और सुरत वहाँ से अकेली चल कर अपने निज धाम यानी राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँच कर अमर आनंद और बिलास को प्राप्त होगी।।

प्रकार बीसवाँ

जिस किसी से संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास कोई वजह करके दुरुस्ती से न बन सके तो उसको चाहिये कि जिस क़दर और जैसा तैसा अभ्यास उससे बन सके, उतना ही करता रहे और सन्त सतगुरु और उनके सतसंग से सच्चा और पक्का नाता जोड़े यानी उनमें थोड़ी या बहुत सच्ची और पक्की प्रीत करे तो वे अख़ीर वक़्त पर अपनी दया से उसकी सहायता करेंगे और अपना बल देकर आइन्दे उससे करनी जिस क़दर मुनासिब और ज़रूर होगी करा कर उसका पूरा काम बनावेंगे।।

१ - जो जीव कि संत सतगुरु के सतसंग और सरन में आये हैं और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का ले लिया है, पर उनसे अभ्यास जैसा चाहिये दुरुस्ती से

नहीं बनता है यानी मन उनका चंचल रहता है और अनेक तरह की संसारी गुनावन उठाता रहता है।।

२ - लेकिन वह जीव सतसंग नेम से करते हैं और संत सतगुरु के दर्शन और बचन में उनकी किसी क़दर लाग है और थोड़ी बहुत सेवा भी तन, मन, धन की अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ करते रहते हैं।।

३ - और जो सतसंग से दूर रहते हैं तो बानी का रोज़मर्रा थोड़े बहुत शौक़ के साथ पाठ करते हैं और जब जब मौक़ा मिले सतगुरु के सन्मुख जाकर कोई दिन सतसंग करते हैं।।

४ - और जो भजन में मन नहीं लगता है तो ध्यान और सुमिरन मन लगाकर करते हैं और जो ध्यान में भी मन अच्छी तरह नहीं लगे, तो सिर्फ़ सुमिरन राधास्वामी नाम का प्यार के साथ करते हैं।।

५ - ख़ुलासा यह कि जो वक़्त उन्होंने अपने परमार्थ की कार्रवाई के वास्ते मुक़र्रर कर लिया है, उसमें कोई न कोई परमार्थी काम जैसा तैसा किये जाते हैं और अपने मन की हालत देख कर अंतर में झुरते, शरमाते और पछताते रहते हैं और थोड़ी बहुत चिंता अपने उद्धार की निसबत उनके मन में लगी रहती है।।

६ - ऐसे जीवों को मुनासिब है कि अपनी हालत की निरख और परख हमेशा करते रहें और संत सतगुरु और उनके प्रेमी भक्तों और साधुओं से प्रीत का नाता मज़बूत जोड़ें और अपने मन में इस बात का

यक़ीन करें कि उनका काम सतगुरु दीन दयाल अपनी दया और मेहर से बनावेंगे।।

७ - और ऐसे जीवों को चाहिये कि सन्त सतगुरु और प्रेमी जन के साथ सच्ची दीनता से बर्ताव करें और जो कि मन उनका अंतरी अभ्यास में कम लगता है तो तन और धन की सेवा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ शौक़ और प्रीत के साथ ज़्यादा करें।।

८ - ऐसी कार्रवाई से उनके मन में प्रीति और प्रतीत बढ़ती जावेगी और उसके साथ मन भी थोड़ा बहुत निर्मल और निश्चल होता जावेगा और अंतर अभ्यास भी किसी क़दर दुरुस्ती से बनने लगेगा।।

९ - लेकिन इन जीवों को ख़ास कर भरोसा संत सतगुरु की दया का अपने मन में मज़बूत रखना चाहिये और जैसे बने तैसे उनकी प्रसन्नता हासिल करने में कोशिश जारी रखनी चाहिये।।

१० - इन जीवों की ऐसी हालत मुलाहज़ा करके संत सतगुरु ज़रूर उन पर दया फ़रमावेंगे यानी अख़ीर वक़्त पर उनकी सहायता करेंगे और थोड़ी बहुत प्रेम की दात देकर आइन्दा उनसे अंतरी अभ्यास दुरुस्ती से करा कर उनके मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ावेंगे और रफ़्ता रफ़्ता एक दिन निज घर में पहुँचा कर विश्राम देंगे जहाँ हमेशा को महा सुखी हो जावेंगे।।

११ - सन्त सतगुरु की दया का वार पार नहीं है। जिस जीव पर प्रसन्न हो जावें या जो कोई उनसे थोड़ी भी सच्ची प्रीत करे, उसका उद्धार सहज में आप करते हैं और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी

मुनासिब और ज़रूरी है, बे-तकलीफ़ आप करा लेते हैं और थोड़ी सी प्रीत भाव पर भारी बख़्शिश अपनी तरफ़ से करते हैं।।

१२ - जिस किसी का थोड़ा बहुत नाता या रिश्ता मुहब्बत का संत सतगुरु से लग गया, वही जीव बड़भागी है क्योंकि वह नाता उसको एक दिन दयाल देश में पहुँचा कर छोड़ेगा यानी माया के घेर के पार पहुँचा कर जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से उसका सच्चा छुटकारा कर देगा।।

१३ - सन्त सतगुरु की महिमा अपार है। जिसको उनका दर्शन भाग से मिला, गोया उसने सत्त पुरुष का दर्शन पाया, चाहे वह इस बात से ख़बरदार है या नहीं, लेकिन दर्शन का असर ज़रूर होवेगा यानी उसकी सुरत ऊँचे स्थान पर चढ़ाई जावेगी, चाहे यह काम जल्दी होवे या कुछ देर के साथ, मुताबिक़ उस शख़्स के कर्मों के। जो कर्म उसके हलके और थोड़े हैं तो वह सतसंग में शामिल होकर अभ्यास में लग जावेगा और दया और मेहर लेकर जल्दी अपना काम बनवा लेगा लेकिन जो कर्म उसके भारी और बहुत से हैं तो दया से उनका जल्द कटना शुरू हो जावेगा यानी एक दो तीन जनम में, चाहे जिस जोन में उन कर्मों का भोग करके, सतसंग में आवेगा और शौक़ के साथ बचन सुन कर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास में लग जावेगा।।

१४ - सिवाय परमार्थी नाते के जो कोई संत सतगुरु से किसी क़िस्म का नाता या प्रीत थोड़ी या बहुत जोड़ेगा, वह भी दया से ख़ाली नहीं रहेगा, चाहे

वह उनकी महिमा जाने या नहीं यानी अंत समय पर उसकी सुरत की किसी क़दर सम्हाल की जावेगी और सुख स्थान में बासा दिया जावेगा।।

१५ - दुनिया मे कोई बादशाह या महाराजा वक़्त का जिस किसी को भेष बदले हुये जहाँ कहीं मिला तो चाहे उसने उसको पहिचाना या नहीं पर मुलाक़ात और बात चीत तो उसकी बादशाह से हुई और जो वह किसी बात से ख़ुश हुआ तो तख़्त पर बैठ कर उसको जो चाहे वह इनाम दे दिया, तब उस जीव को ख़बर पड़ी कि मैं किससे मिला और क्या फ़ायदा हासिल हुआ, ऐसे ही जो कोई संत सतगुरु से मिला, वह असल में सत्त पुरुष से मिला और उन्होंने दया करके सिवाय ज़रूरी सामान दुनिया के उसको भक्ति या प्रेम की दात बख़्शी। फिर वही बख़्शिश उसके प्रेम और भक्ति यानी अभ्यास को बढ़ाती हुई एक दिन निज घर में पहुँचा कर छोड़ेगी। तब ज्यों ज्यों तरक़्क़ी होती जावेगी उसको ख़बर पड़ती जावेगी कि मैं किससे मिला और कैसी भारी दया उन्होंने मुझ पर करी और जब वे दूसरे जनम में फिर मिलेंगे और मेहर से थोड़ी बहुत अपनी पहिचान बख़्शेंगे तब यह सर्व अंग से उनकी सेवा और सतसंग और अभ्यास करेगा और दिन दिन अपना काम बनता हुआ देख कर मगन और नि:चिन्त हो जावेगा।।

१६ - ऐसी महिमा संत सतगुरु की समझ कर हर एक जीव को, चाहे औरत होवे या मर्द, मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे बने तैसे थोड़ी या बहुत प्रीत उनके चरनों में करे और चाहे जिस क़िस्म का नाता मुहब्बत

का उनके चरनों में जोड़ लेवे तो आहिस्ते आहिस्ते एक दिन उनकी मेहर और दया से छुटकारा उसका काल और कर्म के घेर और मन और माया के जाल से ज़रूर हो जावेगा और अपने निज घर में पहुँच कर परम आनंद और परम शान्ति को प्राप्त होगा।।

१७ - सन्त सतगुरु का मिलना और उनकी थोड़ी बहुत पहिचान करना महा कठिन है क्योंकि वे गुप्त रहते हैं और ज़ाहिर में जीवों की तरह बर्ताव करते हैं, इस वास्ते उनके सन्मुख जाना और सतसंग में शामिल होना और उपदेश लेकर अभ्यास दुरुस्ती से करना, बड़े भारी और कठिन काम हैं और हर एक की ताक़त नहीं कि इस मार्ग में क़दम रक्खे क्योंकि पहिले तो अपना ही मन बे-ईमान है यानी अपने सच्चे मालिक को भूल कर दुनिया के भोग और बिलास में अटक रहा है और उनकी तरफ़ से हटना नहीं चाहता और न दुनिया और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा की बुराई या नाशमानता का हाल सुनना चाहता है, बल्कि जो कोई उसको बयान करे तो हरचंद जानता है कि वह सच कहता है, तो भी उससे मन में नाराज़ होकर उसकी सूरत देखना और उसके पास बैठना और बचन सुनना मंज़ूर नहीं करता, दूसरे कुटुम्ब परिवार बिरादरी दोस्त आशना पड़ोसी वग़ैरा जिन के घट घट में वैसा ही मन बैठा हुआ है, हर तरह से अपना विरोध सच्चे परमार्थ की कार्रवाई से ज़ाहिर करते हैं यानी संत सतगुरु और उनके सतसंग और उनकी भक्ति की चाल ढाल की निस्बत उल्टे सीधे बचन तान और निंदा के सुना कर अपने रिश्तेदार या दोस्त को उसमें शामिल होने से मना करते हैं और तरह तरह के रोक और

अटकाव लगाते हैं कि जो वह सतसंग में शामिल भी हो जावे तो धमकी देकर और हर तरह से उसको तंग करके परमार्थ से हटा देते हैं, ऐसी सूरत में कोई बिरले परमार्थी जीव सतसंग में शामिल होकर ठहरेंगे और सेवा सतसंग और अभ्यास करके संत सतगुरु के चरनों में प्रीति और प्रतीत बढ़ाते हुए अपने जीव का कारज बनवा लेवेंगे और बाकी जीव निंदा वग़ैरा के डर से सतसंग में भी नहीं जावेंगे, इस तरह बग़ैर सच्ची लगन के सन्त सतगुरु से मिलना और उनके चरनों में प्रीत का जारी रहना कठिन है।।

१८ - दुनिया में लोग चाहे जैसी बद-फ़ेली करें कोई उनसे कुछ नहीं कहता क्योंकि सब का मन जो काल और शैतान का गुमाश्ता है, ऐसे कामों में राज़ी होता है पर सच्चे परमार्थ के स्थान पर जाने से उसको निहायत डर अपनी मौत और दुनिया और उसके भोग बिलास के छूटने का पैदा होता है और इस सबब से शामिल होना नहीं चाहता। जिन जीवों पर संत सतगुरु और धुर की मेहर है उनका मन संसारी जीवों के मन से मुवाफ़िक़त नहीं करता क्योंकि उसमें बजाय दुनिया की प्रीत के कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों की प्रीत का बीजा बोया हुआ है और वह दिन दिन उनकी दया और मेहर से बढ़ने और फलने वाला है।।

* * * * *

प्रकार इक्कीसवाँ

ज़मीन की चोटी यानी क़ुतुब और नये नये मुल्कों और जंगलों और पहाड़ों का हाल दरियाफ़्त करने के लिये, और भी वास्ते बनाने नई नई कलें और सवारियाँ हवा में और पानी और ज़मीन पर चलने की, बहुत कोशिश और मेहनत और तन, मन, धन का ख़र्च हिम्मत वाले लोग कर रहे हैं। इसके सिवाय हाल आसमानी रचना और इल्म कीमियागरी और क़ुव्वत बर्क़ी वग़ैरा की तहक़ीक़ात करके बहुत सी बातें ईजाद कर चुके हैं और करते जाते हैं कि जिनके सबब से अवाम को थोड़ा बहुत फ़ायदा दुनियावी पहुँचना मुमकिन है। लेकिन घट के भेद की बहुत कम वाक़फ़ियत है। इस तरफ़ भी यानी अपने अन्तर में तवज्जह करके कुछ हाल दरियाफ़्त करना मुनासिब मालूम होता है कि जिससे भारी फ़ायदा जीवों का वास्ते हासिल होने मुक्ति और परम आनन्द बाद मरने के मुतसव्वर है।।

१ - दुनिया में देखने में आता है कि बहुत से इल्म और शौक़ वाले लोग अपनी तेज़ हिम्मत और बुलन्द होसलगी और तलाश और तहक़ीक़ात और मेहनत और मशक़्क़त से और तन मन धन ख़र्च करके बहुत से नये नये मुल्कों और सितारों वग़ैरा के हाल की ख़बर देते हैं और नई नई कलें और नई नई इल्मी बातें ज़ाहिर करते हैं कि जिनसे दुनिया के लोगों को थोड़ा बहुत आराम और फ़ायदा पहुँचता है या अचरजी बातें और कार्रवाइयाँ सुनने और देखने में आती हैं।।

२ - इनमें से बहुत से ऐसे काम हैं कि उनमें इत्तिफ़ाक़ से जान और माल का नुक़सान भी हो जाता है लेकिन फिर भी हिम्मत वाले लोग उन कामों के पूरा करने के वास्ते बराबर कोशिश जारी रखते हैं।।

३ - फ़ायदा इन कार्रवाईयों का इस क़दर है कि दुनिया में इल्म और अक़्ल की तरक़्क़ी होती है और कलों वग़ैरा की ईजाद से लोगों को इसी ज़िन्दगी में नफ़ा और आराम पहुँचता है लेकिन बाद मरने के क्या हाल होगा, इसकी तहक़ीक़ ख़बर बहुत कम मालूम है।।

४ - जो कोई ऐसा हिम्मत वाला है कि वह इस तहक़ीक़ात पर कमर बाँधे कि सच्चा मालिक कौन और कहाँ है और जीव को बाद मरने के किस तरह सुख मिल सकता है और दुक्खों से कैसे बचाव हो सकता है और कौन कार्रवाई इसको इस ज़िन्दगी में करना चाहिये कि जिससे अपने निज घर में जहाँ से जीव आया है, पहुँचे और माया के देश में नीची ऊँची जोनों में भरम कर दुख न पावे।।

५ - ऐसा शख़्स परमार्थी कहलाता है और उसी के हिरदे में सच्चे मालिक का प्रेम जागेगा यानी जिस क़दर भेद और महिमा सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की उसको मालूम होती जावेगी, उसी क़दर उसके दिल में प्यार और शौक़ मिलने का पैदा होगा।।

६ - ऐसे खोजी और तहक़ीक़ात करने वाले को सिर्फ़ राधास्वामी मत में पूरा पूरा हाल और भेद मालिक का और जुगत उसके मिलने की मालूम हो सकती है। और जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उनमें सच्चे खोजी को मुफ़स्सिल हाल और भेद नहीं दरियाफ़्त हो सकता और न उसकी तसल्ली हो सकती है।।

७ - जो कि इस दुनिया में कोई चीज़ ठहराऊ नहीं है, सब का अपने अपने वक़्त पर अभाव हो जाता है, इस वास्ते यहाँ के इल्म और अक़्ल और सुख और आराम वग़ैरा का कुछ एतबार नहीं हो सकता और न यहाँ के दुक्खों के दूर करने का जतन किसी से पूरा पूरा बन सकता है, फिर चाहे जैसे सुख और दौलत और हुकूमत वग़ैरा किसी को हासिल हो जावें, एक दिन उनको ज़रूर छोड़ना पड़ेगा।।

८ - इस वास्ते सच्चे खोजी को दरियाफ़्त करना नीचे की लिखी हुई बातों का बहुत ज़रूर है कि जिससे वह यहाँ के नाशमान दुख सुख से बचकर ऐसे देश में बासा पावें कि जो अमर है और जहाँ पहुँच कर यह भी अमर हो जावे और जहाँ इसको परम आनन्द प्राप्त होवे और दुख और कलेश किसी तरह का वहाँ न होवे।।

९ - तहक़ीक़ात करने के लायक बातें यह हैं :-

(१) - कुल मालिक कौन है, कहाँ है और कैसा है?

(२) - जीव कौन है और कहाँ से आया और अमर है या क्या?

(३) - यह दुनिया कौन देश है?

(४) - जो जीव अमर है तो उसको कौन कार्रवाई वास्ते प्राप्ति अमर सुख और पहुँचने अपने निज धाम के करना चाहिये ताकि दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से पूरा बचाव हो जावे?

(५) - थोड़ा बयान रास्ते के हाल का और कैफ़ियत चलने वाले की।।

१० - ऊपर के पाँच सवालों का मुख़्तसिर जवाब नीचे लिखा जाता है :-

(१) - कुल मालिक की मौजूदगी में किसी तरह का शक नहीं है। देखो यहाँ की रचना इस सूरज के आधीन है और यह सूरज उससे ऊँचे सूरज का आधीन है और इसी तरह वह सूरज सत्तनाम सत्त-पुरुष के आधीन है और सत्तनाम कुल-मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है। यह पद अपार और अनंत और अमर और अजर है और ऊँचे से ऊँचा उसका धाम और देश है और शब्द और प्रेम का अथाह भंडार है और शब्द और प्रेम ही उसका निशान और ज़हूरा है।।

(२) - जीव यानी सुरत सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल की अंस यानी किरन है और उनके चरनों से उतर कर नीचे के देश में आई है और अब पिंड में आँखों के मुक़ाम पर बैठ कर इस दुनिया में कार्रवाई कर रही है और मुवाफ़िक़ अपने भंडार और पिता के, अमर और

अजर है और शब्द ही उसका भी ज़हूरा है यानी जब तक आदमी बोलता है, ज़िन्दा है और जब बोल बन्द हो गया, मुरदा है यानी सुरत देह को छोड़ गई।।

(३) - यह दुनिया निर्मल चैतन्य और मलीन माया का देश है यानी संतों के हिसाब के मुवाफ़िक़ तीसरा दरजा है और दूसरा दरजा इससे ऊँचा जिसको ब्रह्मांड कहते हैं, निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया का देश है और उससे भी ऊँचा पहिला दरजा जिसको निर्मल चैतन्य देश कहते हैं और जहाँ माया नहीं है, कुल-मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी का धाम है। इस मलीन माया देश में दुख सुख और जनम मरन का चक्कर चल रहा है और उसके सबब से जीव कष्ट और कलेश भोगते हैं।।

(४) - सन्त सतगुरु की संगत में पहुँच कर उनसे दीनता और प्रीत के साथ उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का नित्त अभ्यास करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ करके प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे और बाहर से चित्त देकर सतसंग और सेवा तन, मन, धन की जिस क़दर बन सके करता रहे और जो इत्तिफ़ाक़ से सतसंग में ठहरना न होवे तो थोड़ा सा पाठ बानी का समझ समझ कर शौक़ के साथ करता रहे और जहाँ तक मुमकिन होवे बचनों के मुवाफ़िक़ अपनी रहनी भी दुरुस्त करता जावे।।

(५) - पिंड यानी रचना के तीसरे दरजे में छः चक्र हैं और छठे में असली बैठक सुरत की है और सन्तों का रास्ता यहीं से यानी नैन नगर में होकर चलता है। ब्रह्मांड यानी दूसरे दरजे में तीन मुक़ाम है और उसके

ऊपर महासुन्न का मैदान है जो कि निर्मल चैतन्य देश और ब्रह्म और माया देश के बीच में बतौर हद्द के वाक़ै है और पहिले दरजे यानी निर्मल चैतन्य देश में चार मुक़ाम हैं और इनके परे कुल मालिक राधास्वामी का निज धाम है।।

अभ्यासी को रास्ते में शब्द सुन कर और स्वरूप का दर्शन करके अथवा प्रकाश देख कर रस और आनंद पैदा होगा और कुछ कुछ राधास्वामी दयाल की दया और मेहर की परख होती जावेगी। तब उसकी प्रीति और प्रतीत चरनों में आहिस्ते आहिस्ते बढ़ती जावेगी और संसार और उसके सामान की तरफ़ से उसी क़दर मन हटता जावेगा और फिर जिस क़दर अभ्यास की तरक़्क़ी मेहर और दया से होती जावेगी, उसी क़दर आनंद और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जावेगी। और ज़्यादा हाल बानी और बचन से मालूम होवेगा।।

११ - सच्चा खोजी और दर्दी इस हाल को सुन कर बहुत ख़ुश होगा और दिलो-जान से वास्ते पूरा करने अपने मतलब यानी प्राप्ति दर्शन कुल मालिक के कार्रवाई करने को तैयार होगा और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम और भाव के साथ बर्ताव करेगा और उनके उपदेश के ब-मूजिब अभ्यास शुरू करके उसमें आहिस्ते आहिस्ते तरक़्क़ी हासिल करेगा।।

१२ - इस तरकीब से उसको सन्तों के बचन की अपने अंतर में जाँच होती जावेगी और दया और मेहर की परख करके दिन दिन प्रीत और प्रतीत और शौक़ चरनों में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के, बढ़ता

जावेगा और एक दिन धुर धाम में पहुँच कर उसका कारज पूरा बन जावेगा।।

१३ - ऐसे प्रेमी और दर्दी सेवक के दर्शन और संग और बचन बिलास से बहुत से जीवों को फ़ायदा होगा यानी वे भी परमार्थ की कार्रवाई में शामिल होकर अपना भाग जगा कर सच्चे उद्धार के भागी हो जावेंगे और यह सिलसिला एक दूसरे से आइन्दे को बढ़ता जावेगा।।

१४ - खोजी सेवक और जिस जिस को उस का संग होगा, अंतर में कुछ रस पा कर और कुल मालिक की दया और क़ुदरत देख कर सच्चे परमार्थ की महिमा जानेंगे और अपने भागों को सराह कर निहायत मगन होवेंगे और तब उनको ख़बर पड़ेगी कि दुनियावी और परमार्थी तहक़ीक़ात और तलाश और उसकी कार्रवाई में किस क़दर फ़र्क है और फिर किस क़दर लोगों पर फ़र्ज़ है कि बजाय बाहर में तहक़ीक़ात और तलाश करने रचना की चीज़ों के, अपने घट में तवज्जह और तहक़ीक़ात करने और रास्ता काटने में किस क़दर भारी और अनमोल और हमेशा का रूहानी फ़ायदा है। सिर्फ़ अपने ही वास्ते नहीं बल्कि सब जीवों को जो जो बचन सुनें और मानें और उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करें।।

* * * * *

प्रकार बाईसवाँ

दुनिया का कोई काम सीखने या करने के वास्ते शौक़ और सिखाने वाला और सीखने वालों का संग दरकार है। इसी तरह परमार्थ की कार्रवाई के वास्ते मालिक के चरनों का प्रेम और सतगुरु और प्रेमी जन का संग ज़रूर है। तब दुरुस्ती के साथ अभ्यास बन पड़ेगा और आहिस्ते आहिस्ते तरक़्क़ी होती जावेगी।।

१ - दुनिया में जितने काम और इल्म और हुनर और कारीगरी वग़ैरा हैं बग़ैर शौक़ सीखने वाले के और बग़ैर उपदेश और तालीम सिखाने वाले के, नहीं हासिल होते हैं,बल्कि सीखने वालों की जमाअत[1] में दाख़िल[2] होने से जल्दी सीखने में आते हैं और शौक़ भी तेज़ हो जाता है।।

२ - इसी तरह जो कोई सच्चा परमार्थ हासिल किया चाहे, वह भी बग़ैर संत सतगुरु और उनके सतसंग के और भी बग़ैर शौक़ और प्रेम के नहीं प्राप्त हो सकता है। इस वास्ते सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को पहिले सतगुरु और सतसंग का तलाश करना ज़रूर है और जब उनका पता मिल जावे तो वहाँ जाकर दीनता के साथ और कपट छोड़ कर शामिल होना चाहिये।।

१ - संगत। २ - शामिल

३ - पहिले दिन संत सतगुरु और सतसंग की महिमा और उनकी गति की अच्छी तरह ख़बर नहीं पड़ेगी लेकिन जो कोई पाँच चार या ज़्यादा दिन बराबर सतसंग करेगा और बचन चित्त देकर के सुनेगा और उनका मनन और बिचार भी करेगा तो उसको मालूम होगा कि संत अथवा राधास्वामी मत से ऊँचा और गहरा और धुर पद में पहुँचाने वाला और कोई मत रचना भर में नहीं है और जो भेद रास्ते और मंज़िलों का और जुगत चलने की जैसा कि खोल कर सफ़ाई के साथ राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी और बचन में वर्णन किया है उस का ज़िक्र पूरा पूरा और साफ़ साफ़ किसी मत की किताबों में पाया नहीं जाता।।

४ - इस वास्ते सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को चाहिये कि भटकना और अटकें छोड़ कर मन और चित्त से राधास्वामी मत का अभ्यास शुरू कर दे और होशियारी के साथ सतसंग के बचन सुन कर और समझ कर संसार और संसारी जीवों में और भी माया और उसके रचे हुए पदार्थों और भोगों में प्रीत कम करे और उनकी प्राप्ति के वास्ते फ़िज़ूल चाह न उठावे।।

५ - जब इस तरह सतसंग किया जावेगा, तब मन में से भाव और प्यार संसार और उसके भोग विलासों का घटना शुरू होवेगा और उसी क़दर परमार्थ और उसके भेद की महिमा और बड़ाई चित्त में समाती जावेगी और थोड़ा बहुत अभ्यास भी दुरुस्ती से बनता जावेगा और अन्तर में मेहर और दया से थोड़ा थोड़ा रस भी मिलता जावेगा और शौक़ और उमंग बढ़ते जावेंगे।।

६ - ऐसे सच्चे परमार्थी को दया करके संत सतगुरु अपनाते हैं और हर तरह से उसकी रक्षा और सम्हाल करते हुए उसकी समझ बूझ और अभ्यास में मुनासिब तरक़्क़ी देते जाते हैं कि जिससे उसके मन के संसारी बंधन दिन दिन ढीले होकर चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जाती है और सतगुरु की आज्ञा के अनुसार अपना व्यवहार और बर्ताव दुरुस्त करता जाता है।।

७ - और सतसंग में प्रेमी जन की हालत और उनका भक्ति अंग में बर्ताव देखकर सच्चे परमार्थी के मन में प्रेम और उमंग जागते हैं और भक्ति की रीति में दिन दिन तरक्की के साथ बर्ताव होता जाता है और अंतर में आहिस्ते आहिस्ते मन और सुरत की चढ़ाई भी होती जाती है।।

८ - हरचंद मन और माया और काल और कर्म अनेक तरह के विघ्न डालते हैं, पर संत सतगुरु की दया और सच्चे परमार्थी की लगन और मेहनत से वे आहिस्ते आहिस्ते कटते जाते हैं और अभ्यास में थोड़ी बहुत आसानी होती जाती है।।

९ - कुटुम्बी और बिरादरी के लोग और दोस्त आश्ना सच्चे सतसंग की निंदा करते हैं और सच्चे परमार्थी को अनेक तरह के डर दिखा कर और धमका कर हटाना और रोकना चाहते हैं, लेकिन राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से उन लोगों की तदबीरें पेश नहीं जाती हैं, बल्कि सच्चे परमार्थी को पक्का करती हैं और उसकी प्रीत और प्रतीत को तेज़ी और मज़बूती देती हैं।।

१० - अफ़सोस का मुक़ाम है कि दुनिया के कामों में कुटुम्बी और बिरादरी के लोग और दोस्त आश्ना सब मदद देते हैं पर सच्चे परमार्थ की कार्रवाई में बजाय मदद देने के अनेक तरह के विघ्न डालते हैं और अदावत करते हैं, लेकिन जो कुल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया शामिल हाल है तो सच्चे परमार्थी का कुछ अकाज नहीं हो सकता बल्कि यह सब लोग उसकी नज़र में नादान और ओछे और मालिक की भक्ति के विरोधी नज़र आते हैं और इस सबब से उसकी प्रीत और बंधन इनके साथ दिन दिन घटता जाता है और अंतर की सफ़ाई जल्द होती जाती है।।

११ - प्रेम या शौक़ बहुत भारी और अनमोल पदार्थ है और जिस घट में यह थोड़ा बहुत प्रकट हुआ, वहाँ सफ़ाई करेगा यानी संसारी चाहों को हटावेगा और मन के बिकारी अंगों को दूर करेगा।।

१२ - प्रेम की दौलत जिस किसी को थोड़ी बहुत मिली वही बड़भागी है और वही सच्चे मालिक और संत सतगुरु की दया लेवेगा।।

१३ - जिस घट में मालिक के चरनों का प्रेम थोड़ा बहुत बसा है, वही आहिस्ते आहिस्ते सब का प्यारा हो जावेगा और उसके मन में सब की तरफ़ प्यार और दया भाव पैदा होता जावेगा और अपने अंतर में वह हमेशा मगन रहेगा, सिर्फ़ प्रेम के बढ़ने की तड़प लगी रहेगी।।

१४ - सच्चे मालिक के भक्त और प्रेमी जन सदा शान्त स्वरूप रहते हैं और जो कुछ कि मालिक देवे और जैसे उनको रक्खे, उसी में राज़ी रहते हैं।।

१५ - सच्ची दीनता प्रेमियों का ज़ेवर है और क्षमा करना उनका स्वभाव हो जाता है।।

१६ - सच्चे प्रेमी कुल-मालिक और संत सतगुरु की सेवा में तन मन धन बहुत ख़ुशी और उमंग के साथ लगाते हैं और उनके यही चाह ज़बर रहती है कि कुल-मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की प्रसन्नता हासिल करें।।

१७ - प्रेमी भक्त पर इस क़दर दया रहती है कि उसकी सुरत और मन को अंतर अभ्यास में कोई चीज़ रोक या लुभा नहीं सक्ती और न बाहर कोई माया के पदार्थ या भोग उसको अटका सकते हैं।।

१८ - जिस घट में प्रेम प्रकट है, वहीं सुमत और आनंद का बासा है और जहाँ मालिक के चरनों का प्रेम नहीं है, वहीं कुमत और क्लेश का थाना है।।

१९ - यह प्रेम संत सतगुरु और प्रेमी जन के संग से हासिल होगा। और कोई जतन उसकी प्राप्ति का दुरुस्त नहीं है। ख़ुलासा यह कि यह दौलत सतगुरु की दात है। जिस पर वे दया करें उसी को बख़्शें।।

२० - जो कि बग़ैर प्रेम के कुल-मालिक के धाम में पहुँचना मुमकिन नहीं है, इस वास्ते हर एक सच्चे परमार्थी को चाहिये कि पहिले संत सतगुरु का खोज करे और जब वे भाग से मिल जावें, तब उनका सतसंग और सेवा करके उनकी दया और प्रसन्नता

हासिल करे, तब प्रेम की बख़्शाइश होगी और उससे सब कारज सिद्ध होते चले जावेंगे यानी सब की प्रीत हट कर या घट कर संत सतगुरु और मालिक के चरनों में गहरा प्रेम आ जावेगा और तब ही सुरत और मन चढ़ना शुरू करेंगे और आहिस्ते आहिस्ते एक दिन धुर धाम में पहुँच कर सच्चे मालिक का दर्शन और उसके चरनों में बासा मिलेगा।।

२१ - जिस मत में संत सतगुरु और कुल मालिक के चरनों में प्रेम की ज़रूरत नहीं समझी जाती है और न उस प्रेम की प्राप्ति के वास्ते कोई जतन कराया जाता है, वह मत थोथा और ख़ाली है। उसमें कभी जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि सिवाय संत अथवा राधास्वामी मत के और किसी मत में शामिल होकर अपना वक़्त बे-फ़ायदे न खोवे, क्योंकि वहाँ सिवाय ज़ाहिरी और दिखावे की कार्रवाई के, और कोई जतन वास्ते सफ़ाई और चढ़ाई मन और सुरत के, जारी नहीं है।।

प्रकार तेईसवाँ

जड़ चैतन्य की गाँठ क़ुदरती लगी हुई है और इस संसार में बहुत जगह जीवों ने आप बन्धन लगाये हैं, सो हर एक को मुनासिब है कि मरने से पेश्तर उस गाँठ के खोलने का जतन शुरू कर दे और जगत के बन्धन जहाँ

तक मुमकिन हो, ढीले करे ताकि अख़ीर वक़्त पर काल की खींचातानी का दुख और क्लेश न सहना पड़े और सहज में छुटकारा होकर सुरत अपने देश की तरफ़ सिधारे।।

१ - मालूम होवे कि वक़्त उतार सुरत के पहिली गाँठ जड़ चैतन्य की त्रिकुटी के मुक़ाम पर लगी, जहाँ चै़तन्य की माया के साथ मिलौनी हुई और फिर दरजे-ब-दरजे उतार होकर वह मिलौनी बढ़ती गई, यहाँ तक कि सुरत का बंधन साथ मन और इन्द्रिय और देह के बहुत मज़बूत हो गया।।

२ - वक़्त पैदाइश से जवानी की उम्र तक सुरत का फैलाव देह में होता है और अंग अंग में उसका बंधन मज़बूत हो जाता है।।

३ - इसी अरसे में जीव का बंधन यानी मुहब्बत साथ कुटुम्ब परिवार और बिरादरी और दोस्त आश्नाओं के पैदा हो जाता है और अनेक भोगों और पदार्थों में रस पा कर जीव की आशक्ति भारी हो जाती है।।

४ - ख़ुलासा यह है कि अनेक जीवों और चीज़ों और भोगों में आशक्ति और बंधन पैदा करके जीव इस संसार में बहुत दुख और क्लेश सहते हैं यानी अलावे भोगने फल अपने कर्मों के दूसरों के कर्मों का असर भी (जब उनको दुख होता है) झेलना और सहना पड़ता है और ज़ाहिरा कोई जतन ऐसे दुक्खों से बचाव का नहीं मालूम होता है।।

५ - जब वक़्त मौत का आता है, उस वक़्त काल सुरत और मन को ऊपर की तरफ़ खींचता है और यह दोनों अपने स्वभाव और आशक्ति के मुवाफ़िक़ अंग २ की तरफ़, और भी बाहर के बंधनों की तरफ़, झोका खाते हैं और खिंचते हैं और इस खैंचातानी में बहुत दुख और क्लेश होता है और झटके और झकोले खाने पड़ते हैं।।

६ - इस तकलीफ़ के कम या दूर करने का जो कि आख़ीर वक़्त पर थोड़ी या बहुत सब जीवों को गुप्त या प्रकट सहनी पड़ती है, कोई भी जतन या इलाज नहीं करता, बल्कि बहुत से लोग उससे बिल्कुल बे-ख़बर हैं और इस क़दर दुनिया के कामों में फँसे हुए हैं कि कभी मौत के वक़्त की हालत का ख़्याल भी नहीं करते।।

७ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके फ़रमाया है कि कुल जीवों को चाहे औरत होवें या मर्द, मुनासिब और लाज़िम है कि जीते जी यानी इसी ज़िन्दगी में अपने प्रकट और गुप्त बंधनों के तोड़ने या घटाने का जतन शुरू करदें और उस जतन या तरकीब का असर और फ़ायदा राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करने से हासिल होगा।।

८ - और वह जतन और तरकीब यह है कि जो घट घट में हर वक़्त शब्द हो रहा है, उसको तवज्जह के साथ एकान्त बैठ कर सुने और उसकी आवाज़ को पकड़ कर अपने मन और सुरत को ऊँचे की तरफ़ चढ़ावे और इसी तरह मुक़ामी या गुरु स्वरूप का ध्यान नियम से करे तो उसके आसरे मन और सुरत एक

मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम की तरफ़ चढ़ेंगे और कुछ रस भी पावेंगे।।

९ - इस अभ्यास के करने से अंतरी और बाहरी बंधन ढीले होवेंगे, बल्कि जिस क़दर रस मिलेगा,उसी क़दर सुरत और मन सब तरफ़ से हट कर थोड़ा बहुत अपने घट में चढ़ेंगे।।

१० - जिस क़दर यह बात कि संसार और उसके भोग सब नाशमान हैं और कुटुम्बी और बिरादरी के लोग सब स्वार्थ के यार हैं और इस देश में किसी को सच्चा और पूरा सुख हासिल नहीं है, चित्त में समाती जावेगी और तजरुबे से उसकी ख़बर पड़ती जावेगी, उसी क़दर मन फ़िज़ूल बंधनों को तोड़ देगा और ज़रूरी बंधनों को हलका करके मालिक के दर्शन की प्राप्ति के वास्ते होशियारी और शौक़ के साथ अभ्यास करेगा।।

११ - यह सब बातें जो ऊपर लिखी गई हैं संत सतगुरु के सतसंग और उनके उपदेश की कमाई से हासिल होंगी। इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि पहिले संत सतगुरु की तलाश करें और जब मौज से पता मिल जावे, तब उनके सतसंग में हाज़िर होकर बचन चेत कर सुनें और विचारें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके, अभ्यास शुरू करें।।

१२ - इस दुनिया में सिवाय संत सतगुरु के कोई किसी का सच्चा संगी और हितकारी नहीं है। वे जीव की हर दम रक्षा और सहायता कर सकते हैं। पर शर्त यह है कि सच्चे मन से उनकी सरन में आवे और जो

वे हिदायत करें, उसके मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सके कार्रवाई शुरू कर दे, तब वे अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी ज़रूर है, इससे करालेंगे और अपने चरनों में प्रीत लगवा कर इसके गुप्त और प्रकट बंधन ढीले कर देंगे कि जिसके सबब से मौत के वक़्त इस को तकलीफ़ बहुत कम होगी और मेहर और दया से अपने दर्शन देकर इसकी सुरत को चरनों में लिपटा कर ऊँचे और सुख स्थान में बासा देंगे और जब तक कि यह करनी करके अधिकारी धुर धाम में पहुँचने का न होगा, तब तक कई बार नर देह में जनम देकर और दरजे-बदरजे करनी करा के ऊँचे से ऊँचे और ज़्यादा से ज़्यादा सुख स्थान में बासा देते जावेंगे और एक दिन राधास्वामी धाम में पहुँचा कर इस को अमर और परम आनंद बख़्शेंगे और जनम और मरन और देहियों के दुख सुख से क़तई छुटकारा कर देंगे।।

१३ - ऐसी भारी दया जिसका ज़िक्र ऊपर लिखा गया, कुल-मालिक राधास्वामी दयाल ने इस समय में जीवों पर फ़रमाई है। और किसी मत में यह बात किसी को हासिल नहीं हो सकती यानी अपने कर्मों के मुवाफ़िक़ शुभ और अशुभ फल पाते हैं और चौरासी का चक्कर उनका किसी वक़्त में बन्द और दूर नहीं होता है। यह ताक़त सिर्फ़ सन्तों की है कि जिसको अपनी सरन में लगावें, उसी का चक्कर बंद करके दो तीन, हद्द चार बार, नर देही में जनम देकर और भक्ति और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास कराके निज घर में पहुँचाते हैं और जड़ चैतन्य की गाँठें जो जा-ब-जा लगी हैं, वह सब खोल देते हैं यानी जैसे सुरत चढ़ती जाती है, उसी क़दर माया के घेर से निकलती जाती है।।

१४ - मालूम होवे कि पिंड में सुरत मन और माया के ख़ोलों में दबी हुई है और वही ख़ोल उसके आवरण यानी परदे हो रहे हैं और वे ही ख़ोल सूक्ष्म और स्थूल वग़ैरा देही कहलाते हैं सो इन परदों यानी देहियों से बग़ैर प्रीति और प्रतीत सतगुरु और कुल-मालिक राधास्वामी दयाल के, और भी बग़ैर अभ्यास सुरत शब्द मार्ग के, उबार यानी छुटकारा नहीं हो सकता। ख़ुलासा यह कि जिस क़दर सुरत विरह और प्रेम अंग लेकर और शब्द की धुन या डोरी को पकड़ के ऊपर की तरफ़ घट में चढ़ेगी, उसी क़दर भौसागर यानी माया के घेर से उसकी निकासी होती जावेगी और उसी क़दर मन और माया के बंधन ढीले और दूर होते जावेंगे।।

१५ - बग़ैर सुरत की चढ़ाई के घट में ऊँचे देश की तरफ़ परदों का दूर होना और जड़ चैतन्य की गाँठों का खुलना मुमकिन नहीं है और जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उनमें भेद कुल-मालिक और उसके धाम का, और भी रास्ते और उसके मंज़िलों का, और जुगत चलने और चढ़ने का कुछ ज़िक्र नहीं है और न कोई अभ्यास इस क़िस्म का ज़ारी है। फिर साफ़ ज़ाहिर है कि उन मतों में जीव का सच्चा और पूरा उद्धार मुमकिन नहीं है।।

१६ - यह उद्धार निहायत दया और आसानी के साथ सिर्फ़ राधास्वामी मत में हो सकता है। इस वास्ते सब जीवों को जो बारम्बार देह धरने और उसके साथ दुख सुख सहने से बचाव चाहते हैं, मुनासिब है कि राधास्वामी मत में शामिल होकर और उपदेश सुरत

शब्द योग का लेकर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन दृढ़ करके थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करें तो उनके जीव का गुज़ारा ब-ख़ूबी हो जावेगा।।

१७ - और मालूम होवे कि तरीक़ा अभ्यास सुरत शब्द योग का राधास्वामी दयाल ने इस क़दर आसान कर दिया है कि लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द उसको ब-आसानी कर सकते हैं, और उसमें प्राणों के खींचने और रोकने और चढ़ाने की कुछ ज़रूरत नहीं है, सिर्फ़ चित्त लगा कर शब्द को जो घट घट में हर दम हो रहा है, भेद समझ कर सुनना चाहिये। फिर जो कुछ कि असर और फ़ायदा इस अभ्यास का है, वह अभ्यासी को आप थोड़े दिन में नज़र आवेगा और आइंदे को उसकी प्रीत और प्रतीत चरनों में कुल मालिक और सतगुरु के, और भी इस अभ्यास में, आहिस्ते आहिस्ते बढ़ती जावेगी और एक दिन दया से पूरा काज बन जावेगा।।

प्रकार चौबीसवाँ

इस लोक में मनुष्य स्वरूप सब से उत्तम है और उसके स्वरूप का ख़ाका बराबर नीचे की जोनों में थोड़ी कमी बेशी के साथ चला गया है तो खोजी को दरियाफ़्त करना चाहिये

कि यह मनुष्य स्वरूप कहाँ से आया यानी ऊँचे लोकों में यह स्वरूप दरजे-ब-दरजे ज़्यादा लतीफ़ और नूरानी और ताक़त वाला ज़रूर होगा और जहाँ कि प्रथम ज़हूर स्वरूप का हुआ, उसके परे असली अरूप है, सो उस आदि स्वरूप और उसके परे असली अरूप से मिलना चाहिये और वही कुल मालिक का धाम है और वहीं पहुँच कर सुरत को पूरा २ सुख और अमर आनंद प्राप्त होगा।।

१ - इस लोक में जिस क़दर कि रचना जानदारों की है, उसमें मनुष्य स्वरूप सब से उत्तम है यानी इस स्वरूप में कुल मालिक का जलवा और प्रकाश ज़्यादा मौजूद और प्रकट है और इसी सबब से मनुष्य की हुकूमत थोड़ी बहुत सब जानदारों पर है, बल्कि तत्त्वों और गुनों से भी (जो कि माया का मसाला है) मुनासिब और ज़रूरी काम वास्ते अपने आराम के लेता है।।

२ - इस लोक में मनुष्य स्वरूप का नक़्शा या ख़ाका कुछ कमी और बेशी के साथ कुल जानवरों में पाया जाता है और दरजे-ब-दरजे ताक़त उसकी किसी २ अंग में कम होती गई और किसी किसी अंग में बाज़े जानवर मनुष्य से बहुत ज़्यादा ताक़त रखते हैं, लेकिन यह सब से सेवा लेता है।।

३ - अब ग़ौर करना चाहिये कि जैसे मनुष्य स्वरूप का नमूना नीचे के दरजों में पाया जाता है इसी तरह

यह भी किसी विशेष उत्तम और ऊँचे दरजे के स्वरूप का नमूना है और जो स्वरूप कि दरजे-ब-दरजे ऊँचे मुक़ामात में हैं वे मनुष्य स्वरूप से ज़रूर ज़्यादा लतीफ़ और नूरानी और ताक़त में विशेष होने चाहिये लेकिन इन आँखों से वह रचना नज़र नहीं आ सकती।।

४ - संत सतगुरु (जो कुल मालिक के ख़ास मुसाहब या पुत्र और कुल रचना के भेद से वाक़िफ़ हैं) फ़रमाते हैं कि सब रचना उस धार की करी हुई है जो कुल मालिक के चरनों से आदि में प्रकट हुई और वह धार किसी क़दर फ़ासले पर ठहर कर और मंडल बाँध कर रचना करती हुई उतरी है। इस तरह कई मंडल, एक के नीचे एक, रचे गये हैं और हर एक मंडल में पहिली रचना के मुवाफ़िक़ यानी थोड़ी बहुत उसी नमूने पर नीचे रचना होती आई।।

५ - जो कि मनुष्य स्वरूप कुल रचना का नमूना है और इस में कुल मंडल और उनकी रचना का नक़्शा छोटे पैमाने के मुवाफ़िक़ मौजूद है तो जो कोई संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ अपने घट में अभ्यास करके मन और सुरत को चढ़ावे, वह उस सब रचना को अन्तर दृष्टि से देख सकता है।।

६ - कुल-मालिक अरूप और अपार और अनंत और अकह और सब जगह मौजूद है, लेकिन एक-देशी भी है और सर्व-देशी भी यानी एक देश में बे-परदे और माया से रहित है और बाक़ी देश में माया के ग़िलाफ़ों से ढका हुआ है। जो आदि धार कि उस एक-देशी स्वरूप के चरनों से निकसी और रचना करती चली आई, उसी से किसी क़दर फासले पर

माया प्रकट हुई यानी जो आदि ग़िलाफ़ कि चैतन्य के ऊपर किसी क़दर फ़ासले पर शुरू हुआ, उस धार ने उसको जुदा करके उससे रचना का कारज लिया और उसी स्थान पर प्रथम मिलौनी चैतन्य की साथ सूक्ष्म से सूक्ष्म माया के हुई और वहीं आदि स्वरूप प्रकट हुआ और फिर उसी स्वरूप का नमूना या नक़्शा नीचे की रचना में आया और दरजे-ब-दरजे उसमें कमी बेशी होती गई, यहाँ तक कि मनुष्य स्वरूप प्रकट हुआ और वह थोड़ा बहुत उसी आदि स्वरूप का नमूना है।।

७ - जो आदि धार कि प्रकट हुई, वही चैतन्य और शब्द की धार है, क्योंकि शब्द प्रथम ज़हूरा चैतन्य का है। इस तरह कुल रचना शब्द स्वरूप है, कहीं प्रकट और कहीं गुप्त। जहाँ शब्द प्रकट है, वे जानदार कहलाते हैं, जैसे जब मनुष्य पैदा होता है, पहिले शब्द करता है, तो ज़िन्दा समझा जाता है ओर जब बोल यानी शब्द बंद हो जाता है, तब मुरदा है।।

८ - कुल रचना धारों की है और जो सुरत की धार उतर कर पिंड में नेत्र के मुक़ाम पर ठहरी है, वही शब्द और नूर और जान की धार है। जो कोई ऊँचे दरजों की सैर करता हुआ कुल मालिक के धाम में पहुँचना चाहे, उसको मुनासिब है कि सुरत की धार को पकड़ के उलटा चढ़े यानी जो शब्द की धुन उस धार के साथ होती चली आई है, उसको सुनता हुआ चले।।

९ - शब्द की बराबर कोई गुरू और अँधेरे में प्रकाश करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है। इस वास्ते शब्द का भेद लेकर रास्ता तै करना शुरू करे।।

१० - जितने मुक़ाम कि कुल मालिक के धाम से और जीव की पिंड में बैठक के स्थान तक वाक़े हैं, उन हर एक मुक़ाम का शब्द जुदा है। सो एक मुक़ाम के शब्द को पकड़ कर दूसरे और दूसरे को पकड़ के तीसरे मुक़ाम पर और आगे, इसी तरह चढ़ना और चलना होगा और ऐसे ही एक मुक़ाम के स्वरूप का या सतगुरु के स्वरूप का एक मुक़ाम पर ध्यान करके, वहाँ पहुँचना और इसी तरह दूसरे, तीसरे, चौथे और पाँचवें मुक़ाम तक जो आदि स्वरूप का स्थान है, ध्यान करके चलना मुमकिन है।।

११ - मुफ़स्सिल भेद रास्ते और मुक़ामों का और उनके स्वरूप और शब्दों का सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर कहा है और राधास्वामी संगत से उसका उपदेश मिल सकता है यानी जुगत ध्यान और भजन की मालूम हो सकती है। और किसी मत में जो आज कल जारी हैं, यह भेद और ऐसी आसान तरकीब अभ्यास की जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके प्रकट की है, मुतलक़ नहीं पाई जाती है।।

१२ - इस वास्ते जिस किसी को अपने घट में चढ़ कर ऊँचे दरजे के स्वरूपों का दर्शन, और भी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने का, सच्चा शौक़ है, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर कोई दिन सतसंग करे और जब उसूल और शरायत इस मत के ब-ख़ूबी समझ में आ जावें, उस वक़्त उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर दे।।

१३ - आज कल जीवों पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल बड़ी भारी दया कर रहे हैं यानी जिस ने कि उनके चरनों की सरन लेकर के तीन रोज़ भी सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास किया, उसको चौरासी से बचा कर अख़ीर वक़्त में ऊँचे और सुख स्थान में बासा देते हैं और दो तीन बार नर देही में जनम देकर और अपनी दया से करनी कराके निज धाम में पहुँचाते हैं, जहाँ हमेशा का सुख और आनन्द प्राप्त होता है।।

१४ - और अचरज यह है कि घर बार और रोज़गार किसी का नहीं छुड़वाते, गृहस्थ में रह कर दो तीन या चार घंटे रोज़मर्रा अभ्यास कराके अपनी तरफ़ से जीवों को सच्ची मुक्ति देते हैं यानी निज धाम में जो कि महा आनन्द और महा प्रेम का भंडार है, पहुँचा कर जनम मरन और देहियों के दुख सुख से क़ितई छुटकारा कर देते हैं।।

१५ - राधास्वामी मत में कोई संजम या वक़्त, अभ्यास का, मुक़र्रर नहीं किया गया। जब जिसको फ़ुरसत मिले और दिल चाहे और जहाँ मौक़ा होवे, वहीं आध घंटे से लगा कर चाहे जितनी देर अभ्यास करे। जो विशेष रस आवे तो ज़्यादा देर और मामूली तौर पर आध घंटा अभ्यास करे और दिन भर में इस तौर पर चाहे जितनी दफ़े ध्यान और भजन करे यानी ध्यान गुरु स्वरूप या मुक़ामी स्वरूप का और भजन यानी तवज्जह के साथ सुनना आवाज़ का घट में।।

१६ - जो कोई अपने घट में उलटने का जतन इसी ज़िन्दगी में नहीं करेगा और संसार में भोग बिलास वग़ैरा के साथ फँसा रहेगा तो वही संसारी बासना

उसके मन में भरी रहेगी और इस सबब से वह जनम मरन का दुख सहता रहेगा और मरने के वक़्त या उसके पीछे अफ़सोस करना और पछताना कुछ फ़ायदा नहीं देगा।।

१७ - इस वास्ते सब जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द, वास्ते अपने जीव के कल्यान के मुनासिब और लाज़िम है कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत अभ्यास ध्यान और भजन का ज़रूर शुरू कर दें तो उनका बचाव चौरासी के चक्कर से हो जावेगा और आइन्दे को आहिस्ते आहिस्ते एक दिन निज धाम में पहुँच कर अमर और परम आनन्द को प्राप्त होंगे।।

प्रकार पच्चीसवाँ

तीन अवस्था में सब जीव बर्त रहे हैं, चौथी यानी तुरिया में अपना रूप (जैसा कि पिंड में है) नज़र आवेगा और वहाँ से ब्रह्म की तीन अवस्था में जो कि ब्रह्माण्ड में है, बर्त कर और दसवें द्वार में सुरत का निज रूप देख कर आगे दयाल देश में चढ़ कर अपने कुल मालिक और सच्चे माता पिता सत्त पुरुष राधास्वामी का दर्शन करना चाहिये,

वही निज धाम है और वहीं सुरत को सच्चा और पूरा आराम मिलेगा।।

१ - मालूम होवे कि संतों ने कुल रचना में तीन दर्जे मुक़र्रर किये हैं। पहिला निर्मल चैतन्य देश, यहाँ माया की मिलौनी नहीं है और यह सत्त पुरुष राधास्वामी धाम यानी संतों का देश कहलाता है। दूसरा निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया देश, यहाँ चैतन्य की शुद्ध माया के साथ मिलौनी हुई है यानी इसी दरजे में माया प्रकट हुई और यह ब्रह्म और माया देश कहलाता है और इसी को ब्रह्मांड भी कहते हैं। तीसरा निर्मल चैतन्य और मलीन माया देश, यहाँ निर्मल चैतन्य की अलावा शुद्ध माया के, मलीन माया से मिलौनी हुई। इसको जीव और इच्छा देश कहते हैं और पिंड भी इसी का नाम है।।

२ - सुरत की धार जो कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंश है, उनके निज धाम से उतर कर और रास्ते के मंडलों में जो कि पहिले और दूसरे दरजे यानी निर्मल चैतन्य देश और ब्रह्म और माया देश में रचे गये, गुज़र कर पिंड में आँख के मुक़ाम पर ठहरी है और यहाँ इसका तीन अवस्था और तीन शरीर और उनके तीन मंडलों में बर्ताव हो रहा है। इन अवस्थाओं को जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति कहते हैं और यह स्थूल सूक्ष्म और कारन शरीर से ताल्लुक़ रखते हैं। इन तीनों के परे सुरत की बैठक पिंड में है और उसको चौथी अवस्था यानी तुरिया कहते हैं।।

३ - इसी तरह ब्रह्मांड में ब्रह्म के तीन स्वरूप और उनकी तीन अवस्था और तीन मंडल हैं और इन तीनों के परे सुरत का निज रूप है और उसके पार महासुन्न और उसके परे भँवरगुफा, सत्त पुरुष राधास्वामी देश की ड्योढ़ी है।।

४ - तीन अवस्थाओं में पिंड की हद्द में सब जीव रोज़मर्रा बर्त रहे हैं लेकिन नींद के बस आते जाते हैं। जो कोई ब-इख़्तियार अपने यानी स्वतंत्र इन अवस्थाओं में बर्तना चाहे, उसको चाहिये कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करे तब यह ताक़त उसको हासिल होगी।।

५ - ज़ाहिर है कि जाग्रत अवस्था में सुरत की बैठक आँखों में है और इसी जगह बैठ कर उसका सम्बन्ध देह और दुनिया के साथ होता है और दुख सुख व्यापता है और मौत के वक़्त, और भी सोते वक़्त, सुरत की धार आँख के मुक़ाम से अन्दर और ऊपर की तरफ़ खिंच जाती है, उस वक़्त देह और दुनिया की सुध बुध नहीं रहती। अब जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुख सुख और फिर जनम मरन के चक्कर से छुटकारा चाहे, उसको आँख के मुक़ाम से अन्दर और ऊपर की तरफ़ सरकने का जतन करना चाहिये, क्योंकि जब आदमी सो जाता है या जब कि डाक्टर लोग क्लोरोफ़ार्म सुँघाते हैं, तब देह और दुनिया की ख़बर नहीं रहती और चाहे बदन को जहाँ तहाँ काटें, उसका दुख और दर्द नहीं व्यापता।।

६ - इस सरकने का जतन, मय भेद कुल मालिक के धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों के, सिर्फ़

राधास्वामी मत में खोल कर और सहज तरीके से वर्णन किया है। और किसी मत में इसका ज़िक्र पूरा पूरा और साफ़ साफ़ पाया नहीं जाता।।

७ - सब जीवों को मुनासिब है कि वास्ते अपनी सुरत या रूह के कल्यान के थोड़ी बहुत तवज्जह और कोशिश करें, क्योंकि जो उनका कुल बर्ताव संसार में रहा और उम्र भर धन और नामवरी और भोग विलास के हासिल करने में जतन करते रहे और यही चाह दिल में ज़बर रही तो मौत के वक़्त उनकी सुरत पिंड को छोड़ कर यानी तीन अवस्थाओं के मुक़ाम से गुज़र कर चैतन्य आकाश में जोकि सहसदल कँवल के नीचे है, पहुँचेगी। लेकिन ब-सबब हायल होने ज़बर बासना दुनिया और उसके भोग और बिलास के, फिर अपने कर्मों के मुवाफ़िक़ कोई न कोई देह धारन करेगी यानी फिर जनमेगी और वही कार्रवाई जैसी कि पहिले जन्म में करी, फिर करनी पड़ेगी और आख़िर को माल और असबाब और कुटुम्ब परिवार और घर बार और अपनी देह को छोड़ना पड़ेगा। यह चक्कर जनम मरन का जब तक कि सुरत अपने सच्चे मालिक जिसकी यह अंस है और उसके अपने और उसके निज धाम और रास्ते वग़ैरा का भेद संत सतगुरु या साधगुरु से लेकर उस तरफ़ को उलटना शुरू नहीं करेगी, तब तक नहीं मिटेगा।।

८ - सुरत का सच्चा कल्यान यानी उद्धार देहियों और माया के घेर से बग़ैर दया सन्त सतगुरु या साधगुरू के नहीं हो सकता। इस वास्ते जो कोई अपना निर्वार चाहे, उसको मुनासिब है कि पहिले संत सतगुरु

और उनके सतसंग का खोज करे और पहिली और साधारन पहिचान उनकी यही है कि वे भेद कुल मालिक के धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों का देकर सुरत शब्द मार्ग का उपदेश करेंगे यानी यह समझौती देंगे कि शब्द की धुन को जो घट घट में हर दम जारी है, सुन कर अपनी सुरत को ऊँचे की तरफ़ चढ़ाना चाहिये और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का इष्ट और निशाना बाँध कर उनके धाम में पहुँचने का इरादा मज़बूत और पक्का करना चाहिये।।

९ - जब सुरत इस तरह संत सतगुरु से उपदेश लेकर अपने अंतर में अभ्यास शुरू करेगी तो राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से जिस क़दर सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी, उसी क़दर उसकी हालत बदलती जावेगी यानी मालिक की दया और क़ुदरत और उसका जलवा घट में देख कर प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ेगी और दुनिया और उसके भोगों से उसी क़दर चित्त हटता जावेगा और उतना ही दुख सुख संसार और देह का कम व्यापेगा और यही अभ्यास आहिस्ते आहिस्ते बढ़ता हुआ एक दिन सुरत को उसके निज घर में यानी सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचा कर जनम मरन के दुख और क्लेश से क़तई छुड़ा देगा और परम आनन्द हमेशा का प्राप्त होगा।।

१० - रास्ते में सुरत को ब्रह्मांड यानी दूसरे दरजे रचना में गुज़र कर चलना होगा और वहाँ इसको तीनों अवस्था ब्रह्म की ख़बर पड़ेगी और उनके परे अपना रूप दरसेगा और फिर वहाँ से संत सतगुरु की मदद

लेकर सत्त लोक में पहुँच कर सत्त पुरुष का दर्शन पावेगी और फिर सत्त पुरुष की दया से आगे चढ़ कर राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचेगी।।

११ - यह काम जल्दी का नहीं है यानी एक जनम में पूरा नहीं बन सकता, लेकिन जो कोई शौक़ के साथ संत सतगुरु और उनके सतसंग की सरन लेगा और कपट छोड़ कर विरह और प्रेम अंग लेकर अंतर और बाहर सतसंग यानी अभ्यास करेगा तो उसको दो तीन, हद्द चार जनम में, संत सतगुरु निज धाम में पहुँचा देंगे और जब तक धुर धाम में नहीं पहुँचेगा, नर देही में जनम लेकर और जहाँ से कि अभ्यास पिछले जनम में छोड़ा है, दूसरे जनम में शुरू करके रास्ता तै करता जावेगा। इस तरह हर दूसरा जनम पहिले जनम से बेहतर और बढ़ कर होगा और हर जनम में संत सतगुरु और सतसंग मिलेगा और प्रेम बढ़ता जावेगा।।

प्रकार छब्बीसवाँ

हर एक शख़्स सुख हासिल करने और दुख दूर करने के लिये कोशिश और जतन करता है। लेकिन इस दुनिया में पूरा पूरा सुख हासिल नहीं हो सकता। खोजी दर्दी को दरियाफ़्त करना चाहिये कि ऐसा मुक़ाम भी कोई है कि जहाँ अमर सुख प्राप्त हो और

कष्ट और क्लेश बिलकुल न हो। इसका पता सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सकता है और सुरत शब्द मार्ग की कमाई और राधास्वामी दयाल की सरन लेने से वह मुक़ाम सहज में प्राप्त हो सकता है।।

१ - इस दुनिया में सुख बहुत कम और दुख और क्लेश बहुत ज़्यादा जीवों को व्यापता है और सुख का असर थोड़े दिन रहता है और बाज़े दुक्खों का असर उम्र भर सहना और भोगना पड़ता है।।

२ - इस तरह सब जीव इस दुनिया में थोड़े बहुत दुखी रहते हैं और अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ जतन भी उन दुक्खों के दूर करने का करते हैं। फिर भी उनका चक्कर वक़्त वक़्त पर जारी रहता है और बाज़े दुख तो बिलकुल असाध यानी ला-इलाज हैं और जीव लाचार होकर उनको सहते हैं।।

३ - विचारवान आदमी जो इस दुनिया के हाल को ग़ौर की आँख से देखते हैं और पिछले ज़माने के लोगों का हाल तवारीख़ वग़ैरा से दरियाफ़्त करते हैं तो उनको बे-शुमार दरजे रचना में देख कर यह ख़्याल पैदा होगा कि इस रचना में एक से एक मुक़ाम ऊँचा और बढ़ का जहाँ सुख ज़्यादा और दुख कम है, होना चाहिये और कोई मुक़ाम ऐसा भी ज़रूर होगा कि जहाँ महा सुख और महा आनंद प्राप्त हो सकता है और कष्ट क्लेश और जनम और मरन नहीं है, फिर ऐसे मुक़ाम के प्राप्ति की चाह सब को उठाना चाहिये और

जो जतन और तदबीर मुनासिब होवे, वह उसकी प्राप्ति के वास्ते ज़रूर करना चाहिये।।

४ - लेकिन पहिले यह दरियाफ़्त होना चाहिये कि वह एक से एक बढ़ के सुखदाई मुक़ाम और उनके परे पूरन सुख और आनंद का स्थान कहाँ है और उसका रास्ता कहाँ होकर गया है और कौन सवारी पर चल कर वह रास्ता तै किया जावेगा और क्या हालत और कैफ़ियत चलने वाले पर रास्ते में गुज़रेगी और किस क़िस्म का बर्ताव रास्ता चलने वाले को इस दुनिया में और अपने संगियों के साथ और भी उस मुक़ाम की तरफ़ चलने वालों और रास्ते का भेद और जुगत चलने की बताने वाले के साथ बर्तना चाहिये।।

५ - दुनिया के संगी संसारी कहलाते हैं। उनका संग हर एक के स्वार्थ यानी मतलब के मुवाफ़िक़ जारी रहता है और जब कुछ मतलब नहीं निकलता या नहीं रहता, तब उनकी मुहब्बत रूखी फीकी और हलकी हो जाती है। इस वास्ते इन लोगों को थोड़े दिन का, हद्द उमर भर का, संगी कहा जा सकता है और भारी तकलीफ़ के वक़्त वे कुछ मदद नहीं दे सकते और देह छोड़ने के बाद कोई किसी का संग नहीं दे सकता।।

६ - महा सुख और महा आनन्द के स्थान का भेद और रास्ता बताने वाले और चलने की जुगत समझाने वाले को संत सतगुरु कहते हैं। वे जीव के सच्चे हितकारी हैं और दुख और सुख के समय और हर हालत में उसके मददगार रहते हैं और यह दया की कार्रवाई सिर्फ़ इसी ज़िन्दगी में नहीं बल्कि बाद मरने के, और भी दूसरे जन्मों में जब तक कि उसको धुर

मुक़ाम तक जो महा सुख का भंडार है, न पहुँचावें, जारी रहती है और उसी सुख स्थान की तरफ़ चलने वालों को प्रेमी और भक्त जन कहते हैं। इनकी प्रीति और मित्रता भी क़ाबिल एतबार और भरोसे के है और जो कि यह सब एक ही स्थान के बासा चाहने वाले हैं, इस वास्ते इनका संग भी धुर धाम तक संत सतगुरु के साथ निभ सकता है।।

७ - वास्ते दरियाफ़्त करने उन हालात के जिनका ज़िक्र दफ़ा ४ में हुआ है, सन्त सतगुरु के सतसंग में जाना चाहिये। वे ही पूरे भेदी हैं और चलने की जुगत बता सकते हैं और उन्हीं की बानी और बचन में यह भेद साफ़ साफ़ वर्णन किया है। उनके मत का नाम सन्त अथवा राधास्वामी मत है।।

८ - और जितने मत दुनिया में बिलफ़ेल जारी हैं, उनमें भेद और जुगत साफ़ साफ़ नहीं कही है, बल्कि उस ऊँचे से ऊँचे धुर स्थान की उनके आचार्यों को ख़बर भी नहीं हुई, फिर उनकी बानी और बचन में उस मुक़ाम का ज़िक्र और भेद कैसे मिल सकता है और बग़ैर उस धुर स्थान में पहुँचने के, सच्चा और पूरा छुटकारा जीव का कष्ट और क्लेश और जनम मरन के दुख से मुमकिन नहीं, इस वास्ते जब तक कि कोई राधास्वामी मत में शामिल होकर और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की सरन लेकर अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का नहीं करेगा, उसका सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा।।

९ - संत सतगुरु और उनके सतसंग की महिमा बहुत भारी है। जो जीव कि संसार के हालात देख कर

और उससे किसी क़दर दुखी होकर उनके सतसंग में कपट छोड़ कर शामिल होगा और उनके चरनों में थोड़ी बहुत प्रीत और प्रतीत करेगा तो वे अपनी दया से कुल स्थानों की जो रास्ते में पड़ते हैं, सैर कराते हुए धुर धाम में पहुँचा देंगे यानी दुख सुख की मिलौनी वाले स्थानों से अलेहदा करके परम और अमर आनंद के स्थान में बासा देंगे।।

१० - इस वास्ते उन जीवों को जो कि सच्चे चाहने वाले निज धाम के हैं मुनासिब और लाज़िम है कि संत सतगुरु के सतसंग में जाकर होशियारी के साथ बचन सुनें और विचारें और उनके चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करें, क्योंकि वे जीव के सच्चे हितकारी और हमेशा के संगी हैं, तब उनकी दया से आहिस्ते आहिस्ते उनका काम बनता जावेगा।।

११ - जो जीव कि ऐसा नहीं करेंगे और अपनी उम्र संसार के भोग विलास और संसारियों के संग में बसर करेंगे तो वे चौरासी योनि में यानी माया के घेर में भरम कर दुख सुख भोगते रहेंगे और सच्चे मालिक का धाम उनको कभी नहीं प्राप्त होगा, क्योंकि उनके मन में बासना और चाह संसार के भोग व विलास की ज़बर रहेगी और उम्र भर इसी क़िस्म की कार्रवाई के सबब से वे स्वाभाविक दुनिया और दुनियादारों की तरफ़ झोका खाते रहेंगे और इस सबब से बारम्बार देह धर कर दुनियावी कार्रवाई करते रहेंगे।।

१२ - संत सतगुरु और उनके सतसंग की पहिले दरजे की पहिचान यह है कि वे सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का पता और भेद समझा

कर उनके चरनों का इष्ट और निशाना बँधावेंगे और यह बात जतावेंगे कि कुल मालिक का धाम ऊँचे से ऊँचा है और वह और उसका रास्ता घट में मौजूद है और वहीं से सुरत उतर कर पिंड में नेत्र के स्थान पर यानी तिल में ठहर कर देह और दुनिया का कारज कर रही है, सो इसी स्थान से उस को शब्द की धुन सुनते हुए उलटाना चाहिये और जिस धार पर कि सुरत उतरी है, वही चैतन्य और नूर और जान और शब्द की धार है, सो इसी धार पर सवार होकर रास्ता तै किया जावेगा और सुरत का निज घर कुल मालिक का धाम है, क्योंकि यह उसी की यानी कुल मालिक की अंस है, जैसे सूरज और उसकी किरन और वही निज धाम महा सुख और महा प्रेम का भंडार है, और जो कि वहाँ माया नहीं है, इस वास्ते वहाँ कष्ट और क्लेश और जनम मरन भी नहीं है, क्योंकि उस धाम में सुरत चैतन्य की देह भी चैतन्य यानी रूहानी हो जाती है और इस वास्ते जब तक कि वह माया के घेर को तै करके उसके पार निर्मल चैतन्य देश में न पहुँचेगी, तब तक मायाकृत देहियों के साथ दुख सुख और जनम मरन का क्लेश भोगती रहेगी।।

१३ - संत सतगुरु, और सब इष्टों का जो अनेक मत वालों ने मुक़र्रर किये हैं और उन सबका स्थान माया के घेर में है, खंडन करेंगे और इसी तरह पुरानी चालें और जुक्तियों का भी जो पिछले आचार्यों ने पुराने वक़्तों में जारी करी, निषेध करेंगे, क्योंकि वे धुर मुक़ाम तक पहुँचाने वाली नहीं हैं, बल्कि सिर्फ़ थोड़ी सफ़ाई करने वाली या थोड़ी दूर तक रास्ता चलाने वाली हैं और उनकी कार्रवाई में अभ्यासी को कष्ट और विघ्न

बहुत से सताते हैं और कुछ मतलब और फ़ायदा सुरत और मन की चढ़ाई का उन में नहीं पाया जाता है बल्कि अभ्यासी के मन में अहंकार और मान पैदा करती हैं और उनका अभ्यास भी किसी से पूरा पूरा नहीं बन पड़ता है।।

१४ - सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को चाहिये कि संत सतगुरु के बचन को ख़ूब होशियारी के साथ सुने और समझे और विचार करके उनकी महिमा की तोल करे, तब उसको उनके सतसंग से फ़ायदा होगा और उनके खंडन मंडन के बचनों को सुन कर घबरा कर उचट न जावे यानी संग न छोड़े, बल्कि जो बात अच्छी तरह समझ में न आवे, उसको फिर पूछे और उसका निर्णय करावे, तब उसके संशय और भरम दूर हो जावेंगे।।

१५ - दूसरे दरजे की पहिचान संत सतगुरु और उनके सतसंग की यह है कि सच्चा परमार्थी उपदेश लेकर शौक़ के साथ कोई दिन भजन और ध्यान करे यानी अंतर में स्वरूप का ध्यान और शब्द का श्रवण करे, तब उसको कुछ रस मिलेगा और संत सतगुरु की दया अंतर में नज़र आवेगी और उसके मन में प्रीत और प्रतीत चरनों की पैदा होगी और आइन्दा आहिस्ते आहिस्ते बढ़ती जावेगी यानी जिस क़दर उसके मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी, उसी क़दर उसको महिमा और बड़ाई राधास्वामी मत और संत सतगुरु और कुल मालिक की समझ में आवेगी और उसके साथ रस और आनंद और निश्चय शब्द मार्ग का भी बढ़ता जावेगा।।

१६ - जब इस तौर से अभ्यास करने से हालत परमार्थी की बदलेगी यानी उसके मन में प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों का जागेगा, तब दुनिया और उसके भोग और पदार्थ उसकी नज़र में ओछे नज़र आवेंगे और उनमें प्रीत और भाव कम होता जावेगा। यही सच्ची पहिचान सन्त सतगुरु की है कि जिनके सतसंग के प्रताप से संसार से सहज बैराग और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में सहज अनुराग पैदा होकर दिन दिन बढ़ता जावे, यही बैराग और अनुराग एक दिन सच्चे प्रेमी को धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा।।

१७ - इससे ज़्यादा जो पहिचान कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु और उनके उपदेश सुरत शब्द मार्ग की है, वह ख़ास दया से आवेगी यानी जिस क़दर सच्चा परमार्थी विरह और प्रेम अंग लेकर सतसंग और अभ्यास करेगा, उसी क़दर उस पर अंतर और बाहर दया होती जावेगी और जैसे उसको इस मेहर की परख बख़्शते जावेंगे, उसी क़दर उसकी आँख खुलती जावेगी और उनकी गति मति की जो अगम और अपार है, थोड़ी बहुत ख़बर पड़ती जावेगी और उसके साथ ही प्रेमी की प्रीत और प्रतीत भी गहरी होती जावेगी और इसी ज़िन्दगी में अपनी मुक्ति और उद्धार होता हुआ देख लेगा और महा सुख के स्थान की तरफ़ को अपनी चाल बढ़ती हुई और रास्ता कटता हुआ उसको नज़र पड़ेगा।।

* * * * *

प्रकार सत्ताईसवाँ

इस दुनिया में जिस क़दर कार्रवाई है, वह शौक़ या प्रीत के सबब से जारी है यानी जिस की जहाँ प्रीत है या जिस बात का जिसको शौक़ है, वह वहीं अपना तन, मन, धन लगाता है, लेकिन इस दुनिया के कुल पदार्थ, और भी मनुष्य और जानवर, सब नाशमान हैं और उनकी हालत भी हमेशा बदलती रहती है, इस सबब से हालत बदलने पर और अभाव या नाश होने पर ज़रूर झटका और झकोला प्रीत करने वाले, और भी उसको जिससे प्रीत करी है, लगता है यानी दोनों दुख सुख भोगते हैं और जुदा होने पर फिर मिलने का भरोसा नहीं है, इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि साधारण प्रीत संसार में रक्खो और मुख्य प्रीत कुल मालिक के चरनों में लाओ कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है और महा सुख और महा आनन्द और महा प्रेम और महा चैतन्य का भंडार है और हर दम जीव के संग है।।

१ - ज़ाहिर है कि कुल जीव और जानवर जिस तरफ़ जिसका शौक़ या मुहब्बत है, उसी तरफ़ अपनी तवज्जह लगाते हैं और जहाँ जैसी ज़रूरत होवे, उसके मुवाफ़िक़ तन,मन,धन भी ख़र्च करते हैं, लेकिन जहाँ जिसका शौक़ या प्रीत नहीं है, वहाँ मुतलक़ तवज्जह नहीं करते और न कुछ ख़र्च करते हैं।।

२ - इसी तरह जिन जिन चीज़ों और पदार्थों में जिस को शौक़ या प्यार या ज़रूरत है, उनको उसी क़दर वह चाहता है और हिफ़ाज़त और एहतियात उनकी करता है और जब उनमें से किसी चीज़ या पदार्थ का नुकसान या हर्ज हो जाता है, तब दुखी होता है।।

३ - जीवों में भी जहाँ जिसकी प्रीत है, जब २ किसी को कुछ तकलीफ़ या क्लेश होता है, तब प्रीत करने वाले को भी दुख होता है और वियोग की हालत में निहायत रंज और कष्ट सहना पड़ता है और फिर मिलने की कोई सूरत मालूम नहीं होती।।

४ - इस तरह कुल जीव अपनी अपनी प्रीत और बंधन के सबब से हमेशा दुख सुख सहते रहते हैं क्योंकि जिन जीवों या पदार्थों में उनकी आशक्ति है, वे हमेशा एक रस क़ायम नहीं रह सकते, उनकी हालत वक़्त वक़्त पर बदलती रहती है और एक दिन उनका नाश या अभाव ज़रूर होगा।।

५ - और मालूम होवे कि जिस क़दर जिस का बंधन या प्यार जिसमें है, उसी क़दर उसको दुख सुख व्यापता है और बाज़ी बाज़ी तकलीफ़ और दुख के वक़्त में कोई किसी की सच्ची मदद नहीं कर सकता यानी

अपने प्रीतम के दुख या तकलीफ़ को कम या दूर नहीं कर सकता।।

६ - इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि सब जीवों को चाहिये कि मुख्य प्रीत अपनी कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में लावें और जगत में वाजबी तौर पर यानी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ प्रीत करें और अपने मन में समझते रहें कि संसारी प्रीत थोड़े दिन की है, चाहे कोई सबब करके दोनों की ज़िन्दगी में घट जावे या जाती रहे, नहीं तो मौत के वक़्त ज़रूर उसका बर्ताव बंद हो जावेगा और निहायत दरजे का दुख और क्लेश जुदाई का सहना पड़ेगा।।

७ - विचारवान और समझदार मनुष्य को चाहिये कि अपना मन ऐसे में लगावे कि जिससे दिन २ सुख और आनन्द विशेष मिले और जिससे कभी बिछोहा न होवे और ऐसे हमेशा एक रस क़ायम रहने वाले संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल हैं कि जो घट घट में मौजूद हैं और हर एक जीव के दम दम के संगी हैं, वे निज स्वरूप से हमेशा क़ायम रहते हैं और महा आनन्द और महा प्रेम के भंडार हैं।।

८ - हरचंद संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का देश ऊँचे से ऊँचा है और रास्ता उसका घट में जारी है पर जो कोई उनके चरनों में सच्ची प्रीत लावे, उसको इसी मुक़ाम पर यानी जहाँ जीव की पिंड में बैठक है, परचा दे सकते हैं यानी उस पर शब्द और प्रकाश के वसीले से अपनी दया हर वक़्त और हर जगह ज़ाहिर कर सकते हैं।।

९ - इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीव के कल्यान और फ़ायदे के वास्ते संत सतगुरु का खोज करके उनसे ज़रूर मिलें और कोई दिन उनका सतसंग करके भेद कुल मालिक और उसके धाम का और भी रास्ते और उसकी मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू कर दें और चरनों में दिन दिन प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जावें तो इसी ज़िन्दगी में उनको सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की प्रीत का थोड़ा बहुत फ़ायदा यानी आनन्द हासिल होता हुआ मालूम पड़ेगा और फिर वह आनन्द आहिस्ते २ दिन दिन बढ़ता जावेगा और उसी क़दर दुनिया के शौक़ और मुहब्बतें उसकी नाशमानता और तुच्छ होना देख कर घटती जावेंगी और फिर जो दुख सुख कि उनके सबब से वक़्त २ पर व्यापता है, उस में भी बहुत फ़र्क़ हो जावेगा यानी मालिक की प्रीत के आनंद के बल से उस दुख सुख का असर बहुत कम होवेगा और रफ़्ते २ सब मुहब्बतें दुनिया की एक दिन ढीली हो जावेंगी और राधास्वामी दयाल के चरनों का प्यार ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ता जावेगा कि वह एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा यानी अमर और परम आनंद को प्राप्त करा देगा कि जहाँ जनम मरन और कष्ट और क्लेश किसी क़िस्म का बिल्कुल नहीं है।।

१० - यह भेद निज घर और उसके रास्ते का वही है जो कि कुल मालिक के चरनों से सुरत के उतार का है यानी जैसे कि वक़्त उतार के सुरत किसी किसी मुक़ाम पर ठहरती और रचना करती हुई आई है, उसी रास्ते से और उसी धार पर सवार होकर घर की तरफ़

लौट सकती है और वह धार चैतन्य और नूर और शब्द की धार है यानी शब्द को सुनती हुई और प्रकाश को देखती हुई सुरत रास्ता तै करके अपने निज धाम में जा सकती है। सिवाय शब्द मार्ग के और कोई तरीक़ा कुल मालिक के धाम में चढ़ कर और चल कर पहुँचने का नहीं है।।

११ - जो जीव संत सतगुरु का सतसंग कर के और उनसे उपदेश लेकर यह कार्रवाई करेंगे, उनकी संसारी मुहब्बतें आहिस्ते आहिस्ते कम होकर राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी और मुख्य प्रीत आ जावेगी लेकिन जो कोई संसार और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार की प्रीत में अटके रहेंगे और संत सतगुरु और कुल मालिक का इस ज़िन्दगी में खोज़ नहीं करेंगे, वह बारम्बार देह धारन करके दुख सुख भोगते रहेंगे और जनम मरन का चक्कर उनका कभी नहीं छूटेगा और झूठे और नाशमान शौक़ और प्रीत में बँधे रहेंगे और सच्चे मालिक और संत सतगुरु का भाव और प्यार उनके मन में कभी नहीं आवेगा और नर देही जो कि मुशकिल से हाथ आई है और जिस में वे मालिक से मिलने का जतन सहज में कर सकते हैं, मुफ़्त में बरबाद जावेगी।।

* * * * *

प्रकार अट्ठाईसवाँ

इस दुनिया में दो पदार्थ हैं - चैतन्य और जड़। चैतन्य कुल रचना की कार्रवाई कर रहा है और मनुष्य स्वरूप में कई परदे यानी देहियों के अन्दर गुप्त है और इन देहियों का संग करके दुख सुख और जनम मरन भोगता है सो जब तक उलट कर अपने भंडार में नहीं पहुँचेगा, सुखी नहीं होगा। राधास्वामी मत का मतलब यही है कि इस बुंद और अंस रूप चैतन्य को उसके सिंध में पहुँचा कर परम आनंद को प्राप्त कराना।।

१ - इस दुनिया में दो पदार्थ नज़र आते हैं, एक चैतन्य, दूसरा जड़। चैतन्य के वसीले से कुल कार्रवाई रचना की हो रही है यानी वह कुल का प्रेरक है और मनुष्य स्वरूप में तीन परदों के अन्दर बैठ कर अपनी धार के वसीले से तीनों परदे यानी देहियों को चैतन्य कर रहा है और हर एक देही और उसके औज़ारों से उसके ताल्लुक़ का काम ले रहा है।।

२ - जानवरों में मुवाफ़िक़ उनके दरजों के यह चैतन्य ज़्यादा गुप्त है यानी ज़्यादा मोटे परदों के अंदर बैठ कर कार्रवाई कर रहा है और जड़ पदार्थों में बिल्कुल गुप्त है और औज़ार भी नहीं हैं।।

३ - यह चैतन्य, आनन्द और प्रेम और ज्ञान स्वरूप है और यही सत्त है क्योंकि इसके आसरे हर एक देही

का ठहराव और बर्ताव इस लोक में जारी है और इसके वियोग में देह स्वरूप का अभाव हो जाता है।।

४ - यही चैतन्य देहियों में आशक्त होकर और जड़ पदार्थों में रस और आनन्द की प्राप्ति का भरम करके दुख सुख इस संसार में भोग रहा है। असल में वह सुख और आनन्द इसी चैतन्य में मौजूद है।।

५ - जीव अपने चैतन्य स्वरूप के हाल से बे-ख़बर हैं अपनी स्थूल देह को अपना स्वरूप और इस माया देश को अपना देश समझ कर यहाँ के पदार्थों में जो मन और इंद्रियों के विषय हैं, थोड़ा बहुत रस पाकर बँध गये हैं और उन्हीं भोगों की प्राप्ति के वास्ते रात दिन जतन और मेहनत कर रहे हैं और हरचंद अपनी आँखों से देखते हैं कि यह दुनिया मृत्यु लोक है यानी कोई शख़्स या चीज़ चंद रोज़ से ज़्यादा नहीं ठहर सक्ती, फिर भी कोई सच्चा होकर खोज नहीं करता कि जीव कहाँ को जाते हैं।।

६ - ब-सबब जड़ पदार्थ यानी इंद्री भोगों में आशक्ति करने के सब जीवों का दिन २ झुकाव नीचे यानी स्थूल माया की तरफ़ होता जाता है और इस वजह से सुख घटता और दुख बढ़ता जाता है।।

७ - अक़्लमन्द और विचारवान मनुष्यों को चाहिये कि जैसे वे और और चीज़ों का इस रचना में खोज लगाते हैं और तरह तरह की तहक़ीक़ात कर रहे हैं कि जिससे थोड़ा बहुत फ़ायदा दुनिया का हासिल होता है, वास्ते अपने जीव के कल्यान और आराम के, अपने चैतन्य स्वरूप का भी खोज करें कि कैसा है और कहाँ

से आया और वास्ते प्राप्ति हमेशा के सुख और आनंद के उसको कहाँ पहुँचाना चाहिये।।

८ - जीव चैतन्य का तीन परदों के परे इस पिंड में ठहराव होने का सबूत तीन अवस्थाओं से जिनमें उसका रात दिन बर्तावा है, मौजूद है यानी जाग्रत अवस्था में इसकी धार आँखों के मुक़ाम पर बैठ कर इस दुनिया में मन और इन्द्रियों के वसीले से कार्रवाई करती है और उस वक़्त स्थूल देह और मन और इन्द्रियाँ चैतन्य होती हैं और स्वप्न अवस्था में सूक्ष्म देह में बैठ कर सूक्ष्म मन और इन्द्रियों से कार्रवाई करती है और उस वक़्त स्थूल देह और उसके औज़ार स्थूल मन और इंद्रिय बेकार हो जाते हैं और जब सुषुप्ति अवस्था यानी गहरी नींद के स्थान पर चैतन्य धार का खिंचाव हो जाता है, तब दोनों स्थूल और सूक्ष्म देही बेकार हो जाती हैं और इस मुक़ाम से ज़्यादा खिंचाव होने पर नब्ज़ और स्वाँस बंद हो जाते हैं और फिर मौत वाक़ै होती है।।

९ - इससे ज़ाहिर है कि जो कोई जीव, चैतन्य का खोज लगाना चाहे तो इसी रास्ते से जहाँ होकर उसकी धार गहरी नींद और स्वप्न और जाग्रत के मुक़ाम पर आती है, पता लगावें तो अपने रूप को तहक़ीक़ कर सकता है और फिर वहाँ से आगे खोज लगा कर जहाँ से कि आदि में यह चैतन्य धार आई है, वहाँ का भेद दरियाफ़्त कर सकता है।।

१० - यह पता और भेद सिर्फ़ संत सतगुरु से जो आदि धाम के बासी और कुल मालिक के भेदी हैं, मिल सक्ता है और इस वक़्त में इसका मुफ़स्सिल हाल

राधास्वामी संगत से मय तरकीब और जुगत तै करने रास्ते की, मालूम हो सक्ता है।।

११ - मालूम होवे कि संतों ने रचना के तीन दरजे मुक़र्रर किये हैं- एक निर्मल चैतन्य देश जहाँ कुल रचना रूहानी है और माया नहीं है और दूसरा निर्मल चैतन्य और शुद्ध माया देश जहाँ ब्रह्म सृष्टि है और तीसरा निर्मल चैतन्य और मलीन माया देश जहाँ देवता और मनुष्य और जानवर वग़ैरा की रचना है। इस वास्ते जो कोई चैतन्य जीव यानी सुरत का खोज लगाता हुआ धुर धाम तक पहुँचना चाहे, उसको तीन परदे मलीन माया देश और तीन परदे शुद्ध माया देश के फोड़ कर यानी इन छःदेहियों से न्यारा होकर निर्मल चैतन्य देश में पहुँचना चाहिये। यह छःपरदे बग़ैर मदद भेदी गुरू के फोड़े नहीं जा सकते हैं।।

१२ - राधास्वामी मत का मतलब यही है कि जीव-चैतन्य को भेद उसके निज घर का, और भी रास्ते और मंज़िलों का, समझा कर और जुगत चलने की सुरत शब्द मार्ग के वसीले बता कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो महा आनन्द, महा प्रेम, महा ज्ञान और महा चैतन्य का भंडार है, पहुँचाना और वहाँ विश्राम देकर हमेशा को सुखी कर देना। जो कोई राधास्वामी संगत में शामिल होकर और उपदेश लेकर शौक़ के साथ सुरत शब्द का अभ्यास शुरू करेगा, उसको चन्द रोज़ में अपना रास्ता चलता और कटता हुआ और थोड़ा बहुत रस और आनन्द प्राप्त होता हुआ और दिन दिन कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम बढ़ता हुआ मालूम पड़ेगा और

उसी क़दर संसार और उसके भोगों और पदार्थों से चित्त में उदासीनता आती जावेगी।।

१३ - जो लोग कि कुल मालिक की मौजूदगी के क़ायल नहीं हैं या शक लाते हैं, उनसे भी कहा जाता है कि ज़रा अपने अंतर में तवज्जह करके अपने चैतन्य स्वरूप का खोज लगावें और जो कि तमाम रचना धारों की है और सुरत चैतन्य की धार अंतर से तीनों शरीरों यानी कारन, सूक्ष्म और स्थूल में प्रवेश करके उनको चैतन्य करती है और जब सिमट जाती है, तब यह शरीर और उनके औज़ार बेकार हो जाते हैं, इस वास्ते उसी धार को पकड़ के अंतर में चलना चाहिये, तब पता और भेद जीव चैतन्य का और फिर कुल मालिक राधास्वामी दयाल का जिनकी वह अंश है, लग सकता है।।

१४ - और जो कि सब लोग वास्ते प्राप्ति दुनिया के सुखों के जो तुच्छ और नाशमान हैं और वास्ते दूर करने दुखों के अनेक तरह की तदबीर और मेहनत और मशक़्क़त कर रहे हैं और जो नास्तिक हैं, वह भी इसी तरह इस दुनिया में बर्त रहे हैं यानी सुख की चाह रखते हैं और दुख से बचना और हटना चाहते हैं, इस वास्ते कहा जाता है कि उनको चाहिये कि अपनी तीनों हालतों को ग़ौर से जाँच करें कि जाग्रत में दुनिया और देह का दुख सुख उन्हें व्यापता है और स्वप्न अवस्था में उसकी ख़बर भी नहीं होती, वहाँ उस स्थान का जैसा कुछ कि सुख दुख है, सूक्ष्म शरीर से भोगते हैं, और यह भी सोचें कि जिस क़दर सुख और आनन्द है, वह चैतन्य सुरत की धार में है क्योंकि स्वप्न अवस्था में

वे सब इन्द्रियों के भोग का रस उसी क़दर लेते हैं जैसा कि जाग्रत में और उस वक़्त कोई पदार्थ बाहर मौजूद नहीं होता और स्थूल देह की इन्द्रियाँ सब बेकार होती हैं और तीसरी अवस्था में किसी क़िस्म का दुख सुख नहीं व्यापता। फिर जो वे सुख और आनन्द चाहें और दुक्खों से बचाव चाहें तो संतो की जुगत के अभ्यास करने से यानी सुरत की धार को जाग्रत के स्थान से जो कि आँखों में है, अंतर में उलटाने से विशेष आनंद और रस, बग़ैर बाहरी मेहनत और जतन के, स्वतंत्र मिल सकता है और दुख और तकलीफ़ का भी असर जाग्रत के मुक़ाम से हटने से नहीं व्यापेगा, इस वास्ते उनको यह काम ज़रूर करना चाहिये क्योंकि दुनिया में इसी मतलब से हर तरह की मेहनत और मशक़्क़त करते हैं, फिर जो बढ़का फ़ायदा बग़ैर भारी मेहनत के हासिल हो सके तो उसमें क्यों दरेग़ और बे-परवाही करनी चाहिये।।

१५ - जो इस काम को यानी सन्तों के सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास थोड़ा शौक़ लेकर करेंगे तो उनको अपने स्वरूप की ख़बर पड़ेगी कि ऐन चैतन्य और आनंद और प्रेम और सत्त स्वरूप है और फिर उसके भंडार की भी जहाँ से सब सुरतें आई हैं और जो कि कुल मालिक का धाम है, ख़बर पड़ेगी यानी सब भेद रचना का और सुरत की चढ़ाई के रास्ते और मंज़िलों का, और भी कुल मालिक और उसके धाम का, आहिस्ते आहिस्ते खुलता जावेगा, तब अपनी ओछी और नादानी की समझ पर पछतावेंगे और अफ़सोस करेंगे और अंतर में चढ़ने और चलने से जो कुछ कि फ़ायदा होगा और भेद मालूम पड़ेगा उसको पा कर

अपने भागों को सराहेंगे और संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अपार महिमा समझ कर शुकराना बजा लावेंगे।।

प्रकार उनतीसवाँ

यह देश पाप और पुन्य और मेहनत और मशक्कत और जनम मरन का है। जो कोई इससे बचना चाहे, उसको मुनासिब है कि घट का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अपने अन्तर में चले तो एक दिन निःकर्म होकर अमर देश में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा कि जहाँ किसी तरह का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का दुख नहीं है।।

१ - इस लोक में कोई चीज़ या जीव स्थिर नहीं है यानी हमेशा क़ायम नहीं रहता और जीव जो इस लोक में कार्रवाई कर रहे हैं, उनका बर्तावा स्थूल देह और स्थूल मन और इन्द्रियों के साथ है यानी अपनी २ इच्छा के अनुसार कर्म करते हैं।।

२ - जीव की बैठक इस देह में वक़्त बाहरमुखी कर्म करने के आँखों के तिल में है यानी यही कर्म का स्थान है। जब इस मुक़ाम से सुरत की धार अंतर में खिंच जाती है कोई कर्म नहीं बनता।।

३ - जैसा जिसको संग मिला है और जैसा जिस किसी ने सुना या देखा या पढ़ा है, उसी मुवाफ़िक़ मन में इच्छा यानी तरंगें उठती हैं और उनके पूरा करने के वास्ते जैसा कुछ कि जतन मुक़र्रर है या जैसा जिस किसी को अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ सूझता है, कर्म करता है और उस कार्रवाई में भले और बुरे कर्म जीवों की चाह ज़बर या हलकी होने के मुवाफ़िक़ बनते हैं।।

४ - जिस किसी को परमार्थ का कुछ पता और भेद मिला है और कर्म करने की निसबत कुछ हिदायत हुई है, वह थोड़ा बहुत सम्हल कर बर्ताव करते हैं और बाक़ी जीव अपने मन की चाह पूरी करने के निमित्त जैसी कार्रवाई ज़रूर समझें, बे-तकल्लुफ़ और बे-खौफ़ करते हैं और दूसरे के नफ़े और नुक़सान और आराम और तकलीफ़ का कुछ सोच और विचार नहीं करते।।

५ - पुन्य और पाप कर्म तीन क़िस्म के हैं, (१) - मन से (२) - कर्म करके, (३) - बचन कर के, सो जब जैसा मौक़ा आ पड़े, कार्रवाई करने में पाप और पुन्य का ख़्याल बहुत कम जीवों को रहता है, सिवाय उन कामों के जिनकी निसबत हाकिम से बाज़-पुर्स होती है या बिरादरी वाले कुछ ज़ोर डालते हैं, लेकिन पोशीदा तौर पर निरभय होकर इन कामों में भी जीव बर्तते हैं और फिर उनका फल जैसा कुछ कि होवे, इस ज़िंदगी में या आइंदा भोगते हैं।।

६ - और जो कि इस लोक में कोई चीज़ या जीव ठहराऊ नहीं है, मुसाफ़िर के तौर पर यहाँ आना जाना मालूम होता है और फिर थोड़ी ज़िंदगी और थोड़े सुख के वास्ते भलाई और बुराई करके उसका नतीजा दुख

सुख सहना पड़ता है, इस वास्ते मुनासिब है कि अमर देश और परम आनंद के स्थान का जहाँ जनम मरन और किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश नहीं है, खोज लगा कर वहाँ के चलने का जतन किया जावे।।

७ - जो यह जतन नहीं किया जावेगा तो देहियों के साथ दुख सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा क्योंकि संतों के बचन के मुवाफ़िक़ यह देश माया का है और सुरत इस देश में बिना माया के ग़िलाफ़ों के जिनको देही कहते हैं, नहीं रह सकती और यह ग़िलाफ़ हमेशा बदलते रहते हैं यानी जब एक ग़िलाफ़ पुराना हो जाता है, तब सुरत उसको छोड़ कर उसी लोक में या किसी दूसरे लोक में दूसरा ग़िलाफ़ धारन करती है, इस तरह जनम मरन बराबर जारी रहता है और हर देही में अगले पिछले और हाल के कर्मों के मुवाफ़िक़ सुख दुख भोगना पड़ता है।।

८ - ऐसा अमर देश कि जो महा सुख और परम आनंद का भंडार है और जहाँ कष्ट और क्लेश किसी क़िस्म का नहीं है, निर्मल चैतन्य देश जो कुल मालिक का धाम है, कहलाता है और वहाँ माया बिल्कुल नहीं है और बाक़ी देशों में शुद्ध या मलीन माया की मिलौनी साथ चैतन्य के है और इसी सबब से वहाँ पाप और पुण्य और दुख सुख और जनम मरन जारी है, सो जब तक यह देश न छूटेगा और जीव निर्मल चैतन्य देश में न पहुँचेगा, तब तक उसको अमर आनंद प्राप्त नहीं होगा।।

९ - उस देश का पता और भेद और हाल रास्ते का और तरीक़ा चलने का सिर्फ़ राधास्वामी मत में

ज़ाहिर किया है। और किसी मत में उसका इशारा भी नहीं है और जो कुछ मुअम्मा या गुप्त तौर पर वर्णन भी किया है तो वह मलीन या शुद्ध माया देश का भेद है।।

१० - जो जीव विचारवान हैं और अपने नफ़े और नुक़सान का ख़्याल रखते हैं, उनको चाहिये कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते ज़रूर ऐसी कार्रवाई करें कि जिससे माया देश के पार पहुँच कर महा सुख के स्थान में बासा पावें और पाप पुण्य और दुख सुख के धाम से न्यारे हो जावें और यह बात संत सतगुरु के संग से हासिल हो सकती है। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुरु या उनकी संगत का लगाना चाहिये और जब वे भाग से मिल जावें तो शौक़ और दीनता के साथ उनका सतसंग करें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर दें।।

११ - मालूम होवे कि सिवाय सुरत शब्द योग के और किसी तरकीब के साथ कोई शख़्स माया के घेर के पार नहीं जा सकता है और सुरत शब्द मार्ग से मतलब यह है कि अपनी रूह को आवाज़ आसमानी को सुनते हुए चैतन्य धार को पकड़ कर ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाना। यह धार आदि धाम यानी निर्मल चैतन्य देश से उतरी है और उसके साथ बराबर आवाज़ होती चली आती है। सो उस आवाज़ का भेद लेकर तवज्जह के साथ सुनना और उसी के वसीले से सुरत को उस मुक़ाम की तरफ़ जहाँ से कि आवाज़ आती है, चढ़ाना सुरत शब्द योग कहलाता है।।

१२ - इस वक़्त में इस अभ्यास का तरीक़ा बहुत आसानी के साथ राधास्वामी मत में जारी है। सो जो

कोई अपना सच्चा उद्धार चाहे, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर इस अभ्यास की सहज तौर पर कमाई कर सकता है और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सच्चे मन से सरन लेकर अपना काम बहुत आसानी के साथ बना सकता है। सब जीवों पर, चाहे औरत होवें या मर्द, इस अभ्यास का थोड़ा बहुत करना वास्ते उनके जीव के कल्यान के लाज़िम और फ़र्ज़ है।।

१३ - बड़ी महिमा इस अभ्यास की यह है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया इसके अभ्यासी के संग रहती है और वह दया जब तक कि अभ्यासी को धुर मुक़ाम में नहीं पहुँचावेगी, उसका संग नहीं छोड़ेगी, चाहे यह काम दो तीन या चार जनम में बने। हर जनम में नर देह मिलेगी और संत सतगुरु और उनका सतसंग भी मिलेगा और जहाँ तक एक जनम में अभ्यास किया है, वह दूसरे जनम में फुर आवेगा और उसके आगे कमाई बनती चली जावेगी, जब तक कि धुर स्थान में नहीं पहुँचेगा। इस वास्ते जो जीव कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर इस अभ्यास में लगे हैं, वही बड़भागी हैं और उन्हीं का एक दिन सच्चा उद्धार हो जावेगा। और बाक़ी सब जीव चाहे जिस मत में होवें, माया के देश में रह कर नीचे ऊँचे स्थान या जोनों में बासा पाकर सुख दुख कम या ज़्यादा भोगते रहेंगे और उनका जनम मरन का चक्कर, चाहे सबेर होवे या अबेर, जारी रहेगा।।

* * * * *

प्रकार तीसवाँ

इस देश में जीव आसा, मंसा, तृष्णा, भय, चिन्ता और परिश्रम से नहीं बच सकता। जो इनसे न्यारा होना चाहें, वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल के देश में पहुँचने का जतन अपने घट में करें तो एक दिन सब झगड़े और बखेड़े और दुख सुख से बच कर परम आनन्द को प्राप्त होंगे।।

१ - यह लोक स्थूल और मलीन माया का देश है और यहाँ सुरत यानी जीव स्थूल देह में बैठ कर कार्रवाई करते हैं और वास्ते अपने अहार और ज़रूरी कामों के, जो कि देह के निरवाह के लिये दरकार हैं, जड़ पदार्थों के आधीन हैं और वे पदार्थ बग़ैर धन के और धन व माल बग़ैर मेहनत और मशक़्क़त के प्राप्त नहीं हो सकते।।

२ - इस सबब से सब जीव रात दिन चिन्ता और फ़िक्र और मेहनत में लगे रहते हैं और जब कोई पदार्थ चाह के मुवाफ़िक़ प्राप्त हुआ तो उसके बढ़ाने के वास्ते ज़्यादा मेहनत उठाते रहते हैं।।

३ - जो कि इस दुनिया में सब चीजों में दरजे हैं और ऐसे ही आदमियों में भी धन और माल और सामान, किसी को ज़्यादा से ज़्यादा, किसी को ज़्यादा, किसी को कम और किसी को बहुत कम प्राप्त है, सो जब किसी को अपनी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ धन और

सामान मुयस्सर आजावे तो वह अपने से ज़्यादा धन वालों को देख कर उनकी बराबरी के वास्ते हिर्स करता है और अनेक तरह की तदबीरें सोच कर उनमें अपने तन मन को खपाता है। कभी कोई कामयाब भी हो जाता है और अक्सर ना-कामयाब होकर बहुत दुख सहते हैं और वृथा मेहनत और मशक़्क़त करते हैं। यह तृष्णा, क्या अमीर क्या ग़रीब, सबको सताती है और दुखी रखती है।।

४ - इस तरह कोई जीव चाहे उनको ज़रूरत के मुवाफ़िक़ सामान मिल जावे, कभी आशा और तृष्णा से ख़ाली नहीं रहते और उनके पूरा करने के निमित्त हमेशा चिन्ता और गुनावन जिसको मंसा कहते हैं, उठाते रहते हैं और उसके मुवाफ़िक़ कर्म यानी परिश्रम करते हैं और इस कार्रवाई में कभी दुखी, कभी सुखी होते हैं।।

५ - यह सब कार्रवाई संसारी है और कुल जीव इसी में लिपटे रहते हैं और इसी की आपस में जब मिलें, बातचीत करते हैं।।

६ - ख़ुलासा यह कि उनका मन कभी दुनियावी ख़यालों से ख़ाली नहीं रहता। या तो रोज़मर्रा की मेहनत और परिश्रम में लगा रहता है या जो भोग कि प्राप्त हैं, उनके भोगने और मज़ा लेने में वक़्त ख़र्च करता है या विशेष भोगों और पदार्थों और मान बड़ाई के हासिल करने को चिन्ता और गुनावन और फिर जतन करता है या इन्हीं मुआमलों का आपस में ज़िक्र मज़कूर करता है या कभी मनोराज करके अपने आप मगन होता है।।

७ - यह हालत कुल जीवों की यहाँ तक बढ़ी हुई रहती है कि उनको कभी अपनी मौत का ख़्याल भी नहीं आता और न इस बात का कि बाद मरने के कहाँ जायँगे और क्या हालत उन पर गुज़रेगी, कभी सोच मन में करते हैं।।

८ - जो कुछ मामूली परमार्थ की बात चीत सुनते हैं या किसी वक़्त मुअइयना पर किताब पढ़ते या सुनते हैं, वह कार्रवाई साधारण तौर पर बतौर पुरानी लीक और रस्म के करते हैं और उसमें ज़रा ग़ौर और तवज्जह नहीं करते कि इस कार्रवाई का क्या मतलब है और इससे क्या फ़ायदा हासिल होना चाहिये और आया वह हासिल होता है या नहीं।।

९ - इसी तरह जब किसी को निहायत दुखी या बीमार या मरते देखते हैं तो उस वक़्त कुछ खौफ़ मन में लाते हैं लेकिन थोड़ी देर बाद उसको भूल जाते हैं।।

१० - जिस किसी को सच्चे परमार्थ या भक्ति की रीति में बर्तते देखते हैं तो उनको बड़ा अचरज होता है कि वह शख़्स कैसे धन और माल और दुनिया के भोग और उनकी चाह छोड़ कर या कम करके सतसंग और भजन वग़ैरा में अपना वक़्त लगाता है।।

११ - लेकिन जब कभी इन जीवों पर सख़्त तकलीफ़ या सदमा गुज़रता है या मौत का वक़्त क़रीब आता है, उस वक़्त यह निहायत घबराते और तड़पते हैं और कोई उनका उस असाध दुख में सहाई और मददगार नहीं होता और फिर बाद मरने के अपने कर्मों का फल दुख सुख भोगते हैं और उसमें भी कोई कुछ

बचाव नहीं कर सकता और जनम मरन का चक्कर भी नहीं छूट सकता।।

१२ - ऐसी हालत जीवों की कि सदा दुख सहते रहते हैं, देख कर संत सतगुरु दया करके फ़रमाते हैं कि जो महा सुख और अमर आनंद चाहो तो अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का खोज और पता लगा कर और उनके दर्शनों की सच्ची अभिलाषा मन में उठा कर और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके उसका अभ्यास शुरू कर दो तो रफ़्ता २ जिस क़दर रास्ता तै होता जावेगा, उसी क़दर छुटकारा माया के जंजाल से होता जावेगा यानी देह और संसार के दुख सुख का असर इसे कम व्यापेगा और अपने अंतर में अभ्यास का आनंद मिलता जावेगा और वही अभ्यास और आनंद तरक़्क़ी पाकर एक दिन निज घर में पहुँचा देगा।।

१३ - यह बात सब को मालूम होना चाहिये कि इस रचना का कोई कुल मालिक ज़रूर है और उसका नाम सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल है और हरचंद वह सब जगह मौजूद है, पर उसका निज धाम ऊँचे से ऊँचा है और सब जीव उसकी अंस हैं, जैसे सूरज और उसकी किरन, और उसके निज देश में माया नहीं है, वहाँ कुल रचना रूहानी और चैतन्य है और कष्ट और क्लेश और जनम मरन वहाँ नहीं है, और नीचे के देश में माया का भारी ज़ोर और शोर है यानी चैतन्य पर उसके ग़िलाफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ रहे हैं, और जिस क़दर कि भोग और पदार्थ हैं, वह सब माया के मसाले से (जो पाँच तत्त्व और तीन गुन हैं) बने हैं और जड़ हैं, इस

वास्ते जब तक कि जीव अपने अंसी यानी कुल मालिक के धाम में उलट कर न पहुँचेगा, तब तक अमर और परम आनंद को प्राप्त नहीं होवेगा और देह सम्बन्धी दुख सुख और जनम मरन से बचाव नहीं होवेगा।।

१४ - अब सब जीवों को चाहे मर्द होवें या औरत, इस दुनिया और उसके सामान की नाशमानता देख कर और अपनी मौत की याद लाकर विचारना चाहिये कि जब थोड़े दिनों की ज़िन्दगी के वास्ते इस दुनिया में इस क़दर मेहनत और मशक़्क़त करते हैं और नाशमान सुखों की प्राप्ति के लिये जो कि मरने के वक़्त ज़रूर छोड़ने पड़ेंगे, इस क़दर पचते और खपते हैं तो हमेशा के महा सुख और परम आनंद के हासिल करने और दुक्खों से सहज में नजात पाने के वास्ते किस क़दर तवज्जह और मेहनत उनको करना चाहिये।।

१५ - पिछले वक़्तों में यह काम बहुत मुश्किल था और बा-वजूद सख़्त मेहनत के बहुत थोड़ा फ़ायदा परमार्थी हासिल होता था लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके और जीवों को निबल और दुखी देख कर सहज जुगत पूरे उद्धार और सच्ची मुक्ति के प्राप्ति की फ़रमाई है कि जो औरत और मर्द और जवान और बूढ़ा, बिला छोड़ने घर बार और उद्यम और रोज़गार के, थोड़े वक़्त उसका अभ्यास करके परम पद हासिल कर सकता है और इसी ज़िदगी में राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से अपना उद्धार होता हुआ देख सकता है।।

१६ - इस वास्ते भूल और गफ़लत और बे-परवाही और आलस छोड़ कर सब जीवों को मुनासिब और

लाज़िम है कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते राधास्वामी दयाल के उपदेश की कमाई थोड़ी बहुत ज़रूर करें कि जिससे इस ज़िन्दगी में और भी बाद मरने के, उनके जीव की रक्षा और सहायता होवे और दो तीन या चार जनम में अपना अभ्यास पूरा करके धुर घर पहुँच कर महा सुख को प्राप्त होवे।।

१७ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का भेद और तरीक़ा अभ्यास का कि जिससे सुरत, मन और इन्द्रिय और माया के घेर से न्यारी होकर अपने मालिक के चरनों में पहुँचे, राधास्वामी संगत से मालूम हो सकता है। और किसी मत में जो आज कल जारी हैं, यह भेद और जुगत अभ्यास की पाई नहीं जाती है। इसी सबब से सब मत वाले ख़ाली फिरते हैं और कर्मों में अटक कर पाप पुन्य का फल दुख सुख भोगते हैं और यह चक्कर जब तक कि सच्चे मालिक के चरनों का प्रेम मन में नहीं आवेगा और उसके दर्शन की प्राप्ति के वास्ते संत सतगुरु की दया लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास नहीं किया जावेगा, कभी नहीं मिट सकता है।।

प्रकार इकतीसवाँ

इस देश में चैतन्य सुरत की धार उलटी बह रही है और इन्द्रिय द्वारे बाहर बिखर रही है। इसलिये इसको पूरा और निर्मल सुख नहीं मिल सकता और इसकी एकसी हालत

नहीं रह सकती। इस वास्ते चाहिये कि इस धारा को सुलटा बहावे यानी ऊँचे की तरफ़ को घट में चढ़ावे तो इसको एक दिन अपने भंडार में पहुँच कर पूरन और अमर आनंद प्राप्त होगा।।

१ - कुल जीव स्थूल देह में आँखों के मुक़ाम पर बैठ कर इस लोक में मन और इन्द्रियों से कार्रवाई कर रहे हैं यानी सुरत की धार मन और इन्द्रियों के द्वारे बाहर की तरफ़ बिखर रही है और जड़ पदार्थों से विशेष कर इस धार का मेल हो रहा है।।

२ - जिन जीवों में कि इस शख़्स की प्रीति है, उनकी तरफ़ तवज्जह करने या उनका ख़्याल करने और मिलने में इसको आनंद होता है और इसी तरह जिन भोगों और पदार्थों में इसकी आशक्ति है या उनमें विशेष बर्ताव रहता है, जब जब वे सन्मुख होते हैं या उनके साथ स्पर्श होता है या जब उनको यह ग्रहण करता है, तब रस और आनंद मिलता है, इस सबब से सुरत की धार इन सब की तरफ़ बारम्बार या अक्सर जाती है।।

३ - हरचंद यह बात प्रकट है लेकिन फिर भी जीव उससे बे-ख़बर हैं कि जिस क़दर आनंद और रस और स्वाद जीवों और पदार्थों और भोगों के वसीले से इंद्रिय द्वारे मन को मिलता है, वह असल में सुरत की धार में है। जो सुरत की धार इन्द्रिय के मुक़ाम पर न आवे

और वहाँ से चल कर भोगों और पदार्थों से न मिले तो कुछ भी रस या आनंद प्राप्त नहीं होगा।।

४ - स्वप्न अवस्था में इस बात का सबूत साफ़ मिलता है कि जीव उस हालत में कुल इन्द्रियों के भोगों का रस और स्वाद वैसा ही लेते हैं जैसा कि जाग्रत अवस्था में मिलता है और हाल यह है कि उस वक़्त बाहर की इन्द्रियाँ बेकार और कोई पदार्थ मौजूद नहीं होता। फिर ज़ाहिर है कि वह रस और स्वाद जो अंतर में स्वप्न अवस्था में मिलता है, सुरत की धार का है। सिवाय इस के, जब कि आदमी सो जाता है और उसकी सुरत की धार अंतर में खिंच जाती है, उस वक़्त जो कोई पदार्थ जो किसी इंद्रिय का विषय है, सन्मुख लाया जावे या उस इंद्रिय से उसका स्पर्श और मेल कराया जावे, तो कुछ भी ख़बर नहीं होती और न किसी क़िस्म का रस सोते आदमी को मिलता है। इससे भी साबित है कि ब-सबब न मौजूद होने सुरत की धार के, सोते वक़्त, बाहर की इंद्रियाँ बेकार होती हैं और कुछ रस नहीं ले सकती हैं।।

५ - अब ख़्याल करना चाहिये कि जब कि जिस क़दर रस और आनंद और स्वाद है, वह सुरत की धार में है, फिर जिस क़दर कि सुरत की धार बाहर की तरफ़ जारी रहेगी, वह ख़र्च में दाख़िल होगी और बाहरी भोगों और पदार्थों वग़ैरा से उस धार के ही मुवाफ़िक़ रस और स्वाद मिल सकता है और जो वही धार अपने भंडार की तरफ़ जो ऊँचे देश में है, रुजू करे तो जिस क़दर उसकी चाल चलेगी यानी बाहर की तरफ़ से सिमटाव और अंदर में चढ़ाई होवेगी, उसी क़दर बग़ैर

मेहनत और धन ख़र्च करने के ज़्यादा से ज़्यादा आनंद और रस मिलता जावेगा और उसी क़दर चिन्ता फ़िक्र और दुख का असर कम व्यापेगा।

६ - बाहर के भोग और पदार्थ बग़ैर धन ख़र्चने के नहीं मिल सकते हैं और धन बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं हो सकता। लेकिन वैसा ही रस और स्वाद बल्कि उससे ज़्यादा और फिर ज़्यादा से ज़्यादा अंतर में स्वतंत्र यानी अपनी इच्छा के मुवाफ़िक़ थोड़ा प्रेम और विरह अंग लेकर संतों की जुगत के कोई दिन अभ्यास करने से सहज में मिल सकता है और फिर उस आनंद और रस की हद्द और शुमार नहीं है यानी जिस क़दर सुरत चढ़ती जावेगी, उसी क़दर आनंद बढ़ता जावेगा और एक दिन सुरत अपने निज धाम में पहुँच कर महा आनंद को, जिसका वार पार नहीं है, प्राप्त हो सकती है।।

७ - इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे बाहर के भोगों का रस और स्वाद लेने के वास्ते तन मन धन ख़र्च करते हैं, ऐसे ही वास्ते प्राप्ति अंतर के आनंद के जो महा निर्मल है और जिस वक़्त चाहें उस वक़्त बग़ैर मेहनत और ख़र्च करने के हासिल हो सकता है, थोड़ी तवज्जह और मेहनत अभ्यास की गवारा करें।।

८ - यह अभ्यास सुरत को उसके निज घर में पहुँचा सकता है जहाँ से यह आदि में उतर कर आई है और वहाँ पहुँच कर दर्शन कुल मालिक राधास्वामी दयाल का जो इसके सच्चे माता पिता हैं और जिनकी

यह अंस है, हासिल करके निहायत आनंद को प्राप्त हो सकती है।।

९ - इस अभ्यास का तरीक़ा और भी भेद रास्ते और कुल मालिक के धाम का संत सतगुरु या साध गुरू या उनके प्रेमी भक्त से मालूम हो सकता है और इस वक़्त में राधास्वामी दयाल की संगत में प्रकट सुनाया जाता है और उस अभ्यास का नाम सुरत शब्द योग है यानी सुरत, रूह, को चैतन्य की धार की सवारी पर उलटा कर उसके भंडार यानी निज घर में पहुँचाना। यह चैतन्य की धार नज़र नहीं आ सकती और न पकड़ाई दे सकती है लेकिन जो कोई उस आवाज़ को जो उस धार के साथ बराबर जारी है, तवज्जह के साथ यानी विरह और प्रेम अंग लेकर सुनता हुआ चले तो उसकी सुरत एक दिन उस मुक़ाम पर पहुँच जावेगी जहाँ से कि वह धार और आवाज़ आती है।।

१० - मालूम होवे कि आवाज़ की बराबर कोई ताक़त वाला और अंधेरे में प्रकाश करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है। इस दुनिया में भी कुल कार्रवाई सुरत और शब्द के वसीले से हो रही है यानी एक बोलता है और दूसरा सुन कर हुक्म की तामील करता है लेकिन यह शब्द इसी नीचे देश का है और जिस शब्द के सुनने के वास्ते संत सतगुरु हिदायत फ़रमाते हैं, वह शब्द आसमानी है। उसकी धार आदि में कुल मालिक के धाम से निकस कर और रास्ते में कई जगह ठेके लेती हुई और मंडल बाँध कर रचना करती हुई ब्रह्मांड से गुज़र कर इस पिंड में आँखों के मुक़ाम पर ठहर कर देह और दुनिया का कारज कर

रही है सो इसी धार को पकड़ कर यानी आवाज़ को सुनते हुए आँखों के मुक़ाम से रास्ता जारी होता है यानी आवाज़ को सुनती हुई सुरत एक मुक़ाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे पर चढ़ती चली जाती है।।

११ - जैसे कि कुल काम इस दुनिया के शौक़ और मेहनत के साथ जारी हैं यानी जिसमें जिसका शौक़ होता है, वही काम वह प्रीत के साथ करता है और उस कार्रवाई में उसको कुछ तकलीफ़ नहीं होती। इसी तरह अंतर की कार्रवाई यानी सुरत का चलना और चढ़ना बग़ैर मालिक के दर्शनों के शौक़ और प्रेम के मुमकिन नहीं है और यह शौक़ और प्रेम संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और प्रेमी जन के संग से पैदा होगा।।

१२ - इस वास्ते कुल जीवों को जो अपने घट में निर्मल और गहरा आनंद लेना चाहते हैं, मुनासिब है कि पहिले संत सतगुरु या साध गुरू या उनके प्रेमी जन का खोज और पता लगा कर सतसंग करें और जब उनके बचन और भक्ति की रीति और क़ायदे समझ में आजावें, तब उनसे उपदेश लेकर उनके सुरत शब्द मार्ग की कमाई यानी अभ्यास शुरू करें, तब जिस क़दर कि सुरत और मन बाहर से सिमट कर अंतर में धसते जावेंगे उसी क़दर रस और आनंद मिलता जावेगा और सुरत की धार का बे-फ़ायदे बाहरमुख फैलाव यानी फ़िज़ूल ख़र्च का बचाव होता जावेगा।।

१३ - इस वक़्त में कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों पर निहायत दया फ़रमाई है कि सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास इस क़दर आसान कर दिया है कि

लड़का जवान बूढ़ा औरत मर्द ग्रहस्थ विरक्त, उसकी थोड़ी बहुत कमाई सहज में कर सकते हैं और उसका फल यानी अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद और आहिस्ते २ अपना उद्धार होता हुआ, इसी ज़िन्दगी में ले सकते हैं और कुल मालिक की दया और रक्षा को जो इस मार्ग के अभ्यासी के संग रहती है, परख सकते हैं।।

१४ - पिछले वक़्तों में बैराग और पुरुषार्थ पर बहुत ज़ोर दिया और योग अभ्यास और उसके संजम बहुत कठिन रक्खे कि जो विरक्त से भी मुश्किल से बन सकते थे और बैराग की सम्हाल के लिये घर बार और रोज़गार और बस्ती में रहना छुड़ाया और जंगल में बासा देकर अभ्यास कराया, फिर भी उन अभ्यासियों की चढ़ाई सहस दल कँवल से ज़्यादा नहीं हुई यानी माया के घेर के पार न गये और इस वास्ते उनका जनम मरन का चक्कर नहीं कटा।।

१५ - लेकिन अब राधास्वामी दयाल ने ऐसी मेहर करी है कि सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास जो प्राण योग से बहुत बढ़ कर है (क्योंकि सुरत की धार प्राणों की चैतन्य करने वाली है) हर एक जीव से जिस हालत में कि होवे सहज में कराके उसकी सुरत को दयाल देश यानी निर्मल चैतन्य देश में जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संतों का निज धाम है, पहुँचा कर अमर आनंद को प्राप्त कराते हैं और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी मुनासिब और ज़रूर है, जीवों से एक दो तीन हद्द चार जनम में करा कर माया की हद्द के पार पहुँचाते हैं। इस वास्ते जो जीव

इस अभ्यास में लग जावें, वे ही बड़ भागी हैं और उन्हीं का जनम मरन का चक्कर काटा जावेगा और अमर आनंद के स्थान में बासा पावेंगे और बाक़ी जीव चाहे जिस मत में होवें, बाहरमुख करनी और कर्म और धर्म में भरम कर चौरासी भोगते रहेंगे।।

प्रकार बत्तीसवाँ

यह देश भूल और भरम का है और इस सबब से यहाँ जीव हमेशा दुख सुख और जनम मरन के चक्कर में भरमते रहते हैं। जो कोई उससे बचना चाहें और परम सुख और अमर आनंद के देश में पहुँचना चाहें, वह राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करें तो राधास्वामी दयाल की दया और सतगुरु की कृपा से एक दिन काम उनका बन जावेगा।

१ - इस लोक में जीव कुल मालिक राधास्वामी दयाल को बिल्कुल भूल गये हैं यानी उनसे और उनके धाम से बिल्कुल बे-ख़बर हैं बल्कि निरंजन के भी भेद से जिसको ब्रह्म, त्रिलोकीनाथ, परमेश्वर और ख़ुदा कहते हैं, बहुत कम वाक़िफ़ हैं।।

२ - सबब इसका यह है कि सब जीवों के मन में दुनिया और उसके भोगों और सामान की चाह बहुत

ज़बर है और उसके पूरा करने के निमित्त वे उम्र भर जतन और धंधे करते रहते हैं और जो कि नई नई चाहें दुनिया के विस्तार की उठती रहती हैं, इस वजह से कभी जीवों के धंधे का अंत नहीं होता है और कमी फुरसत की हमेशा शिकायत करते रहते हैं।।

३ - जिन जीवों को सब सामान और भोग हासिल हैं, वे तृष्णा के सबब से धंधे करते रहते हैं और जो फुरसत भी मिले तो वह वक़्त सैर और तमाशे और ग़प-शप और अनेक तरह के भोगों के रस लेने में ख़र्च करते हैं।।

४ - और जिन जीवों को कुछ भी सामान मुयस्सर नहीं है और न कोई जतन माक़ूल उनसे बन पड़ता है, वे अपना वक़्त भीख मांगने में ख़र्च करते हैं या आलस करके बेकार पड़े रहते हैं और दुख भोगते हैं।।

५ - इस तरह कुल जीव किसी न किसी क़िस्म के दुनियावी कामों में लगे रहते है और अपने मालिक का, और भी अपनी मौत का, कभी ख़्याल भी नहीं करते और जो कोई उनको परमार्थी बचन सुनावे तो उसको फ़िज़ूल और बे-ज़रूर समझ कर तवज्जह नहीं करते। अलबत्ता जो कुछ रस्म पूजा या दान पुन्य वग़ैरा की उनके घराने में ख़ास ख़ास समय पर होती चली आई है, उसको इस ख़ौफ़ से कि कहीं उसके बंद करने में नुक़सान माल हो जावे या बीमारी पैदा होवे, थोड़ा बहुत जारी रखते हैं और मालिक का ख़ौफ़ और प्यार भी उनके दिल में कहन मात्र होता है, असली नहीं है।।

६ - जोकि आम जीवों को दुनिया के भोग और सामान में, और भी धनवान और हाकिमों में, विशेष

प्रीत रहती है और उन्हीं के संग में उनको रस और आनंद आता है और उन्हीं की चाह उठा कर जतन करते रहते हैं, इसी सबब से संत कहते हैं कि यह लोग सच्चे मालिक को भूल कर नाशमान और जड़ पदार्थों में भरम रहे हैं और उन्हीं को अपने सुख और आनंद और रस और स्वाद का वसीला समझ रहे हैं और इस हाल से बे-ख़बर हैं कि जिस क़दर रस और स्वाद और आनंद हैं, वह सुरत चैतन्य की धार में हैं क्योंकि जो भोगों के साथ सुरत चैतन्य की धार शामिल न होवे तो कुछ भी रस प्राप्त नहीं हो सकता, इस वास्ते चाहिये था कि चैतन्य जो सत्त है और सर्व रस का भंडार है, उसकी मुख्यता करते और ऐसी समझ लेकर भोगों और पदार्थों वग़ैरा में भी बर्ताव रखते तो उनको एक दिन महा सत्त और महा आनंद और महा चैतन्य स्वरूप का जो कि कुल का मालिक है, पता लग जाता और उसके मिलने की जुगत भी दरियाफ़्त हो जाती।।

७ - जो जीव कि अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक को भूल कर संसार में भरम रहे हैं और कुटुम्बियों और भोगों और पदार्थों में उनका भाव और प्यार रहता है, वे दिन दिन नीचे देश और जोनों में उतरते चले जाते हैं क्योंकि उनका विशेष मेल जड़ पदार्थों से रहता है और उन्हीं की प्राप्ति की चाह उनके मन में ज़बर रहती है, इस सबब से उनका जनम मरन का चक्कर और देह धर कर दुख सुख का भोग कभी नहीं मिटेगा।।

८ - लेकिन जो कोई कि इस संसार और उसके सामान को नाशमान और मौत को अपने सिर पर

हमेशा खड़ा देख कर खोज कुल मालिक का करते हैं और पता और भेद उसका और उसके धाम का दरियाफ़्त करके दर्शन की प्राप्ति के लिये जतन करते हैं, वे ही आहिस्ते आहिस्ते माया के घेर से जो कि भूल और भरम और दुख सुख और जनम मरन का स्थान है, न्यारे होकर एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होंगे और जो कि वह देश अमर और अजर है तो वह जीव भी वहाँ पहुँच कर अमर हो जावेंगे और हमेशा का सुख उनको हासिल हो जावेगा।।

९ - यह पता और भेद कुल मालिक और उसके धाम का और तरीक़ा उसकी प्राप्ति का राधास्वामी मत में खोल कर वर्णन किया है। जो कोई सच्चा शौक़ीन है, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश ले सकता है और उसकी कमाई करके थोड़ा बहुत फल उसका इसी ज़िन्दगी में देख सकता है और आइंदा के वास्ते उसकी आशा और निश्चय पक्का होकर अभ्यास आसानी के साथ बढ़ सक्ता है।।

१० - इस अभ्यास को सुरत शब्द मार्ग कहते हैं यानी रूह को आवाज़ आसमानी के साथ जो घट घट में हो रही है ऊँचे देश में जहाँ कुल मालिक का धाम है, चढ़ाना, वही निर्मल चैतन्य का स्थान है, जहाँ माया नहीं है और न किसी तरह का कष्ट और क्लेश है।।

११ - बग़ैर सतसंग के तमोगुण जो कि संसार में फैल रहा है और कुल जीवों के अंतर में छा रहा है, दूर नहीं हो सकता और भूल और भरम और ग़फ़लत इसी

तमोगुण का फल है, सो जब तक यह कम या दूर न होगा, तब तक सफ़ाई नहीं होगी और आँख नहीं खुलेगी और यह तमोगुण बाहर संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन के सतसंग से और अंतर में शब्द के श्रवन और स्वरूप के ध्यान से कम होता जावेगा और एक दिन राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से बिल्कुल दूर हो जावेगा।।

१२ - इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि पहिले संत सतगुरु और उनके सतसंग का खोज करें और जो संत सतगुरू न मिलें तो उनकी बानी और प्रेमी सतसंगियों का संग करें और जुगत अंतर में मन और सुरत के चढ़ाने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करदें। रफ़्ते रफ़्ते संत सतगुरु भी दया से मिल जावेंगे।।

१३ - संतों के सतसंग और उनके सरन की महिमा बहुत भारी है, यहाँ तक कि कैसा ही पापी और मलीन जीव होवे, जो वह चेत कर अंतर और बाहर सतसंग करेगा और चरन सरन दृढ़ करेगा तो कोई दिन में निर्मल हो जावेगा और सच्चे मालिक का प्रेम उसके हिरदे में पैदा होकर एक दिन उसको निज धाम में पहुँचा देगा।।

प्रकार तेंतीसवाँ

दुनिया में देखा जाता है कि सब लोग बड़ी से बड़ी चीज़ के हासिल करने की

ख़्वाहिश करते हैं तो परमार्थ में भी चाहिये कि ऊँचे से ऊँचे देश में पहुँच कर सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों के दर्शन का परम आनंद हासिल करने के लिये कोशिश और जतन दिल और जान से करें और मूरत या निशान की पूजा या विद्या बुद्धि की समझौती पर राज़ी होकर अपना अकाज नहीं करना चाहिये।।

१ - इस दुनिया में देखने में आता है कि हर एक शख़्स उम्दा से उम्दा चीज़ चाहता है और बड़े से बड़े आदमियों से मिलने की ख़्वाहिश रखता है और ज़्यादा से ज़्यादा ताक़त और धन और माल और जौहर और हुनर हासिल करने की उम्मीद रखता है।।

२ - जो शख़्स कोई विद्या या हुनर या किसी क़िस्म का काम सीखना चाहता है, वह भी बड़े उस्ताद से मिल कर अपना मतलब बनाना चाहता है।।

३ - लेकिन बड़ा ताज्जुब और अफ़सोस होता है कि परमार्थ के मुआमले में यानी अपनी मुक्ति और उद्धार के हासिल करने के वास्ते लोग सिर्फ़ किताब पढ़ना या सुनना या कोई निशान या नक़ल जैसे मूरत वग़ैरा की पूजा करना या किसी ख़ास दरिया तालाब या कुएँ पर स्नान करना या दान पुन्य वग़ैरा करना या बंसावली और विद्यावान गुरुओं से उपदेश लेकर बग़ैर भेद के नाम का सुमिरन और बे-ठिकाने ध्यान करना काफ़ी कार्रवाई समझते हैं।।

४ - यह लोग अच्छी तरह जानते हैं कि जो कार्रवाई वह कर रहे हैं, उससे उनके संशय और भरम दूर नहीं होते और न किसी भारी सवाल का जो उनके मन में पैदा होवे, जवाब साफ़, किताब या मूरत या बंसावली और विद्यावान गुरुओं से मिल सकता है और न अपनी कार्रवाई का फल यानी किसी क़दर मुक्ति होती हुई अंतर में या बाहर नज़राई देती है, फिर भी यह लोग कुछ तलाश या तहक़ीक़ात भेदी और वाक़िफ़कार गुरू की नहीं करते।।

५ - सबब इसका यह मालूम होता है कि इन जीवों के मन में सच्ची चाह अपने उद्धार की या दरियाफ़्त करने हाल कुल मालिक की नहीं है। नहीं तो जैसे दुनिया में हर एक काम के वास्ते ज़्यादा से ज़्यादा वाक़िफ़कार आदमी और उम्दा से उम्दा चीज़ की तलाश करते हैं, इसी तरह अपने उद्धार के वास्ते भी ज़रूर खोज पूरे गुरू और पूरी जुगती का करते।।

६ - जिन लोगों के दिल में सच्चा शौक़ परमार्थ का है, उनको वह कार्रवाई जो दफ़ा (३) - में लिखी गई और जो अवाम लोग कर रहे हैं, पसंद नहीं आती क्योंकि उससे उनको तसल्ली और शांति नहीं होती और मन में उनके बहुत से शक और सवालात धरे रहते हैं कि जो सिवाय पूरे गुरू के तै नहीं हो सकते। ऐसे जीव सच्चे और पूरे गुरू और उनके सतसंग का खोज लगा कर और जब और जहाँ मिल जावें, उनसे मिल कर सहज में अपना कारज बनवाते हैं।।

७ - अब सब जीवों को समझना चाहिये कि वास्ते अपने जीव के कल्यान के सच्चे गुरू और सच्चे सतसंग

का खोज करें और पूरे गुरू की पहिचान यह है कि वे सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का भेद देकर जुगत उसके दर्शनों के प्राप्ति की सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से बतावेंगे और सच्चा सतसंग उसको कहते हैं कि जहाँ सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की महिमा और उनके चरनों में प्रेम का ज़िक्र होवे और भेद उनके धाम का और तरीक़ा उसके प्राप्ति का समझाया जावे।।

८ - ऐसा सतसंग राधास्वामी दयाल की संगत में मौजूद है और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश और अभ्यास जिसके सिवाय कोई दूसरी जुगत कुल मालिक के धाम में पहुँचने की रचना भर में नहीं है, वहाँ जारी है। जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर अपने जीव का कारज करवावे।।

९ - दुनिया में बहुत कम जीव हैं कि जो उसकी नाशमानता देख कर इस बात का सोच करें कि बाद मरने के कहाँ जावेंगे और क्या हाल होगा और जो कोई सच्चा मालिक इस रचना का है, उससे और उनसे क्या निस्बत है और क्या कार्रवाई उनको वास्ते प्राप्ति हमेशा के सुख और आनंद के, करना चाहिये।।

१० - और बाक़ी जीव इंद्रियों के भोग विलास में और विशेष धन के प्राप्ति की चाह में ऐसे मस्त और बे-होश रहते हैं और इन्हीं की प्राप्ति के वास्ते रात दिन मेहनत के साथ धंधे कर रहे हैं कि उनको कुल मालिक या अपनी मौत का कभी ख़याल नहीं आता और बा-वजूदे कि संसार में अनेक तरह के कष्ट और क्लेश

सहते हैं और माया के हाथ से धक्के भी खाते हैं, फिर भी बारम्बार उसी की तरफ़ दौड़ते हैं और उन्हीं तुच्छ सुखों की आसा बाँध कर मेहनत करते रहते हैं।।

११ - यह जीव क़ाबिल संतों के सतसंग के नहीं हैं लेकिन जो भाग से उनको किसी प्रेमी सतसंगी का संग मिल जावे तो उसके बचन बारम्बार सुन कर और उसके प्रेम और भक्ति की हालत और दुनिया की तरफ़ से उसकी उदासीनता देख कर उनके मन में भी कुछ महिमा परमार्थ की समा जावेगी और फिर उसी प्रेमी के वसीले से संत सतगुरु का दर्शन करके और उनके सतसंग में शामिल होकर थोड़ी बहुत उनकी हालत बदलेगी और जब उपदेश लेकर अंतर अभ्यास करेंगे और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल का कुछ जलवा अपने अंतर में देखेंगे और उनकी दया और रक्षा की परख करेंगे, तब उनका भी प्रेम दिन दिन बढ़ेगा और संत सतगुरु की दया से एक दिन निज घर में जो कुल मालिक का धाम है, पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होवेंगे।।

१२ - जहाँ कि जीव की बैठक पिंड में है, वहाँ से और कुल मालिक के धाम तक कितने ही ठेके या मंज़िलें रास्ते में हैं और हर एक मुक़ाम का धनी नीचे की रचना का मुख़्तार और मालिक है। बहुत से परमार्थी लोग रास्ते के मुक़ामों में उन्हीं को आख़िरी मुक़ाम समझ कर ठहर गये और वहाँ के मालिक की पूजा जारी करी, पर इन सब मुक़ामों का जो कि माया के घेर में हैं, किसी का परलय और किसी का महा-परलय में अभाव होवेगा और उस वक़्त उस मुक़ाम के मालिक

के भक्त भी परलय में आवेंगे और जो कि भक्ति की रीत चाहे जिसकी होवे, एकसाँ है, इस वास्ते परमार्थ के सच्चे शौक़ वालों को मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले अपने सच्चे और कुल मालिक का खोज और पता लगाावें, तब भक्ति में कदम रक्खें ताकि उनकी मेहनत और कार्रवाई बरबाद न होवे और एक दिन संतों के देश में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होवें। उस देश में परलय और महा परलय नहीं पहुँच सकती है और न वहाँ माया और उसके मसाले की रचना है और न वहाँ कष्ट और क्लेश और जनम मरन का चक्कर है। वह धाम और वहाँ की रूहानी रचना हमेशा एक रस क़ायम रहती है और महा आनन्द और महा प्रेम और महा सुख का भंडार है।।

१३ - जो जीव कि कुल मालिक की भक्ति नहीं करेंगे यानी संतों के बचन के ब-मूजिब सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों का इष्ट बाँध कर सुरत शब्द मार्ग का थोड़ा बहुत अभ्यास नहीं करेंगे वे माया के घेर में रहेंगे और बारम्बार देह धारन करके दुख सुख और जनम मरन का क्लेश भोगते रहेंगे।।

प्रकार चौंतीसवाँ

जगत में सब जीव मान बड़ाई के वास्ते तन मन धन ख़र्च करते हैं बल्कि जान तक दे देते हैं और फिर भी पूरी और पायदार मान बड़ाई हासिल नहीं होती लेकिन सच्चे परमार्थी

को जो राधास्वामी दयाल के चरनों में लगा है और एक दिन उनके निज धाम में पहुँचने की आसा करके जतन कर रहा है, बे-माँगे और बे-चाहे इस जनम में और भी चोला छोड़ने के बाद भारी शोहरत और बड़ाई बल्कि पूजा और प्रतिष्ठा एक शहर में नहीं, बल्कि देशों में हासिल होती है कि जिसका अन्दाज़ा और हिसाब कोई नहीं कर सकता।।

१ - इस दुनिया में सब जीव वास्ते प्राप्ति धन और माल और पदार्थों के जो इन्द्रियों के भोग हैं, मेहनत करते हैं और हरचंद मान बड़ाई की चाह सब के हिरदे में भरी हुई है पर उसकी प्राप्ति के निमित्त ख़ास जतन थोड़े शख़्स करते हैं।।

२ - धन स्त्री और पुत्र की चाह बहुत ज़बर है और सब जीव इसी चाह में गिरफ़्तार होकर इस दुनिया में कार्रवाई कर रहे हैं, लेकिन मान बड़ाई की चाह इन सब चाहों से भी ज़बर है।।

३ - देखने में आता है कि जिस किसी के मन में मान बड़ाई की चाह है, वह उसकी प्राप्ति के वास्ते भारी और कठिन जतन करता है। यहाँ तक कि धन स्त्री और पुत्र बल्कि अपनी देह और जान तक के क़ुरबान करने को तैयार हो जाता है।।

४ - ऐसे शख़्स बहुत थोड़े होते हैं और उन्हीं से बल्कि सबों से संत कहते हैं कि दुनिया की मान बड़ाई तुच्छ और थोड़े दिनों की है और जिस किसी को बहुत

से बहुत हासिल भी हुई तो एक क़स्बा या शहर या एक देश में उसकी शोहरत हो जावेगी लेकिन बाद चोला छोड़ने या गुज़रने थोड़े अर्से के वह नामवरी भी जाती रहेगी और जो कोई ख़ास काम उसके यादगारी का किया जावे या इमारत बनाई जावे, उसका भी कोई अर्से बाद निशान नहीं रहेगा और जो कसरत औलाद का भरोसा रक्खे तो उसके क़ायम रहने का भी पूरा एतबार नहीं हो सकता।।

५ - इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जिन जीवों के मन में अपनी बड़ाई और यादगारी की चाह ज़बर है, उनको चाहिये कि अपने सच्चे कुल मालिक के चरनों में सच्ची और पूरी भक्ति तन मन और धन से करें तो उनके मन में से यह चाह कोई अर्से में बिल्कुल निकल जावेगी और बजाय उसके सच्चे मालिक के दर्शनों की अभिलाषा दिन दिन बढ़ कर एक दिन उनको अपने मालिक के सन्मुख पहुँचा देगी और जो आनन्द कि दर्शन करके प्राप्त होगा, वह कहने में नहीं आ सकता है और दुनिया के कुल सामान बल्कि ऊँचे लोकों के भोगों से बे-परवाह कर देगा।।

६ - सिवाय इसके वह सच्चा मालिक अपने भक्त पर मेहरबान होकर अपनी दया से इस क़दर बड़ाई और शोहरत बख़्शेगा कि जिसका अंदाज़ा नहीं हो सकता यानी उसकी ज़िंदगी में भी शहरों और देशों में उसकी शोहरत और बाद मरने के भी पूजा और प्रतिष्ठा दूर दूर तक आम तौर पर फैलेगी और सब बड़े और छोटे आदमी और मर्द और औरत और लड़के बाले उसकी और उसके नाम और बचन और निशान की ताज़ीम और अदब करेंगे जैसा कि पिछले संतों

और महात्माओं और औतारों और पैग़म्बरों और भक्तों के हाल से ज़ाहिर है।।

७ - जिस भक्ति का कि ज़िकर ऊपर हुआ, वह सिर्फ़ संतों के सतसंग से हासिल हो सकती है और सच्चे कुल मालिक का पता और भेद, और भी उसके दर्शनों के प्राप्ति का तरीक़ा, संत सतगुरु या उनके सच्चे प्रेमी अभ्यासी से मालूम हो सकता है।।

८ - और सब मतों में जो दुनिया में जारी हैं, तरीक़ा भक्ति या ज्ञान, परमेश्वर या परमात्मा या ब्रह्म, पार-ब्रह्म या ख़ुदा का बयान किया है या औतारों और देवताओं और पैग़म्बरों और औलियाओं की भक्ति समझाई है, लेकिन इस कार्रवाई से वह निर्मल और उत्तम और ऊँचे से ऊँचा दरजा जो कि कुल मालिक और संत सतगुरु की भक्ति से हासिल होता है, प्राप्त होना मुमकिन नहीं है।।

९ - इस भक्ति की रीत और तरीक़ा अभ्यास का पिछले संतों और साधुओं की बानी में संक्षेप करके और इशारे में बयान किया है, लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके निहायत दया के साथ उसको खोल कर तफ़सील के साथ प्रकट किया है और जुगत अभ्यास की सुरत शब्द मार्ग के वसीले से जिससे भक्ति और प्रेम दिन दिन बढ़ता जावे और मन और सुरत अपने प्रीतम सच्चे मालिक के धाम की तरफ़ दिन दिन चढ़ कर चलते जावें, इस क़दर आसानी के साथ मुक़र्रर की है कि जो मर्द और औरत चाहे ग्रहस्थ होवे या विरक्त, पढ़ा होवे या अनपढ़ बे-तकलीफ़ और बे-ख़तरे कमा सकते हैं।।

१० - हर एक शख़्स को, चाहे औरत होवे या मर्द, जो इस दुनिया में पैदा हुआ है, मुनासिब है कि इसके हाल को ग़ौर के साथ मुलाहिज़ा करे और जब उसको यक़ीन हो जावे कि यहाँ कोई चीज़ या धन दौलत मान बड़ाई ठहराऊ नहीं है और चाहे राजा या अमीर या ग़रीब होवे, सबको जो कुछ कि सामान उसके पास है, छोड़ना पड़ेगा और जीव यानी सुरत जो अमर है, इस देह और देश को छोड़ कर दूसरी देह धारन करेगी और जैसी कार्रवाई एक जनम में की है, उसी क़िस्म की नीच उँच जोन में बारम्बार देह धर कर करती रहेगी और दुख सुख और जनम मरन का कष्ट और क्लेश हमेशा सहना पड़ेगा तो वास्ते आराम और बचाव दुखों से अपने जीव के, लाज़िम होगा कि ऐसी कार्रवाई करे कि जिससे वह अपने निज घर यानी सच्चे मालिक राधास्वामी के धाम में पहुँच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे और देहियों के बंधन से क़तई छुटकारा हो जावे।।

११ - दुनिया में अपने और अपने कुटुम्ब के औसत दरजे के गुज़ारे के वास्ते जो कार्रवाई ज़रूर है, वह बेशक करना चाहिये। लेकिन ऐसी फ़िज़ूल कार्रवाई कि जिससे दुनिया में बे-फ़ायदे बंधन होवे, या थोड़े दिन की मान बड़ाई हासिल हो जावे बग़ैर समझे और विचारे और बग़ैर मौज अपने सच्चे मालिक और सतगुरू के, करना मुनासिब नहीं है।।

१२ - इस बात की समझ सतसंग से आवेगी। इस वास्ते सब को मुनासिब है कि पहिले संत सतगुरु का संग करें और संत सतगुरु वे ही हैं कि जो सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ति दृढ़ावें और सुरत

शब्द मार्ग का अभ्यास कराके और काल और माया के जाल से निकाल कर पिंड और ब्रह्मांड के पार सच्चे मालिक के धाम में पहुँचावें।।

१३ - संत सतगुरु के बचन चित्त से सुन कर और मनन करके, समझ कर, दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से आहिस्ते आहिस्ते चित्त हटता जावेगा और कुल मालिक के चरनों में प्रीत जागती जावेगी और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके वह प्रीत, प्रतीत सहित, बढ़ती जावेगी और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास और धन और माल और मान बड़ाई की चाह आहिस्ते आहिस्ते घटती जावेगी।।

१४ - इस तरह ऐसा सतसंगी दिन दिन सन्त सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का प्यारा होता जावेगा और जब उसकी भक्ति और अभ्यास ख़तम होवेंगे, उस वक़्त वह मालिक के निज धाम में जो महा आनन्द और महा चैतन्य और महा प्रेम का भंडार है, बासा पावेगा।।

१५ - ऐसे प्रेमी भक्त के द्वारे मालिक बहुत से जीवों का उपकार करावेगा यानी उनको भी भक्ति और प्रेम की दात बख़्श कर निज घर में पहुँचने की कार्रवाई करावेगा और इस तरह उस प्रेमी भक्त की महिमा बग़ैर उसकी चाह और माँग के, दिन दिन बढ़ती जावेगी और बाद उसके चोला छोड़ने के भी, दूर दूर तक ज़्यादा से ज़्यादा फैलेगी।।

१६ - यह भेद समझ कर जिस किसी के मन में सच्ची ख़्वाहिश कुल मालिक के दरबार में पहुँचने की पैदा होवे, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में

शामिल होकर तहक़ीक़ात करे और सतसंग करके संशय और भरम अपने दूर करावे और फिर सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे और अपने अंतर में दया के परचे पाकर संत सतगुरू और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावे तो उनकी मेहर और दया से एक दिन उसका काम पूरा बन जावेगा। और किसी मत में जो इस वक़्त जारी हैं, भेद कुल मालिक और उसके धाम और रास्ते का और तरीक़ा चढ़ाने मन और सुरत का, जारी नहीं है और न वहाँ से कुछ पता और भेद मिल सकता है।।

१७ - इस वक़्त में जब कि कुल जीवों का झुकाव संसार और उसके भोगों की तरफ़ हो रहा है और सच्चे परमार्थ की तरफ़ से बिल्कुल बे-परवाह हो रहे हैं, जिस किसी के दिल में दुनिया की नाशमानता देख कर सच्चा खोज सच्चे मालिक और जुगत प्राप्ति सच्ची मुक्ति का पैदा हो जावे, वही जीव बड़ भागी है और उसी का संजोग राधास्वामी दयाल की दया से राधास्वामी संगत से मिल जावेगा और रफ़्ते रफ़्ते सन्त सतगुरु से भी भेंटा हो जावेगा और फिर उनकी सेवा और सतसंग से उसके घट में प्रेम बढ़ता जावेगा और अभ्यास भी दुरुस्ती से बनेगा और उनकी दया से एक दिन निज घर में बासा पाकर अमर और परम आनन्द को प्राप्त होगा और तब अपने भागों को सराहेगा कि कैसे कठिन जंजाल से सन्त सतगुरु ने सहज में निकाल कर माया के घेर के पार निज धाम में पहुँचाया।।

* * * * *

प्रकार पैंतीसवाँ

यह संसार अगिन भंडार है और यहाँ सब कामों और सब बातों में तपन होती है। जो कोई इस तपन के स्थान से बचना चाहे, उसको चाहिये कि आकाश यानी ऊँचे देश की तरफ़ भागे और महा सीतल और आनन्द के स्थान में जो कुल मालिक का धाम है, पहुँच कर बासा करे। रास्ता इस धाम का घट में है और उसके भेदी संत सतगुरु हैं।।

१ - इस लोक में माया का भारी ज़ोर और शोर है और वह अगिन रूप है। इस सबब से कोई काम यहाँ का तपन से ख़ाली नहीं है यानी गरमी की मदद से होता है।।

२ - जहाँ हरकत है, वहीं तपन या गरमी है। देह के औज़ार जो इन्द्रियाँ हैं, इनकी भी कार्रवाई हरकत और तपन के साथ होती है।।

३ - इसी तरह पाँच दूत जो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, इनकी भी कार्रवाई तपन के साथ होती है यानी पहिले मन में इच्छा की हिलोर होती है और फिर धार खड़ी होकर इन्द्रियों के द्वारे पर आती है और इन्द्रियाँ हरकत करती हैं और उस हरकत से तपन यानी गरमी पैदा होती है, तब जो काम कि इन्द्रियों से लेना है, वह दुरुस्त बनता है।।

४ - हिलोर के वक़्त अंतर यानी मन में तपन पैदा होती है और फिर इन्द्रियों की रगड़ जो भोग और पदार्थों के साथ होती है, उससे बाहर तपन पैदा होती है। ख़ुलासा यह है कि कोई काम बग़ैर हरकत या रगड़ यानी तपन के नहीं बनता है।।

५ - जब कि मन के अंदर ख़्याल उठते हैं, उस वक़्त अंतर में हरकत होती है यानी चक्कर चलता है और वहाँ भी थोड़ी बहुत तपन पैदा होती है। सिवाय इसके जिस क़िस्म का ख़्याल होवे, उसी मुवाफ़िक़ तपन में कमी बेशी है।।

६ - सिवाय इसके तीन ताप यानी तीन क़िस्म के दुख हर जीव को समय समय पर व्यापते हैं और उनके सबब से अंतर में और देह में निहायत दरजे की तपन और तकलीफ़ पैदा होती है और वह तीन ताप यह हैं। पहिला मानसी दुख जो ब-सबब ख़ौफ़ या रंज या चिन्ता और फ़िक्र या सोग वग़ैरा के पैदा होता है और अंतर में निहायत दरजे की तपन और जलन फैलाता है। दूसरा रोग यानी देह का दुख ब-सबब अनेक क़िस्म की बीमारी के बदन में तपन यानी तकलीफ़ पैदा करता है। तीसरा उपाधि यानी दूसरे जीवों से लड़ाई झगड़े क़िस्से क़ज़िये के सबब से चिन्ता और क्लेश और दुख पैदा होता है।।

७ - इन तीनों ताप से कोई जीव ख़ाली नहीं रहता है यानी राजा और अमीर और ग़रीब सब को अपने अपने वक़्त पर यह दुख सताते हैं। किसी किसी ताप के दूर करने या घटाने का जतन बन आता है और कोई कोई ताप यानी रोग और सोग असाध यानी

लाइलाज है। वहाँ आदमी की अक़्ल और ताक़त कुछ काम नहीं करती, लाचार होकर उस तकलीफ़ और दुख को सहते हैं।।

८ - यह ताप और दुख मलीन माया देश यानी पिंड में जिसमें षट चक्र शामिल हैं,ज़्यादा व्यापते हैं। दूसरे दरजे यानी ब्रह्मांड में जो शुद्ध माया का देश है, इनका असर बहुत कम व्यापता है और अव्वल दरजे में यानी निर्मल चैतन्य देश जो कुल मालिक का धाम है और जहाँ संत विश्राम करते हैं, इन तापों का नाम और निशान भी नहीं यानी वहाँ किसी क़िस्म का दुख और क्लेश और तपन नहीं है। यह देश ऊँचे से ऊँचा और पिंड और ब्रह्मांड के परे है।।

९ - अब जो कोई इस अगिन भंडार यानी दुनिया और देह से बच कर महा शीतल और महा आनंद के स्थान में पहुँच कर बासा चाहे, उसको मुनासिब है कि आकाश यानी ऊँचे की तरफ़ चले और इस स्थान को छोड़े।।

१० - बाहर से जो कोई आकाश में उड़ना चाहे तो छः सात मील तक गुब्बारे में सवार होकर या पहाड़ पर चढ़ कर ऊँचे जा सकता है, लेकिन वहाँ पहुँचने पर देह छूट जावेगी और हरचन्द उस वक़्त चाहे जिस क़िस्म की तकलीफ़ होवे, उससे बचाव हो जावेगा, लेकिन जो कि सब तकलीफ़ और कष्ट व क्लेश पाप कर्मों का फल है तो देह के छूटने से वे कर्म नहीं कटेंगे और आगे को सिलसिला भी उनका बंद नहीं होगा क्योंकि जब तक सुरत माया के घेर में रहेगी, तब तक किसी न किसी क़िस्म की देह ऊँचे नीचे देश में उसको धारन

करनी पड़ेगी और फिर उसके दुख सुख और जनम मरन का कष्ट भी भोगना पड़ेगा।।

११ - इस वास्ते मुनासिब यह है कि ऐसी तरकीब के साथ आकाश में चढ़ाई करे कि जिससे पिछले कर्म कटते जावें और आइंदे को सिलसिला उनका बिल्कुल बन्द हो जावे और फिर ऊँचे से ऊँचे देश में जो कुल मालिक का धाम है और जहाँ काल और कर्म और माया और उसकी तपन बिल्कुल नहीं है, पहुँच कर विश्राम करे और अमर और परम आनन्द को प्राप्त हो जावे।।

१२ - यह तरकीब राधास्वामी संगत में जारी है और वहीं पता और भेद कुल मालिक और उसके धाम का और भी हाल रास्ते और मंज़िलों का मालूम हो सकता है। जो कोई सच्चा शौक़ कुल मालिक के दर्शनों का रखता है, उसको चाहिये कि पहिले राधास्वामी संगत में जाकर कोई दिन सतसंग करे और जो संशय या भरम उसके मन में धरे होवें, उनको बचनों की मदद से निकाले और फिर भेद समझ कर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर दे। सिवाय इसके और कोई जुगत मन और सुरत के चढ़ाने की घट में ऐसी आसान और धुर पद में पहुँचाने वाली रचना भर में नहीं है कि जिसकी कमाई स्त्री और पुरुष, ग्रहस्थ में रह कर, कर सकते हैं और जीते जी उसका फल यानी तपन देश से आहिस्ते आहिस्ते न्यारे होते हुए और सुख और आनंद और शीतल देश में अपनी सुरत को प्रवेश करते हुए देख सकते हैं।।

१३ - इस अभ्यास का मतलब यही है कि सुरत को जो चैतन्य और जान और नूर और शब्द की धार है,

आवाज़ के आसरे उलटा कर जहाँ से कि आदि में वह धार निकसी है और उसके साथ शब्द प्रकट हुआ है, पहुँचाना।।

१४ - ज़ाहिर है कि आवाज़ की बराबर कोई ताक़त वाला और अंधेरे में रोशनी करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है। इसी के वसीले से कुल कार्रवाई रचना की और उसका बन्दोबस्त और इसी तरह देह और दुनिया और हर एक घर का इन्तज़ाम चल रहा है और जो कि आवाज़ की धार ही चैतन्य और जान की धार है, फिर इससे बढ़ कर कोई धार रचना भर में नहीं है और इस वास्ते सुरत शब्द योग से बढ़ कर और कोई जतन या अभ्यास रचा नहीं गया।।

१५ - जिस किसी को ऊपर के बचन का निश्चय आ जावे और वह कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरू की सरन लेकर शौक़ के साथ अभ्यास शुरू कर देवे वही बड़ भागी है और वही एक दिन कुल मालिक और संत सतगुरु की दया से पिंड और ब्रह्मांड के पार संतों के निज देश में बासा पाकर अमर और परम आनंद को प्राप्त होवेगा।।

१६ - और जो जीव परमार्थ की तरफ़ से बे-परवाही करके संसार के भोग और बिलास में अटके और फँसे रहेंगे, वह माया के तपन और जलन और अगिन देश से कभी बाहर नहीं जावेंगे और उसी देश में बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे।।

१७ - अब जीवों को इख़्तियार है कि इस बचन को सुन कर और समझ कर चाहे अपने निज घर में जो कि कुल मालिक का धाम है और वही महा सुख और महा

चैतन्य और महा आनंद का भंडार है, पहुँचने का जतन शुरू कर दें और चाहे भूल और भरम में गिरफ़्तार रह कर माया के देश में जनम मरन और दुख सुख भोगते रहें। और मालूम होवे कि राधास्वामी मत की जुगत की कमाई करने के वास्ते घर बार और रोज़गार और व्यवहार छोड़ने की ज़रूरत नहीं है। इस वास्ते राधास्वामी मत के सतसंगी को दोनों फ़ायदे हासिल होते हैं यानी संसार का भोग बिलास, और भी परम आनंद और अमर घर में निवास, और जो कि अपनी मूर्खता से संसार की महिमा और बड़ाई चित्त में ठान कर और उसके भोग बिलास को परम सुख समझ कर उसी में फँसे और परमार्थ की तरफ़ से ग़ाफ़िल रहेंगे, वह तुच्छ सुखों के एवज़ में भारी कष्ट और क्लेश हमेशा भोगते रहेंगे और उस जंजाल से उनका कभी छुटकारा नहीं होवेगा, जब तक कि संत सतगुरु की सरन और दया लेकर शौक़ के साथ सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास नहीं करेंगे।।

प्रकार छत्तीसवाँ

दुनिया के लोग बड़े शौक़ से चाहते हैं कि बड़े आदमियों, राजा और महाराजा से मिलें और जब वह मिल जाते हैं तो बहुत ख़ुश होते हैं और उसमें अपनी बड़ाई समझते हैं लेकिन जो प्रेमी कि संतों का परमार्थ

कमावे तो उस को आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म, पार-ब्रह्म और सत्त पुरुष और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के अपने घट में दर्शन मिल सकते हैं और यह दर्शन पा कर ऐसी ख़ुशी हमेशा के वास्ते होगी कि जिसका कोई अन्दाज़ा नहीं कर सकता।।

१ - इस दुनिया में सब जीवों के दिल में चाह मिलने की अपने से बड़े आदमियों और सेठ साहूकारों और हाकिमों और अमीरों और राजों महाराजों से लगी रहती है और चाहे कुछ उनसे कारज निकले या नहीं, सिर्फ़ उनसे मुलाक़ात और थोड़ी बातचीत करने के वास्ते तदबीरें करते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं।।

२ - इसी तरह भारी तमाशा करने वालों और अनेक तरह के हुनर करने वालों और ख़ूबसरत आदमियों से मिलने का भी शौक़ रखते हैं और तलाश करके उनके पास पहुँचते हैं।।

३ - जब इस क़िस्म के लोगों से जिनका नाम ऊपर लिखा गया, मेला हो जाता हे, तब बड़ी ख़ुशी दिल में पैदा होती है और अपनी बड़ी इज़्ज़त समझते हैं, लेकिन यह सब जीव नाशमान हैं और जो कुछ कि उनसे अपना कारज भी बन आवे वह भी तुच्छ और नाशमान।।

४ - जिन लोगों की समझ और नज़र में यह दुनिया और उसका सामान ओछा और नाशमान मालूम हुआ है और वे ऐसे पद और वस्तु के खोजी हैं कि जो हमेशा

क़ायम रहे और जिससे पूरा फ़ायदा हमेशा का हासिल होवे, वे इस दुनिया के बड़े आदमी और अमीरों और राजों और हुनर वालों से मिलने में अपना भारी नुक़सान समझते हैं और ऐसों से मिलना चाहते हैं कि जो उस सत्त वस्तु का पता और भेद और प्राप्ति की जुगत बतावें।।

५ - ऐसे शख़्स संत सतगुरु और साधगुरु हैं कि जो सच्चे और कुल मालिक के भेदी और मुसाहब हैं और जो आप भी उसका रूप हो रहे हैं, ऐसों का मिलना इस संसार में निहायत मुश्किल और दुर्लभ है।।

६ - जिस किसी को इत्तिफ़ाक़ से संत सतगुरु मिल जावें, वही जीव बड़भागी है और उसी को एक दिन महा सुख का स्थान प्राप्त होगा।।

७ - संत सतगुरु का दरजा कुल रचना में सब से बड़ा है यानी दुनिया के अमीर और राजे उनके मुक़ाबले में कुछ हक़ीक़त नहीं रखते बल्कि ब्रह्मा विष्णु महेश और कुल देवता और औतार और पैग़म्बर और आत्मा और परमात्मा और ईश्वर और परमेश्वर और ब्रह्म और पार-ब्रह्म का दरजा उनसे नीचा है क्योंकि जो कोई संत सतगुरु से मिल कर उनके उपदेश की कमाई करेगा, उसको यह सब रास्ते में मिलेंगे और वह इन सब के मुक़ाम से आगे बढ़ कर कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी का दर्शन पावेगा और निज धाम में उसको बासा मिलेगा।।

८ - पहिले तो संत सतगुरु का मिलना मुश्किल है और जब मिल जावें तो उनकी पहिचान करना महा दुर्लभ है लेकिन जिसके दिल में सच्ची चाह और दर्द

कुल मालिक से मिलने का है और दुनिया और उसके पदार्थ और भोग उसकी नज़र में तुच्छ और नाशमान मालूम हुए हैं, उसको सहज में दर्शन देते हैं और अपनी दया से सतसंग और अभ्यास करा कर आहिस्ते आहिस्ते अपनी पहिचान भी बख़्शते हैं।।

९ - संत सतगुरु के सतसंग में शामिल हो कर और उनके बचन सुन कर जीवों को उनकी और कुल मालिक और उसके धाम की महिमा समझ में आवेगी और इधर दुनिया और उसके सब सामान की ओछी क़दर और क़ीमत प्रकट हो जावेगी और फिर उनकी दया से भाव और प्यार उनके और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पैदा होकर दिन २ बढ़ता जावेगा।।

१० - इसी तरह सतसंग में शामिल होकर संत सतगुरु के उपदेश की महिमा और ज़रूरत जीवों की समझ में आवेगी कि बिना उसके अभ्यास के मन और माया के जाल से छुटकारा हरगिज़ मुमकिन नहीं है।।

११ - वह उपदेश कुल मालिक और उसके धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों का और भी चढ़ कर चलने की जुगत का भेद है जो कि सिवाय संत सतगुरु के और कोई नहीं जानता और न बग़ैर उनकी मेहर और दया के कोई उसको कमा सकता है।।

१२ - चढ़ने और चलने का तरीक़ा यह है कि सुरत और मन शब्द की धुन को जो कि घट घट में हो रही है, सुन कर उमंग के साथ ऊँचे की तरफ़ को चलें। हर एक मुक़ाम या मंज़िल का शब्द जुदा जुदा है और उसका भेद संत सतगुरु न्यारा करके समझाते हैं।।

१३ - जो कि कुल रचना चैतन्य से हुई है और उसी के आसरे ठहरी हुई है और उस चैतन्य की धार का ज़हूरा और निशान शब्द यानी आवाज़ है, इस वास्ते जो कोई उस आवाज़ को पकड़ के अपने घट में प्रेम अंग लेकर चलेगा वही रास्ते की मंज़िलों को तै करता हुआ धुर मुक़ाम में जहाँ से कि आदि धार निकल कर उतरी है, पहुँचेगा। सिवाय इसके और कोई रास्ता या तरीक़ा धुर पद में पहुँच कर सत्त वस्तु यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल से मिलने का नहीं है।।

१४ - सच्चा दर्दी और खोजी, संत सतगुरु की पहिचान आसानी से कर सकता है यानी उनके बचन सुन कर उसको अपने अंतर में शान्ति आती जावेगी और सच्चे मालिक का प्यार उसके मन में बढ़ता जावेगा और दुनिया और उसके पदार्थों से उसका चित्त थोड़ा थोड़ा हटता जावेगा और घट में उनके उपदेश की कमाई से कुछ रस और आनंद मिलता जावेगा और संत सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया के परचे अंतर और बाहर मिलते जावेंगे। इन सब बातों से प्रेमी जीवों को संत सतगुरु की गत मत की ख़बर पड़ती जावेगी और जिस क़दर सतसंग और अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का बढ़ता जावेगा, उसी क़दर पहिचान भी बढ़ती जावेगी और उसके साथ प्रीत और प्रतीत भी गहरी होती जावेगी।।

१५ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की ऐसी महिमा और दया है कि वे सच्चे प्रेमियों का संजोग अपने चरनों में आप लगाते हैं यानी उनको बहुत खोज और तलाश करना नहीं पड़ता और

सहज में कोई न कोई संजोग या इत्तिफ़ाक़ से सच्चे प्रेमी का संत सतगुरु से मेला हो जाता है और उनके बचन सुन कर दिन दिन प्रीत उनके चरनों में बढ़ती जाती है और अंतर में रस और आनंद और शान्ति प्राप्त होती जाती है, यही निशान और पहिचान सच्चे दर्दी और खोजी की है।।

१६ - जब संत सतगुरु की ऐसी महिमा है कि थोड़ी सी ऊपर बयान की गई तो अब ख़याल करो कि जिस किसी को उनका दर्शन और सतसंग प्राप्त है और थोड़ी सी पहिचान भी आई है, उसको किस क़दर सच्ची ख़ुशी होनी चाहिये और किस क़दर अपनी बड़ भागता समझना चाहिये और दुनिया के लोग जो राजों महाराजों और अमीरों और हाकिमों से मिल कर तुच्छ ख़ुशी के मारे फूले नहीं समाते हैं और अहंकार में भर जाते हैं, किस क़दर ओछे उसकी नज़र में मालूम पड़ेंगे।।

१७ - दुनिया के लोग ज़रा सी ख़ुशी में जो कि असल में कुछ कारज देने वाली नहीं है, बल्कि नुक़सान कराती है, फूल कर हर एक के सामने अपनी मान बड़ाई की नज़र से उसका ज़िक्र करते फिरते हैं, लेकिन संतों के प्रेमी जन और सतसंगी अपनी सच्ची ख़ुशी को जो सिर्फ़ उन्हीं के जीव का नहीं, बल्कि औरों के जीवों का भी कल्यान करने वाली है, किस क़दर दबाये और छिपाये हुए बर्ताव करते हैं। असल में उनकी ताक़त नहीं है कि उस ख़ुशी और आनंद को हज़म कर सकें, लेकिन संत सतगुरु अपनी दया से ताक़त उनको देते हैं यानी अपनी और अपने सतसंग

की चारों तरफ़ मूरख और संसारी जीवों से निंदा करा के अपने प्रेमी सेवकों के मन को भींचा हुआ और कुम्हलाया हुआ रखते हैं और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनन्द देकर ताज़ा और हरा करते रहते हैं। इस तरह उनके मन में अहंकार नहीं आने पाता है और न वे हर एक के सामने महिमा और बड़ाई सन्त सतगुरु और उनके सतसंग की कर सकते हैं क्योंकि संसारी और विषई जीव क़ाबिल उनके दर्शन और सतसंग और महिमा सुनने के नहीं हैं।।

१८ - कुल जीवों को जो अपना सच्चा कल्यान चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़सबे या शहर में रहते होवें या जहाँ कहीं सफ़र में उनका गुज़र होवे, तहक़ीक़ात इस बात की करें कि आया वहाँ संत सतगुरु बिराजते हैं या उनकी संगत वहाँ है या नहीं। जो उनकी संगत मौजूद है और वे आप भी वहाँ बिराजते हैं तो ज़रूर जैसे बने तैसे और जिस क़दर हो सके, उनका दर्शन और सतसंग करें और जहाँ तक बन सके, थोड़ी बहुत सेवा तन मन या धन की या तीनों से उनके चरनों में करें तो चाहे उस वक़्त उपदेश न ले सकें, इतनी ही सेवा और दर्शन और बचन सुनने से उनके हिरदे में भक्ति का बीजा पड़ जावेगा और सिलसिला उद्धार का आइंदे को जारी हो जावेगा और चौरासी का चक्कर बंद हो जावेगा यानी जब तक दो तीन या चार जनम में भक्ति और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करके संतों के देश में बासा नहीं पावेंगे, तब तक नर देह धर के भक्ति और अभ्यास करते रहेंगे और सन्त सतगुरु भी दया से उनको हर जनम में मिलते रहेंगे।।

१९ - मालूम होवे कि जिस किसी को भाग से संत संत सतगुरु का दर्शन मिला, गोया वह कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल या उनके निज पुत्र से मिला। फिर उनकी दया भरी हुई नज़र की महिमा जो उस पर पड़ी, कहने में नहीं आ सकती यानी वह दृष्टि उसको एक दिन निज धाम में जो महा प्रेम और महा सुख और महा आनंद और महा चैतन्य का भंडार है और जहाँ काल और कर्म और कष्ट और क्लेश और जनम और मरन का निशान भी नहीं है, हमेशा आनन्द ही आनन्द रहता है, पहुँचा कर छोड़ेगी और जितने उसके अगले पिछले कर्म हैं, वे सब भक्ति और अभ्यास करा कर आहिस्ते आहिस्ते काट दिये जावेंगे और जब से भक्ति शुरू करेगा, संत सतगुरु अपनी मेहर और दया से बचन सुना कर और समझौती देकर उसको निःकर्म कर देंगे यानी जो ज़रूरी कर्म वास्ते सम्हाल और परवरिश अपनी देह और कुटुम्ब वग़ैरा के उससे बनेंगे, वह मौज के आसरे फल की आसा छोड़ कर कराये जावेंगे और इस तरह वह उनमें लिप्त नहीं होवेगा।।

२० - और जो इत्तिफ़ाक़ से सन्त सतगुरु का दर्शन न होवे तो उनकी संगत में जाने और उनके सच्चे प्रेमी जन से मिलने और बानी और बचन सुनने का वही फ़ायदा होवेगा जो सन्त सतगुरु के मिलने से हासिल होता क्योंकि अपने सच्चे प्रेमियों के सतसंग में सन्त सतगुरु गुप्त रूप से आप बिराजते हैं और उनके द्वारे समझौती और उपदेश देकर अपनी मेहर और दया से जीवों का कल्यान और उद्धार करते हैं और जो जीव इस संगत में शामिल होकर सच्चे मन और प्रेम से

अभ्यास में लग जावें, उनको सबेर अबेर अपना दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं और गुप्त दया तो उन पर उसी दिन से कि उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें, फ़रमाते हैं कि जिससे उनके हिरदे में प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का जागता और बढ़ता जावेगा और अंतर अभ्यास में थोड़ा बहुत रस भी मिलता जावेगा।।

प्रकार सैंतीसवाँ

जीव इस संसार में निहायत निबल और लाचार है। अपने बल से पूरे उद्धार का जतन दुरुस्त नहीं कर सकता। पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया अपार है। जो कोई उनका बचन माने, उससे वे अपनी दया से ज़रूरी करनी करा कर उसका कारज सहज में बनाते हैं। इस दया की महिमा नहीं की जा सकती है।।

१ - जीव जबसे कि संसार में पैदा हुआ, उसी वक़्त से उसको संसारियों का संग होता है और उसकी बोल चाल और समझ बूझ और शौक़ और चाह और रहनी उन्हीं के मुवाफ़िक़ होती है यानी धन स्त्री और पुत्र और जगत की मान बड़ाई और शोहरत और हुकूमत और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास उसको

प्यारे लगते हैं और उन्हीं के संग में रस आता है और सुख मिलता है और उन्हीं की चाह बारम्बार उठा कर जतन और मेहनत करता है और मन में भी उन्हीं की गुनावन और ख़्याल उठाता रहता है और जब अपने कुटुम्बी और रिश्तेदार और दोस्त और आशनाओं से मिले, तब उनके साथ भी उन्हीं की बाबत बात चीत और ज़िक्र करता है।।

२ - यही कार्रवाई बराबर जारी रहती है और कुल जीव जिनसे इस शख़्स का मेला होता है ऐसी ही कार्रवाई करते नज़र आते हैं। इस सबब से यह हालत ख़ूब पक जाती है, बल्कि स्वभाव में दाख़िल हो जाती है और बग़ैर उस कार्रवाई के मन को चैन नहीं पड़ता है और जब कभी कोई तकलीफ़ या किसी काम में निरासता होती है, तब मन इसी क़िस्म के काम या पदार्थों के लिये नई आसा बाँध कर ताक़त हासिल करता है।।

३ - हरचंद किसी ने किसी को पकड़ा और बाँधा नहीं है, लेकिन मन की हालत बँधे हुओं से ज़्यादा हो जाती है यानी इस क़दर धन और माल और कुटुम्ब परिवार और भोगों में लिप्त हो जाता है कि छुटाये नहीं छूट सकता और जो थोड़ी ज़बरदस्ती की जावे या दबाव डाला जावे तो उसमें निहायत दुखी होता है और तकलीफ़ पाता है।।

४ - असली परमार्थ यानी सच्चे मालिक का भेद और उसके मिलने की जुगत का तो कहीं ज़िक्र भी नहीं है क्योंकि यह बात बहुत कठिन बल्कि ना-मुमकिन समझी जाती है और इस वास्ते कोई इसकी तहक़ीक़ात

भी नहीं करता और जो कि ऐसा ख़याल अर्से से लोगों के दिल में भेखों ने पैदा कर दिया है कि बग़ैर छोड़ने दुनिया और उसके भोगों के इस रास्ते में कोई क़दम नहीं रख सकता है और जो कि संसारी लोग दुनिया को छोड़ना नहीं चाहते, इस वास्ते असली परमार्थ की निस्बत तहक़ीक़ात भी मौक़ूफ़ करदी।।

५ - रस्मी यानी दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई थोड़ी बहुत जारी मालूम होती है। इसमें बहुत करके इन्द्रियों से काम लिया जाता है और मन और बुद्धि के शामिल होने का ख़याल बहुत कम रहता है, जैसे पोथी का पाठ करना या नाम और मंत्र का माला के साथ जाप करना या ज़ाहिरी रसूम मिस्ल मूरत या किसी निशान या पाक मुक़ाम या दरिया की पूजा या ताज़ीम या ज़ियारत या अश्नान या परिक्रमा वग़ैरा करना या शब्द और भजन गाना और नाचना या कथा और पोथी सुनना या दान पुन्य और ख़ैरात करना या जीवों के आराम के लिये कुवाँ बावड़ी बाग़ मकान और मदर्सा और ख़ैरातख़ाना और शफ़ाख़ाना और ग़रीबख़ाना बनवाना और सदाबर्त जारी करना या परमार्थी मेले और उत्सव में शामिल होना या आम तौर पर वाज़ और उपदेश और व्याख्यान करना या व्रत और रोज़ा रखना वग़ैरा वग़ैरा।।

६ - कुल मत जो दुनिया में बिलफ़ेल जारी हैं, उनमें अक्सर इसी क़िस्म की कार्रवाई को मुक्ति का साधन तजवीज़ किया है और कोई कोई तन मन को कुछ काष्टा भी देते है, जैसे पंच अगिन तपना और जल सैन करना, खड़े रहना, मौन साधना, दूध अहार करना या घर बार छोड़ कर जंगल या पहाड़ में अकेले

रहना और स्वाँसा या मन से नाम का सुमिरन करना या नाभि या हिरदे में ध्यान लगाना वग़ैरा।।

७ - बाज़े विद्या और बुद्धिवान लोग वेद शास्त्र पुरान और क़ुरान और अंजील और दूसरी मज़हबी किताबों की टेक बाँध कर और अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ उनके अर्थ लगा कर या और किसी विद्यावान के समझाये हुए अर्थों की समझौती लेकर कार्रवाई कर रहे हैं और जो नेष्टावान यानी अभ्यासी लोग समझ देवें, उसको नहीं मानते। इस सबब से वे जो कुछ कि ज़ाहिरी करनी अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं, उसमें असली फ़ायदा मालूम नहीं होता, लेकिन टेक और पक्ष धारन करके आपस में हुज्जत और तकरार करते हैं और एक दूसरे गिरोह को बुरा भला या ओछा या ग़लत कहते हैं।।

८ - कोई कोई सूफ़ी या बाचक ज्ञानी बन बैठे हैं और अपने को ख़ुदा या ब्रह्म मान कर या उसके साथ मन और बुद्धि की समझौती से इकताई करके निःचिन्त और निडर हो रहे हैं और जो अभ्यास कि सच्चे ज्ञानी और सूफ़ियों ने जारी किया, उससे ना-वाक़िफ़ हैं या उसको कठिन और ग़ैर-ज़रूरी समझ कर छोड़ दिया है और सिर्फ़ अक़ली और इल्मी दलीलों से अपनी समझ बूझ दुरुस्त करके राज़ी और बे-परवाह हो गये हैं, लेकिन इनमें से बाज़े दर्दी अंतःकरण की सफ़ाई और मन को निश्चल करने के वास्ते जो जतन मुक़र्रर हैं, उनको किसी क़दर शौक़ और मेहनत के साथ करते हैं और उसका फ़ायदा भी थोड़ा बहुत देखते हैं।।

९ - कोई कोई विद्या पढ़ कर मालिक की मौजूदगी में शक लाकर भक्ति भाव को छोड़ बैठते हैं और सिर्फ़

जीवों के साथ दया भाव से बर्तने और संसारी उपकार करने को मुनासिब और ज़रूरी कर्म समझते हैं और जीव के अमर होने के क़ायल नहीं हैं। यह लोग नास्तिक कहलाते हैं। वे सिर्फ़ एक क़िस्म की क़ुव्वत को (जिसको चाहे चैतन्य कहो) और माया और उसके मसाले को क़दीम[1] और सब जगह व्यापक मानते हैं।।

१० - कसरत से नादान लोग छोटे छोटे देवताओं या क़बरों या मुर्दों या भूत पलीत मसान वग़ैरा को मानते और पूजते हैं । कोई उनको सच्ची बात बताने वाला या मालिक की ख़बर देने वाला नहीं मिलता और न वे अपनी टेक को छोड़ना चाहते हैं।।

११ - जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों ने परमेश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा का भेद दिया और इशारे और मुअम्मे में और कहीं कहीं थोड़ा खोल कर उसके मिलने का रास्ता भी वर्णन किया, लेकिन जो कि उसमें दुनिया से बैराग करना ज़रूरी और लाज़मी था और कुछ अभ्यास भी कठिन और ख़तरनाक था, इस सबब से बहुत कम लोगों ने उसको अपने वक़्त में माना और बाद उनके सब के सब कर्मकाण्ड यानी ज़ाहिरी और बाहरी कार्रवाई में या विद्या बुद्धि के गढ़े हुए मत और समझौती और बिलास में अटक रहे।।

१२ - बाद जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों वग़ैरा के संत सतगुरु इस संसार में प्रकट हुए और उन्होंने दया करके भेद सत्त लोक और सत्त पुरुष दयाल का और तरीक़ा पहुँचने उस धाम का जो कि

१ - आदि

आत्मा और परमात्मा और खुदा और ब्रह्म और पार-ब्रह्म के परे है, सुरत शब्द योग के अभ्यास से बताया। लेकिन बहुत थोड़े जीवों ने उनके वक़्त में इस उपदेश को क़बूल किया और जो कि कसरत से लोग अनेक मतों और पूजाओं और कर्मकाण्ड में भरम रहे थे, उन्होंने संतों के बचन को नहीं माना बल्कि उलटी निन्दा करने लगे और जीवों को उनके सन्मुख जाने से रोकते रहे। इस सबब से सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास आम तौर पर जारी नहीं हुआ और बाद गुप्त होने संतों के, उनके घराने में भी वही ज़ाहिरी रसूम और पूजा या बाचक ज्ञान जैसा कि और मतों में फैला हुआ है, जारी हो गया और शब्द मार्ग को विद्या और बुद्धिवानों ने उलटे सीधे अर्थ लगा कर बिल्कुल गुप्त कर दिया या उसको जोग अभ्यास जो कि हमेशा से कठिन और ना-मुमकिन मशहूर हो रहा है, क़रार देकर उसकी कार्रवाई बंद कर दी क्योंकि पिछले वक़्तों में उसके साथ अक्सर पवन का रोकना भी शामिल किया गया था।।

१३ - ऐसी ख़राब हालत परमार्थ के मुआमले में जगत की देख कर कि कोई जीव भी सच्चे रास्ते पर नहीं चलता और न किसी ऊँचे मुक़ाम तक पहुँचता है और इधर जीवों को निहायत दुखी और बलहीन मुलाहिज़ा करके कि कसरत से रोग और सोग और निरधनता और अनेक तरह के दुक्खों में गिरफ़्तार हो रहे हैं, कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत सतगुरु रूप धारन करके जगत में प्रकट हुए और अपने निज नाम और निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल और आसान तरीक़ा चलने और

चढ़ कर पहुँचने सुरत का निज धाम में, तफ़सील के साथ खोल कर वर्णन किया कि जिसको ग्रहस्थ और विरक्त और औरत और मर्द बग़ैर छोड़ने रोज़गार और घर बार के सहज में कर सक्ते हैं और थोड़े ही अर्से के अभ्यास से अपना सच्चा और पूरा उद्धार होता हुआ इसी ज़िंदगी में देख सकते हैं।।

१४ - पेश्तर के ज़माने में लोग सुरत और शब्द की धार से जो ऐन चैतन्य और जान की धार है, बे-ख़बर रहे और इस सबब से उन्होंने प्राण की धार को मुख्य समझ कर उसी धार की सवारी का अभ्यास यानी प्राणों को रोकना और चढ़ाना जारी किया, लेकिन जो कि उसके संजम बहुत कठिन हैं और ख़तरों का बहुत ख़ौफ़ है, इस वजह से यह अभ्यास आम तौर से जारी नहीं हुआ यानी ग्रहस्थी तो उसको मुतलक़ नहीं कर सके और विरक्तों से भी कठिनता के सबब से नहीं बना।।

१५ - लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने शब्द की महिमा और उसका भेद प्रकट करके फ़रमाया कि प्राण की धार भी शब्द यानी चैतन्य की धार के आधीन है क्योंकि जिस वक़्त आदमी सो जाता है, सुरत जो कि ऐन शब्द स्वरूप है और जाग्रत अवस्था में आँखों में जिसका बासा है, खिंच जाती है और हरचंद प्राण की धार उस वक़्त ब-दस्तूर जारी रहती है, लेकिन देह और इन्द्रियों की कार्रवाई बन्द हो जाती है और जब सुरत की धार का ज़्यादा खिंचाव होता है, तब प्राण की धार भी सिमट जाती है।।

१६ - और यह भी फ़रमाया कि जो सुरत यानी शब्द की धार पर सवार होकर ऊँचे देश यानी घर की तरफ़ चलना शुरू करेगा, वही माया के घेर के पार धुर धाम में जहाँ माया बिलकुल नहीं है, पहुँचेगा और उसका सच्चा और पूरा उद्धार होगा और जो कोई प्राण और रोशनी और और किसी धार पर सवार होकर चलेगा, वह उस मुक़ाम तक जहाँ से कि वह धारें बरामद हुई हैं, पहुँच सकता है, लेकिन माया की हद्द में रहेगा और इस वास्ते उसका जनम मरन चाहे बहुत देर से होवे, छूट नहीं सकता।।

१७ - सिवाय प्रकट करने सुरत शब्द मार्ग के जिसको सहज योग कहते हैं, कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके प्रेम और भक्ति पर ज़्यादा ज़ोर दिया और फ़रमाया कि जो कि कुल मालिक प्रेम का भंडार है और शब्द की धार जो उससे निकसी, वही प्रेम की धार है और जहाँ वह धार पिंड में ठहर कर सुरत कहलाई, वह भी प्रेम स्वरूप है यानी कुल जीव प्रेम स्वरूप हैं, इस वास्ते जो कोई कुल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में भक्ति और इश्क़ करेगा और प्रेम अंग लेकर अंतर में शब्द को सुनेगा, उसी का रास्ता आसानी से तै होगा और वही राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से एक दिन धुर धाम में पहुँचेगा और बग़ैर प्रेम और दया के इस रास्ते का तै होना मुश्किल है।।

१८ - और फिर अति दया करके फ़रमाया कि जो मालिक के अरूप और शब्द स्वरूप में बग़ैर संसार और उसके भोगों से किसी क़दर बैराग धारन करने के

प्रेम जल्दी नहीं आ सकता, इस वास्ते पहिले सतगुरु स्वरूप में प्रीत करनी चाहिये और जो कि यह स्वरूप उसी क़िस्म का है जैसा कि सेवक का यानी देह स्वरूप, इस सबब से इसमें प्रीत आसानी से लग सकती है क्योंकि सब जीव इसी क़िस्म के रूपों में जैसे स्त्री पुत्र माता पिता भाई बंद और रिश्तेदार और बिरादरी के लोगों से और भी उस्ताद और हाकिम व हकीम और राजा से और जिन २ से काम पड़ता है, दरजे ब-दरजे प्रीत कर रहे हैं, बल्कि जानवरों से भी जैसे तोता मैना कुत्ता बिल्ली घोड़ा हाथी वग़ैरा से भी प्यार करते हैं और वे भी उलट कर प्यार और दीनता करते हैं, फिर सतगुरु के स्वरूप में जो जीव का सच्चा उद्धार और कल्यान करता है, थोड़ी बहुत प्रीत लाना कुछ मुश्किल नहीं है।।

१९ - वास्ते बढ़ाने प्रीत के भक्ति में चार क़िस्म की सेवा मुक़र्रर की गई है। एक तन की, दूसरी धन की, तीसरी मन की, और चौथी सुरत की। पहिली और दूसरी क़िस्म की सेवा से प्रीत जागती है और बढ़ती है और तीसरी और चौथी क़िस्म की सेवा से सुरत और मन अंतर में सिमट कर चलते हैं और चढ़ते हैं और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत को बढ़ाते हैं और मज़बूत करते हैं और अभ्यास में तरक़्क़ी होती है।।

२० - जब सतसंग और सेवा करके और बचन सुन कर और समझ कर जीव के दिल में थोड़ा बहुत भाव और प्यार कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में आ जावे और वह सतगुरु और

उनके प्रेमी भक्तों से किसी क़दर नाता परमार्थी मुहब्बत का जोड़ लेवे तो फिर उसके उद्धार का सिलसिला सहज में जारी हो जावे और अंतर में भी अभ्यास के वक़्त थोड़ा बहुत रस मिलने लगे।।

२१ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है कि जो कोई उनके चरनों में गहिरी प्रीत यानी स्त्री पुत्र धन और अपनी देह और जगत की मान बड़ाई से ज़्यादा लावे तो उसी का नाम गुरुमुख है और उसके लिये महल में जाने के वास्ते कोई रोक टोक और अटक नहीं रहती यानी इसी जनम में उसका उद्धार हो जाता है और वह इसी ज़िन्दगी में अपनी ऐसी हालत को परख सकता है और जो कोई इस दरजे से कम की प्रीत करे जैसे क़रीब या दूर के रिश्तेदारों से या बिरादरी के लोगों से या जिनसे अक्सर या कभी २ काम पड़ता है तो उसके उद्धार का भी सिलसिला जिस दरजे की प्रीत होगी, उसके मुवाफ़िक़ जारी हो जावेगा और एक दो या तीन हद्द चार जनम में, जैसा प्रेम बढ़ता जावेगा, काम पूरा बन जावेगा।।

२२ - यहाँ इस बात का बयान करना मुनासिब और ज़रूर मालूम होता है कि थोड़ी से थोड़ी प्रीत वाले का उद्धार संत सतगुरु किस तरह करते हैं यानी जिसके दिल में कि मुख्यता संसार और उसके पदार्थों और कुटुम्ब परिवार की रही और संत सतगुरु और उनके सतसंग से बहुत हल्का नाता जोड़ा तो उसको वक़्त मौत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पहिले संसारी प्रीतों और कर्मों का चक्कर चला कर जब नम्बर संतों की प्रीत और सेवा का आवेगा, उसी वक़्त संत सतगुरु अपना दर्शन देकर और शब्द सुना कर मरने वाले की सुरत

को अपने चरनों में लिपटा कर ऊँचे सुख स्थान में ले जाकर बासा देवेंगे और वहाँ कुछ अर्से तक रख कर और अपने दर्शन और बचनों से उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ा कर फिर नर देह में जनम देंगे और सतसंग में मिला कर और भक्ति और अभ्यास करा कर ज़्यादा ऊँचा दरजा बख़्शेंगे, इसी तरह दो तीन या चार जनम में धुर धाम में पहुँचा कर बासा देवेंगे कि जहाँ किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का चक्कर नहीं है और आनंद ही आनंद रहता है।।

२३ - मालूम होवे कि अंत समय पर सब जीव ब-सबब उनकी प्रीत और बंधन के संसार और कुटुम्ब परिवार और अपनी देह में, काल के हाथ से झटके सहते हैं और उनके कर्मों का चक्कर भी उस वक़्त बड़े ज़ोर से फिरता है और जैसे कर्म हैं, उसके मुवाफ़िक़ सुरत के खिंचाव के वक़्त दुख सुख का भोग देते हैं। जो उस जीव ने संतों के दर्शन किये हैं और कुछ सेवा और अभ्यास भी किया है तो इस कर्म के पेश होने के वक़्त संत सतगुरु दर्शन देकर उस जीव को काल की खींचा तानी से बचा कर सीतलता और आनन्द बख़्शते हैं और वह जीव ऐसी हालत में बहुत शौक़ और ज़ोर के साथ उनके चरनों में लिपटता है जैसे कि डूबता हुआ आदमी बचाने वाले से चिमटता है, उस वक़्त संत उसकी सुरत को ऊँचे मुक़ाम में ले जाते हैं और नीचे की तरफ़ झोका खाने से बचा लेते हैं।।

२४ - अब ग़ौर करना चाहिये कि संत सतगुरु से जो समर्थ और दयाल हैं, जैसी तैसी प्रीत लगाने और नाता जोड़ने में किस क़दर भारी फ़ायदा है कि चौरासी

का चक्कर बन्द होकर जीव के निज घर यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का रास्ता जारी हो जाता है और आइंदा उनकी दया और मेहर से प्रीत और प्रतीत की दात पाकर दिन दिन प्रेम चरनों में बढ़ता और रास्ता आसानी से तै होता जाता है।।

२५ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके फ़रमाया है कि जो कोई उनके प्यारे प्रेमी भक्तों के साथ जैसी तैसी प्रीत करेगा और थोड़ा बहुत नाता जोड़ेगा तो उसको भी वही फ़ायदा हासिल होगा जैसा कि उनके या संत सतगुरु के चरनों में प्रीत करने से हासिल होता है। इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे वह संसार में जा-ब-जा और हर एक से अपने मतलब के वास्ते प्रीत लगाते हैं, ऐसे ही वास्ते अपने जीव के सच्चे उद्धार और कल्यान के कुल मालिक राधास्वामी दयाल या संत सतगुरु के चरनों में जो वे भाग से मिल जावें और नहीं तो उनके सच्चे प्रेमी भक्त से जो उनसे मिला हुआ है, जैसी तैसी प्रीत करें और नाता जोड़ें तो तकलीफ़ के वक़्तों में और ख़ास कर मौत के वक़्त, उनकी ज़रूर थोड़ी बहुत सहायता की जावेगी और चौरासी के चक्कर से बचा कर और भक्ति और अभ्यास करा कर एक दिन निज घर में जो परम आनंद का भंडार है, बासा दिया जावेगा।।

२६ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमा कहाँ तक वर्णन की जावे कि उनके दर्शन और स्पर्श और चरनों के प्रताप से बे-शुमार जीवों का कारज बनता है यानी जिन जीवों ने उनका

दर्शन किया और कुछ सेवा बन आई, चाहे वह मनुष्य होवें या जानवर, उनके उद्धार का भी सिलसिला जारी हो जाता है यानी पहिले जानवरों को नर देही मिलती है और फिर परमार्थ की करनी में शामिल होते हैं और मेहर और दया से रफ़्ते रफ़्ते एक दिन उनका काम भी पूरा बन जाता है।।

२७ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का जब संत सतगुरु रूप धारन करके प्रकट होते हैं, विस्तार कहाँ तक कहा जावे कि जो कोई चीज़ खाने पीने और पहिनने ओढ़ने वग़ैरा की उनकी सेवा में आई तो उस चीज़ के लाने वाले से लेकर जितने आदमी और जानवरों का हाथ उसकी तैयारी में लगा है या जिस किसी ने जैसी तैसी उसमें मदद दी है, उन सब पर थोड़ी बहुत दया पहुँचा कर उसी जनम में, चाहे दूसरे जनम में, ज़रूर थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की करा कर उनको ऊँचे और सुख स्थान में बासा देगी, जैसे किसी ने कोई कपड़ा तैयार करके पहिनाया तो उस शख़्स से लगा कर ज़मींदार तक जिसकी ज़मीन में रुई बोई गई और जिस जिस ने उसके जोतने और बोने और बिनने और साफ़ करने और धुनने और कातने और बुनने और रंग करने और बेचने और सीने वग़ैरा में काम दिया है, वह सब कार्रवाई सतगुरु की सेवा में शुमार होकर उसके एवज़ में उनको थोड़ा बहुत भक्ति का दान मिलेगा और इस तरह सिलसिला उनके उद्धार का जारी हो जावेगा। अब ख़्याल करो कि इस दया और फ़ैज़ का कुछ शुमार नहीं हो सकता।।

* * * * *

प्रकार अड़तीसवाँ

सब लोग चाहते हैं कि आज्ञाकारी और नामवर औलाद होवे और ऐसा उपकारी काम बन आवे कि जिससे उनकी यादगारी दुनिया में रहे। मगर यह बड़ी दुर्लभ बात है। पर जिस किसी ने सच्चा परमार्थ कमाया तो बग़ैर उसकी ख़्वाहिश के बे-शुमार सेवक उसके चरन में आवेंगे कि जो दिलोजान से आज्ञा में बरतेंगे और उसके नाम और उपदेश की शोहरत जगह जगह करेंगे और यह सिलसिला उसकी यादगार का देश देश में हज़ारो बरस तक जारी रहेगा।।

१ - इस दुनिया में सब लोगों के मन में ऐसी चाह भरी रहती है कि उनके आज्ञाकारी और नामवर औलाद पैदा होवे और उसका सिलसिला बराबर जारी रहे और तरह तरह के काम करना चाहते हैं कि जो बतौर उनकी यादगार के दुनिया में क़ायम रहें।।

२ - इस ख़्वाहिश के पूरा करने के वास्ते अनेक तरह के जतन और मेहनत लोग करते हैं और फिर भी उनका मतलब पूरा पूरा हासिल नहीं होता और बहुत कम ऐसे लोग हैं कि जिनकी औलाद का सिलसिला या कोई ख़ास यादगार बहुत अर्से तक जारी और क़ायम रहे।।

३ - लेकिन जो कोई सच्चे मन से मालिक के चरनों में भक्ति करे और दुनिया के भोगों और नामवरी की चाह छोड़ कर अपना तन मन धन जिस क़दर मुमकिन होवे मालिक की सेवा में लगावे तो उसको सिवाय बख़्शिश करने परम पद के मालिक मेहरबान होकर दुनिया में भी भारी नामवरी और बड़ाई देता है कि जो दिन २ बढ़ती रहती है।।

४ - परमार्थ की कार्रवाई में पहिले प्रसन्नता सतगुरु और मालिक की हासिल होनी चाहिये तब कुछ दात और बख़्शिश मिलेगी और यह प्रसन्नता सतसंग और सेवा और अंतरमुख अभ्यास से आहिस्ते आहिस्ते हासिल होगी।।

५ - जो कोई अपने जीव का सच्चा कल्यान और उद्धार चाहता है और कुल मालिक का दर्शन उसके निज धाम में पहुँच कर करने की जिसके मन में ज़बर आसा है, उसको चाहिये कि पहिले संत सतगुरु का खोज करे और जो वे न मिलें तो उनके सच्चे प्रेमी सेवक से जिसने उनका सतसंग किया है और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ अभ्यास कर रहा है और अंतर में कुछ रास्ता तै कर चुका है और उनकी दया से धुर धाम में पहुँचनहार है, मिल कर और रास्ते का भेद और तरीक़ा चलने का सुरत शब्द मार्ग से दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ करता जावे तो उसको अंतर में कुछ रस और आनंद भी मिलेगा और दया भी थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी।।

६ - जिस क़दर विरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास करता जावेगा, उसी क़दर राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमा और उनकी अगम गति की ख़बर पड़ती जावेगी और मन में सच्चा और तेज़ शौक़ उनके दर्शनों का पैदा होवेगा और फिर संत सतगुरु भी दया करके उसको दर्शन देंगे और उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ावेंगे और अभ्यास में तरक़्क़ी देवेंगे।।

७ - मालूम होवे कि सच्चे मालिक की भक्ति किसी के हिरदे में बग़ैर सतसंग संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन के पैदा नहीं हो सकती और सुरत शब्द मार्ग का भेद भी (जिसके बग़ैर कोई घट में रास्ता तै करके निज धाम में नहीं पहुँच सकता है) सिवाय संत सतगुरु या उनके प्रेमी के और कोई नहीं दे सकता है और बिना भक्ति कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के किसी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं हो सकता, इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जो अपने जीव का कारज बनाया चाहें तो राधास्वामी संगत में शामिल होकर जैसी तैसी भक्ति और जिस क़दर बन सके, अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का करें।।

८ - जो कोई कुल मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की भक्ति में बढ़ कर क़दम रक्खेगा यानी मन इन्द्रियों के भोगों और संसार की मान बड़ाई की चाह छोड़ कर चरनों का रस और आनंद हासिल करने के वास्ते मेहनत करेगा, वही सन्त सतगुरु और राधास्वामी दयाल का प्यारा होवेगा और वही ख़ास दया और मेहर का अधिकारी समझा जावेगा।।

९ - ऐसे भक्त को गुरुमुख कहते हैं और वही महल में दख़ल पावेगा और संसार में भी बिना उसकी चाह और माँग के कुल मालिक राधास्वामी दयाल सन्त सतगुरु उसको ज़्यादा से ज़्यादा शोहरत और बड़ाई बख़्शेंगे और बहुत से जीवों का उपकार और उद्धार उसके द्वारे करावेंगे।।

१० - अब ख़याल करना चाहिये कि दुनिया में जो कोई ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत करे और अपना धन भी ख़र्च करे तो भी उसको वह शान्ति और आनंद और बड़ाई नहीं हासिल हो सकती है जो परमार्थ में सच्चे मालिक की भक्ति करने से बग़ैर चाह और कोशिश के सहज में प्राप्त हो सकती है। फिर जो कोई दुनिया की मान बड़ाई और यादगार की चाह लेकर जतन करते हैं, किस क़दर भूल और भरम में पड़े हुए हैं। जो वे दुनिया के हाल को ग़ौर से मुलाहिज़ा करके और ज़रा अपने मन में सोच और विचार लाकर परमार्थ में थोड़ा बहुत जतन करना शुरू करें तो उनको चंद रोज़ के सतसंग और अभ्यास करने से मालूम हो जावेगा कि इस कार्रवाई से उनके जीव का सहज कल्यान और उद्धार होना मुमकिन है और दुनिया की बड़ाई और यादगार भी उनको बग़ैर उसके वास्ते कोई ख़ास जतन करने के मौज से ज़्यादा से ज़्यादा हासिल होवेगी।।

११ - बहुत से लोग वास्ते क़ायम रखने अपने नाम और यादगार के किताब या मकान या मन्दिर और मस्जिद और गिरजा और कुएँ बावड़ी और तालाब और बाग़ और मुसाफ़िरख़ाना और अजायबख़ाना और दवाईख़ाना और मदर्सा और पाठशाला और पुल और

नहरें और धरमशाला बनाते हैं और ख़ैरातख़ाना और सदाबर्त जारी करते हैं। यह सब काम पर-उपकार के हैं यानी इन से जीवों को सालहा साल फ़ायदा और फ़ैज और आराम पहुँचता है। लेकिन जो फ़ायदा कि परमार्थी उपकार से हासिल होता है, वह बहुत भारी है यानी उससे जीवों की चौरासी और जनमान जनम के दुक्खों से हमेशा का बचाव हो जाता है और महा सुख और परम आनंद के स्थान में विश्राम पा कर हमेशा की ख़ुशी हासिल होती है।।

१२ - परमार्थी उपकार का फ़ायदा और फ़ैज़ बे-शुमार जीवों को बहुत से देशों में पहुँच सकता है और उपकार करने वाले के बचन और बानी और उपदेश और हिदायतें भारी यादगार हैं कि वह हज़ारों बरसों तक देशान्तर में जारी रहती हैं और उपकार कर्ता के नाम को हमेशा बड़े भाव और प्यार और अदब के साथ ज़िन्दा रखती हैं।।

१३ - परमार्थी उपकार के संग संसारी उपकार भी जिसका ज़िक्र दफ़ा ११ में हुआ बराबर जारी रहता है यानी परमार्थी लोग अपने मत के आदि गुरु और आचार्य के नाम से सैकड़ों बल्कि हज़ारों मकान जीवों के आराम और फ़ायदे के वास्ते बनाते हैं। इस तरह दोनों क़िस्म का उपकार परमार्थी शख़्स की ज़ात से उसकी ज़िंदगी में और भी बाद उसके गुप्त होने के हज़ारों बरस देशों देशों में जारी रहता है। इस वास्ते जिससे परमार्थ की पूरी करनी यानी सच्चे मालिक और संत सतगुरु की पूरी भक्ति बन आवे वही मालिक का प्यारा और महा बड़भागी है और इस काम का इरादा

सब को वास्ते अपने जीव के फ़ायदे और भी और जीवों के कल्यान के लिये, मज़बूत करना चाहिये और ख़ास कर उन लोगों को जिन की नज़र पर-उपकार पर है और उसके वास्ते तन, मन और धन ख़र्च करने को तैयार हैं, ज़रूर परमार्थ में बढ़ कर क़दम रखना मुनासिब है तो उसमें दोनों मतलब हासिल होंगे यानी अपना और बहुत से जीवों का परमार्थी और संसारी सच्चा उपकार बन पड़ेगा।।

१४ - और मालूम होवे कि सिवाय परमार्थी बड़ाई और शोहरत और उपकार और यादगार के मालिक के सच्चे भक्त को बहुत भारी मर्तबा और अधिकार महल में दख़ल पाने का हासिल होता है और हज़ारों और लाखों जीव उसकी सेवकाई में दाख़िल होकर अपने जीव का कारज बनवावेंगे और दिलोजान से उसका हुकम मानेंगे और बहुत शौक़ के साथ जगह जगह उसका नाम और मत प्रकट करेंगे और यह सिलसिला देशों में बराबर हज़ारों बरस जारी रहेगा और दिन दिन बढ़ता और फैलता जावेगा।।

१५ - अब ख़्याल करो कि दुनिया की औलाद परमार्थी सिलसिले के मुक़ाबले में किस क़दर कार्रवाई कर सक्ती है और कितनी जगह में वह कार्रवाई जारी और क़ायम रह सक्ती है और इसी तरह संसारी पर-उपकार के काम थोड़ी जगह में और थोड़े जीवों को कुछ अर्से तक फ़ायदा पहुँचा सक्ते हैं, मगर परमार्थी सेवकों और परमार्थी कामों की बराबरी हज़ारवें हिस्से में भी नहीं कर सक्ते।।

* * * * *

प्रकार उन्तालीसवाँ

हर एक आदमी चाहता है कि किसी को अपना ऐसा संगी और मददगार बनावे कि वह उसको हर वक़्त मदद दे और रक्षा करे पर कोई भी सच्चा और पूरा मददगार और हर मौक़े पर सहायता करने वाला नहीं मिल सक्ता लेकिन जिस किसी ने सच्चे गुरू और नाम यानी शब्द की सरन ली और उनको अपने घट में बसाया और प्रकट किया तो वह उसके दम दम के सहाई और मददगार हैं और किसी वक़्त और किसी हालत में उससे जुदा नहीं होते।।

१ - हर एक शख़्स दुनिया में किसी न किसी क़िस्म का सहारा या आसरा या मददगार अपने पास रखना चाहता है कि ज़रूरत के वक़्त काम आवे और इस ग़रज़ से कोई धन या मिलकियत या ज़मींदारी या और किसी क़िस्म की आमदनी का आसरा रखता है और स्त्री और पुत्र या ख़ास रिश्तेदार या कोई मोतमिद और पुराने नौकर को अपने संग रखता है और उनको अपना निज भेद देता है ताकि वक़्त ज़रूरत के मदद देवें और रक्षा करें।।

२ - इसमे कुछ शक नहीं कि दुनिया के बहुत से कामों में धन और औलाद और दोस्त और रिश्तेदार वग़ैरा से मदद मिलती है, मगर बहुत से मौक़े ऐसे हैं

जैसे रोग सोग और कोई ना-गहानी आफ़त और सदमा वग़ैरा और ख़ास कर मौत के वक़्त कोई कुछ मदद नहीं दे सकता है और मुफ़लिसी के वक़्त बहुत से रिश्तेदार और दोस्त और कुटुम्ब परिवार की नज़र बदल जाती है और बजाय मदद देने के अक्सर संग भी छोड़ देते हैं।।

३ - ज़ाहिर है कि किसी सच्चे संगी और मददगार की ज़रूरत दुनिया में, और भी परमार्थ में, बहुत है। बग़ैर उसके, कार्रवाई दुरस्त नहीं बन पड़ती है।।

४ - जबकि इस दुनिया का कारख़ाना सब नाशमान है तो यहाँ का संगी भी कोई सच्चा और पूरा नहीं हो सकता, लेकिन परमार्थ में सतगुरु और कुल मालिक जो शब्द स्वरूप हैं इस जीव के सदा संग रहते हैं और जो यह सच्चे मन से उनकी सरन लेवे और भक्ति इख़्तियार करे तो वे इसकी जब जब और जैसा जैसा मुनासिब यानी इसके हक़ में बेहतर होवे, इसकी सहायता और रक्षा करते हैं और एक छिन भी कभी इससे जुदा नहीं होते।।

५ - दुनिया में जो परमार्थ की कार्रवाई जारी है, वह संसार के साथ ताल्लुक़ और सम्बन्ध रखती है। उसमें सच्चे मालिक का पता और भेद और उससे मिलने की जुगत का ज़िक्र नहीं है। अलबत्ते नीचे के दरजे के मालिकों का जैसे ब्रह्म और ईश्वर और परमात्मा और औतार स्वरूपों का इष्ट बँधवाया जाता है और पिछले महात्मा या बड़े देवता या पीर पैग़म्बर या औलिया का आसरा और सहारा लेकर कार्रवाई की जाती है। पर इनमें से किसी के निज स्वरूप और निज

धाम का भेद नहीं दिया जाता और न तरीक़ा उनसे मिलने का अपने घट में चलने और चढ़ने का समझाया जाता है। इस सबब से क़रीब क़रीब कुल मत वाले या तो नक़ल में अटके रहते हैं या ग़ायब मालिक का बे-ठिकाने और बे-क़ायदे ध्यान या अनुमान या ख़याल करते हैं और ऐसी कार्रवाई से उनको न तो कभी अपने इष्ट का दीदार या कुछ जलवा नज़र आता है और न उनके मन में सच्चा और गहिरा प्रेम उससे मिलने का पैदा होकर बढ़ता है। फिर ख़याल करो कि यह कार्रवाई उनकी वक़्त सख़्ती और सदमा और तकलीफ़ और मौत के किस क़दर काम दे सकती है। असल तो यह है कि ऐसे इष्ट बाँधने से सिवाय बिरले सच्चे प्रेमी के और किसी को वक़्त ज़रूरत के कुछ भी सहारा नहीं मिल सकता है और ब-सबब न होने सच्चे और पूरे प्रेम और भेद निज स्वरूप और निज धाम उस इष्ट के, कुछ भी मदद उससे नहीं मिल सकती है, क्योंकि ऐसे परमार्थी लोग जब अपने इष्ट का ख़याल करते हैं, तब उनकी नज़र उसकी नक़ल या निशान पर जाती है और वह नक़ल और निशान जड़ हैं और इस वास्ते कुछ मदद नहीं दे सकते।।

६ - इस वास्ते जो कोई सच्ची मदद और सहारा और रक्षा चाहता है, उसको मुनासिब है कि सच्चे मालिक की भक्ति करे और इस भक्ति की रीति और क़ायदा सिर्फ़ सच्चे और पूरे गुरू से जिनको सन्त सतगुरु कहते हैं, मालूम हो सकता है।।

७ - इस भक्ति में सिर्फ़ ज़बानी महिमा और स्तुति गाना और बाहरी पूजा वग़ैरा करना नहीं है, बल्कि

अभ्यास चलने और चढ़ कर मिलने का अपने भगवंत यानी कुल मालिक से उसके ऊँचे धाम में, जारी है और उसको सुरत शब्द योग कहते हैं यानी सुरत, रूह, को आवाज़ में जो हर एक के घट में मालिक के दरबार से बराबर आती है, लगा कर चढ़ाना।।

८ - सच्चे खोजी को चाहिये कि पहिले संत सतगुरु या उनके सतसंग की तलाश करे और वहाँ जाकर कोई दिन बानी और बचन सुने और संत मत के क़ायदे और भेद कुल मालिक और उसके धाम और रास्ते का और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करे और संत सतगुरु की दया लेकर उनकी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करे, तब आहिस्ते आहिस्ते अंतर में कुछ रस और आनंद और दया के परचे पाकर प्रीत और प्रतीत बढ़ेगी और मन सच्चा सहारा और आसरा उनकी दया का लेगा।।

९ - इस तरह सतसंग और अभ्यास जारी रखने से बहुत कुछ फ़ायदा अंतर में मालूम होगा और जिस क़दर प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, उसी क़दर अभ्यासी को ख़बर पड़ती जावेगी कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु उसके अंग संग मौजूद हैं और उसकी हर तरह से निगरानी और रक्षा कर रहे हैं।।

१० - फिर उस अभ्यासी को पूरा भरोसा दया का रफ़्ते २ हो जावेगा और वक़्त तकलीफ़ और खौफ़ और चिन्ता वग़ैरा और ख़ास कर मृत्यु के समय थोड़ी बहुत सहायता होती हुई और मदद मिलती हुई नज़र पड़ेगी।।

११ - अब ख़्याल करो कि सन्त सतगुरु और कुल मालिक से बढ़ कर रचना भर में कोई नहीं है और जब उनके चरनों में जीव की गहिरी प्रीत और प्रतीत आ गई और वहाँ से समय समय पर दया और सम्हाल होती हुई नज़र आने लगी तो फिर जीव को किस क़दर ख़ुशी और शान्ति ऐसे सच्चे और पूरे सहाई और रक्षक के हर दम संग होने की हासिल होगी और चाहे वह अकेला रहे या दुनिया के संगियों का संग करे, उसके मन में हमेशा ताक़त और भरोसा अपने सच्चे सहाई कुल मालिक का रहेगा और सब तरह से वह अपने अंतर में निःचिन्त और निरभय हो जावेगा।।

१२ - इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब है कि जहाँ दुनिया के सहारे और आसरे और संगियों का अपने आराम और मदद के वास्ते बन्दोबस्त करते हैं, उसके साथ ही सच्चे मालिक का जो घट घट में मौजूद है, भेद लेकर उससे मिलने का भी जतन अंतर में करते रहें और उसकी और संत सतगुरु की सरन सच्ची और पक्की लेकर उनकी दया और सहायता को प्रत्यक्ष अपने संग यानी अंतर और बाहर देखते जावें तो बहुत तकलीफ़ों और दुखों से किसी क़दर बचाव हो जावेगा और ज़रूरत के वक़्त ख़ास दया और मदद मिलती रहेगी और अख़ीर वक़्त पर बजाय कष्ट और क्लेश के निहायत दरजे का सुख और आनन्द प्राप्त होगा और चौरासी के चक्कर से निस्तारा हो जावेगा और रफ़्ते रफ़्ते एक दिन कुल मालिक के धाम में बासा मिल जावेगा।।

प्रकार चालीसवाँ

लोग अनेक तरह के अभ्यास करते हैं। शुरू में कोई दिन रस आता है, फिर आहिस्ते आहिस्ते वह अभ्यास साधारन और फीके हो जाते हैं और उनका फल भी जैसा चाहिये, हासिल नहीं होता। लेकिन राधास्वामी मत के अभ्यासी को ब-सबब चलने चाल और तै करने रास्ते के हमेशा नवीन रस और आनंद मिलता है और इस तरह इसका शौक़ और प्यार दिन दिन बढ़ता जाता है, यहाँ तक कि एक दिन कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो कि महा सुख और महा आनंद का अमर और अजर भंडार है, पहुँच कर हमेशा को मगन और निःचिन्त हो जावेगा।।

१ - वास्ते प्राप्ति मुक्ति या परमार्थी लाभ के अनेक तरह के साधन लोग करते हैं और उनमें किसी किसी को थोड़ा फ़ायदा भी शुरू में मालूम होता है, लेकिन कुछ अर्से तक वही काम करते करते साधारण अंग हो जाता है यानी शौक़ और रस हलका होता चला जाता है, यहाँ तक कि फिर उस कार्रवाई में मन बहुत कम संग देता है और स्वाभाविक यानी ऊपरी तौर से वह कार्रवाई जारी रहती है।।

२ - सबब इसका यह है कि जो रस या फ़ायदा शुरू में उस जतन या कार्रवाई के (जो कि परमार्थ के निमित्त करते हैं) उनको मिलता है, वह भी साधारण हो जाता है और जो कि उसमें चलना और चढ़ना नहीं है, इस सबब से तरक़्क़ी नहीं होती है।।

३ - बल्कि बहुत से जतन और कार्रवाईयाँ तो बाहरमुख हैं और उनमें जिस क़दर रस और आनंद मिलता है, वह भी बाहरमुख है और यह कार्रवाई अक्सर करके बग़ैर ख़र्च करने धन के मन की चाह के मुवाफ़िक़ दुरुस्त नहीं बन पड़ती। इस सबब से उसका आनन्द भी थोड़ा बहुत गदला रहता है।।

४ - और बहुत से साधन असल में रूखे फीके बल्कि कष्ट देने वाले हैं, लेकिन उनमें जगत की वाह वाह और बड़ाई का रस मिलता है और कुछ धन की भी प्राप्ति होती है। इस सबब से लोग उनको ख़ुशी से मान बड़ाई के लिये करते हैं और इतने ही लाभ पर मगन हो जाते हैं यानी परमार्थी फ़ायदे पर उनकी नज़र बिल्कुल नहीं रहती।।

५ - बाज़े प्रेमी और भोले जीव प्रतीत सहित कोई काम सख़्ती और तकलीफ़ के करते हैं और मुक्ति या आइंदे के जनम में सुख भोगने की आसा पर उस तकलीफ़ या सख़्ती को झेलते हैं तो उनको देह छोड़ने के बाद उसका फ़ायदा यानी सुख मिलता है, लेकिन सच्ची मुक्ति प्राप्त नहीं होती यानी कुछ अर्से आराम पाने और सुख भोगने के बाद फिर जनम मरन का चक्कर ब-दस्तूर जारी हो जाता है।।

६ - कुल मतों में जो कार्रवाई या साधन वास्ते प्राप्ति सुख या मुक्ति के जारी हैं, वह सब थोड़े बहुत इसी क़िस्म से हैं जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया और उनमें पूरा कारज जीव का नहीं बनता, बल्कि परमार्थी फ़ायदा भी बहुत कम हासिल होता है।।

७ - ऐसी ख़राब और ओछी हालत जीवों की परमार्थी कार्रवाई में देख कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके ऐसी सहज जुगत वास्ते प्राप्ति सच्ची मुक्ति और परमार्थी आनंद के जारी फ़रमाई है कि जो लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द थोड़े शौक़ के साथ आसानी से कर सकते हैं और अपने अंतर में उसका रस भी थोड़ा बहुत ले सकते हैं और जो उसको बराबर नेम के साथ होशियारी से करते रहें तो उसमें तरक़्क़ी होती जावे और नवीन रस और आनंद मिलता जावे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत पैदा होती और बढ़ती जावे और इसी ज़िन्दगी में अपनी मुक्ति होती हुई देखते जावें।।

८ - यह सहज जुगत मन और सुरत को घट में ऊँचे यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चढ़ाने का साधन है और जिस क़दर अभ्यास करके सिमटाव और चढ़ाई होती जाती है, उसी क़दर नई कैफ़ियत मालूम होती है और नया आनन्द मिलता है और नया रास्ता तै होता जाता है और शौक़ निज धाम में पहुँचने और कुल मालिक के दर्शनों के हासिल करने का, बढ़ता जाता है।।

९ - इस साधन को सुरत शब्द योग कहते हैं यानी सुरत को घट में आवाज़-आसमानी को सुन कर चढ़ाना, और यह आवाज़ की धार कुल मालिक के धाम से कई मंज़िलों से गुज़र कर आ रही है। इसी धार के साथ सुरत का उतार हुआ है और उलट कर इसी धार को पकड़ के वह अपने निज घर में जा सकती है।।

१० - वह निज घर कुल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम है और वहाँ काल और करम, माया और मन नहीं हैं और इस सबब से वहाँ जनम मरन और किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश नहीं है।।

११ - और वह निज धाम महा प्रेम और महा आनंद का भंडार है और जो सुरत इस दुनिया से हट कर और संत सतगुरु की सरन लेकर और सुरत शब्द योग का अभ्यास करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से वहाँ पहुँच जाती है, वह अजर और अमर हो जाती है और हमेशा के लिये परम आनंद को प्राप्त होती है।।

१२ - ऐसी महिमा निज धाम की मालूम करके सब जीवों को चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके, अभ्यास शुरू करें तो उनको इसी ज़िन्दगी में कुछ परमार्थी आनंद और अपने उद्धार का सबूत मिलेगा और आइंदे को जब भक्ति उनकी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पूरी हो जावेगी, तब निज धाम में बासा पावेंगे और चौरासी का चक्कर तो उपदेश लेते और अभ्यास शुरू करते ही कट जावेगा।।

१३ - बड़ी महिमा राधास्वामी मत और उसके उपदेश की यह है कि जिस क़दर जीव से अभ्यास

दुरुस्ती से बन पड़े, उसी क़दर उसको रस और आनंद फ़ौरन मिलता है और अलावे उसके संत सतगुरु राधास्वामी दयाल की दया से वह जीव अधिकारी परम पद के प्राप्ति का यानी कुल मालिक के धाम में पहुँचने का हो जाता है कि जहाँ पहुँच कर आवागवन का चक्कर हमेशा को मिट जाता है, लेकिन यह बात संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन के सतसंग से हासिल होती है। इस वास्ते सतसंग अंतर और बाहर बराबर जारी रखना चाहिये।।

१४ - जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उनमें किसी न किसी क़िस्म के साधन वास्ते प्राप्ति मुक्ति के वर्णन किये हैं। पर वह साधन महा कठिन हैं और फिर भी उनमें पूरा फल नहीं मिलता। लेकिन राधास्वामी मत में साधन भी सहज और पूरा उद्धार सहज में होता है। इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि जहाँ और सब काम दुनिया में वास्ते अपने तन और मन के आराम के करते हैं, वहाँ अपने जीव के कल्यान और दुखों से बचाव के लिये भी थोड़ी सी कार्रवाई राधास्वामी मत के उपदेश की करते रहें कि इसमें उनको भारी फ़ायदा इस ज़िन्दगी में और भी बाद छोड़ने इस देह और देश के हासिल हो सकता है।।

प्रकार इकतालीसवाँ

अपने तन की सफ़ाई और सिंगार बहुत तवज्जह के साथ हर कोई करता है,पर

अपने अंतरी स्वरूप की भी सफ़ाई और आरास्तगी ज़रूर करना लाज़िम है, क्योंकि यह तन दुनियादारों के दिखाने को है और वह आपा मालिक के सन्मुख जावेगा।।

१ - दुनिया में बहुत से लोग अपनी देह की सफ़ाई और सिंगार और आरास्तगी करते हैं और साफ़ और उम्दा पोशाक पहिनते हैं, ख़ास कर वे लोग जो बड़े आदमियों और हाक़िमों और अमीरों और राजों से मिलते हैं या उनके पास रहते हैं, क्योंकि बग़ैर सफ़ाई और आरास्तगी तन के और पहिनने साफ़ कपड़ों के उनको बड़े आदमियों की संगत और सोहबत में या अमीरों और राजों के दरबार में दख़ल नहीं मिल सकता।।

२ - इस ज़ाहिरी सफ़ाई और सिंगार करने में कुछ मेहनत और ख़र्च करना पड़ता है, तब इस जीव को भी आराम मिलता है और दूसरे जीव भी इसके संग से राज़ी होते हैं यानी दुनियादार इस चाल को पसन्द करते हैं, लेकिन अंतर में बहुत मैल और विकार भरे हुए हैं, उनको निकालना और सफ़ाई करना भी ज़रूर है।।

३ - जब तक कि अंतर की सफ़ाई और सिंगार यानी आरास्तगी न होगी, तब तक मन और सुरत ऊँचे देश में नहीं चढ़ सकते और न ऊँचे लोक के वासियों की संगत में मिल सकते हैं। इस वास्ते जो कोई इस देश से जहाँ जनम मरन का चक्कर जारी है और सब जीव कष्ट और क्लेश अनेक तरह के भोगते हैं, बचना चाहे और कुल मालिक के धाम में पहुँचने और विश्राम पाने की ख़्वाहिश रखता है, उसको ज़रूर है कि जिस

क़दर जल्दी मुमकिन होवे अपने अंतर की सफ़ाई करे।।

४ - अंतरी सफ़ाई से मतलब यह है कि बिकारी अंग जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्षा, विरोध, और तृष्णा वग़ैरा दूर हो जावें और मन और इन्द्रिय अपना ज़ोर और चंचलता छोड़ देवें और आरास्तगी और सिंगार से मतलब यह है कि सील क्षमा संतोष दीनता और भोगों से किसी क़दर बैराग और दया और मित्रता वग़ैरा और मालिक के चरनों में भक्ति और प्रेम हिरदे में पैदा हो जावें यानी किसी के साथ ईर्षा या विरोध न रहे और सब के साथ दया और मित्र भाव से बर्ताव करे और संसार के पदार्थ और भोगों की चित्त में चाह और क़दर न रहे यानी सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उन में बर्ताव रहे और फ़िज़ूली और हिर्स और तृष्णा दूर हो जावें।।

५ - यह सफ़ाई और आरास्तगी बग़ैर संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन और साध के संग के हासिल नहीं हो सकती यानी जब तक कि जीव संतों के बचन नहीं सुनेगा और अपने मन में नहीं विचारेगा, तब तक संसारी ख़याल और स्वभाव और चाहें और व्यवहार उसके नहीं बदलेंगे और जब तक संत सतगुरु से उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास नहीं करेगा, तब तक मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई नहीं होगी और मलीनता यानी नापाक चाहें और आदतें दूर नहीं होंगी।।

६ - इस वास्ते जो जीव कि अपनी सच्ची और पक्की सफ़ाई चाहते हैं और अपने सच्चे मालिक से

मिलने की आशा रखते हैं, उनको चाहिये कि पहिले संत सतगुरु या उनकी संगत से मिलें और सतसंग करके शब्द मार्ग का उपदेश लेवें और जिस क़दर बन सके, नित्त अभ्यास करें। तब आहिस्ते आहिस्ते सफ़ाई और आरास्तगी होवेगी और रफ़्ते रफ़्ते संत सतगुरु की दया से चरनों में प्रेम बढ़ता जावेगा और एक दिन मालिक के महल में बासा मिल जावेगा।।

७ - यह काम सब जीवों को, चाहे औरत होवे या मर्द, ज़रूर करना चाहिये। इससे आवागवन और देह धर के कष्ट और क्लेश का भोग छूट जावेगा और इस मृत्यु लोक से, बल्कि कुल माया के देश से, न्यारा होकर निर्मल चैतन्य देश में जो कि कुल मालिक का निज धाम है, बासा पावेगा और वह स्थान महा आनंद और महा सुख और महा प्रेम का भंडार है और हमेशा एक रस क़ायम रहता है।।

८ - ज़ाहिरी सफ़ाई और आरास्तगी देह की जो यहाँ मेहनत करके की जाती है, बराबर क़ायम नहीं रह सकती है क्योंकि यह देह मल मूत्र का भांडा है और इसकी मोरियों यानी सूराखों से हर वक़्त मलामत और ग़िलाज़त जारी रहती है। फिर चाहे जिस क़दर कोई सफ़ाई करे, अंतर में मलामत हमेशा भरी रहेगी और द्वारे भी थोड़े बहुत नापाक रहे आवेंगे और हरचंद इस देह की सफ़ाई और आरास्तगी करके दुनिया के बड़े आदमियों से मेला और संग हो जावे, लेकिन ऊँचे लोकों में या मालिक के दरबार में जब तक अंतरी सफ़ाई या सिंगार न होगा, तब तक किसी सूरत में दख़ल नहीं मिलेगा और जो यह बात हासिल नहीं हुई

तो बारम्बार मृत्यु लोक और माया के देश में ऊँच नीच जोनों में भरमना पड़ेगा और कहीं दृढ़ विश्राम और पूरा आराम नहीं मिलेगा और कष्ट और क्लेश का भोग जारी रहेगा।।

९ - बाहर की सफ़ाई के देखने और पसंद करने वाले दुनिया के लोग हैं और अंतर की सफ़ाई और आरास्तगी के बख़्शने वाले और जाँच करने वाले संत सतगुरु और उनके साध और प्रेमी जन हैं। जिस में अंतरी सफ़ाई नहीं है, वह उनके सतसंग में, और भी मालिक के दरबार में, आदर और दख़ल नहीं पा सकता।।

१० - दुनिया चंद-रोज़ा और नाशमान है यानी यहाँ की ख़ुशी और आदर थोड़े दिन का है और जो सच्चे मालिक और संत सतगुरु की भक्ति नहीं की जावेगी तो अख़ीर वक़्त और बाद मरने के जमदूतों के हाथ से बहुत तकलीफ़ और निरादर सहना पड़ेगा और जब जब देह धारन की जावेगी और छूटेगी, तब ऐसी ही तकलीफ़ और दुख भोगना होगा। इस वास्ते जो इन दुखों से बचना चाहे, उसको चाहिये कि संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन का संग करके अपने विकार और मलीनता दूर करावे और अंतरी आरास्तगी और सिंगार करके मालिक के दरबार में दख़ल पावे और वहाँ विश्राम करके हमेशा का आनंद और सुख पाने का अधिकारी हो जावे।।

११ - सफ़ाई और आरास्तगी अंतरी और बाहरी हर हालत में मुनासिब और ज़रूर है लेकिन जो सिर्फ़ बाहरी सफ़ाई की तरफ़ तवज्जह करेंगे और अन्तर से

बे-परवाही और ग़फ़लत रक्खेंगे, वे नादान और अभागी हैं और हमेशा नुक़सान में रहेंगे और बारम्बार दुख सहेंगे और जो अन्तरी सफ़ाई की तरफ़ तवज्जह करेंगे और मुवाफ़िक़ उपदेश संत सतगुरु के कार्रवाई करेंगे तो उनको दोनों का फल और फ़ायदा हासिल होगा यानी बाहरी सफ़ाई भी उनसे दुरुस्त बन पड़ेगी और अन्तर में उसका रास्ता सच्चे मालिक के निज धाम में पहुँचने का जारी हो जावेगा और एक दिन परम आनन्द और अमर सुख को अमर देश में प्राप्त होवेंगे। ऐसे जीवों को दाना, सुजान और बड़भागी समझना चाहिये। यह अपना कारज जैसा चाहिये, बनावेंगे और बहुत से जीवों को उनसे फ़ैज़ पहुँचेगा यानी उनके जीव का भी कल्यान और उपकार करावेंगे।।

१२ - अपनी अन्तरी सफ़ाई की पहिचान यह जीव आप ही अच्छी तरह कर सकता है और थोड़ी सी वह लोग कर सकते हैं जो अक्सर उनके संग रहते हैं या जिनको व्यवहार और बर्ताव का काम पड़े। थोड़े से निशान उसके यह हैं कि मन में ख़्याल नाक़िस और पाप कर्म के उठने कम या दूर होते जावें और बाहर लोगों के साथ बर्तावा इस क़िस्म का होवे कि जिसमें किसी को दुख न पहुँचे और किसी का हक़ न मारा जावे।।

प्रकार बयालीसवाँ

वास्ते बनाव परमार्थ यानी जीव के सच्चे कल्यान और उद्धार के सतगुरु और सतसंग

और सत्त शब्द की ज़रूरत है। लेकिन प्रेम और शौक़ भी दरकार है और यह मन में पैदा होता है। इस वास्ते पहिले मन की गढ़त और सफ़ाई चाहिये और यह सतगुरु की दया और सतसंग और शब्द के अभ्यास से हासिल होगी और फिर दिन दिन शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा।।

१ - जीव संसार में तन मन और इन्द्रियों के संग बँध रहा है और माया के रचे हुए जो भोग और पदार्थ हैं, उनके भोगने और रस लेने की चाह और तरंगें मन में उठती रहती हैं और जो कि यह देश मलीन माया का है और तन में भी अनेक तरह की मलामत और मलीनता भरी हुई है, इस सबब से यहाँ चाहे जिस क़दर सफ़ाई करे, पर मलीनता दूर नहीं हो सकती है और जो ज़िन्दगी भर ऐसी ही कार्रवाई रही तो बारम्बार देह धर के दुख सुख का भोग ज़रूर करना पड़ेगा।।

२ - जो कोई इस चक्कर से बचना चाहता है और इस मलीन देह और देश से न्यारा होना चाहता है, उसको मुनासिब है कि अपनी हालतों की जो आठ पहर में इस पर गुज़रती हैं, जाँच करके वह जतन करे कि जिसकी मदद से इस देश से आहिस्ते आहिस्ते न्यारा होकर अपने निज घर में जोकि कुल मालिक का धाम है और जहाँ माया और उसकी दुखदाई रचना नहीं है, पहुँच जावे और महा सुख और अमर आनंद को प्राप्त होवे।।

३ - तीन अवस्था में जो जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति कहलाती हैं, सब जीव हर रोज़ बर्त रहे हैं। उनकी जाँच करने से मालूम होगा कि जाग्रत अवस्था में जीव का बर्ताव स्थूल देह के साथ इस लोक में है और स्वप्न और सुषुप्ति अवस्था में इस देह और दुनिया और उसके सामान की कुछ ख़बर नहीं रहती और न यहाँ का दुख सुख या चिन्ता और फ़िक्र व्यापते हैं।।

४ - और अपने रोज़मर्रा के हाल और बर्ताव से साफ़ मालूम होता है कि जीव की बैठक जाग्रत अवस्था में आँखो में है और स्वप्न के वक़्त रूह की धार यहाँ से अंतर में खिंच जाती है और उस वक़्त देह और दुनिया के साथ बंधन ढीला हो जाता है।।

५ - और सख़्त बुख़ार और ग़श की हालत में और भी मौत के वक़्त, आँखें चढ़ जाती हैं और पुतली खिंच जाती है यानी रूह की धार आँख के मुक़ाम से अंतर की तरफ़ हट जाती है और जिस क़दर वह धार हटती जाती है, उसी क़दर देह और दुनिया की तरफ़ से ग़फ़लत और बेहोशी और अलेहदगी होती जाती है।।

६ - इससे साफ़ ज़ाहिर है कि जो कोई इस मलीन देह और देश से हटना चाहे, वह आँखों के मुक़ाम से सरकने का जतन करे यानी रूह की धार को उसके भंडार और ख़जाने की तरफ़ उलटावे।।

७ - सब कहते हैं और समझते हैं कि इस रचना का कोई मालिक़ ज़रूर है और वह सर्व समर्थ और सर्व व्यापक है। फिर वह हर एक घट में भी ज़रूर मौजूद है और जो कि जीव उसकी अंस है, जैसे सूरज और सूरज की किरन, और उसके चरनों से जुदा होकर

मलीन माया के देश में उतर कर नर देही में बँध गया है, सो यहाँ से सरकने और उलटने का जतन करके अपने मालिक के धाम में पहुँच कर और विदेह होकर परम आनंद को प्राप्त हो सकता है।।

८ - यह जतन संत सतगुरु और उनकी संगत से मालूम हो सकता है। लेकिन उसकी कार्रवाई यानी अभ्यास के वास्ते सच्चा प्रेम और शौक़ दरकार है और यह शौक़ दुनिया का हाल जो कि नाशमान है, ग़ौर के साथ मुलाहिज़ा करके पैदा हो सकता है और फिर संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन के संग से बढ़ सकता है।।

९ - जो कि कुल जीवों को एक दफ़ा यह देह और देश छोड़ना ज़रूर पड़ेगा, इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि मौत के वक़्त से पेश्तर उस रास्ते को जहाँ होकर जाना पड़ेगा, खोलना और साफ़ करना शुरू करें और रास्ते के खोलने और साफ़ करने से मतलब यह है कि सुरत की धार को जो आँखों में ठहर कर देह और दुनिया के साथ बँध गई है, कुल मालिक के चरनों की तरफ़ उलटाना शुरू करें।।

१० - जुगत उलटाने की संत सतगुरु या उन के प्रेमी जन से मालूम हो सकती है। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुरु या उनकी संगत का करना चाहिये और जब वे भाग से मिल जावें तो प्रीत सहित उनका सतसंग और सेवा करना चाहिये और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बन सके, उसके अभ्यास में लगना चाहिये।।

११ - सुरत शब्द मार्ग से मतलब यह है कि रूह को आवाज़ के आसरे जो घट घट में हर दम हो रही है, ऊँचे देश यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चढ़ाना। सिवाय इसके और कोई सहज और निर्विघ्न और धुर पहुँचाने वाला तरीक़ा वास्ते उलटाने सुरत के नहीं रचा गया क्योंकि इसमें रूह यानी जान की धार पर सवार हो कर चलना होता है और जान की धार से बढ़ कर और कोई धार नहीं है।।

१२ - जो संत सतगुरु से मेला न होवे तो जो उनकी संगत मौजूद है, उसमें शामिल होकर सतसंग करना चाहिये और संशय और विपर्जय दूर करके संत सतगुरु से मिले हुए प्रेमी अभ्यासी से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करना मुनासिब है।।

१३ - सच्चे प्रेमी अभ्यासियों के संग से कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत आहिस्ते आहिस्ते बढ़ती जावेगी और अभ्यास में भी थोड़ा बहुत रस मिलता जावेगा और जो शौक़ और प्रेम ज़्यादा होगा तो सन्त सतगुरु भी मौज से दर्शन देकर दया फ़रमावेंगे और अंतर और बाहर मुनासिब मदद दे कर अभ्यास में तरक़्क़ी बख़्शेंगे।।

१४ - सन्त सतगुरु और उनकी संगत इस दुनिया में बड़े दुर्लभ पदार्थ हैं। जिसको यह दोनों मिल जावें, वही जीव बड़भागी है। जिस रोज़ से कि जीव सन्त सतगुरु की सरन में आया, उसी रोज़ से उसकी चौरासी छूट जाती है और जिस वक़्त से कि उपदेश लेकर अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का शुरू किया, उसी वक़्त से रास्ता उसके सच्चे उद्धार और मुक्ति का जारी

हो जाता है और इस कार्रवाई में कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया और रक्षा से काल और कर्म और मन और माया किसी क़िस्म का विघ्न ऐसे तौर से नहीं डाल सकते कि जिससे रास्ता उद्धार का बन्द हो जावे।।

१५ - सच्चे खोजी प्रेमी को मुनासिब है कि अपनी प्रीत और प्रतीत चरनों में राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु के दिन दिन बढ़ाता रहे कि जिससे विशेष दया प्राप्त होती रहे और अभ्यास और सतसंग आसानी से बनता चला जावे।।

१६ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु को जो सच्चे मन से उनकी सरन में आया है, हर वक़्त उस जीव की सम्हाल और रक्षा और तरक़्क़ी परमार्थ की मंज़ूर है और वे अपनी मेहर से ऐसे संजोग पैदा करते और बनाते रहते हैं कि जिससे जीव की प्रीत और प्रतीत दिन दिन बढ़ती जावे और उमंग के साथ सेवा कराके नवीन प्रेम जगाते रहते हैं और यही प्रेम और प्रतीत उसके अभ्यास और भक्ति को तरक़्क़ी देती जाती है।।

१७ - यह सब बातें आज कल राधास्वामी संगत में हासिल हो सकती हैं। जिसके मन में सच्चा खोज और दर्द है, वह संगत मज़कूर में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर अपने जीव के सच्चे उद्धार के वास्ते कार्रवाई शुरू कर सकता है।।

* * * * *

प्रकार तेंतालीसवाँ

पाँचों तत्त्व जो रचना के कारण हैं, हर एक का मंडल जुदा जुदा है, जैसे कि स्थूल तत्त्वों का यहाँ आँख से दीखता है। इसी तरह सूक्ष्म तत्त्वों का मंडल जुदा जुदा है। फिर दो भारी तत्त्व सुरत और शब्द जो कुल रचना के कारन और करता हैं, उनका भी मंडल जुदा जुदा है। सुरत तत्त्व पाँचों तत्त्व का कारन है और शब्द तत्त्व सुरत तत्त्व का कारन और कुल रचना का करतार है। और जीव, सुरत रूप है और शब्द की निज अंस और धार है। सो वह जब तक कि अपने कारज से यानी पाँच तत्त्व की रचना से न्यारी होकर अपने कारन के निज मंडल यानी शब्द भंडार में चढ़ कर न पहुँचेगी, तब तक परम सुख को प्राप्त न होवेगी।।

१ - इस रचना में पाँच तत्त्व की कार्रवाई विशेष नज़र आती है और वह तत्त्व यह हैं, पृथ्वी जल अग्नि पवन और आकाश।।

२ - यहाँ स्थूल तत्त्वों का मंडल जुदा जुदा नज़र आता है। इसी तरह ऊँचे देश में सूक्षम और अति सूक्षम तत्त्वों का भी मंडल जुदा जुदा है।।

३ - यह सब मंडल माया की हद्द यानी घेर में हैं और जब तक सुरत इस देश में रहेगी, तब तक पाँच तत्त्व के मसाले से बनी हुई देह में उसका बासा रहेगा और जैसा स्थूल या सूक्षम देह और देश होगा, वैसा ही दुख सुख का भोग कम या ज़्यादा होगा।।

४ - इन पाँचों तत्वों यानी माया देश के परे सुरत का मंडल है और यह सुरत तत्त्व पाँच तत्त्वों और उनसे पैदा हुई रचना का कारन है और सुरत मंडल के परे शब्द मंडल है जो सुरत और कुल रचना का कारन है और महा चैतन्य और महा आनंद और महा प्रेम स्वरूप है।।

५ - जब तक कि सुरत माया के घेर से न्यारी होकर शब्द मंडल में नहीं पहुँचेगी, तब तक देहियों के बंधन और उनके लाज़िमी दुख सुख और जनम मरन से छुटकारा नहीं होगा।।

६ - इस वास्ते सब जीवों को ज़रूर और मुनासिब मालूम होता है कि जहाँ और सब काम दुनिया के करते हैं, वहाँ थोड़ी सी कार्रवाई पाँच तत्त्व की रचना यानी माया के घेर से न्यारे होकर शब्द मंडल में पहुँचने की करें तो आहिस्ते आहिस्ते उनका छुटकारा हो जावे और एक दिन निज धाम में पहुँच कर अमर आनंद को प्राप्त होवें।।

७ - माया के घेर से निकलने और शब्द मंडल में पहुँचने की तरकीब संत अथवा राधास्वामी मत में जारी है। जो कोई सच्चा शौक़ इस काम के करने का रखता है, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर अभ्यास

शुरू करे तो एक दिन निज धाम में जहाँ माया नहीं है और निर्मल चैतन्य ही चैतन्य है, बासा पावेगा।।

८ - वास्ते दुरुस्ती से और पूरे बनने इस अभ्यास के कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया दरकार है। सो जो शौक़ सच्चा है और थोड़ा बहुत प्रेम मन में है तो उस पर दया भी ज़रूर आवेगी और आहिस्ते आहिस्ते कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन भी प्राप्त होगी और अचरज नहीं है कि संत सतगुरु भी अपना दर्शन देवें और दया करके मन और सुरत को सहज में चढ़ावें और एक दिन निज घर में पहुँचा कर बासा देवें।।

९ - ज़ाहिर है कि पाँच तत्त्व की रचना जो इस लोक में है और ऐसे ही और लोकों में भी, ठहराऊ नहीं है और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भी उसके साथ लगा हुआ है। जो कोई नज़र ग़ौर से दुनिया के हाल को देखेंगे, वह ज़रूर इस बात का खोज करेंगे कि सुरत चैतन्य जो पाँच तत्त्व की रचना की चैतन्य करने वाली है, उसका भंडार और न्यारा मंडल ज़रूर होगा और जो कि रस और आनंद है, वह सुरत और सुरत की धार में है तो सच्चे और पूरे आनंद का स्थान वहीं होना चाहिये।।

१० - ऐसे विचारवान और खोजी जीव इस बात को भी दरियाफ़्त और तहक़ीक़ करेंगे कि किस तरह सुरत के मंडल और उसके भंडार में पहुँचना हो सकता है और जो कि सुरत अमर है तो जब तक कि अपने निज भंडार में न पहुँचेगी, ज़रूर माया के घेर में पाँच तत्त्व की बनी हुई स्थूल या सूक्ष्म देह में भरमती रहेगी

और दुख सुख और जनम मरन का भोग करती रहेगी। इस वास्ते ज़रूर हुआ कि हर एक जीव वास्ते अपने सच्चे कल्यान और उद्धार के, अपने निज भंडार का पता और भेद दरियाफ़्त करके वहाँ चल कर पहुँचने का जतन शुरू करे।।

११ - यह पता और भेद और चलने और चढ़ने का तरीक़ा जैसा कि ऊपर कहा गया, सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर कहा गया है और राधास्वामी संगत में शामिल होकर उपदेश लेने के वक़्त मुफ़स्सिल मालूम हो सकता है। यह रास्ता बिना ख़ौफ़ और शौक़ के तै नहीं हो सकता है। इस वास्ते दुख सुख और जनम मरन का थोड़ा बहुत ख़ौफ़ और शौक़, मिलने दर्शन कुल मालिक का, लेकर जो कोई अभ्यास शुरू करेगा, उसका रास्ता आहिस्ते आहिस्ते तै होता जावेगा और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद सुरत मन के सिमटाव और चढ़ाई का मिलेगा और वही आनंद शौक़ को बढ़ाता जावेगा और अभ्यास में आसानी और तरक़्क़ी होती जावेगी।।

प्रकार चवालीसवाँ

हर कोई बड़े आदमी और ख़ास कर अपने प्यारे से एकान्त में मिलना और बात चीत करना चाहता है। इसी तरह सच्चे प्रेमी और परमार्थी को संत सतगुरु और कुल मालिक से एकान्त में मिलने की अभिलाषा

रख के संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ जतन करना चाहिये।।

१ - इस दुनिया में देखने में आता है कि हर कोई बड़े आदमी या अपने प्यारे से एकांत में मिल कर बहुत ख़ुश होता है क्योंकि वहाँ बे लिहाज़ और ख़याल और दबाव दूसरे या ग़ैर-शख़्स के, अपनी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ बातचीत कर सकता है।।

२ - इसी तरह सच्चे परमार्थ में सेवक अपने स्वामी यानी संत सतगुरु और सच्चा प्रेमी अपने प्रीतम सतगुरु या कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल से एकाग्र होकर यानी एकान्त में मिल कर और बचन सुन कर बहुत मगन होता है।।

३ - एकाग्रता से मतलब यह है कि कोई विरोधी अंग जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार या कोई बे-मतलब की तरंग दसों इंद्रियों की या किसी क़िस्म के ख़याल जो अन्तःकरण से उठते हैं, वक़्त दर्शन और बचन अपने स्वामी और प्रीतम के, प्रकट होकर विघ्नकारक न होवें और एकान्त से मुराद यह है कि किसी क़िस्म की सूरत या रचना सिवाय अपने प्रीतम के स्वरूप और शब्द के नज़र न आवे और न किसी क़िस्म की आवाज़ें चित्त को इधर उधर खींचें।।

४ - जब ऐसी हालत सच्चे प्रेमी की अंतर अभ्यास के वक़्त मौज से हो जावे तो उसको पूरा रस भजन और ध्यान का हासिल हो सकता है और रफ़्ते रफ़्ते अंतर में दर्शन भी मिल सकता है और जब सतसंग में सब तरफ़ से मन और चित्त और नज़र हट कर एक

सतगुरु के दर्शन और बचन में लौलीन हो जावे तब गहिरा रस बाहर के सतसंग का मिल सकता है।।

५ - ऐसी हालत परमार्थी शख़्स की बग़ैर तेज़ और गहरे शौक़ और प्रेम के नहीं हो सकती, और यही शौक़ और प्रेम बग़ैर दया कुल मालिक के और बग़ैर संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग और उदासीनता आने के, पैदा नहीं हो सकता और वास्ते उसके ठहराव और तरक़्क़ी के संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग और उनकी जुगत की कमाई यानी अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का ज़रूर दरकार है।।

६ - इस वास्ते जिस किसी के मन में इस दुनिया और उसके पदार्थों की नाशमानता और ओछापन देख कर थोड़ा बहुत बैराग़ उसकी तरफ़ से आया है और ख़्वाहिश खोज और तहक़ीक़ात सच्चे और असली परमार्थ की, पैदा हुई है, उसको चाहिये कि पहिले संत सतगुरु और उनके प्रेमियों की संगत की तलाश करे। और जो कि ऐसा खोजी दयापात्र होता है, उसका मौज से जल्द मेला सन्त सतगुरु या उनकी संगत से हो जावेगा।।

७ - जब भाग से संत सतगुरु मिल जावें या उनकी संगत में शामिल हो जावे, तब उसको चाहिये कि पहिले सतसंग होशियारी के साथ करे और बचनों को चित्त देकर सुने और बिचारे, तब भरम और संशय और बेजा और ना-मुनासिब पकड़ें जो मन में धरी हुई हैं, आहिस्ते आहिस्ते निकलेंगी। और मन के बिकारी अंगों की ख़बर पड़ेगी और उनके घटाने और हटाने का जतन मालूम पड़ेगा और फिर सब तरह से सफ़ाई हासिल करने के लिये कोशिश भी बन आवेगी।।

८ - जब इस तरह कोई दिन सतसंग करके थोड़ी बहुत सफ़ाई हासिल होती जावे और पूरा पूरा निश्चय कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम में पहुँचने की जुगत यानी सुरत शब्द मार्ग का हो जावे, तब उपदेश लेकर अंतर अभ्यास शुरू करे और जब अपने घट में कुछ कैफ़ियत नज़र आवेगी और थोड़ा बहुत रस मिलेगा तब शौक़ तेज़ होवेगा और प्रेम सन्त सतगुरु और कुल मालिक के चरनों में जागेगा।।

९ - इसी तरह सतसंग और अंतर अभ्यास करके दिन दिन प्रेम और निश्चय बढ़ता जावेगा और दया के परचे मिलते जावेंगे और आहिस्ते आहिस्ते काम बनता जावेगा यानी एक दिन रास्ता तै करके निज धाम में पहुँच जावेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनन्द को प्राप्त होगा।।

१० - ऐसे प्रेमी के मन में अभ्यास की हालत में यही ख़्वाहिश और कोशिश रही आवेगी कि किसी क़िस्म का विघ्न उसकी परमार्थी कार्रवाई में न पड़े और कोई शख़्स या कोई शै बाहर या अंतर, उसके अभ्यास में हारिज न होवे ताकि निर्मल भजन और ध्यान करते हुए उसके मन और सुरत ऊँचे की तरफ़ को सहज में चढ़ते चले जावें और एक दिन दोनों अपने अपने भंडार में पहुँच कर निःचिन्त और मगन हो जावें।।

११ - ऐसे प्रेमी के संग और सोहबत से बहुत से जीवों का उपकार मुमकिन है यानी वे इस की ज़बान से महिमा और बड़ाई सन्त सतगुरु और उनके सतसंग और अभ्यास की, और भी हाल दया कुल मालिक राधास्वामी दयाल का, सुन कर वास्ते शामिल होने ऐसे सतसंग के, उमंग उठावेंगे और रफ़्ते रफ़्ते बचन सुन

कर और समझ कर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर अभ्यास में शामिल होवेंगे और कुछ आनन्द और रस अंतर में पा कर अपनी नर देही सुफल करेंगे।।

प्रकार पैंतालीसवाँ

इस देह में नौ दरवाज़े हैं और उन में से हर दम मैल और ग़िलाज़त निकलती रहती है और इन्हीं द्वारों पर सुरत की धार उतर कर देह की कार्रवाई करती है। नापाक स्थान को कोई नहीं पसन्द करता। इस वास्ते पवित्र स्थान की तरफ़ जो घट में ऊँचे की तरफ़ है, चलना शुरू करे तो एक दिन देह और इन्द्रियों और मन और माया के बंधनों से छुटकारा हो जावे और कुल मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होवे।।

१ - इस देह में नौ द्वार प्रकट हैं और दसवाँ गुप्त। नौ द्वार से हमेशा मैल और ग़िलाज़त बहती रहती है और दसवाँ द्वार सुरत की आमद का है और हमेशा साफ़ और निर्मल रहता है।।

२ - नौ द्वारों पर सुरत की धार उतर कर देह की कार्रवाई करती है यानी दसों इन्द्रियों का कारज और व्यवहार उन्हीं द्वारों की मार्फ़त जारी रहता है।।

३ - जितने काम दुनिया के इन्द्रियों के वसीले से होते हैं, उन में थोड़ा बहुत रस मन को मिलता है। लेकिन सुरत की धार का बहाव बाहरमुख रहता है और बाहर जिस क़दर भोग और पदार्थ हैं, सब जड़ हैं। इस सबब से सुरत की धार जड़ पदार्थों से मिल कर ख़र्च हो जाती है और इसी सबब से आदमी दिन भर या कुछ देर काम करके थक जाता है।।

४ - जो कुछ तरंगें मन में उठती हैं, वे सब बाहरमुख कार्रवाई से ताल्लुक़ रखती हैं और जो कि इस लोक में, और भी स्थूल देह में, माया और तमोगुन का ज़ोर बहुत है, इस सबब से यह सब कार्रवाई जो इन्द्रियों के वसीले से होती है, मलीन समझी जाती है और उसमें सुरत की धार का ख़र्च और नुक़सान होता है।।

५ - जो कोई भेद लेकर और जुगत दरियाफ़्त करके अपने अंतर में दसवें द्वार की तरफ़ सुरत की धार को चलावे तो वहाँ से विशेष ताक़त और विशेष आनन्द और रस जो निहायत निर्मल है, हासिल कर सकता है और बजाय ख़र्च के अपनी सुरत की ताक़त को ऊपर की तरफ़ चढ़ाने से बढ़ा सकता है और थकावट वग़ैरा थोड़ी देर के इस क़िस्म की कार्रवाई से सहज में दूर हो जाती है।।

६ - अक़्लमंद और विचारवान आदमी दुनिया का हाल देख कर मालूम कर सकता है कि जिस क़दर यहाँ के भोग बिलास और रस और आनंद हैं, वह सब नाशमान हैं और उन सब में थोड़ी बहुत तलख़ी माया की लगी हुई है और किसी क़दर अपवित्र भी हैं। फिर

वह ज़रूर तलाश करेगा कि कोई स्थान और वहाँ का आनंद ऐसा भी है जो हमेशा क़ायम रहे और जहाँ तमोगुन और माया और उसकी तलख़ी न होवे।।

७ - ऐसा देश और महा आनंद का स्थान रचना में ज़रूर है और उसका मुक़ाम ऊँचे से ऊँचा है और रास्ता उसका दसवें द्वार में होकर जाता है। वही स्थान सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का धाम है।।

८ - इस धाम का भेद और हाल रास्ते और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का सिर्फ़ राधास्वामी मत में जिसको संत मत भी कहते हैं, तफ़सील के साथ वर्णन किया है। और किसी मत में जो दुनिया में जारी हैं, उसका ज़िक्र और पता नहीं है और न रास्ता तै करने की जुगत बयान की है।।

९ - यह धाम और उसका रास्ता हर एक जीव के घट में मौजूद है क्योंकि कुल मालिक का तख़्त हर एक के घट में है। पर उसके भेद से सिवाय संतों के और कोई वाक़िफ़ नहीं है।।

१० - इस धाम का रास्ता नेत्रों के स्थान से जहाँ जाग्रत अवस्था में जीव की बैठक है, जारी होता है और दसवें द्वार से गुज़र कर ऊँचे की तरफ़ जाता है। बिना मदद संत सतगुरु के जो उस धुर धाम के बासी हैं और निहायत दया करके जीवों को उस धाम में पहुँचाने के वास्ते आप नर देह धारन करके इस देश में आते हैं, कोई जीव उस रास्ते पर नहीं चल सकता है।।

११ - इस वास्ते सब जीवों को जो इस अपवित्र और नाशमान स्थान से हट कर महा निर्मल और महा आनंद के स्थान पर जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है, पहुँचना चाहें तो मुनासिब है कि पहिले संत सतगुरु और उनकी संगत का खोज लगा कर उसमें शामिल होवें और सतसंग के बचन सुन कर और समझ कर उनके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी और गहनी दुरुस्त करें और जो संत सतगुरु भाग से मिल जावें तो उनसे, नहीं तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से,भेद धुर धाम और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करें और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ावें।।

१२ - जो शौक़ और लगन तेज़ और सच्ची होगी तो संत सतगुरु का भी दर्शन मौज से हो जावेगा और अंतर में कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और रक्षा नज़र पड़ेगी और अभ्यास का भी थोड़ा बहुत रस और आनन्द मिलेगा और शौक़ बढ़ता जावेगा और रफ़्ते रफ़्ते मन और सुरत अंतर में ऊँचे की तरफ़ चढ़ेंगे और एक दिन मेहर और दया से कारज पूरा बन जावेगा।।

१३ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जो अपनी मेहर और दया से सहज अभ्यास सुरत शब्द योग का जारी फ़रमाया है, उसमें कुछ ज़रूरत घर बार और रोज़गार छोड़ने की नहीं है और वह इस क़दर आसान और निर्विघ्न है कि हर कोई लड़का, जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द बे-तकलीफ़ जिस वक़्त और जिस

जगह चाहें, कर सकते हैं और इसी ज़िंदगी में उसका फ़ायदा देख सकते हैं।।

१४ - जो जीव कि यह कार्रवाई अंतर में सुरत के चढ़ाने की नहीं करेंगे, वे हमेशा देही में गिरफ़्तार रहेंगे और उसके बंधन का फल दुख सुख भोगते रहेंगे और अपवित्र तरंगें सदा उनके मन में उठ कर उनकी सुरत को नीचे के देश में जहाँ माया का भारी ज़ोर है, भरमाती रहेंगी।।

१५ - जो कष्ट और क्लेश देह धारियों को मृत्यु लोक और उसके नीचे के देशों में भोगना पड़ता है और जनम मरन का दुख जो सबसे भारी है, सहना पड़ता है, उसका कुछ बयान नहीं हो सकता। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि सब जीव थोड़ी बहुत अंतरमुख कार्रवाई संतों के उपदेश के मुवाफ़िक़ अपनी ज़िन्दगी में शुरू कर दें।।

१६ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल की ऐसी भारी दया जीवों पर इस समय में है कि जो कोई बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के थोड़ा अभ्यास एक या दो मर्तबे हर रोज़ सुरत शब्द मार्ग का सन्त सतगुरु या साध गुरू या उनके प्रेमी सतसंगी से उपदेश लेकर नेम से करता रहेगा तो भी राधास्वामी दयाल उसको चौरासी से बचा कर अख़ीर वक़्त पर सुख स्थान में बासा देंगे और तीन चार जनम नर देही में देकर और हर जनम में विशेष करनी और अपने चरनों की भक्ति करा कर मेहर से एक दिन निज घर में पहुँचा देंगे कि जहाँ माया कृत देही के बंधन और जनम मरन के चक्कर से क़तई छुटकारा हो जावेगा और अमर आनन्द

प्राप्त होगा। अब जो कोई कि इस कार्रवाई में शामिल नहीं होगा तो समझना चाहिये कि वह महा अभागी है और अभी उसको कोई काल माया के देश में रहना मंज़ूर है और निज घर में जाकर परम आनन्द को प्राप्त होने का अधिकार और भाग नहीं रखता है।।

प्रकार छियालीसवाँ

कुल जीवों के दिल में शौक़ देखने अच्छे रूप रंग और सुनने उम्दा बाजे और आवाज़ का रहता है और जब कहीं यह दोनों चीज़ें देखने और सुनने में आती हैं, वहीं मन फ़ौरन लग जाता है और हाल यह है कि इस दुनिया के रूप रंग और आवाज़ें निहायत ओछे और कसीफ़ और नाशमान हैं और घट में ऊँची तरफ़ बहुत बढ़ कर और निहायत ख़ूबी और नूरानियत के साथ रूप और आवाज़ें मौजूद हैं। इस वास्ते उनका देखना और सुनना भी ज़रूर चाहिये, ख़ास कर जब कि उनकी तरफ़ तवज्जह करने से गहिरा आनंद और रस मिलता है और सच्चा उद्धार और जनम मरन से निवृति और अमर आनन्द की प्राप्ति सहज में हो सकती है।।

१ - इस दुनिया में सब कोई ख़ूबसूरत आदमी या जानवर या चीज़ को देखना चाहते हैं और जब मिल जावें तो उनको देख कर बहुत ख़ुश होते हैं। इसी तरह सब कोई उमदा बाजों की आवाज़ और अच्छा गाना सुनना चाहते हैं और जब इत्तिफ़ाक़ से वह मिल जावे तो मन उनका फ़ौरन लग जाता है और ख़ुश होकर वहीं ठहर जाता है।।

२ - यह बात सिर्फ़ आदमियों में नहीं बल्कि जानवरों में भी पाई जाती है कि वह भी ख़ूबसूरत जानवर या चीज़ को देख कर और ख़ुश-आवाज़ बाजे को सुन कर ख़ुश होते नज़र आते हैं और अचरज करते हैं और चाहते हैं कि बराबर उस आवाज़ को सुनें।।

३ - सबब इसका यह है कि सुरत आप निहायत नूरानी और ख़ूबसूरत और शब्द स्वरूप है और कुल मालिक की अंस है जो कि महा प्रकाश और महा सुन्दर स्वरूप और महा रसीले शब्द का भण्डार है। इस वास्ते उसको सुन्दर रूप और रसीली आवाज़ से इश्क़ है।।

४ - इस दुनिया में जो सुन्दर से सुन्दर रूप और निहायत शीरीं आवाज़ देखने और सुनने में आती हैं, वह ब-मुक़ाबले उन रूपों और आवाज़ों के जो घट घट के ऊँचे से ऊँचे देशों में मौजूद हैं, एक किनके और ज़र्रे की बराबर नहीं हैं, और वहाँ निहायत मोहनी रूप और आवाज़ जिनकी उपमा नहीं है और कोई महिमा नहीं कर सकता, मौजूद है।।

५ - इस वास्ते हर एक को मुनासिब है कि अपने घट में भी थोड़ी बहुत सैर करे और वहाँ के नूर को देख

कर और आवाज़ को सुन कर अचरजी आनंद हासिल करे, तब उसको मालूम होगा कि किस क़दर भारी सामान क़ुदरत का उसके अंतर में मौजूद है और वह कैसे ओछे और नाशमान पदार्थों के लिये इस दुनिया में तलाश और मेहनत कर रहा है।।

६ - बड़भागी वे जीव हैं कि जो दुनिया में भी अपने मालिक की कारीगरी और ताक़त को देख कर ख़ुश होते हैं और शुकराना करते हैं और अपने घट में भी उसकी भारी से भारी क़ुदरत और अचरजी रचना की सैर करके असली आनन्द और ख़ुशी हासिल करते हैं और उस सर्व समर्थ और कुल दयाल मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हैं और उसके निज रूप के दर्शनों की अभिलाषा उठा कर सच्चे मन से उसकी प्राप्ति के लिये जतन करते हैं।।

७ - घट का भेद और तरकीब उसके सैर करने की सिर्फ़ सन्त सतगुरु से मालूम हो सकती है। क्योंकि वे पूरे भेदी और निज मुसाहब या निज पुत्र कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के हैं।।

८ - जो कोई घट की सैर और कैफ़ियत देखने का शौक़ रखता है, उसको चाहिये कि पहिले सन्त सतगुरु या उनकी संगत का खोज करे और जो पता मिल जावे तो उस संगत में शामिल होकर कोई दिन सतसंग करे और कुल मालिक की महिमा और भेद के बचन सुने और समझे और दुनिया की असली हालत और कैफ़ियत और उसके सामान का ओछापन और नाशमानता मालूम करके उसकी तरफ़ से किसी क़दर हटे और कुल मालिक के चरनों की तरफ़ तवज्जह लावे।।

९ - कोई दिन के सतसंग से खोजी को सब हाल दुनिया का और भेद घट का मालूम हो जावेगा। फिर मुनासिब है कि सन्त सतगुरु से जो भाग से मिल जावें, नहीं तो, उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से, उपदेश लेकर अंतर में अभ्यास शुरू करें।।

१० - वह अभ्यास सुरत और मन को स्वरूप और आवाज़ में लगाने का है और उसको भजन और ध्यान कहते हैं यानी सुरत को आवाज़ में जो घट घट में ऊँचे देश से आ रही है, लगा कर चढ़ाना और अंतर के स्वरूप में जोड़ना और इस अभ्यास को सुरत शब्द योग भी कहते हैं।।

११ - जीव की बैठक इस देही में आँखों के मुक़ाम पर है और कुल मालिक का तख़्त भी घट में ऊँचे से ऊँचे मुक़ाम पर मौजूद है और रास्ते में कई मंज़िलें या मुक़ाम हैं और हर एक मुक़ाम की आवाज़ जुदा जुदा है, सो यह सब भेद सन्त सतगुरु या उनके प्रेमी सतसंगी से वक़्त उपदेश के मिलेगा। उसके मुवाफ़िक़ अभ्यासी को कार्रवाई करना चाहिये।।

१२ - जब मौज से अंतर में स्वरूप का दर्शन होगा और तरह तरह का प्रकाश और नूर नज़र आवेगा और रसीली आवाज़ कभी कभी सुनाई देगी तब अभ्यासी सतसंगी अपने भागों को सराहेगा और दुनिया के रूप रंग और आवाज़ वग़ैरा से सहज में उसका चित्त हटता जावेगा और चरनों में सन्त सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के गहरी प्रीत और प्रतीत इसके हिरदे में जागती जावेगी।।

१३ - इसमें कुछ शक नहीं है कि घट का खेल और सैर बग़ैर दया और मेहर सन्त सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के नज़र नहीं आ सकते हैं लेकिन अभ्यासी भी सच्चे शौक़ वाला और प्रेमी और मेहनती होना चाहिये, तब कारज बनना शुरू होगा यानी आहिस्ते आहिस्ते कैफ़ियत नज़र आती जावेगी और मन और सुरत मगन होकर उमंग के साथ घट में लगते जावेंगे।।

१४ - इसी तरह शौक़ और प्रेम दिन दिन बढ़ता जावेगा और अंतर में सन्त सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया के परचे पाकर प्रतीत और सरन मज़बूत होती जावेगी। रफ़्ते रफ़्ते एक दिन सुरत निज धाम में पहुँच कर अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनन्द को प्राप्त होगी और मन और माया और काल और कर्म से पीछा छूट जावेगा।।

१५ - ऐसा सतसंग और यह कार्रवाई सुरत शब्द मार्ग की इस वक़्त में राधास्वामी संगत में जारी है और यह सतसंग कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप संत सतगुरु रूप धारन करके जारी फ़रमाया और घट का कुल भेद और तरीक़ा चलने और चढ़ने सुरत और मन का निहायत सहज तरकीब से (जिस को लड़का जवान और बूढ़ा आसानी से कर सकता है) प्रकट करके जीवों को अति दया कर के समझाया।।

१६ - ऐसी तासीर और बरकत सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में अपनी मौज और दया से कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने रक्खी है कि जो कोई उस को

शुरू करके थोड़े दिन भी नेम से जैसा तैसा कमावे तो भी उसका छुटकारा चौरासी के चक्कर से हो जावेगा और आइंदे को दिन दिन उसकी भक्ति चरनों में बढ़ती जावेगी और अभ्यास में भी इस क़दर तरक़्क़ी होती जावेगी कि दो तीन या चार जनम में वह संत सतगुरु की दया से अपना काम पूरा बना लेगा यानी राधास्वामी धाम में पहुँच कर विश्राम पावेगा और माया के घेर से जहाँ जनम मरन और सुख दुख का चक्कर चल रहा है, न्यारा होकर अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा।।

प्रकार सैंतालीसवाँ

दुनिया में जीव दो क़िस्म के काम कर रहे हैं, एक स्वार्थ, दूसरा परमार्थ। लेकिन असली परमार्थ की कार्रवाई से (जिससे सच्चा उद्धार मुमकिन है) बे-ख़बर हैं । यह राधास्वामी मत में जारी है। और सच्चे परमार्थी को थोड़े दिन अभ्यास करने से फ़ायदा उसका मालूम हो सकता है और आख़िर को परम धाम प्राप्त होगा।।

१ - इस दुनिया में जीव दो क़िस्म के काम कर रहे हैं, एक स्वार्थ, दूसरा परमार्थ।।

२ - स्वार्थ से मुराद उन कर्मों से है जो वास्ते प्राप्ति सुख और आराम के इस लोक और इस ज़िंदगी

में या स्वर्ग और बैकुंठ और बहिश्त वग़ैरा में बाद छोड़ने इस देह और देश के किये जावें। इसको प्रवृत्ति कहते हैं।।

३ - परमार्थ से मतलब उन कामों से है जो वास्ते प्राप्ति मुक्ति के या मिल जाने के परमेश्वर या ब्रह्म के स्वरूप में, किये जावें। इस को निवृत्ति कहते हैं।।

४ - असली और सच्चा और निर्मल परमार्थ निवृत्ति से जुदा है। उसका भेद सिवाय राधास्वामी मत अथवा संत मत के और कहीं नहीं है और इसको निवृत्ति-पर कहते हैं।।

५ - इस परमार्थ से मतलब यह है कि जीव मन और सुरत के घट में चढ़ाई का अभ्यास सुरत शब्द मार्ग के तरीक़े से करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो निर्मल चैतन्य देश और महा प्रेम और परम आनंद का भंडार है, पहुँच कर विश्राम पावे और जनम मरन से क़ितई छुटकारा हो जावे।।

६ - यह फ़ायदा और किसी मत की परमार्थी कार्रवाई से हासिल नहीं हो सक्ता है क्योंकि जिस क़दर साधन निवृत्ति के हैं, उनका सिद्धान्त शुद्ध माया के देश में है और परमेश्वर और ब्रह्म और पार-ब्रह्म का पद भी उसी देश में वाक़ै है और वहाँ जनम मरन के चक्कर से क़ितई छुटकारा नहीं है और इस देश का महा-परलय के वक़्त सिमटाव हो जाता है।।

७ - जो कि मेहनत और कार्रवाई और बर्ताव परमार्थियों का, चाहे वह परमार्थ ब्रह्म पद की प्राप्ति के वास्ते होवे या कुल मालिक के धाम में पहुँचने के लिये

होवे, थोड़ा बहुत एकसां होता है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले अपने मालिक का निर्णय ब-ख़ूबी कर लेवे कि वह सच्चा और कुल मालिक है या कि रास्ते की किसी मंज़िल और मुक़ाम का अफ़्सर और मुख़्तार है।।

८ - बग़ैर प्रेम और भक्ति के सच्चे मालिक के चरनों में पहुँचना ना-मुमकिन है। इस वास्ते जो भक्ति कि संतों ने और ख़ास कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके आप जारी फ़रमाई है, उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना मुनासिब है ताकि रास्ता आसानी से तै होवे और माया के देश के पार जो कुल मालिक का धाम है, वहाँ पहुँच कर विश्राम पावे।।

९ - प्रेम और भक्ति, पहिले संत सतगुरु के चरनों में करनी चाहिये और चित्त से चेत कर उनके बचन सुन कर और समझ कर उनकी धारना करना ज़रूरी है और संसार के भोगों और पदार्थों से किसी क़दर नफ़रत यानी बैराग करके और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का हासिल करके अंतर में अभ्यास मन और सुरत के चढ़ाने का ध्यान और भजन के वसीले से जिस क़दर बन सके, दुरुस्ती के साथ करना चाहिये, तब कुछ घट में कैफ़ियत नज़र आवेगी और थोड़ा बहुत रस और आनन्द भी मिलता जावेगा और शौक़ और प्रेम आहिस्ते आहिस्ते बढ़ता जावेगा।।

१० - जो संत सतगुरु से मेला न होवे तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से मिल कर और कोई दिन संगत में शामिल होकर सतसंग करे और उपदेश

लेकर अभ्यास शुरू करे और राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की सरन दृढ़ करके उनके मिलने की मन में अभिलाषा रक्खे तो अचरज नहीं है कि वे मेहर और दया से मिल जावें और अपने दर्शन देकर और बचन सुना कर उस की प्रीत और प्रतीत को बढ़ावें।।

११ - जब तक संत सतगुरु से मेला न होवे तब तक जो विरह और प्रेम के साथ अभ्यास किया जावेगा, उसमें भी राधास्वामी दयाल और सन्त सतगुरु की दया थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी और आहिस्ते आहिस्ते तरक़्क़ी होती जावेगी और सतसंग की मदद से कर्म और भर्म कट जावेंगे और निर्मल प्रीत और प्रतीत चरनों में और भी सुरत शब्द मार्ग की बढ़ती जावेगी।।

१२ - ऐसा सतसंग और कार्रवाई सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास की इस वक़्त में सिर्फ़ राधास्वामी संगत में जारी है। जो कोई अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहे, उसको मुनासिब है कि संगत मज़कूर में शामिल होकर सतसंग और अंतर अभ्यास शुरू करे, तब कुछ अरसे के बाद फ़ायदा उस सतसंग और अभ्यास का उसको अपने अंतर और बाहर में आप नज़र आवेगा।।

१३ - कुल मत जो दुनिया में जारी हैं और कुल जीव, चाहे कैसे ही आलिम और फ़ाज़िल और विद्यावान और बुद्धिवान हैं, सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम से बे-ख़बर हैं और किसी मत में रास्ता चलने और चढ़ने का घट में, जो कि निर्विघ्न होवे और जिसका अभ्यास हर कोई ग्रहस्थ या विरक्त और स्त्री और पुरुष आसानी से कर सकें, जारी नहीं है। इस सबब से सिवाय राधास्वामी संगत के जो कि

कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप संत सतगुरु रूप धारन करके क़ायम की, और कहीं इस अभ्यास का पता और भेद इस वक़्त में नहीं मिल सकता है।।

१४ - हर क़िस्म के सवाल का पूरा पूरा जवाब राधास्वामी मत में मौजूद है और जोकि इस मत के उसूल और क़ायदे कुल रचना के उसूल के मुवाफ़िक़ हैं और कोई बात ख़िलाफ़ कायदे क़ुदरत के या बे-मसलहत और बे-फ़ायदे इस मत में जारी नहीं है, इस सबब से यह मत क़ुदरती है और उसमें विद्या और बुद्धि को दख़ल नहीं है, बल्कि जितनी विद्या हैं, वे सब इसी की शाखा समझनी चाहियें। इस वास्ते सच्चे खोजी परमार्थी को चाहिये कि विद्या और चतुराई को छोड़ कर निर्मल और प्रेमी बुद्धि के साथ इस मत के क़ायदों को समझ कर अभ्यास शुरू करे और जो कुछ कि भेद और तरीक़ा राधास्वामी दयाल ने दया करके जीवों के सहज उद्धार के वास्ते प्रकट किया है, उसको अपने घट में आहिस्ते आहिस्ते देखता जावे और मेहर और दया को भी परखता चले, तब उसकी प्रीत और प्रतीत बढ़ेगी और अभ्यास में भी तरक़्क़ी होती जावेगी और इसी ज़िन्दगी में अपने सच्चे उद्धार का सबूत उसको मिल जावेगा।।

१५ - जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको सिवाय राधास्वामी मत के और किसी मत के उसूल और तरीक़े अभ्यास वग़ैरा में (जो कि अक्सर बाहरमुखी हैं और अक़्ली और इल्मी दलीलों से क़ायम किये गये हैं) पूरी शांति हरगिज़ नहीं आवेगी और न उसके मन में सच्चा प्रेम सच्चे मालिक के चरनों में जिसके बग़ैर चलना और चढ़ना मन और सुरत का घट में मुमकिन

नहीं है, पैदा होगा और न उसकी तरक़्क़ी वहाँ का अभ्यास करके मुमकिन है। फिर सच्चा और पूरा उद्धार कि जिससे जनम मरन का चक्कर छूट जावे और देहियों के साथ दुख सुख का भोग करने से रिहाई होवे और अमर और परम आनन्द प्राप्त होवे, किसी सूरत में हासिल होना मुमकिन नहीं है।।

प्रकार अड़तालीसवाँ

जो कि इस दुनिया का सब सामान नाशमान है और यहाँ सुख कम और दुख ज़्यादा है और अख़ीर वक़्त पर आँखों के मुक़ाम से सुरत का खिंचाव होता है, इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है कि इसी ज़िन्दगी में इस रास्ते पर चलने का अभ्यास शुरू कर दे तो अन्तर में दरजे-ब-दरजे विशेष सुख मिलेगा और तकलीफ़ और दुखों से, ख़ास कर मौत के वक़्त, बचाव हो जावेगा।।

१ - यह दुनिया और इसका सब सामान, और भी सब देहियाँ, नाशमान हैं और यहाँ के सुख दुख भी छिनभंगी हैं, लेकिन इस लोक में सुख कम और दुख ज़्यादा है।।

२ - जब कि यह मालूम है कि यह देह और देश और सब सामान और कुटुम्ब परिवार एक दिन ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, तब अक़्लमंद और विचारवान आदमी

को चाहिये कि जहाँ तक मुमकिन होवे, अपना बंधन इस देह और देश में कम करे ताकि उनके छोड़ने के वक़्त बहुत दुख न होवे।।

३ - और यह भी मुनासिब है कि कोई ऐसा जतन करे कि जिसके सबब से इस ज़िन्दगी में कष्ट और क्लेश कम व्यापें और मौत के वक़्त इस देह के छोड़ने में तकलीफ़ कम होवे या बिल्कुल न होवे।।

४ - मरने के वक़्त का हाल देख कर मालूम होता है कि सुरत या जीव का खिंचाव उँगलियों से शुरू होता है और जिस क़दर सिमटाव होता नज़र आता है, उसी क़दर बदन शिथिल और बेकार होता जाता है और अख़ीर वक़्त जब पुतली आँखों की फिर जाती है, तब चोला छूट जाता है और जान निकल जाती है।।

५ - अब मुनासिब मालूम होता है कि जो मुमकिन होवे तो वह जतन किया जावे कि जिससे इसी ज़िन्दगी में जिस रास्ते पर कि अख़ीर वक़्त पर जाना है, उसको पहिले ही से जब कि होश हवास दुरुस्त हैं, खोलना और तै करना शुरू करे तो जिस क़दर पुतली को सरकाने या उलटाने की ताक़त आती जावेगी, इसी क़दर देह और दुनिया के दुख सुख कम व्यापेंगे और अख़ीर वक़्त पर चलने में तकलीफ़ नहीं होगी बल्कि आनन्द आवेगा।।

६ - यह जतन और तरीक़ा जीते जी मरने का है यानी इस क़िस्म का अभ्यास इस ज़िन्दगी में किया जावे कि जिससे सुरत का खिंचाव और सिमटाव मौत के मुक़ाम बल्कि उसके परे तक हो जावे और फिर देह में उतर आवे।।

७ - जिस किसी से यह अभ्यास दुरूस्ती से बन आवे, वह जीते जी अपनी ताक़त से मर कर अमर हो जावेगा और मौत को जीत लेगा यानी फिर उसको मरने का कष्ट और क्लेश नहीं व्यापेगा और जब वक़्त आवेगा या जब वह शख़्स चाहेगा, सहज में बग़ैर किसी क़िस्म की तकलीफ़ के, देह को छोड़ देगा।।

८ - यह अभ्यास इस समय में सिर्फ़ राधास्वामी मत में जिसको सन्त मत भी कहते हैं, जारी है और उस का नाम सुरत शब्द योग है यानी सुरत, रूह, को आवाज-आसमानी या आकाशबानी में लगा कर घट में ऊँचे की तरफ़ को चढ़ाना और देह से न्यारे हो कर ब्रह्मांड और उसके परे सन्तों के देश में सैर करना और फिर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो निर्माया और अमर देश है और महा प्रेम और महा आनन्द का भंडार है, चढ़ कर विश्राम करना।।

९ - जितने मत दुनिया में जारी हैं, उन में अनेक तरह की कार्रवाई वास्ते प्राप्ति मुक्ति के जारी हैं और बहुत से लोग उनको अपनी समझ और ताक़त के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं। लेकिन ज़ाहिर में और इसी ज़िंदगी में उन की हालत ऐसी नहीं बदलती कि जिससे पूरा सबूत इस बात का मिल जावे कि उस साधन की कार्रवाई से ज़रूर एक दिन सच्ची मुक्ति का हासिल होना मुमकिन है। और वह साधन इस दुनिया के दुख सुख के कम व्यापने के वास्ते भी बहुत कम मदद देते नज़र आते हैं।।

१० - सबब इस का यह है कि जो कार्रवाइयाँ हर एक मत में जारी हैं, वह या तो बाहरमुख हैं या अंतरी

पिंड के नाभि और हृदय चक्र के अभ्यास हैं और जो कि इनका ताल्लुक़ सुरत, रूह, की धार के साथ (जो जाग्रत अवस्था में नेत्र के मुक़ाम पर बैठ कर कार्रवाई देह और दुनिया की करती है) नहीं है, इस सबब से उन में मुक्ति का फल बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं हो सकता है।।

११ - ज़ो फ़ायदा और मतलब इस क़िस्म के अभ्यास से हासिल होना चाहिये, वह सिर्फ़ संतों के सुरत शब्द मार्ग की कमाई से प्राप्त होना मुमकिन है क्योंकि वह अभ्यास रूहानी यानी सुरत का है। और किसी मत के अभ्यास को उसमें दख़ल नहीं है।।

१२ - यह रूहानी अभ्यास कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके आप प्रकट किया और उसको इस क़दर सहल कर दिया कि स्त्री और पुरुष और जवान और बूढ़ा उसको आसानी के साथ निर्विघ्न कर सकते हैं और उसका फ़ायदा यानी अपनी मुक्ति होती हुई इसी ज़िंदगी में देख सक्ते हैं और अंतर में आनंद और सरूर हासिल कर के मगन हो सक्ते हैं।।

१३ - इस रूहानी अभ्यास की अब तक किसी मत वाले को ख़बर नहीं हुई और न कुल मालिक राधास्वामी दयाल का पता और भेद किसी ने जाना। इस सबब से जो अभ्यास कि और मतों में जारी हैं, उन में कठिनता और तकलीफ़ और परहेज वग़ैरा बहुत सख़्त बरदाश्त करने पड़ते हैं और फिर भी सच्ची मुक्ति प्राप्त नहीं होती।।

१४ - इस रूहानी अभ्यास की मदद से तन मन और इन्द्रियाँ बस में आवेंगी और जिस क़दर कि विकार मन में हैं, वह सब आहिस्ते आहिस्ते दूर हो जावेंगे क्योंकि जिस क़दर कि कार्रवाई देह और दुनिया की है, वह रूह की ताक़त से जारी है और जब कि अभ्यास करके अभ्यासी को इस क़दर गति हासिल हुई कि जब चाहे जब रूह की धार को पिंड में उतार लावे और जब चाहे जब ब्रह्मांड में या सत्त पुरुष राधास्वामी देश में चढ़ा लेवे तो साफ़ ज़ाहिर है कि सब पसारा पिंड और ब्रह्मांड का उस अभ्यासी के आधीन हो जावेगा यानी मन और इंद्रिय वग़ैरा उस के क़ाबू में आ जावेंगे और वह मालिक की क़ुदरत और अपनी ताक़त को अंतर और बाहर परख कर निहायत मगन होगा।।

१५ - इस रूहानी अभ्यास का भेद और हाल रास्ते और मंज़िलों का सिर्फ़ संत सतगुरु या उनके प्रेमी अभ्यासी सतसंगी से मालूम हो सकता है और उन्हीं की मदद से और भी कुल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से यह रास्ता जारी हो सकता है। इस वास्ते सच्चे खोजी को चाहिये कि पहिले संत सतगुरु को तलाश करे और जो वे न मिलें तो उनकी संगत में शामिल होकर और प्रेमी अभ्यासी से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू कर दे और वह संगत राधास्वामी संगत के नाम से मशहूर है।।

१६ - जिस वक़्त कि सच्चा खोजी प्रेम अंग लेकर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन मन में धारन करके अभ्यास शुरू करेगा तो उसको अंतर में दया और मेहर की परख आती जावेगी और अपनी रक्षा और सम्हाल अंतर और बाहर देख कर चरनों में प्रीत

और प्रतीत विशेष लावेगा और इसी तरह दिन दिन प्रेम की तरक़्क़ी होती हुई आसानी के साथ उसके मन और सुरत की चढ़ाई होती जावेगी और एक दिन धुर धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और मन और माया और काल और कर्म के जाल से क़तई छुटकारा हो जावेगा।।

प्रकार उनचासवाँ

संसार की दौलत और मान बड़ाई बग़ैर शौक़ और मेहनत और मशक्कत के हासिल नहीं होती और फिर भी वह नाशमान है। लेकिन जो कोई परमार्थ की दौलत और बड़ाई हासिल करे, वह हमेशा क़ायम रह सक्ती है और जिस क़दर बाँटी जावे, उसी क़दर बढ़ती है।।

१ - इस दुनिया में हर कोई जब से कि वह होश सम्हालता है, वास्ते प्राप्ति धन और माल और हासिल करने मान बड़ाई और अपनी शोहरत और नामवरी के उम्र भर जतन और मेहनत करता है, फिर भी बहुत कम जीवों को यहाँ की दौलत और बड़ाई मुवाफ़िक़ उनकी चाह के हासिल होती है।।

२ - ज़ाहिर है कि इस दुनिया की दौलत और मान बड़ाई ठहराऊ और संग चलने वाली नहीं है और बहुत मुश्किल से प्राप्त होती है। फिर भी कुल आदमी उसकी चाह में गिरफ़्तार हैं और उसके वास्ते सख़्त मेहनत और तकलीफ़ गवारा करने को तैयार हैं।।

३ - सिवाय नाशमान और संगी न होने के इस दुनिया की दौलत की हिफ़ाज़त में बहुत तकलीफ़ और तरद्दुद होता है और जब कभी इसी ज़िन्दगी में नुक़सान हो जावे यानी वह दौलत हाथ से जाती रहे और मान बड़ाई और नामवरी में भी ख़लल आ जावे तो निहायत दरजे का रंज और क्लेश मन को होता है और उसका दूर होना अक्सर ना-मुमकिन हो जाता है यानी मरते वक़्त तक वह रंज दूर नहीं होता।।

४ - जिस किसी को दुनिया की दौलत और मान बड़ाई थोड़ी बहुत हासिल हो जाती है, उसके मन में अहंकार और नमूद और दिखावा इस क़दर बढ़ जाता है कि वह किसी क़दर आपे को और अपने मालिक को भूल जाता है और ग़रीबों और कमज़ोरों और अपने से कम दरजे वालों को हिकारत की नज़र से देखता है और अक्सर मुआमलों में बे-सबब या बे-मतलब उनके दिल को दुखा देता है या और तरह से सख़्ती करता है या तकलीफ़ पहुँचाता है और इस तरह अलावे ईर्षा वालों के बहुत से लोगों को अपना बद्-ख़्वाह और दुश्मन बना लेता है।।

५ - दुनिया की दौलत हासिल होने में मन और इंद्रिय बहुत ज़बर हो जाते हैं और मामूली और फ़िज़ूल भोगों की चाह उठा कर उन में बे-तकल्लुफ़ और बे-ख़ौफ़ कसरत से बर्ताव करते हैं कि जिसके सबब से अक्सर बीमारी और बदनामी पैदा होती है और कर्मों का भार सिर पर बढ़ता है और आइंदा दुख सहने पड़ते हैं।।

६ - जिन लोगों को बा-वजूद तलाश और मेहनत

और मशक़्क़त के अच्छी तरह गुज़ारे के लायक भी दौलत नहीं मिलती है या सिर्फ़ इस क़दर हासिल होती है कि जिस में मामूली तौर पर या औसत दरजे का गुज़ारा हो जावे और ज़्यादा भोग बिलास नहीं कर सकते, वे अपने से बड़ों को देख कर अक्सर जलते कुढ़ते रहते हैं और अपने मन की चाहें पूरी न होने के सबब से सदा दुखी रहते हैं और बाज़े उनमें से नई नई तरकीबें बग़ैर लिहाज़ मुनासिब और ना-मुनासिब के, वास्ते पैदा करने धन और माल के, सोचते और करते रहते हैं और उनका फल जैसा कि होता है, दुख सुख भोगते रहते हैं।।

७ - ऐसी हालत जगत के जीवों की देख कर सन्त सतगुरु दया करके फ़रमाते हैं कि यहाँ की दौलत और नामवरी के वास्ते मुनासिब तौर पर जिस क़दर कार्रवाई ज़रूरी होवे, करो और उसके हासिल होने पर बहुत होशियारी और सम्हाल के साथ बर्ताव करो कि जिस में पाप और दंड के भागी न होओ और जिस क़दर मौक़ा होवे और फ़ुरसत मिले थोड़ा बहुत वक़्त अपना वास्ते हासिल करने परमार्थी दौलत और शोहरत के, तवज्जह के साथ लगाओ ताकि इस ज़िंदगी में भी आराम पाओ और आइंदा को हमेशा के आनंद के भागी हो जाओ और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बच जाओ।।

८ - यह दौलत, सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु का प्रेम और जिस क़दर बन सके, पहिचान है और वह संत सतगुरु और उन के प्रेमी जन के सतसंग से, और भी अंतरमुख अभ्यास से, हासिल होगी।।

९ - अंतरमुख अभ्यास मतलब सुरत शब्द योग से है यानी मन और सुरत को आसमानी शब्द के वसीले से जो घट घट में हर वक़्त जारी है, समेटना और कुल मालिक के धाम की तरफ़ चढ़ाना और मालिक की क़ुदरत और उसके स्वरूप का कुछ प्रकाश अंतर में देखना।।

१० - सतसंग के बचन सुन कर और समझ कर और अंतर में थोड़ी बहुत कैफ़ियत देख कर सच्चे परमार्थी की हालत बदलती जावेगी यानी उसको किसी क़दर संत सतगुरु की पहिचान आवेगी और फिर उनके और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी।।

११ - जिस क़दर कि सच्चे परमार्थी का शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा, उसी क़दर भक्ति के अंगों में जैसे सेवा और भजन वग़ैरा में उसका बर्ताव ज़्यादा होता जावेगा और फिर उसी क़दर उसकी भक्ति की शोहरत देशों में फैलती जावेगी।।

१२ - इसी तरह जिस क़दर सच्चा परमार्थी अपने रिश्तेदार और बिरादरी और मित्र और पड़ोसी वग़ैरा से सच्चे परमार्थ यानी सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की भक्ति की महिमा सुना कर उन को हिदायत, वास्ते शामिल होने सतसंग के, करेगा, उसी क़दर उसकी परमार्थी समझ और प्रतीत बढ़ती जावेगी और जिस क़दर कि लोग उसकी भक्ति की हालत देखेंगे, उसी क़दर वे भी परमार्थी कार्रवाई में शामिल होवेंगे यानी परमार्थी दौलत प्रेम और दीनता की, उनको भी मिलती जावेगी।।

१३ - जो सुख और आनंद और शान्ति कि परमार्थी दौलत यानी चरनों के प्रेम के पैदा होने और बढ़ने में हासिल होती है, उसके मुक़ाबले में दुनिया के भोग बिलास तुच्छ और ओछे नज़र आते हैं, इस सबब से सच्चा परमार्थी अपने सतगुरु के संग में हमेशा मगन और नि:चिन्त रहता है और दुनिया की तरफ़ से उसके चित्त और मन अक्सर बे-परवाह और उदास रहते हैं और दिन दिन उनकी चाह और मोह घटते जाते हैं और उसी क़दर दुनिया के दुख सुख कम व्यापते हैं।।

१४ - जो कोई विरह और प्रेम अंग लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करेगा, उसको ज़रूर अंतर में निर्मल रस और आनन्द मिलेगा और इसी ज़िन्दगी में उसको अपने सुरत और मन, देह और संसार से थोड़े बहुत न्यारे होते हुए नज़र आवेंगे और संसार का दुख सुख कम व्यापेगा और जिस रास्ते पर कि मौत के वक़्त चलना है, वह रास्ता किसी क़दर खुलता जावेगा और शौक़ उस रास्ते को जल्दी से तै करके निज घर यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुँचने का बढ़ता जावेगा कि जिसके सबब से अख़ीर वक़्त पर निहायत उमंग के साथ उसके मन और सुरत निज घर की तरफ़ को चलेंगे और अंतर में लीला और बिलास देख कर निहायत मगन होंगे कि जिसका असर चेहरे पर, बाद छूटने देह के, साफ़ दिखलाई देता है।।

१५ - ऐसा भारी फ़ायदा सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास और संत सतगुरु के सतसंग का है कि जिस की महिमा बयान करने में नहीं आ सकती। उस कैफ़ियत और आनन्द को प्रेमी जन ही ख़ूब जानते हैं।।

१६ - बड़भागी वह जीव हैं कि जो वास्ते हासिल करने परमार्थ की दौलत के उमंग उठावें और फिर बाहर से, सतगुरु का सतसंग और अन्तर में सुरत शब्द योग का अभ्यास करके प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते जावें। उन्हीं को वह अविनाशी दौलत यानी गहरा प्रेम और विश्वास चरनों में, एक दिन हासिल होगा और फिर दिन दिन उसकी तरक़्क़ी होकर एक दिन धुर धाम में पहुँच कर मगनता और परम शान्ति को प्राप्त होंगे।।

१७ - यह सतसंग और अभ्यास इस वक़्त में राधास्वामी संगत में जो कि कुल मालिक ने दया करके संत सतगुरु रूप धार कर आप क़ायम की, जारी है। जो कोई सच्चा खोजी और दरदी है, उसको मुनासिब है कि संगत मज़कूर में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश लेवे और अभ्यास शुरू करदे। जिस क़दर उसकी लगन चरनों में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के होगी, उसी क़दर उसको फ़ायदा होगा।।

प्रकार पचासवाँ

दुनिया में लोग नशा खाते और पीते हैं कि जिससे रंज और तकलीफ़ न व्यापे और मज़ा और सरूर हासिल होवे। लेकिन उसके पीछे ख़ुमार और सुस्ती और अक्सर बीमारी पैदा होती है। जो कोई घट में शब्द का

अभ्यास करे, उसको ठहराऊ आनंद सहज में प्राप्त हो सकता है और दुनिया के दुख और चिन्ता भी कम व्याप सकते हैं और आख़िर को सच्चा उद्धार मुफ़्त में हो जावेगा।।

१ - दुनिया में बहुत से लोग वास्ते हासिल करने ताज़गी और सरूर और दूर करने थकाव मेहनत वग़ैरा के और भी सोच फ़िकर दुनिया और ग्रहस्थ के, नशे की चीज़ पीते और खाते हैं।।

२ - जिस मतलब से कि लोग नशे की चीज़ खाते या पीते हैं, वह ज़रूर थोड़ा बहुत हासिल होता है। लेकिन बाद उतरने नशे के किसी किसी को सिर दर्द और घुमेरी मालूम होती है या मामूली खाने पीने में कुछ फ़र्क़ आ जाता है और सब नशा करने वालों के दिमाग़ और रगों के मंडल में किसी क़दर अबतरी और परेशानी पैदा होती जाती है कि वह आख़िर को कोई सख़्त बीमारी पैदा करती है कि जिसमें जान जाने का ख़ौफ़ होता है।।

३ - बाज़े नशे की चीज़ें जैसे चरस गाँजा अफ़यून निहायत दरजे का नुक़सान दिमाग़ को पहुँचाती हैं और मनुष्य को थोड़ा बहुत पागल बना देती हैं यानी उसकी अक़ल में फ़ितूर आ जाता है और अपने और कुटुम्ब के नफ़े और नुक़सान का ख़याल बहुत कम या बिलकुल नहीं रहता है।।

४ - इस में कुछ शक नहीं कि पिछले ज़माने में जोगियों ने आम जीवों को थोड़ा बहुत अंतरी ख़ुशी और दुख सुख से आज़ादगी और बचाव का फ़ायदा पहुँचाने

की नज़र से नशे की चीज़ें जैसे शराब और भंग और अफ़यून वग़ैरा प्रकट की कि जिसके थोड़े से इस्तेमाल से दिन भर की मेहनत का थकाव और दुनिया और ग्रहस्थ की चिन्ता और फ़िक्र थोड़ी देर को न व्यापे, लेकिन लोगों ने उसके इस्तेमाल में ज़्यादती की और इस सबब से नुक़सान और तकलीफ़ भोगने लगे।।

५ - यह जीव परमार्थ के अधिकारी न थे इस सबब से बजाय परमार्थी आनंद के उनको नशे का संसारी आनंद देना मुनासिब समझा।।

६ - जो सतोगुनी पुरुष हैं और जो कि अपने मन से आपही विचार कर और दुनिया और उसके भोगों की नाशमानता देख कर सच्चे मालिक और उसके धाम का खोज करते हैं और ऐसा अभ्यास परमार्थी चाहते हैं कि जिससे दिन दिन अंतर में कुछ आनंद मिले और संसार और देह आहिस्ते आहिस्ते किसी क़दर बिसरते जावें, ऐसे बड़भागी लोग परमार्थी कहलाते हैं।।

७ - चाहे कोई किसी दरजे का परमार्थी होवे पर उस को भेद कुल मालिक और उसके धुर धाम का, और भी जुगत चलने और चढ़ने की, बग़ैर संत सतगुरु के मालूम नहीं हो सकती। इस वास्ते जो कोई निर्मल नशा, नाम यानी शब्द का रस, लेना चाहे, उस को चाहिये कि अव्वल संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज करे।।

८ - जो भाग से संत सतगुरु या उनकी संगत से मेला हो जावेगा तो वे बचन सुना कर दुनिया और उसके सामान का भाव और मोह मन से आहिस्ते आहिस्ते निकाल देंगे और कुल मालिक राधास्वामी

दयाल के चरनों की प्रीत और प्रतीत जगा कर दिन दिन बढ़ावेंगे और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश देकर और उसका अंतर में अभ्यास करा कर थोड़ा बहुत रस और आनंद बख़्शेंगे।।

९ - इस अभ्यास का नशा और सरूर बहुत भारी है। एकाएक हर एक से बरदाश्त नहीं हो सक्ता। लेकिन आहिस्ते आहिस्ते ताक़त उसके बरदाश्त की, संत सतगुरु की दया से आती जावेगी।।

१० - जो कोई प्रेम और उमंग के साथ कई दफ़े दिन रात में अभ्यास करेगा तो उसका नशा और आनंद बढ़ता जावेगा और कभी घटेगा नहीं और न किसी क़िस्म की तक़लीफ़ या बीमारी सुरत शब्द मार्ग के अभ्यासी को सतावेगी।।

११ - बल्कि संतों के सतसंगी अभ्यासी को ज़रा सी तवज्जह अंतर में करने से, बग़ैर ख़र्च करने दाम के, थोड़ा बहुत नशा और आनंद हासिल हो सक्ता है और रूहानी ताक़त बढ़ती है और एतदाल क़ायम होता है कि जिसके सबब से कोई बीमारी अभ्यासी को नहीं सताती, सिवाय उसके कि जो राधास्वामी दयाल या संत सतगुरु अपनी मौज से वास्ते काटने कर्म और गढ़त मन और इंद्रियों के और सफ़ाई और चढ़ाई सुरत के, भेजें और ऐसी बीमारी में तकलीफ़ कम होगी और परमार्थी फ़ायदा ज़्यादा मिलेगा।।

१२ - अलावे हासिल होने सरूर और आनंद के सुरत शब्द मार्ग के अभ्यासी के मन और सुरत दिन दिन घट में ऊँचे देश की तरफ़ जहाँ कुल मालिक का धाम है, चढ़ते जावेंगे और जिस क़दर कि चढ़ाई

होवेगी, उसी क़दर माया के घेर से निकास होता जावेगा और देहियों के बंधन जो दुख सुख और जनम मरन के देनेवाले हैं, ढीले होते जावेंगे और आनंद और सरूर बढ़ता जावेगा।।

१३ - इसी तरह दो तीन या चार जनम में अभ्यासी की सुरत मन और माया और काल और कर्म के जाल और घेर से निकल कर निज घर में जो निर्मल चैतन्य देश है और जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त है, पहुँच कर विश्राम पावेगी और अमर आनंद को प्राप्त होगी और जनम मरन से रहित हो जावेगी। इसी का नाम सच्चा और पूरा उद्धार है।।

१४ - अब समझना चाहिये कि जो कोई सिर्फ़ नशे और आनंद के हासिल करने की नज़र से अभ्यास करेगा उसको दिन दिन ज़्यादा से ज़्यादा आनंद और सरूर भी मिलेगा और सच्ची मुक्ति और सच्चा उद्धार सहज में और मुफ़्त हासिल हो जावेगा और फिर काल और माया के घेर में नहीं आवेगा और माया के मसाले की देही धारन करके कष्ट और क्लेश नहीं भोगेगा।।

१५ - इस वास्ते सब जीवों को जो सच्चे और निर्मल और ठहराऊ आनंद के चाहने वाले हैं, मुनासिब है कि संत सतगुरु के चरनों में जाकर उनका सतसंग करें और जिस क़दर बने, उनकी सेवा और भक्ति करें और जब वे मेहर से सुरत शब्द मार्ग का उपदेश देवें तो उमंग और प्रेम के साथ उसका अभ्यास हर रोज़ बिला नाग़ा जारी रक्खें तो उनको वह सरूर और आनन्द आहिस्ते आहिस्ते मिलता जावेगा और जिस क़दर शौक़ बढ़ेगा, उसी क़दर वह आनन्द भी बढ़ता जावेगा।।

१६ - जो जीव कि अधिकारी परमार्थ के नहीं हैं, वह भी जो संत सतगुरु या उनके प्रेमी और अभ्यासी भक्तों के संग में आ जावेंगे तो आहिस्ते आहिस्ते उनके मन में भी कुल मालिक के चरनों का प्यार पैदा होगा और वे भी अंतर के निर्मल और ठहराऊ आनंद के हासिल करने को ख़ुशी और शौक़ के साथ मेहनत करेंगे और कोई दिन में उनकी मेहनत का फ़ायदा उनको मिलना शुरू हो जावेगा।।

१७ - कोई जीव किसी क़िस्म का होवे, वह सन्त सतगुरु के सतसंग में शामिल होने से सबेर अबेर दुरुस्त हो सकता है। इस वास्ते कुल जीवों को चाहिये कि पहिले संत सतगुरु का खोज लगा कर जैसे बने तैसे उनके सन्मुख जावें और दर्शन और सेवा करके और बचन सुन कर थोड़ा बहुत उनको धारन करके अपने भाग जगावें, तो इस ज़िन्दगी में भी, सिवाय संसारी सुक्खों के, कुछ परमार्थी आनन्द उनको हासिल होना मुमकिन है और आख़िर को महा सुख और परम आनन्द के धाम में बासा पाकर हमेशा को सुखी हो जावेंगे।।

प्रकार इक्यावनवाँ

मनुष्य को अक़्ल और समझ और ताक़त मालिक ने दी है कि जिससे यह अपने और अपने मालिक के स्वरूप और धाम का पता और खोज लगा कर दर्शन कर सकता है

और जो यह काम न किया जावेगा तो नर देही मुफ़्त बरबाद जावेगी और जनम मरन और देहियों के दुख सुख से छुटकारा नहीं होगा।।

१ - मालिक ने इस लोक में मनुष्य को सब जीवों में श्रेष्ठ और उत्तम रचा है और उसका सब जानवरों पर थोड़ा बहुत हुक्म जारी है और तत्त्वों और गुनों से भी जो काम चाहता है, लेता है।।

२ - यह बड़ाई मनुष्य स्वरूप की ब-सबब अक़्ल और समझ बूझ के है कि जिसके वसीले से भलाई और बुराई और नफ़े और नुक़सान का तमीज़ होता है और अपने करतार कुल मालिक की थोड़ी बहुत पहिचान कर सकता है।।

३ - मनुष्य के शरीर में कुल रचना का नमूना छोटे पैमाने के मुवाफ़िक़ मौजूद है और रास्ता भी उसकी सैर का जो कोई भेद लेकर अपने घट में चलना चाहे, अंतर में जारी है।।

४ - और जीवों की देह मुवाफ़िक़ नमूने मनुष्य की देह के कुछ कमी बेशी के साथ रची गई है लेकिन उनमें ताक़त समझ बूझ और तमीज़ करने नफ़े और नुक़सान की ब-निस्बत मनुष्य के कम है और इस सबब से उनकी सुरत की चढ़ाई अभ्यास करके नहीं हो सकती है।।

५ - जो कोई नर देह पाकर उसको मुवाफ़िक़ पशुओं और दूसरे जानवरों के खान पान और मेहनत

मशक़्क़त में वास्ते प्राप्ति धन और मान के, ख़र्च करेगा तो वह कुल मालिक और संत सतगुरु की ख़ास दया से महरूम रहेगा यानी अपने घट का भेद और जुगत चल कर पहुँचने की कुल मालिक के धाम में, उसको नहीं मालूम होवेगी और इस सबब से जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से बचाव और छुटकारा नहीं होगा।।

६ - इस वास्ते सब मनुष्यों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपनी नर देह को जो अमोल पदार्थ है, सुफल करें यानी संत सतगुरु का खोज लगा कर जैसे बने तैसे उनके सन्मुख पहुँचे और उनका सतसंग करके और बचन चित्त से सुन कर और विचार कर उनके मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत अपनी रहनी दुरुस्त करें और घट में चलने की जुगत यानी सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अभ्यास जारी कर दें।।

७ - विरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास करने से कुछ कैफ़ियत अंदरूनी यानी रस और आनंद हासिल होगा और कुछ तमाशा क़ुदरत का नज़र आवेगा और इस दुनिया और उसके सामान की नाशमानता और तुच्छता की ख़बर पड़ेगी।।

८ - जो कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त हर एक के घट में मौजूद है, इस वास्ते हर एक शख़्स को जो उनका भेद लेकर चरनों में थोड़ी बहुत प्रीत लावेगा और प्रतीत करेगा और उनके चरनों की धारना के साथ अभ्यास करेगा, उसको थोड़ा बहुत जलवा उनकी दया का मालूम पड़ेगा और दिन दिन

प्रेम चरनों में और शौक़ दर्शनों का बढ़ता जावेगा। तब इस नर देही की क़दर मालूम पड़ेगी।।

९ - बहुत से लोग बड़ी बड़ी मेहनत और कार्रवाई, ख़तरे के साथ, वास्ते प्राप्ति धन और दुनिया की मान बड़ाई के, कर रहे हैं और उसका फ़ायदा वास्ते चंद रोज़ के, इसी ज़िंदगी में मिल जाता है, लेकिन जो कोई वास्ते प्राप्ति दर्शन कुल मालिक के और विश्राम पाने उसके निज धाम में, थोड़ा वक़्त अपना संत सतगुरु के सतसंग और सेवा और अभ्यास सुरत शब्द मार्ग में ख़र्च करेगा, उसको जल्द परचा मिलेगा यानी अंतर में स्वरूप का दर्शन और थोड़ा बहुत शब्द का रस हासिल होगा और आइंदा यह कार्रवाई बढ़ती जावेगी कि जिसके सबब से जनम मरन और देह धर कर दुख सुख भोगने का चक्कर मिट जावेगा।।

१० - जो संत सतगुरु का दर्शन यकायक न प्राप्त होवे तो मुनासिब है कि उनकी संगत में जाकर शामिल होवे और प्रेमी जन से जो संत सतगुरु से उपदेश लेकर अभ्यास कर रहे हैं, प्रीत करे और उनके बचन और बानी को चित्त देकर सुने और पढ़े और विचारे और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर थोड़े बहुत शौक़ के साथ अभ्यास शुरू करे।।

११ - जो शौक़ सच्चा है तो संत सतगुरु भी ज़रूर दर्शन देंगे और अपनी दया का बल देकर प्रेमी अभ्यासी से मुनासिब और ज़रूरी करनी करावेंगे कि जिससे इसकी तरक़्क़ी आहिस्ते आहिस्ते होती जावेगी और प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में बढ़ता जावेगा।।

१२ - इस तरह शौक़ीन अभ्यासी संत सतगुरु का सतसंग और सेवा करके और उनकी मेहर और दया का बल लेकर आहिस्ते आहिस्ते अपना काज बनावेगा यानी एक दिन माया के घेर से निकल कर निज धाम में पहुँचेगा, तब उसको नर देही और संत सतगुरु की क़दर मालूम होवेगी कि कैसे दुर्लभ पदार्थ हैं।।

१३ - जो लोग कि सच्चे मालिक की भक्ति नहीं करते और सन्त सतगुरु के दर्शनों की या उनके सतसंग में मिलने की चाह नहीं रखते और नरकों और चौरासी के दुक्खों का खौफ़ दिल में नहीं लाते और सारी उम्र अपनी संसार के भोग बिलास और उन्हीं के हासिल करने के निमित्त जतन करने में ख़र्च करते हैं, वे लोग असल में पशु समान हैं, सूरत में मनुष्य हुए तो क्या, उनको मालिक का दर्शन और उसके धाम में बासा नहीं मिल सकता है और उनका छुटकारा भी जनम मरन के चक्कर से नहीं हो सकता है।।

१४ - इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि आसमानी और ज़मीनी रचना और क़ुदरत कुल मालिक की देख कर और अपने हाल और देह की कार्रवाई को विचार कर सच्चे मालिक और अपने स्वरूप का खोज़ करें और यह भेद और पता माक़ूल तौर पर और तसल्ली के लायक़ सिर्फ़ राधास्वामी मत में कि जिसको सन्त मत भी कहते हैं, मिल सकता है। और मत जो कि दुनिया में जारी हैं, उन में यह भेद और पता पूरा पूरा मौजूद नहीं है और न जुगत, घट में चलने और चढ़ने की, साफ़ तौर पर और आसान तरकीब के साथ वर्णन की है।।

प्रकार बावनवाँ

प्रीत और शौक़ से कुल कार्रवाई दुनिया की होती है, मगर यहाँ का सब सामान नाशमान है, इस वास्ते वह प्रीत भी जाती रहती है, लेकिन जो कोई मालिक के चरनों में प्रेम लावे, वह दिन दिन तरक़्क़ी पा कर एक दिन प्रेम भंडार में पहुँचा देगा और आइंदा को जनम मरन और देहियों के बंधन से छुटकारा कर देगा।।

१ - जितने काम दुनिया के हैं, और भी जीवों का मेला, आपस में, ब-सबब प्रीत और शौक़ के होता है और काम दुरुस्ती से अंजाम पाते हैं।।

२ - जहाँ शौक़ और मुहब्बत नहीं है, वहाँ आपस में इत्तिफ़ाक़ भी नहीं है और न बिना शौक़ के किसी काम में कोई क़दम रख सकता है।।

३ - बहुत से काम औरत और मर्द मेहनत और मश्क़ करके इस क़िस्म के करते हैं कि जो मामूली आदमियों से किसी तरह नहीं बन सकते हैं और जिनको देख कर बहुत अचरज होता है और उन कामों के करने वालों की मश्क़ और मेहनत पर वाह वाह और तारीफ की जाती है।।

४ - यह सब काम लोग धन और मान बड़ाई के शौक़ से बरसों मेहनत और मशक़्क़त करके सीखते हैं और बाज़े कामों में जान जाने का ख़तरा भी रहता है,

फिर भी उनको सीखते हैं और आप करके दिखलाते हैं।।

५ - यह सब ताक़त शौक़ की है कि मुशकिल और ख़तरनाक कामों को अंजाम देवे। दूसरे की ताक़त नहीं है कि उस काम को दुरुस्ती से कर सके।।

६ - इन सब कामों का फल और फ़ायदा, मुवाफ़िक़ उन कामों के, नाशमान है और जो कोई अर्से तक वह काम क़ायम भी रहे और उनका फ़ायदा भी जारी रहा, तो भी उस काम का करने वाला आप नहीं ठहर सकता और बाद मरने के उसको कुछ हिस्सा उस फ़ायदे का नहीं पहुँच सकता।।

७ - लेकिन जो कोई जिस क़दर मेहनत और मशक़्क़त दुनिया के भारी कामों में करते हैं, उसका दसवाँ हिस्सा भी सच्चे परमार्थ के कामों में करे तो उसको बहुत भारी फ़ायदा अपने सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की प्रसन्नता का हासिल हो सकता है कि जिससे उसको गहरा आनंद अंतर में प्राप्त होवेगा और वह आनंद और उसके साथ प्रेम मालिक के चरनों में दिन दिन बढ़ता जावेगा और एक दिन निज धाम में जो महा आनंद और महा प्रेम का भंडार है, पहुँचा देगा।।

८ - यह मेहनत जब बन पड़ेगी कि जब कुल मालिक और उसके धाम की महिमा सुन कर शौक़ दर्शनों का पैदा होगा और यह महिमा और भेद धाम का, संतों के सतसंग में मालूम होवेगा।।

९ - जो कि परमार्थी कार्रवाई का फ़ायदा बहुत भारी है और वह कार्रवाई सिर्फ़ नर देही में बन सकती

है, इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब है कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते, और भी वास्ते प्राप्ति दर्शन कुल मालिक और बड़ाई परमार्थ के, पहिले खोज संत सतगुरु और उनकी संगत का लगा कर जैसे बने तैसे सतसंग में शामिल होवें और बचन सुन कर और दुनिया और अपनी देह की हालत विचार कर थोड़ा बहुत प्रेम मालिक के दर्शनों का दिल में पैदा करें।।

१० - संसारी प्रीत दुनिया के बड़े आदमियों में बहुत जल्द लग जाती है, लेकिन उसका फ़ायदा बहुत कम है यानी सिर्फ़ मन को एक क़िस्म का मान इस बात का कि हमारी बहुत से बड़े आदमियों से मुलाक़ात है, प्राप्त होता है। लेकिन संत सतगुरु से बढ़ कर दुनिया में कोई नहीं यानी राजा और महाराजा भी उनके सेवक और दास हैं और कुल देवता और मनुष्य बल्कि ईश्वर और परमेश्वर उन की दया के याचक और मँगता हैं और वे ऐन कुल मालिक का स्वरूप या उसके निज पुत्र या निज मुसाहब हैं, फिर जो उनके चरनों में किसी जीव को भाव और प्यार आजावे तो किस क़दर बड़भागी उसको समझना चाहिये कि उनकी दया के वसीले से वह एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर उसका दर्शन हासिल कर सकता है और माया और मन और काल और कर्म के घेर से न्यारा होकर अमर लोक में जो परम आनंद का भंडार है, बासा पा सकता है।।

११ - बड़े अफ़सोस का मुक़ाम है कि दुनिया के तुच्छ और नाशमान फ़ायदे या मान बड़ाई के वास्ते जीव सख़्त मेहनत और तकलीफ़ उठावें और ख़तरनाक संग इख़्तियार करें और परमार्थी बे-अंदाज़े ख़ुशी और

आनंद के हासिल करने के लिये और सब से भारी दुक्ख जनम मरन के दूर करने के वास्ते थोड़ी सी मेहनत और हाज़िरी संत सतगुरु के सतसंग में करना नहीं चाहते और बा-वजूदे कि सब जीव देह धर के और अनेक तरह के बन्धनों में अपने मन को बाँध कर दुख सुख भोग रहे हैं और जनम मरन का अत्यंत दुख और क्लेश सहते हैं, फिर भी कोई इस बात का खोज नहीं करता कि इस क्लेश और बारम्बार देह धरने से कैसे बचाव हो और अमर सुख का स्थान कैसे मिले।।

१२ - यह बात सही है कि जीवों को कोई सच्चा और पूरा हितकारी और समझाने वाला नहीं मिलता है और जो कोई परमार्थी लिबास में (जो गुरुवाई का दावा कर रहे हैं) मिलते भी हैं सो वह स्वार्थी यानी धन और मान के ख़्वास्तगार नज़र आते हैं और सच्चे परमार्थ से महज़ बे-ख़बर और नादान मालूम होते हैं। हर जगह ऐसे लोगों का हुजूम है और यह संसारी जीवों को ख़ूब भरमाते हैं और जिस क़दर बन सके, उनसे धन खैंचते हैं और असली परमार्थ का भेद एक किनके के मुवाफ़िक़ भी नहीं दे सकते हैं।।

१३ - जब और जहाँ संत सतगुरु या साध गुरु प्रकट होते हैं, उनकी शोहरत भी बहुत दूर तक फैलती है और अधिकारी जीव बराबर चरनों में चले आते हैं और उपदेश लेकर अभ्यास में लग जाते हैं लेकिन आम तौर पर दुनिया के जीव कमोबेश उनके निंदक हो जाते हैं और उनके दर्शन और सतसंग से दूर भागते हैं। इसका सबब सिवाय उन जीवों की भारी अभागता के और क्या कहा जावे।।

१४ - असल में जीव परमार्थ की तरफ़ से बे-परवाह मालूम होते हैं और हरचंद क़ुदरत और रचना कुल मालिक की ज़मीन और आसमान पर रंग-ब-रंग देखते हैं, फिर भी खोज इस बात का कि वह कुल मालिक कैसा है और कहाँ है, किसी के दिल में पैदा नहीं होता और न उससे मिलने की कोई चाह उठाता है।।

१५ - दुनिया के भोग बिलास जो कि तुच्छ और नाशमान हैं, इस क़दर जीवों के मन को अपनी तरफ़ खैंच रहे हैं कि उनसे छूटना निहायत मुशकिल हो गया है और ब-सबब कसरत धोखेबाज़ों और ठगई करने वालों के जीवों के मन में अनेक तरह के शक और सन्देह पैदा हो गये हैं कि जिसके सबब से वे सन्तों के बचन की प्रतीत नहीं करते बल्कि उनके सन्मुख जाने में डरते हैं कि कहीं ऐसा न होवे कि दुनिया से रिश्ता मुहब्बत का और उस का संग ढीला हो जावे या छूट जावे। यह समझ निहायत नादानी की है और विद्या और बुद्धिमान लोगों के वास्ते निहायत शर्म की बात है और भारी दाग़ मूर्खता और दुनिया के मोह का उनकी अक़्ल और दानाई (समझ बूझ) पर लगाती है।।

१६ - दुनिया में बहुत से काम और रोज़गार, जैसे सिपाहीगरी का, ऐसे हैं कि जिन में सरीह ख़तरा जान जाने का रहता है और अक्सरों की जान जाती रहती है, फिर भी लोग उन कामों को ब-दस्तूर करते हैं और अपनी जान के नुक़सान का खौफ़ नहीं लाते हैं, बल्कि जब भारी लड़ाई का मौक़ा होता है तो अपने आप दरख़्वास्त करके नामवरी और तरक़्क़ी के लालच से लड़ाई पर जाते हैं और जान जाने का और अपने

कुटुम्ब परिवार के छोड़ने का ज़रा भी सोच और ख़्याल नहीं करते।।

१७ - फिर बड़े अचरज की बात है कि बा-वजूदे कि सन्त घर बार और रोज़गार किसी का नहीं छुड़वाते और लोगों को ग्रहस्थ में रह कर अभ्यास करने की जुगत बताते हैं, फिर भी लोग ख़ौफ़ कम हो जाने मुहब्बत दुनिया और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा का, मन में लाकर, और भी परशादी लेने से घबरा कर, सतसंग से दूर रहते हैं और अपने जीव के कल्यान के वास्ते उस में शामिल होना नहीं चाहते।।

१८ - इससे ज़ाहिर है कि आम तौर पर जीवों को शौक़ परमार्थ का और फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का और ख़ौफ़ मौत और दुक्खों का बहुत कम है और सन्त और महात्मा और हर एक मत के आचार्य के बचनों का पूरा पूरा यक़ीन नहीं है। जो कोई मतलब दुनिया का पेश होवे या कोई उम्मेद फ़ायदे की मालूम पड़े या खौफ़ किसी क़िस्म के नुक़सान का पैदा होवे तो कुछ कार्रवाई परमार्थ की ज़ाहिरी तौर पर करते हैं और सिर्फ़ इस मतलब से कि कुल मालिक प्रसन्न होवे और अपने धाम में बासा देवे और जीव जनम मरन के चक्कर से छूट जावे, बहुत कम शख़्स परमार्थी कार्रवाई करने को तैयार होते हैं, ख़ास कर मुताबिक़ सन्त मत के अभ्यास करना जिस में प्रेम मालिक के चरनों में पैदा करना और तन, मन और इन्द्रियों को रोकना और ठहराना पड़ता है, कोई नहीं पसन्द करता है।।

१९ - संत मत में परशादी की भारी क़दर और महिमा है और जब तक कि कोई प्रेम के साथ उस को

न माँगे, तब तक किसी को दी नहीं जाती है और यह चाल कुछ नई नहीं है। सब मतों में और मंदिरों में प्रसाद तक़सीम होता है और लोग उसकी बड़ी महिमा समझ कर और तबर्रुक जान कर शौक़ के साथ लेते हैं। जो कोई कि परशादी से नफ़रत करता है, उसको ग़ौर करना चाहिये कि वह जानवरों की परशादी अक्सर खाता है, जैसे चिड़िया और चूहा और बिल्ली और मक्खी और चींटी वग़ैरा की जो अक्सर खाने पीने की चीज़ों को जूठा कर जाते हैं और बहुत से तमाशबीन वेश्याओं के साथ जिनकी क़ौम का कुछ ठिकाना नहीं है, खाते पीते हैं और उनका मुख चूमते हैं। इन लोगों की जात पाँत का कुछ ठिकाना नहीं और वृथा अहंकार अपनी जात और मान बड़ाई का संतों के मुक़ाबले में जहाँ इन को हर तरह से दीनता करनी मुनासिब है, करते हैं और उनकी दया से जो जीव की कल्यान-कर्त्ता है, महरूम रहते हैं।।

२० - मुनासिब तो यह है कि संतों की महिमा सुन कर और समझ कर ज़रूर उनके चरनों में जाकर शौक़ के साथ सतसंग और सेवा और प्रेम करें और अपने जीव को चौरासी के चक्कर से बचावें, नहीं तो अपनी ग़फ़लत और बे-परवाही का नतीजा भोगना पड़ेगा यानी चौरासी के चक्कर में भरमते और बार बार देह धर कर दुख सुख सहते रहेंगे और सच्चा उद्धार उनका जब तक संत सरन में आकर सच्ची दीनता और प्रीत और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास थोड़े बहुत शौक़ के साथ नहीं करेंगे, हरगिज़ नहीं होगा।।

प्रकार तिरेपनवाँ

दुनिया में बहुत से लोग जवाँमर्दी और बहादुरी का काम वास्ते प्राप्ति धन और नामवरी के करते हैं, बल्कि जान तक दे देते हैं, पर उसका फ़ायदा चंद रोज़ का है। लेकिन जो कोई मन और माया और काल और कर्म से लड़े, उसको सच्चे मालिक का धाम और चरनों में बासा मिल सकता है कि जहाँ अमर और परम आनंद प्राप्त होगा और जनम मरन का दुख और किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश नहीं है।।

१ - दुनिया में बहुत से लोग वास्ते प्राप्ति धन और नामवरी और तरक़्क़ी ओहदे वग़ैरा के बहुत से काम बहादुरी और जान जोख़ों के करते हैं और सख़्त मौक़ों पर और दूर देश में जाकर लड़ाई में शामिल होते हैं और ख़ूँख़ार जानवरों से शिकार के वक़्त लड़ते हैं या वास्ते प्राप्ति धन और शोहरत अपनी ताक़त और बहादुरी के, उनको मारते हैं।।

२ - संत कहते हैं कि यह लड़ाई हरचंद कठिन और जान जोख़ों की है, पर किसी क़दर आसान है। लेकिन जो कोई मन और माया से लड़े और इन दोनों को अपने क़ाबू में लावे, वही सच्चा और पूरा सूरमा है और वही संत सतगुरु और मालिक के दरबार में आदर और बड़ा दरजा पावेगा।।

३ - आदमियों और जानवरों से हथियार के साथ लड़ाई में एक बार और एक वक़्त की तकलीफ़ होती है, लेकिन मन और माया के साथ लड़ाई में दम दम की मौत और तकलीफ़ है। जो कोई इसको कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया का बल लेकर झेले और मैदान से क़दम न हटावे और भक्ति दिन दिन बढ़ावे, वही सच्चा बहादुर है और वही काल और कर्म को जीतेगा और वही एक दिन कुल मालिक के दरबार में दख़ल पावेगा।।

४ - हर किसी की ताक़त और हिम्मत नहीं है कि मन और माया का मुक़ाबला करे क्योंकि जब तक उसके दिल में संसार के भोग बिलास की बासना धरी हुई है और अनेक तरह की चाहें उसके पूरा करने के निमित्त उठती रहती हैं और वह उनके मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत जतन करता रहता है तो वह मन और माया का क़र्ज़दार है और जब तक कि क़र्ज़ अदा नहीं करेगा, तब तक उनके इलाके से बाहर नहीं जा सकता है और न किसी तरह से उनका मुक़ाबला कर सकता है और ऐसा शख़्स संतों के सतसंग में नहीं ठहर सकता और न उनकी जुगत की कमाई उससे बन सकती है।।

५ - जिस किसी के दिल में संसार का हाल और उसकी नाशमानता देख कर थोड़ा बहुत बैराग दुनिया की तरफ़ से पैदा हुआ है और कुल मालिक का खोज कि वह कहाँ है और कैसे मिले, मंज़ूर है तो ऐसा शख़्स संतों के सतसंग का अधिकारी है और संत सतगुरु अपनी दया से उसका संजोग अपने चरनों में आप लगावेंगे।।

६ - ऐसा शख़्स सतसंग में शामिल होकर दुनिया के भोगों की नाशमानता और तुच्छता का हाल संतों के मुख से सुन कर उनसे नफ़रत करेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु और उनके प्रेमी जन की महिमा सुन कर उन में प्रीत और भाव लावेगा और उमंग के साथ मन और माया को अपनी परमार्थी कार्रवाई में विघ्न कारक समझ कर उनसे मुक़ाबला और लड़ाई करने को तैयार होगा।।

७ - जो ख़्वाहिश या तरंग वास्ते प्राप्ति ज़रूरी सामान के ब-नज़र अपने और अपने कुटुंबियों के गुज़ारे के औसत दरजे के मुवाफ़िक़ मौज से पैदा होवे वह मुबाह है। लेकिन फ़िज़ूल तरंगें और फिज़ूल ख़्वाहिशें वास्ते प्राप्ति भोग बिलास और दुनिया की मान बड़ाई के परमार्थी जीव को उठाना मनै हैं क्योंकि इस में मन और माया ताक़त पाते हैं।।

८ - जो कोई मन और माया को जीतने का इरादा करके और संत सतगुरु का बल लेकर लड़ाई शुरू करेगा, वही आहिस्ते आहिस्ते उन पर फ़तह पावेगा। यह लड़ाई बड़ी भारी और सख़्त है और बग़ैर मदद और दया और मेहर संत सतगुरु के कोई मन और माया का मुक़ाबला नहीं कर सकता।।

९ - मुक़ाबला करने वाले अभ्यासी को लाज़िम होगा कि अपने मन की चौकीदारी रक्खे और उसकी चाल ढाल को संत सतगुरु के बचन के मुवाफ़िक़ दुरुस्त करे यानी जब जब मन और माया के ग़लबे के वक़्त कोई तरंगें फ़िज़ूल या ना-मुनासिब दिल में पैदा होवें तो उनको फ़ौरन कुल मालिक राधास्वामी दयाल

और संत सतगुरु की दया के बल से काटे और हटावे।।

१० - यह बात सच्चे परमार्थ की कार्रवाई में बहुत ज़रूर दरकार है क्योंकि जो इस तरह पर मन की गढ़त न की जावेगी तो वह हमेशा निज मन और माया का, और भी उनके रचे हुए पदार्थ यानी भोग बिलास का, ग़ुलाम बना रहेगा और बजाय उनसे लड़ाई लेने के उलटी उनकी ताबेदारी करेगा।।

११ - जिस किसी को संत सतगुरु सच्चा प्रेमी और खोजी देखते हैं, उसको चरनों में लगा कर और सतसंग के बचन सुना कर दिन दिन ताक़त और मदद देते हैं और अनेक तरह की जुगतें समझा कर मन और माया से लड़वाते हैं।।

१२ - यह लड़ाई वर्षों बल्कि जनम भर जारी रहती है। तब कुछ मन ढीला और कमज़ोर होकर किसी क़दर बस में आता है और प्रेमी की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ काम करता है यानी अपनी संसारी चाल और आदत छोड़ता जाता है और परमार्थी रहनी और बर्ताव इख़्तियार करता जाता है।।

१३ - ऐसे प्रेमी और दर्दी अभ्यासी को गुरुमुख कहते हैं यानी उसके मन में सिवाय मालिक की प्रसन्नता और उसके दर्शन हासिल करने के और कोई चाह ज़बर नहीं रहती है और जिनको संसार और उसके भोग बिलास प्यारे लगते हैं और उन्हीं के हासिल करने के निमित्त जतन करते रहते हैं वे मनमुख कहलाते हैं यानी मन और इन्द्रियों के कहने में चलना उनकी आदत है और जो कोई उस में कुछ हर्ज डाले

या परमार्थी समझौती सुनावे, वह उनको बैरी नज़र आता है।।

१४ - गुरुमुख यानी सच्चे प्रेमी जन सच्चे मालिक के प्यारे हैं। उनको मालिक सच्ची और भारी बड़ाई देता है और एक दिन अपने महल में विश्राम देकर हमेशा को सुखी कर देता है।।

१५ - मनमुख जीव काल और माया के आधीन रहते हैं और उन्हीं के देश में बारम्बार देह धर कर जैसा तैसा सुख दुनिया में पाते हैं और अपनी करनी अनुसार दुख भी भोगते हैं और जनम मरन के चक्कर से उनका बचाव नहीं हो सकता है।।

१६ - इसी वास्ते सन्त सतगुरु दया कर के सब जीवों को समझाते हैं कि जो अमर आनन्द की प्राप्ति चाहो तो गुरुमुखता इख़्तियार करो और मन और माया से चित्त में विरोध रक्खो और यह काम सतसंग की मदद और सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास से बनना मुमकिन है।।

१७ - ऐसा सतसंग और अभ्यास और मन और माया के आहिस्ते आहिस्ते, सन्त सतगुरु के बल से, जीतने की कार्रवाई राधास्वामी मत में जारी है। ऐसी आसान जुगती आज तक किसी मत और किसी वक़्त में प्रकट नहीं हुई। वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को निहायत बलहीन और दुखी देख कर आप संत सतगुरु रूप धारन करके समझाई है।।

१८ - जो कोई सच्चा प्रेमी और दर्दी है और हिम्मत और इरादा पक्का, मन और माया के मारने का, रखता

है, उस को चाहिये कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर और राधास्वामी संगत में शामिल होकर उपदेश लेवे और अभ्यास शुरू करे तो वह एक दिन सन्त सतगुरु की दया के बल से इन दोनों पर फ़तह पावेगा और निर्मल और आज़ाद होकर माया के घेर के पार कुल मालिक के धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और परम सुख और परम आनन्द को प्राप्त होगा। वहाँ किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश नहीं है। हमेशा निर्मल आनंद ही आनंद रहता है यानी वह स्थान महा आनन्द और महा प्रेम का भंडार है और काल और कर्म का वहाँ मुतलक़ दख़ल नहीं है।।

प्रकार चौवनवाँ

दुनिया के भारी काम और दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई करके लोग चाहते हैं कि वह सब पर प्रकट होवे ताकि लोग उनकी और उन कामों की महिमा करें। लेकिन राधास्वामी मत के सतसंगी जो कुछ सेवा और काम भक्ति के ज़ाहिर में और भजन और ध्यान अन्तर में करते हैं, वे उन को गुप्त रखना चाहते हैं और प्रकट करने में डरते हैं कि उनका अकाज न हो जावे और सच्चे परमार्थ की कार्रवाई का गुप्त रहना ही मुनासिब है।।

१ - दुनिया में ऐसा दस्तूर हो रहा है कि जो जीव कोई भारी काम दुनिया का करते हैं या कोई नई बात प्रकट करते हैं तो वह उसको भारी शोहरत देते हैं और इसमें दो मतलब हैं, एक तो यह कि उनकी और उस काम की सब कोई महिमा करें और दूसरी यह कि जो वह काम मुफ़ीद-आम है, तो सब कोई उससे फ़ायदा उठावें।।

२ - इसी तरह जो काम परमार्थ और पर-उपकार के करते हैं, उनको भी ख़ूब मशहूर करते हैं ताकि उनकी और उन कामों की महिमा हर कोई करे।।

३ - शोहरत देने में इस क़दर फ़ायदा है कि अजान जीवों को नई बात और नये कामों की ख़बर पड़ती है और उनका फ़ायदा देख कर, और लोग भी वैसी ही कार्रवाई करने को तैयार होते हैं और अपनी नामवरी और दूसरों के फ़ायदे की नज़र से अच्छे कामों में मेहनत और कोशिश करते हैं।।

४ - लेकिन यह सब काम ज़ाहिरी हैं और जो कुछ कि फ़ायदा जीवों को इन से हासिल होता है, वह भी ज़ाहिरी है, चाहे वह इल्मी और अक़्ली होवे या व्यवहारी या बाहरमुख परमार्थी होवे।।

५ - जो कि बाहरमुख परमार्थी काम पिछले वक़्त में महात्माओं ने जारी किये, वे ब-तौर संजम के थे और उनमें कुछ मतलब सफ़ाई का था सो ब-सबब प्रकट कर देने उनके, अवाम को, वह फ़ायदा जाता रहा और उन कामों के करने वाले अपनी वाह वाह और महिमा सुन कर अहंकारी हो गये और रफ़्ते रफ़्ते मूर्ख और नादान रह गये और उन कामों में सिर्फ़ धन और मान

बड़ाई के हासिल करने का मतलब रह गया और परमार्थ जाता रहा।।

६ - यह बड़ा भारी नुक़सान जीवों का हुआ कि मिस्ल दुनिया के कामों के परमार्थी कामों में भी चाह धन और मान बड़ाई की हर एक के मन में धँस बैठी और ग़ालिब हो गई और परमार्थ से ख़ाली रह गये।।

७ - मालूम होवे कि सच्चे परमार्थ की कार्रवाई दुनिया की कार्रवाई से उलटी है यानी उस में जब चाह शोहरत और मान बड़ाई की पैदा होगी, तब ही उस का फ़ायदा जाता रहेगा और धन का लोभ मन में धँस बैठेगा और अनेक तरह की ख़राबी पैदा करेगा यानी भोगों की तरफ़ झोका देकर सुरत और मन को संसार में फँसावेगा।।

८ - इस वास्ते संतों ने फ़रमाया है कि असली परमार्थ उसका नाम है कि जिस में जीव मालिक से मालिक को ही चाहे और दूसरी चाह किसी क़िस्म की, चाहे परमार्थी होवे या संसारी, पेश न करे।।

९ - जो कि मन का ख़मीर यानी मसाला माया के मसाले से मेल रखता है और इसी सबब से उसका झुकाव इन्द्रियों के भोगों की तरफ़ ज़बर रहता है, इस वास्ते पहिले ऐसी कार्रवाई करनी चाहिये कि जिसमें मन संसारी ख़ुशी या बड़ाई या फ़ायदा समझ कर या उसकी आसा बाँध कर फूलने न पावे।।

१० - बल्कि मुनासिब यह है कि परमार्थी कार्रवाई इस क़िस्म की या इस तौर से की जावे कि जिसमें मन सुस्त और डरा हुआ और शरमिन्दा और बुझा हुआ

और भिंचा हुआ रहा आवे तो उससे अंतरी अभ्यास परमार्थ का दुरुस्त बनेगा और अंतरी फ़ायदा सफ़ाई और चढ़ाई और सिमटाव वग़ैरा का ज़्यादा हासिल होगा।।

११ - हरचंद मन का हाल मुलाहज़ा करके और महात्माओं ने भी यही बात कही है, पर जीवों ने उसको न माना और इस सबब से नुक़सान में रहे और बजाय हासिल करने सफ़ाई और चढ़ाई के, मलीनता बढ़ाई और नीचे की तरफ़ को झोका खाया।।

१२ - इसमें कुछ शक नहीं कि जीव बहुत निबल है और मन और इन्द्रियाँ उस पर ग़ालिब और ज़बर रहती हैं। इस सबब से बारम्बार संसार और उसके भोगों की तरफ़ झोका खाता है और जब तक कि संत सतगुरु का हाथ उसके सिर पर न होवे यानी वे इसकी निगरानी और ख़बरगीरी न करें, तब तक यह अपने आप से कभी बच नहीं सकता और न संसार रूपी सागर से इसका उबार मुमकिन है।।

१३ - जिस किसी मत में जब तक कि पूरे गुरु यानी साध प्रकट होते रहे और जीव उनकी तरफ़ रुजू लाते रहे, तब तक परमार्थी चाल और व्यवहार जिस दरजे का कि था, दुरुस्त जारी रहा और जब वे गुप्त हो गये और विद्यावान और बुद्धिवानों का दौर आया, तब कहने और समझने के वास्ते तो बातें बहुत दुरुस्त और मज़बूत रहीं, लेकिन ब-सबब न होने अमल यानी अभ्यास के, उनकी कार्रवाई जारी न हुई और मन और इन्द्रियाँ और उनके भोग सब पर ग़ालिब रहे, बल्कि ख़ुद विद्यावान और बुद्धिवान उनके ज़ोर से न बच सके

क्योंकि वे बे-अमल थे और अभ्यास के तरीक़े से ना-वाकिफ़ और बे-ख़बर।।

१४ - संत अथवा राधास्वामी मत में ऐसी दया ख़ास कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की है कि जो जीव सच्चे मन से उन की सरन में आया है और जिसको उन्होंने अपनाया है, उसकी सम्हाल और रक्षा सब तरह से वे आप फ़रमाते हैं और सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करा के उसके मन और सुरत को समेटते और चढ़ाते जाते हैं और माया और उसके भोगों से उसको रास्ते में बचाते जाते हैं।।

१५ - सन्तों ने अपनी मौज से अनेक तरकीब जारी फ़रमाई हैं कि जिससे उनके सेवक मन और माया और दुनिया और उसके भोगों के विघ्नों से जहाँ तक मुनासिब है, बचे रहें।।

१६ - जब सन्त सतगुरु सतसंग जारी फ़रमाते हैं तो उस वक़्त सब इष्टों का खंडन करके यानी उन को ओछा दिखा कर एक कुल मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट और निश्चय बँधवाते हैं और सब जुक्तियों और जोग अभ्यास वग़ैरा को खंडन कर के एक सुरत शब्द योग को मंडन करके उसका उपदेश जीवों को देते हैं और फ़रमाते हैं कि कुल मालिक के चरन में सब इष्ट आगये और इसी तरह सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में सब अभ्यास और जुक्तियों का फ़ायदा और असर हासिल होता है।।

१७ - इन बचनों को सुन कर संसारी और नादान जीव, और भी विद्यावान और बुद्धिवान, बे समझे बूझे निंदा करते हैं और राधास्वामी मत के सतसंगियों को

मूर्ख और नादान देखते हैं और उन पर तान मारते हैं और हँसी उड़ाते हैं। इस सबब से सतसंगी और सतसंगिन हमेशा दुनिया के लोगों से जो कि निंदा करते है, डरते रहते हैं और उनको विघ्न रूप समझ के उनसे मेल मिलाप करना या रखना नहीं पसंद करते और न अपनी भक्ति और अभ्यास की करतूत को उन पर ज़ाहिर करना चाहते हैं क्योंकि जिस क़दर कि सतसंगियों के प्रेम और भक्ति और अभ्यास में तवज्जह का हाल सुनते हैं, उसी क़दर विरोध चित्त में बढ़ाते हैं और उस कार्रवाई में विघ्न और हर्ज डालना चाहते हैं।।

१८ - सन्तों का शब्द मार्ग ऐसा भारी और अमोल है कि कोई उसकी महिमा नहीं कर सकता और जिस किसी से उसका अभ्यास थोड़ा बहुत विरह और प्रेम के साथ बन आवे, उसकी बड़ भागता की भी महिमा कहने में नहीं आ सकती। फिर जो सन्त मौज से निंदक न पैदा करते तो उन के सतसंगियों का मन अपने मत की महिमा सुन कर बहुत फूलता और बढ़ता और अभ्यास में भारी ख़लल डालता। इस विघ्न से सहज में सन्तों ने बचाया बल्कि बजाय फूलने और ख़ुश होने के निंदकों के उल्टे सीधे बचन सुन कर अपने मन में भिंचते और मुरझाते हैं और परमार्थ में मन का सिमटाव और दुनिया की तरफ़ से हटाव, वास्ते दुरुस्ती अभ्यास ध्यान और भजन के, बहुत ज़रूर है।।

१९ - इसी तरह अंतर में सच्ची दीनता और बे-कली और तड़प पैदा करने और विरह को जगाये रखने के वास्ते भजन और ध्यान का रस और आनन्द

बराबर नहीं देते हैं और जो कि सिद्धान्त पद उनका यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम ऊँचे से ऊँचा और बहुत दूर दराज़ है, इस सबब से अभ्यासी अपने तईं कितने ही अर्से तक ओछी हालत में देख कर अपने मन में शरमिंदा और उदास रहता है और वास्ते तरक़्क़ी के पुकार और प्रार्थना करता रहता है और अपने आप को दीन अधीन और ओछा और नीच देखता रहता है कि जिसके सबब से उसकी सफ़ाई और चढ़ाई अंतर में गुप्त और जल्द होती रहती है और शौक़ बढ़ता रहता है।।

२० - यह फ़ायदे सतसंगी को सन्त सतगुरु और कुल मालिक राधास्वामी की दया से सच्चे तौर पर सहज में और बग़ैर अपनी ख़ास मेहनत और कोशिश के हासिल होते हैं। जो कोई चाहे कि पोथियाँ पढ़ कर और भेद और हाल सुन कर और समझ कर ऐसी हालत मन की यानी दीनता और सिमटाव और उदासीनता वग़ैरा पैदा करे तो किसी तरह मुमकिन नहीं। चाहे पोथी पढ़ने के वक़्त थोड़ी देर को कुछ हालत बदल जावे, मगर वह क़ायम नहीं रह सकती बल्कि उल्टे अहंकार और मान पैदा होकर भक्ति और अभ्यास में ख़लल डालेंगे।।

२१ - इस वास्ते कुल जीवों को जो सच्चा परमार्थ कमाया चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि जो कुछ कार्रवाई करें सन्त सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर और उनसे उपदेश लेकर करें तो उनके सिर पर दया और रक्षा का हाथ रहा आवेगा और उनकी सम्हाल हर

तरह से जारी रहेगी और अभ्यास में गुप्त तरक़्क़ी होती जावेगी।।

२२ - जो लोग संत सतगुरु का उपदेश और उनकी सरन नहीं लेवेंगे और ओछे और झूठे गुरुओं से मिल कर या पोथियाँ पढ़ कर अपने तौर पर कार्रवाई परमार्थ की करेंगे तो माया और काल अनेक तरह के विघ्न कि जिनकी इन लोगों को ख़बर भी न होगी, डाल कर उनसे अभ्यास छुड़वा देंगे या किसी क़िस्म के सिफ़ली यानी नीचे के दरजे के अभ्यास में लगा कर और थोड़ा रस देकर अहंकारी और मानी बना देंगे कि जिससे आइंदे की तरक़्क़ी और अभ्यास और रास्ते का चलना बंद हो जावेगा।।

२३ - इस वास्ते परमार्थी जीवों को मुनासिब है कि जब वे अंतरमुखी अभ्यास अपने घट में शुरू करें तो पूरे गुरु या पूरे गुरु के प्रेमी अभ्यासी सतसंगी से उपदेश लेकर कार्रवाई जारी करें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन अपने हिरदे में धारन करें और सिवाय सुरत शब्द मार्ग के दूसरा अभ्यास न करें तो राधास्वामी दयाल की दया से उनका अभ्यास निर्विघ्न जारी हो जावेगा और सम्हाल और रक्षा रहेगी और मौज से संत सतगुरु का दर्शन हो जावेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का अंतर में कुछ जलवा नज़र आवेगा कि जिस के सबब से अभ्यासी को मदद और ताक़त मिलेगी और अभ्यास बिला नाग़ा थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ बनता जावेगा और रफ़्ते रफ़्ते एक दिन पूरा काम बन जावेगा।।

* * * * *

प्रकार पचपनवाँ

दुनिया में जीव अनेक तरह के ख़ौफ़ मान रहे हैं और अनेक तरह के शौक़ कर रहे हैं, लेकिन जिस के मन में सच्चे मालिक का खौफ़ और दर्शनों का शौक़ पैदा हुआ, वही सतगुरु से मिल कर एक दिन कुल मालिक के धाम में बासा पावेगा। बग़ैर सतगुरु के कोई माया के जाल से नहीं निकल सकता है।।

१ - दुनिया में जीव इन बातों का बहुत ख़ौफ़ मानते हैं :- (१) - नुक़सान जान (२) - नुक़सान तन्दुरुस्ती (३) - नुक़सान धन और माल (४) - नुक़सान इज़्ज़त व आबरू (५) - नुक़सान औलाद और कुटुम्ब परिवार, और बहुत सी पूजाएँ और ख़ैरात और झगड़े बखेड़े इन्हीं ख़ौफ़ों के सबब से करते हैं।।

२ - सिवाय इन ख़ौफ़ों के कुटुम्ब और बिरादरी और हाकिम का भी ख़ौफ़ मानते हैं और उसके सबब से बहुत से बुरे और ना-मुनासिब कामों से बचते हैं।।

३ - बाज़ों के मन में ख़ौफ़ मौत और नरकों का भी थोड़ा बहुत असर करता है और उसके सबब से वे थोड़ी बहुत करनी परमार्थ की, वास्ते प्राप्ति स्वर्ग या बहिश्त के, जैसा कि उनकी बिरादरी या क़ौम या देश में जारी है, करते हैं।।

४ - इसी तरह लोगों के दिल में शौक़ भी अनेक तरह के पैदा होते हैं, जैसे हासिल करने कोई विद्या या हुनर या धन माल या औलाद या इज़्जत व नामवरी और भोग बिलास का या देखने सैर व तमाशा या दरियाफ़्त करने कैफ़ियत और हक़ीक़त किसी क़िस्म की रचना का, आसमानी होवे या ज़मीनी, किसी ख़ास देश या खान में या तहक़ीक़ करना हाल मुलकों, समुद्रों, दरियाओं, झीलों और पहाड़ों का, वग़ैरा वग़ैरा।।

५ - किसी किसी को शौक़ परमार्थ का जैसा कुछ कि अपने क़ौम और देश में जारी है और जीवों के पर-उपकार और सुख पहुँचाने का अनेक रीति से और अनेक कामों में और करने दर्शन किसी देवता या ईश्वर का, रहता है और उसकी तवज्जह अक्सर सोच और विचार और करने परमार्थी और पर-उपकार के कामों में लगी रहती है।।

६ - यह सब ख़ौफ़ और शौक़ दुनियावी हैं या दुनियावी परमार्थ से कुछ ताल्लुक़ रखते हैं और इनका फल दुनिया में आराम और बाद मरने के भी, कुछ सुख की प्राप्ति का, स्वर्ग वग़ैरा में, है। पर जनम मरन की फाँसी या देह धर कर दुख सुख का भोग दूर नहीं होता।।

७ - बड़ भागी और सब में उत्तम वह जीव हैं कि जिनके हिरदे में सच्चा शौक़ सच्चे मालिक से मिलने और उसके धाम में जो कि महा आनंद और प्रेम का भंडार है, बासा पाने का पैदा होवे और सच्चा ख़ौफ़ देह के साथ बंधन और दुख सुख भोगने और बारम्बार

जनम धारन करने और मरने का मन में प्रकट हुआ है।।

८ - और जो कि सच्चे मालिक का पता और भेद संतों के पास है या उनके सच्चे प्रेमी अभ्यासी से मिल सकता है, इस वास्ते ऐसे जीवों को पहिले खोज और तलाश संत सतगुरु की या उनके प्रेमी सतसंगी और संगत की मुनासिब है।।

९ - जब जीव संतों के सतसंग में जाकर महिमा कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम की सुनेगा और हाल नाशमानता और तुच्छ होने संसार और उसके सामान का मालूम करेगा तो ज़रूर उसके मन में थोड़ा बहुत शौक़ मालिक के दर्शनों का, और भी बैराग संसार के भोग बिलास की तरफ़ से, पैदा होगा और जब कैफ़ियत सहज उपदेश और सहज जुगत यानी सुरत शब्द जोग की समझेगा, तब इरादा उसके अभ्यास का उमंग के साथ करेगा और फिर सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से कुछ रस अंतर में पाकर मगन होवेगा और शौक़ भी बढ़ेगा।।

१० - बग़ैर सतसंग के किसी के मन से भरम दूर नहीं हो सकते और न तवज्जह और पकड़ उसकी कुटुम्ब परिवार और भोगों और पदार्थों में ढीली हो सकती है। इस वास्ते पहिले दरजे की सफ़ाई हासिल करने के वास्ते और मन की तरंगों और ख्वाहिशों को रोकने और घटाने के लिये होशियारी के साथ संत सतगुरु का सतसंग करना और बचनों को सुन कर विचारना और अपने फ़ायदे के बचनों को ग्रहण करना

और उनके मुवाफ़िक थोड़ी बहुत कार्रवाई शुरू करना, ज़रूर है।।

११ - जब तक कोई ऊपर की लिखी हुई तरकीब से सतसंग नहीं करेगा और सच्चा शौक़ और इरादा हासिल करने सच्चे परमार्थ का उसके मन में पैदा न होगा, तब तक संतों के उपदेश का अभ्यास भी उससे दुरुस्ती के साथ नहीं बन पड़ेगा यानी सुमिरन और ध्यान और भजन में उसका चित्त जैसा चाहिये, नहीं लगेगा और रस भी नहीं आवेगा।।

१२ - इस वास्ते जो कोई सच्चा परमार्थ हासिल किया चाहे, उसको संतों का सतसंग और अभ्यास सुरत शब्द मार्ग का थोड़ा बहुत शौक़ लेकर दुरुस्ती के साथ करना ज़रूर है। तब उसके मन की हालत बदलेगी और प्रेम का रंग चढ़ना शुरू होगा।।

१३ - फिर उसके मन में सच्चा ख़ौफ़ सच्चे मालिक और संत सतगुरु की अप्रसन्नता का पैदा होगा और दुनियावी ख़ौफ़ जिनका ज़िक्र दफ़ा पहिली व दूसरी व तीसरी में लिखा है, आहिस्ते आहिस्ते कम और दूर होते जावेंगे और सच्चे मालिक और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी और उनकी मेहर और दया का भरोसा मज़बूत होता जावेगा।।

१४ - इसी तरह दुनिया के शौक़ और चाह मान बड़ाई और भोग विलास की, घटती जावेगी और जिन कामों में कि पहिले इस को रस मिलता था, वे सब रूखे और फीके मालूम होंगे यानी सब शौक़ और चाहें दुनिया की हट कर एक राधास्वामी दयाल के दर्शनों

का शौक़ और प्रेम मन में बस जावेगा और दिन दिन बढ़ता जावेगा।।

१५ - जिस क़दर यह शौक़ बढ़ता जावेगा, उसी क़दर रस और आनंद अंतरी ज़्यादा मिलेगा यानी मन और सुरत ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ कर और शब्द की अमी रूप धार से मिल कर निर्मल और मगन होते जावेंगे।।

१६ - दुनिया के जितने शौक़ हैं, उनमें सुरत और मन की तवज्जह बाहर भोगों की तरफ़ जाती है और उन भोगों का रस भी मलीन है और अंतर में मलीनता और चंचलता को बढ़ाता है और मन और सुरत को नीचे की तरफ़ झोके देता रहता है कि जिसके सबब से उनका बासा नीचे के देश में रहता है और ऊँचे देश यानी सुरत के निज घर की तरफ़ से भूल और दूरी बढ़ती जाती है।।

१७ - लेकिन जिस किसी को भागों से सन्तों का संग मिल जावे और उनके अभ्यास की कमाई में लग जावे तो उसके सुरत और मन अपने घर की तरफ़ ऊँचे को आहिस्ते आहिस्ते चढ़ेंगे और अमी धार में स्नान करके नित्त आनन्द को प्राप्त होवेंगे और ऊँचे देश से नई ताक़त रूहानी जब जब भजन दुरुस्ती से बनेगा, हासिल करके मगन होवेंगे।।

१८ - यह बात बग़ैर संत सतगुरु की दया के और मौज कुल मालिक राधास्वामी दयाल के हासिल नहीं हो सकती और सन्त सतगुरु की दया तब हासिल होगी, जब कि जीव उनका सतसंग चेत कर करेगा और तन, मन, धन से सेवा करके उनकी आज्ञा में बरतेगा और

चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत लावेगा। वही उनका प्यारा होगा और वही एक दिन जगत से न्यारा हो जावेगा।।

१९ - जिस पर संत सतगुरु दयाल होंगे, उसी जीव के वास्ते कुल मालिक राधास्वामी दयाल की भी मेहर की मौज होवेगी और वही महल में दख़ल पावेगा यानी माया के घेर के पार दयाल देश में जावेगा।।

२० - जिसके मन में सच्ची चाह सच्चे मालिक से मिलने और उसके धाम में बासा पाने की है और यह संसार और उसके भोग बिलास उसको रूखे और फीके मालूम हुए हैं, उसी जीव का धुर की मेहर और दया से सन्त सतगुरु से मेला हो जावेगा और वही उनके सतसंग में ठहरेगा और उनके चरनों में तन, मन, धन से भक्ति करके और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर और विरह और उमंग के साथ उसका अभ्यास करके अपना कारज पूरा बनवावेगा यानी राधास्वामी धाम में बासा पावेगा।।

प्रकार छप्पनवाँ

जड़ पदार्थों में प्रीत करने से जड़ का संग मिलेगा और चैतन्य के संग से जो संत सतगुरु हैं, सच्चे मालिक का संग पावेगा।।

१ - इस दुनिया में जितने जीव हैं, उन सब की प्रीत अक्सर जड़ पदार्थों के साथ रहती है, जैसे धन माल ज़मीन व मकानात व बाग़ वग़ैरा।।

२ - बल्कि जितनी चीज़ों और असबाब और पदार्थों से मनुष्यों को काम पड़ता है, वे सब जड़ हैं और जानवर वग़ैरा जो पाले जाते हैं, वे भी ब-निस्बत मनुष्य के अचेत और जड़ हैं।।

३ - और जो कुटुम्ब परिवार बिरादरी दोस्त आशना वग़ैरा से प्रीत की जाती है, वे भी अक्सर निपट संसारी होते हैं और सिवाय धन पैदा करने के जतन और उद्यम के और भोग बिलास खान पान वग़ैरा के, और कुछ नहीं समझते यानी अपनी और अपने मालिक की पहिचान और कोई करतूत वास्ते कल्यान अपने जीव के, नहीं करते। इस वास्ते उनके संग से सिवाय दुनियादारी के कामों और बातों के और कुछ फ़ायदा नहीं होता।।

४ - कोई कोई मनुष्य विद्यावान होते हैं और उनकी बुद्धि ब-निस्बत और जीवों के बहुत तेज़ और गहरी और ज़बर होती है और बहुत से जीवों और मुलकों का बंदोबस्त करते हैं, पर वे भी कुल मालिक के भेद से बे-ख़बर हैं और कोई ख़ास करतूत वास्ते अपने जीव के कल्यान के, जोकि बाद छोड़ने इस देह और दुनिया के प्राप्त होना चाहिये, बहुत कम करते हैं और बहुतेरे तो उससे वाक़फ़ियत भी कम रखते हैं। इन लोगों को दुनिया और अपने मन्सब के कारोबार से फ़ुर्सत भी कम मिलती है।।

५ - इसी तरह बहुत से जीव तिजारत यानी व्यापार का काम करते हैं और उनकी सारी तवज्जह और कोशिश इसी में रहती है कि कैसे धन बढ़ावें और हरचंद पुन्य दान व ख़ैरात वग़ैरा करते हैं पर मालिक

का खोज और अपने जीव के कल्यान का फ़िक्र बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं करते।।

६ - बाज़े मनुष्य परमार्थी किताबें जिन में परमेश्वर की महिमा और उसकी पूजा वग़ैरा और धरम करम का ज़िक्र है, पढ़ते और पढ़ाते हैं और लोगों को हिदायत और उपदेश भी करते हैं, पर जो ग़ौर करके देखा जावे तो इस काम से उनका मतलब धन पैदा करने और दुनिया में अपना गुज़ारा करने और मान बड़ाई हासिल करने का रहता है। सच्चे और कुल मालिक का खोज और जीव के कल्यान का सोच और फ़िक्र और उसके जतन के दरियाफ़्त करने का शौक़ या इरादा उन में भी नहीं पाया जाता।।

७ - कोई कोई लोग घर बार और रोज़गार छोड़ कर और परमार्थी लिबास पहन कर इधर उधर और तीर्थों में घूमते फिरते हैं। ज़ाहिरा मतलब उनका यही मालूम होता है कि मालिक का खोज लगाने और अपने जीव के कल्यान के वास्ते जतन करने के लिये यह कार्रवाई करी है। लेकिन जो ग़ौर करके देखा जावे और ख़ुद उनसे बात चीत करके तहक़ीक़ किया जावे तो मालूम होता है कि उनके मन में सैर और तमाशे का शौक़ धरा हुआ है और जिस पंथ में कि वे शामिल हुए हैं, उसकी ज़ाहिरी और ऊपरी कार्रवाई करके तृप्त हो गये हैं और न तो मालिक का खोज है और न उसके भेद से कुछ वाक़फ़ियत रखते हैं और न इस बात का तमीज़ करते हैं कि जो कार्रवाई परमार्थी वे कर रहे हैं, उससे कुछ उन को फ़ायदा हासिल हुआ या नहीं और उनके मन की हालत कुछ बदली या नहीं। अलबत्ता

भेष का अहंकार और धन और मान बड़ाई की चाह मन में ख़ूब भरी हुई नज़र आती है।।

८ - बाज़े भेषों में से जंगल और पहाड़ों में रह कर कुछ अभ्यास सफ़ाई मन और इन्द्रियों का करते हैं और अपने ऊपर बहुत कुछ काष्टा और तकलीफ़ और सख़्ती की बरदाश्त करते हैं। ज़ाहिर में यह सब कार्रवाई वास्ते हासिल करने परमार्थ यानी मिलने के मालिक से, करते हैं। लेकिन जो ग़ौर से देखा जावे तो इस में भी मान बड़ाई की चाह और निहायत दरजे का अहंकार अपनी कार्रवाई का नज़र आता है और सच्चे मालिक का खोज और प्रेम बहुत कम उनके दिल में दिखाई देता है।।

९ - यह सब लोग जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ, असल में संसारी भोग बिलास या दुनिया की बड़ाई और हुकूमत और शोहरत या परमार्थी मान बड़ाई और धन के चाहने वाले हैं और सच्चे मालिक का खोज या अपने जीव के कल्यान के जतन का पता लगाने का शौक़ या इरादा इनके मन में नहीं पाया जाता। बल्कि जो कोई उनको चितावे और समझावे और जुगत और जतन सच्चे मालिक के चरनों में पहुँचने का बताना चाहे तो यह लोग हुज्जत और तकरार करने को तैयार होते हैं और बिल्कुल रूखे फीके होकर और झगड़ा बखेड़ा उठा कर ऐसे शख़्सों से मिलना और उनसे बात चीत करना भी नहीं चाहते।।

१० - अब ग़ौर करके विचारो कि यह लोग सब के सब संसारी या दुनियादारों के संगी हैं और जब सच्चे मालिक की भक्ति या प्रेम या उसके मिलने की चाह

इनके मन में नहीं है तो यह उसकी तरफ़ से अजान रहे और उसके धाम में कभी नहीं पहुँच सकते हैं और दुनिया और उसके भोगों की चाह ज़बर होने से हमेशा जनम मरन और देह के संग दुख सुख भोगते रहेंगे।।

११ - इस वास्ते हरचंद यह मनुष्य स्वरूप हैं और विद्या बुद्धि और समझ बूझ भी हर तरह की जो दुनिया और दुनियावी परमार्थ के मुताल्लिक़ है, रखते हैं और कुछ कार्रवाई भी परमार्थ के नाम से करते हैं, लेकिन यह सच्चे और प्रेमी और अभ्यासी भक्तों के ज़ैल में दाख़िल नहीं हो सकते और न इनके संग से किसी को सच्चा परमार्थी फ़ायदा पहुँच सकता है।।

१२ - जीवों को परमार्थी फ़ैज़ चैतन्य पुरुष के संग से हासिल हो सकता है, ब-शर्ते-कि वे उनके चरनों में प्रेम प्रीत करें और जो जुगत कि वे बतावें, उसका अभ्यास विरह और प्रेम अंग लेकर दुरुस्ती से करें।।

१३ - चैतन्य पुरुष संत सतगुरु को कहते हैं और संत सतगुरु वे हैं जो धुर पद में पहुँच कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल से मिले हैं।।

१४ - सच्चे और कुल मालिक का निज धाम ऊँचे से ऊँचा और माया देश के परे है। और साध गुरू का मुक़ाम सन्तों के दसवें द्वार यानी सुन्न में है और वही पार-ब्रह्म पद है।।

१५ - सन्त सतगुरु और साध गुरु चैतन्य पुरुष हैं यानी पहिले तो चैतन्य सिंध में पहुँच कर उसके साथ एक हो रहे हैं और दूसरे उस ऊँचे धाम में थोड़े अर्से में पहुँचनहार हैं और माया की हद्द तै कर चुके हैं।।

१६ - इन दोनों साहबों के संग से परमार्थी फ़ैज़ और फ़ायदा हासिल होना मुमकिन है और परमार्थी फ़ायदे से मतलब यह है कि जो कोई सन्त सतगुरु या साध गुरु से प्रीत करे, वह राधास्वामी मत की जुक्ति का उपदेश लेकर चैतन्य सिंध की तरफ़ चलना शुरू करके अबेर सबेर उस धाम में पहुँच सकता है यानी दिन दिन विशेष चैतन्य से मिल कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के जो महा चैतन्य और महा प्रेम का भंडार हैं, सन्मुख पहुँच कर उनके धाम में बासा पा सकता है और अमर और पूरन आनन्द को प्राप्त हो सकता है।।

१७ - अब ख़्याल करो कि सन्त सतगुरु और साधगुरु ही इस दुनिया में सच्चे चैतन्य पुरुष हैं क्योंकि वे या तो महा चैतन्य स्वरूप हैं या उस महा चैतन्य से अन-क़रीब मिलने वाले हैं और बाक़ी जितने मनुष्य हैं, चाहे वे विद्यावान और बुद्धिवान और धनवान और हुकूमतवान हैं या अनपढ़ और मूरख हैं, वे चैतन्य पुरुष नहीं समझे जा सकते हैं और इस वास्ते उन के संग से सच्चे परमार्थ का फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता। अलबत्ता जो सन्त सतगुरु और साधगुरु के प्रेमी सतसंगी हैं और कुल मालिक के धाम में यानी महा चैतन्य के भंडार में पहुँचने का जतन कर रहे हैं, उनकी सोहबत से भी परमार्थी मदद मिल सकती है और प्रेम और शौक़ चैतन्य पुरुष से मिलने और महा चैतन्य के धाम में चल कर पहुँचने का जाग सकता है।।

१८ - इस वास्ते कुल जीवों को जो जड़ का संग छोड़ कर यानी इस देश और देही और दुनिया के

पदार्थों से न्यारे होकर महा सुख और आनंद के स्थान में पहुँच कर महा चैतन्य से मिलना चाहते हैं, मुनासिब है कि पहले खोज सन्त सतगुरु या साध गुरू या उनकी संगत का करके सतसंग में शामिल होवें और बचन सुन कर अपने मन और इन्द्रियों की चाल ढाल बदलें यानी संसारी स्वभाव और चाल आहिस्ते आहिस्ते छोड़ कर भक्ति रीत में बर्ताव करें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर अंतरमुख अभ्यास शुरू करें तो सन्त सतगुरु की दया से उनका काम बनना शुरू होगा यानी मन और सुरत आहिस्ते आहिस्ते ऊँचे देश की तरफ़ घट में चलेंगे और दिन दिन विशेष चैतन्य से मिल कर आनन्द और रस पाकर मगन होवेंगे।।

१९ - जो जीव कि यह काम नहीं करेंगे और ज़िन्दगी भर दुनिया में उसके भोग बिलास और संसारी जीवों के संग में बंधे और फँसे रहेंगे, वे बारम्बार देह धारन करेंगे और जड़ पदार्थों और अचेत मनुष्यों के संग में दुख सुख पाते रहेंगे यानी सच्चे मालिक और उसके धाम से बे-ख़बर रहेंगे और न उसका दर्शन पावेंगे।।

प्रकार सत्तावनवाँ

जीव बड़े ख़ूँख़ार और ख़तरनाक जानवरों को क़ाबू में लाकर उन से अनेक तरह के काम लेते हैं लेकिन जो कोई मन और इंद्रियों

को अपने बस में लावे, वह परमार्थ का पूरा दरजा हासिल कर सकता है।।

१ - इस दुनिया में मनुष्य सब में उत्तम और श्रेष्ठ है और यहाँ की कुल रचना यानी जानदारों और तत्त्वों पर थोड़ा बहुत उसका इख़्तियार है और सब से वह कुछ न कुछ काम लेता है।।

२ - बाज़े जानवरों को जो ज़हरी और ख़ूंख़्वार और मनुष्य के दुश्मन हैं, क़ैद में लाकर और उन की तरबियत करके उनसे तरह तरह के काम तमाशे के लिये जाते हैं। यह सब मनुष्य ही की ताक़त है कि जुगती से उनको पकड़ता है और अपने तौर पर जो काम चाहे, वह उनको सिखा लेता है और कुछ ख़ौफ़ उनका नहीं करता।।

३ - जो काम कि इन जानवरों से लिये जाते हैं, उन से दुनियावी फ़ायदा यानी धन कमाया जाता है और शोहरत और नामवरी भी किसी किसी मौक़े पर हासिल होती है पर यह फ़ायदे चन्द-रोज़ा हैं और आख़िरत में कुछ काम नहीं दे सकते हैं।।

४ - मनुष्य को पहिले ज़रूरत खाने पीने और पहिनने ओढ़ने और कुटुम्ब परिवार के पालने की है और दूसरी और सबसे भारी ज़रूरत अपने जीव के फ़ायदे और आराम की है और वह भी उस वक़्त और हालत में जब कि इस देह और दुनिया को छोड़ कर जावे यानी वक़्त मरने के और उसके बाद।।

५ - पहिली ज़रूरत के रफ़ा करने के लिये अनेक तरह के पेशे और काम, उनमें से बाज़े बाज़े बहुत

सख़्त और ख़तरनाक, मनुष्य करता है लेकिन दूसरी ज़रूरत के बंदोबस्त का लोगों को बहुत कम ख़याल है और उसके वास्ते जतन भी बहुत कम करते हैं और जो कुछ करते हैं, उसकी जाँच कि आया उससे वह फ़ायदा और मतलब हासिल होता है या नहीं, कोई बिरले जीव करते हैं।।

६ - जो कार्रवाई वास्ते फ़ायदे और आराम जीव के (बाद चोला छोड़ने के) की जावे, उसकी जाँच जीते जी करना बहुत ज़रूर है, नहीं तो रोज़गारी और ख़ुद मतलबियों के हाथ से धोखा खाना पड़ेगा और फिर पीछे पछताने और अफ़सोस करने से कुछ हासिल नहीं होवेगा।।

७ - इस जतन और जुगत का भेद और तरकीब संतों के पास है। जो कोई उनका सतसंग दीनता और प्रेम के साथ करेगा और उनसे उपदेश लेकर अंतरमुख अभ्यास में लगेगा, उसी से वह कार्रवाई कि जिससे मरने के बाद आराम और सुख स्थान मिले, बन पड़ेगी।।

८ - जो कि सब जीवों को एक रोज़ चोला और यह देश छोड़ना ज़रूर है और जबकि सुरत यानी जीव अमर हुआ तो कहीं न कहीं बाद मरने के किसी न किसी देह में जनमेगा और अपने कर्म अनुसार दुख सुख भोगेगा और यह सिलसिला जब तक कि संतों की सरन में आकर और उनके उपदेश सुरत शब्द मार्ग की थोड़ी बहुत कमाई न करेगा, बराबर जारी रहेगा। इसी को चौरासी में भरमना और भटकना कहते हैं।।

९ - इस वास्ते जीवों के हाल पर निहायत दया करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि जबकि वास्ते दुनिया के चंद रोज़ के गुज़ारे के तुम ऐसे ख़ौफ़नाक और ख़तरे के काम कर रहे हो जैसे ज़हरदार और ख़ूँख़ार जानवरों का जो कि तुम्हारे बैरी हैं, पकड़ना और पालना और उनको तमाशे की बातें सिखाना, फिर वास्ते अपने आइंदे के यानी बाद मरने के आराम और सुख के, इस मन बैरी को जो कि तुम्हारे घट में बैठा हुआ तुमको दुनिया में नाच नचा रहा है और आइंदे के नफ़े और नुक़सान से बे-ख़बर रखता है, जुगत और जतन दरियाफ़्त करके क्यों नहीं थोड़ा बहुत क़ाबू में लाते हो और उससे थोड़ा काम जिसमें तुम्हारे जीव का आइंदा को गुज़ारा महा आनंद के साथ होवे और फिर देही धर कर दुख सुख का चक्कर न भोगना पड़े, क्यों नहीं लेते हो।।

१० - वह काम ब-निसबत ख़ूँख़ार जानवरों के पालने और सिखाने के बहुत आसान है और उसका फ़ायदा थोड़ा बहुत फ़ौरन मालूम हो सकता है और किसी तरह का ख़तरा उसमें नहीं है और थोड़ी तवज्जह और रोक के साथ यह मन बैरी आहिस्ते आहिस्ते मित्र बनाया जा सकता है और जिस तरह इससे संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ काम लेना है, थोड़ी सी मेहनत और होशियारी और चेत कर सतसंग और सुरत शब्द मार्ग का अंतरमुख अभ्यास करने से यह मन आप ही शौक़ के साथ वह काम करने लगेगा और ऐसी भारी ख़िदमत तुम्हारी सपूतों के मुवाफ़िक़ करेगा कि आइंदा तुमको मेहनत और तकलीफ़ और बारम्बार जनमने और मरने से बचा लेगा और निज घर की तरफ़ सुरत के संग

चल कर महा आनन्द और अमर सुख के धाम में पहुँचा देगा।।

११ - लेकिन इस मन का क़ाबू में लाना और इससे सच्चे परमार्थ की कार्रवाई कराना आसान नहीं है क्योंकि यह तिरलोकी नाथ की अंस है और माया के मसाले का इसका ख़मीर है और क़ुदरती झुकाव इसका संसार यानी बाहर और नीचे की तरफ़ को है और जनमान जनम और जुगान जुग से देह धरता हुआ और भोगों में बर्ताव करता हुआ चला आरहा है। यकायक इसका बदलना यानी अपनी पुरानी आदत का छोड़ना और भोगों की तरफ़ से मुख मोड़ना मुमकिन नहीं है।।

१२ - सिवाय संत सतगुरु के और किसी से काल और मन नहीं डरते हैं सो जिस किसी को संतों की दया से उनका सतसंग प्राप्त हुआ और उसने उनके चरनों में प्रीत प्रतीत करी, वही उनकी जुगती का अभ्यास करके आहिस्ते आहिस्ते इस मन को ज़ेर करेगा और अपना मित्र बना कर उससे काम लेगा यानी इस ज़हरीले और जान-लेवा मन के क़ाबू में लाने का मंत्र और तरीक़ा संतों के पास है, जब वे दया करके वह जुगत बतावेंगे और आप इस जीव की रक्षा करेंगे यानी अपना बल देकर मन और काल से लड़ाई करा कर जितावेंगे, तब यह दोनों हाथ आवेंगे और काम बनेगा।।

१३ - जब तक संत सतगुरु मेहर से नहीं मिलेंगे, तब तक किसी जीव की ताक़त नहीं है कि वह मन और काल को जो कि ब्रह्मांडी मन है, ज़ेर करे और उससे

परमार्थी काम लेवे। चाहे कैसे ही महात्मा होवें और चाहे कैसी ही जुगती कमाते होवें, पर ब्रह्मांडी मन को बिना सन्त सतगुरु की दया के नहीं जीत सकेंगे और इस सबब से निज धाम में कुल मालिक के बासा भी नहीं मिलेगा और न सच्चा और पूरा उद्धार होगा।।

१४ - ख़ुलासा यह है कि जितने मत दुनिया में जारी हैं, उन में जुगत ब्रह्मांडी मन के जीतने की बिलकुल नहीं कही है और जोकि पिंडी मन को बस में लाने के वास्ते जतन बताये हैं, वह भी निहायत कठिन और मुशकिल हैं और हर एक जीव से बन नहीं सक्ते हैं। यह सिर्फ़ संतों ही की गति और ताक़त है कि इन्होंने सब मनों को जो पिंड और ब्रह्मांड में हैं, जीत कर और सच्चे मालिक के धाम में पहुँच कर बासा किया।।

१५ - जो जुगत कि संतों ने वास्ते क़ाबू में लाने नीचे और ऊँचे यानी पिंडी और ब्रह्मांडी मन के बताई है, वह सुरत शब्द मार्ग का उपदेश है क्योंकि बिना शब्द के किसी का मन बस में हरगिज़ नहीं आवेगा। जो कोई हिम्मत वाले और सूरमा जीव हैं, वह पहिले संत सतगुरु का खोज लगावेंगे और उनके चरनों में सच्ची दीनता और प्रेम करके उनकी जुगत का अभ्यास दुरुस्ती से करेंगे और वे ही मन को क़ाबू में लाकर और अपनी सुरत को चढ़ा कर निज धाम में बासा पावेंगे।।

१६ - संत सतगुरु की महिमा बहुत भारी है। जो जीव उनकी सरन में आवे और सच्चे मन से उनका सतसंग और सेवा करे तो वह अपनी मेहर और दया से

सुरत शब्द मार्ग की कमाई करावेंगे और अपना बल देकर पिंडी और ब्रह्मांडी मन और माया से लड़ा कर और खेत जिता कर धुर घर में पहुँचावेंगे और अमर धाम और अमर आनंद बख़्शेंगे।।

१७ - जो जीव कि संसार और उसके भोगों में और कुटुम्ब परिवार वग़ैरा में फँसे रहेंगे और अपने मन के हुकम में चलेंगे यानी जो जो तरंगें और ख़्वाहिशें वह उठावें, उनके पूरा करने के वास्ते जतन और मेहनत करते रहेंगे तो वह हमेशा माया के जाल में पड़े रहेंगे और जनम मरन का दुख सहते रहेंगे यानी बारम्बार अपनी बासना और कर्म अनुसार देह धारन करके दुख सुख भोगते रहेंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की तरफ़ से भूले हुए रह कर माया के पदार्थों और भोगों में भरमते रहेंगे।।

१८ - इस वास्ते सब जीवों को जो इस ज़िन्दगी में, और भी बाद मरने के, परम सुख और परम धाम को चाहें, उनको लाज़िम और मुनासिब है कि सन्त सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें और शौक़ और प्रेम के साथ उनके बचन सुनें और उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश लेकर जिस क़दर बने अपने अंतर में उसका अभ्यास करें तो वह सन्त सतगुरु की मेहर और दया से एक दिन निज धाम में विश्राम पावेंगे यानी आहिस्ते आहिस्ते ऊँचे स्थानों पर चढ़ कर और दिन दिन विशेष आनन्द पाकर कुल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पावेंगे और काल और कर्म और मन और माया के जाल से छुटकारा उन का हो जावेगा। और जो ऐसा

नहीं करेंगे तो काल यानी ब्रह्मांडी मन उनको बारम्बार निगलेगा और उगलेगा यानी बारम्बार जनमेंगे और मरेंगे और देहियाँ धर कर दुख सुख भोगते रहेंगे।।

प्रकार अट्ठावनवाँ

दुनिया में हर एक शख़्स अपने जात पाँत हसब नसब और गुन और जौहर और धन और माल वग़ैरा का अहंकार रखता है और अपने ख़ानदानी रस्म और तरीक़े की मज़बूत पक्ष और बर्ताव करता है। लेकिन अफ़सोस है कि हरचंद संत सतगुरु जीवों को पुकार कर कहते हैं कि तुम सत्त पुरुष राधास्वामी की अन्श यानी बालक हो और दयाल देश में तुम्हारा निज घर है, यहाँ ऐसी चाल चलो कि जिसमें जम की चोट न खानी पड़े और अपने पिता के दर्शन के वास्ते शौक़ के साथ जतन करते रहो ताकि एक दिन अपने धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त हो, पर जीव उनके बचन को बहुत कम मानते हैं, बल्कि उलटी उनकी निंदा करते हैं और उन से दूर रह कर अपना अकाज करते हैं।।

१ - इस दुनिया में सब जीवों को अपनी जात पाँत और गुन और जौहर और धन और माल और अपने कुल और ख़ानदान की बड़ाई और बुज़ुर्गी का बड़ा अहंकार रहता है, ख़ास कर जात और ख़ानदानी बुज़ुर्गी का। यह ख़्याल दिल से कभी नहीं भूलता और जहाँ कहीं जीव जाता है या किसी नये शख़्स से मिलता है तो ज़रूर वहाँ और उसके रूबरू अपनी जात और ख़ानदान की बुज़ुर्गी का ज़िक्र पेश करता है ताकि लोग उसका आदर और इज़्ज़त करें।

२ - सिवाय इसके जो कि अपनी जात पाँत और ख़ानदान के तरीक़े और रस्म और व्यवहार और बर्ताव हैं, उनकी पक्ष और कार्रवाई बहुत हठ और मज़बूती के साथ जीव करते हैं और जो कुछ कसर या भूल चूक तरीक़े और रस्म और बर्ताव की कार्रवाई में पड़ जावे तो सख़्त नाराज़ होते हैं और अपनी बुज़ुर्गी और सफ़ाई की उसमें हानि समझ कर जैसे बने, उसका बदल और दुरुस्ती करते हैं।।

३ - ज़ाहिर है कि जब जीव अमर है तो मरने के बाद ज़रूर उसकी देह और कुल बदलता है यानी नई देही नये ख़ानदान में धारन करता है और फिर उसी तरह उस ख़ानदान की रस्मों और व्यवहार की पक्ष करके अपनी बुज़ुर्गी और बड़ाई का अहंकार दिल में रखता है यानी हर जनम में नई देह और नये ख़ानदान का बंधन हठ के साथ धारन करता है।।

४ - यह बात आम तौर पर जारी है कि हर एक जीव अहंकार के साथ अपने ख़ानदान और बाप दादे की बड़ाई और बुज़ुर्गी को हर एक के सामने ज़ाहिर

करता है और चाहता है कि उस हाल को सुन कर लोग उसकी ख़ातिरदारी और इ़ज़्ज़त करें और अपने ख़ानदानी और जात के रस्मों और बर्ताव को मरते दम तक कभी नहीं भूलता है और बहुत शौक़ और ज़ोर के साथ उसकी पक्ष करके कार्रवाई करता है।।

५ - लेकिन संत सतगुरु जो कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के ख़ास मुसाहब या महा प्यारे पुत्र हैं और असल में उसी का स्वरूप हो रहे हैं, पुकार कर जीवों से कहते हैं कि तुम कुल मालिक की अंश हो यानी उसके बच्चे और बालक हो और सत्त पुरुष राधास्वामी बंसी तुम्हारी ज़ात है और जो कि उस कुल मालिक के ख़वास और सिफ़्ते हैं, वही असल तुम्हारे ख़वास और सिफ़्त हैं क्योंकि दोनों का जौहर एक ही है, पर कुसंग के सबब से यानी मन और माया और इन्द्रियों और माया के रचे हुए भोगों और पदार्थों की सोहबत और संग से तुम अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल और उसके धाम को जो तुम्हारा निज देश और वतन है, भूल गये हो और तुम्हारे असली ख़वास और सिफ़्तें दब गई हैं और बजाय उनके मन और माया और उनके ख़वास और गुन तुम्हारे अन्तर में धस गये हैं और उन्हीं के स्वभाओं में तुम इस देह और इस लोक में बर्त रहे हो और दुख सुख भोगते हो और धर्मराय और जम दूतों के हाथ से ज़िल्लत और ख़िफ़्फ़त और ख़्वारी सहते हो और नाक़िस आदतों और पाप कर्मों के सबब से जो कुसंग की वजह से तुम से बन रहे हैं, नीची ऊँची जोनों और देशों में जिसको चौरासी का चक्कर कहते हैं, भरमते रहते हो।।

६ - और फिर संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि जो दुख सुख और जनम मरन के चक्कर और ख़्वारी और ज़िल्लत और बे-इज़्ज़ती से बचना चाहो तो अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक राधास्वामी दयाल की महा महिमा और महा आनंद और सब से ऊँचे धाम का और महा निर्मल और दया और प्रेम के भरे हुए ख़वासों और सिफ़्तों का और अपने सब से आला और भारी जौहर और जात और बंस का ख़याल करके अपने प्यारे और दयाल पिता से मिलने और वतन में पहुँचने का जतन करो और अपनी ऊँची जात और ऊँचे बंस और ऊँचे से ऊँचे धाम का ख़याल और अहंकार मन में बसाकर कुसंगियों की सोहबत जो कि महा मलीन और विकारी और असल में तुम्हारे बैरी और जान लेवा और बुज़ुर्गी और इज़्ज़त के बिगाड़ने वाले हैं, आहिस्ते आहिस्ते छोड़ते जाओ और संत सतगुरु और प्रेमी जन का सतसंग (जोकि तुम्हारे सच्चे पिता और कुल मालिक के मुसाहब और प्यारे पुत्र हैं) दिल और जान से शौक़ और प्रेम के साथ करो और उनके ख़वास और स्वभाव और आदत इख़्तियार करो और मलीन व्यवहार और बर्ताव जो कुसंगियों के संग से तुमने इख़्तियार किया है, आहिस्ते आहिस्ते छोड़ते जाओ, तब दिन दिन तुम्हारे सुरत और मन निर्मल होते जावेंगे और जब संत सतगुरु से उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर (जो कि तुम्हारे निज घर में जाने का रास्ता और तरीक़ा है) विरह और प्रेम के साथ अन्तर में अभ्यास करोगे, तब तुम्हारे सुरत और मन आहिस्ते आहिस्ते घर की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे और दिन दिन रस और आनंद ज़्यादा से ज़्यादा लेते हुए माया की हद्द के पार पहुँचेंगे

और वहाँ से सुरत, मन से न्यारी होकर सत्त पुरुष राधास्वामी धाम में पहुँच कर और अपने सच्चे पिता का दर्शन पाकर महा आनंद और महा सुख को प्राप्त होगी। उस देश में माया और काल और कष्ट और क्लेश और जनम मरन का चक्कर बिलकुल नहीं है और वहाँ का आनंद और बिलास और वह देश भी अमर और अजर है।।

७ - पर अफ़सोस की बात है कि जीव सन्तों के बचन को बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं सुनते और अपने सच्चे माता पिता और निज कुल की बड़ाई का ज़रा भी ख़्याल दिल में नहीं लाते हैं और न इरादा अपने निज देश में पहुँचने का करके जो जतन कि संतों ने फ़रमाया है, उसका खोज या अभ्यास करते हैं। इस सबब से सब जीव माया और काल के जाल में फँसे रहते हैं और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भोगते हैं।।

८ - बाज़े जीव जो वास्ते कल्यान अपने जीव के मामूली और रस्मी परमार्थी कार्रवाई करते हैं, उस कार्रवाई में न तो अपने देश में पहुँचने का फ़ायदा हो सकता है और न कुछ रस और आनंद रास्ते का मिलना मुमकिन है और न पता और भेद सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम और उसके रास्ते का दरियाफ़्त हो सकता है। फिर वह कार्रवाई, थोड़ा बहुत सुख दूसरे जनम में या इसी जनम में दे सकती है। लेकिन सच्चा उद्धार यानी माया के देश के पार राधास्वामी धाम में पहुँचना मुमकिन नहीं है।।

९ - जोकि संतों का मत और उपदेश आम तौर पर प्रकट नहीं हुआ है, इस सबब से जीव उस के भेद और अभ्यास से बे-ख़बर हैं और अपने अपने मत के पुराने इष्ट और चालों में अटक रहे हैं और दुनिया के कारोबार और भोग विलासों में ऐसे ग्रस रहे हैं कि किसी को खोज भी सच्चे मालिक और सच्चे रास्ते और सच्ची जुगत उसके तै करने का, नहीं है और ब-सबब धोखा देने लिबासी और नक़ली परमार्थियों के कि ज़रा ज़रा से काम में मुक्ति का फल मिलना बतलाते हैं, जीव उन कामों को करके किसी क़दर निचिन्त और निरभय हो जाते हैं और उन नादानों के बचनों को सही और दुरुस्त मानते हैं।।

१० - इस वक़्त में जो कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल जीवों को महा दुखी और निर्बल देख कर अति दया करके आप इस लोक में संत सतगुरु रूप धारन करके प्रकट हुए और निज भेद अपना और अपने धाम का और सहज रास्ता और सहज जुगत उसके तै करने की (अपने घट में) जीवों को समझाई और आम तौर पर उसको अपनी बानी और बचन में वर्णन किया, इस वास्ते बड़ा भारी मौक़ा कुल मतों के जीवों को मिला है कि राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास जिस क़दर दुरुस्ती से बन सके, शौक़ के साथ अपने अंतर में करके सच्चे उद्धार के अधिकारी हो जावें और बारम्बार देह धर कर दुख सुख और जनम मरन के भोग से अपना छुटकारा कर लेवें।।

११ - कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों के उपकार के वास्ते ख़ास आगरे में जहाँ कि वे प्रकट हुए और भी कितने ही बड़े बड़े शहरों में मेहर और दया से अपना सतसंग जारी फ़रमाया है और इन मुक़ामों में थोड़े से उनके सच्चे प्रेमी और भक्त रहते हैं और उनकी जुगती का जिस क़दर जिससे बन सकता है, अभ्यास कर रहे हैं और दिन दिन उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। जो कोई सच्चा अनुरागी परमार्थ का उनके पास जावे और सतसंग करे तो वे बहुत ख़ुशी के साथ उसको मदद देते हैं और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का इजाज़त हासिल करके समझाते हैं।।

१२ - इन प्रेमियों के संग से भेद भाव राधास्वामी मत का और तरीक़ा अभ्यास वग़ैरा का मालूम हो सकता है और बानी और बचन वग़ैरा की पोथियाँ भी मिल सकती हैं और जो कार्रवाई बताई जाती है, उसको करके उनके हिरदे में मालिक के चरनों का प्रेम भी पैदा हो सकता है और आइन्दे को आहिस्ते आहिस्ते बढ़ सकता है।।

१३ - भारी महिमा राधास्वामी मत की यह है कि जो कोई उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास करेगा वह एक दिन धुर धाम में पहुँचेगा और इस कार्रवाई के वास्ते उस को घर बार या रोज़गार वग़ैरा छोड़ने की कुछ ज़रूरत नहीं है और ग्रहस्थ और विरक्त और स्त्री और पुरुष, पढ़े होवें चाहे नहीं, और लड़का जवान और बूढ़ा, इस अभ्यास को आसानी के साथ कर सकते हैं।।

१४ - पिछले वक़्त में जो तरीक़ा प्राणायाम वग़ैरा वास्ते मुक्ति के बताते थे वह महा कठिन और ख़तरनाक था और ग्रहस्थी जीवों से मुतलक़ नहीं बन सकता था और इस सबब से उनका उद्धार भी नहीं होता था। बर-ख़िलाफ़ उसके अब ग्रहस्थियों से, चाहे औरत होवे या मर्द, जो थोड़ा भी शौक़ रखता होवे तो राधास्वामी मत का अभ्यास आसानी के साथ दुरुस्त बन सकता है और उसका फ़ायदा यानी रस और आनन्द भी अंतर में जल्द मिल सकता है और राधास्वामी दयाल की दया के घट में परचे पाकर तरक़्क़ी भी आसानी के साथ जल्द मुमकिन है।।

१५ - अब जो जीव इस हाल की ख़बर पाकर फिर भी दया न लेवें यानी राधास्वामी मत में शामिल होकर उसका अभ्यास शुरू न करें तो जानना चाहिये कि वे बड़े अभागी हैं कि रस्मी परमार्थ में जहाँ कुछ फ़ायदा नहीं मिलता और न मुक्ति होती नज़र आती है, वहाँ मेहनत और तकलीफ़ अनेक तरह की और तन मन धन का ख़र्च गवारा करते हैं और जिस जगह फ़ौरन फ़ायदा मिले यानी मुक्ति होती नज़र आवे और आइन्दे को तरक़्क़ी आसानी के साथ जल्द होवे, वहाँ मुतलक़ तवज्जह नहीं करते बल्कि उलटी निंदा करके सतसंग से दूर भागते हैं और बानी और बचन का पढ़ना और सुनना नहीं चाहते, और हर रोज़ संत सतगुरु और उनके प्रेमियों की थोड़ी बहुत निंदा करके पाप के भागी होते हैं और अपना परमार्थी भाग नहीं जगाते हैं कि जिसकी वजह से वे मन और माया और काल और कर्म के जाल में हमेशा फँसे रहेंगे और अपनी बासना और

करनी अनुसार जनम मरन और दुख सुख का भोग करते रहेंगे।।

प्रकार उन्सठवाँ

जो जीव दुनिया के सामान के वास्ते तड़प रहे हैं और अनेक तरह के जतन और मेहनत कर रहे हैं, उनको थोड़ा बहुत संसारी सामान हासिल हो जाता है। इसी तरह से जो मालिक के दर्शन की विरह रखते हैं और उस के वास्ते जतन करते हैं, उनको भी सतगुरु द्वारा सत्त पुरुष के दर्शन प्राप्त हो सकते हैं और यह काम ब-निसबत दुनिया के कामों के ज़्यादा ज़रूरी है।।

१ - दुनिया में अनेक जीव वास्ते प्राप्ति अनेक तरह के सुक्खों के और स्त्री और पुत्र और धन और माल वग़ैरा के अनेक जतन करते हैं और उनमें बहुत मेहनत और तकलीफ़ भी उठाते हैं और सब को हर एक की कार्रवाई और भाग के मुवाफ़िक़ कामयाबी होती है यानी फल थोड़ा बहुत मिलता है।।

२ - इसी तरह हज़ारों तरह के काम कोई आसान और कोई मुशकिल और कोई निहायत मुशकिल और ख़तरनाक हर एक क़िस्म के लोग करते हैं और अपने पक्के और सच्चे इरादे के ब-मूजिब ख़ुशी के साथ हर

तरह की मेहनत और तकलीफ़ भी बरदाश्त करते हैं और फिर उस में कामयाबी भी ज़रूर होती है यानी किसी की मेहनत ख़ाली नहीं जाती है।।

३ - लेकिन इन सब मेहनतों और कार्रवाइयों का फ़ायदा जिस क़दर कि है वह सब देह और दुनिया के आराम का है। बाद मरने के उससे कुछ मतलब जीव के फ़ायदे का नहीं निकलता और न किसी को इस बात का ख़याल है कि बाद मरने के भी हम को सुख की दरकार और ज़रूरत होगी।।

४ - हर एक मत में जो दुनिया में जारी हैं, थोड़ी बहुत हिदायत वास्ते करने जतन और तदबीर के ब-नज़र हासिल करने सुख या मोक्ष के, बाद छोड़ने इस देह और देश के, की है और उसके मुवाफ़िक़ बाज़े लोग कुछ कार्रवाई भी करते हैं पर हर एक को पूरा पूरा यक़ीन इस बात का नहीं है कि बाद मरने के ज़रूरत सुख की है और वह सुख उन तदबीरों और जतन से जो उनके मत के आचार्यों ने लिखे हैं, मिल सकता है।।

५ - इस सबब से बहुत कम लोग मोक्ष की प्राप्ति के निमित्त कोई जतन करते हैं और उस में भी पूरी तवज्जह और जिस क़दर कि मेहनत दरकार है, दुरुस्ती के साथ नहीं करते।।

६ - सबब न होने पूरे यक़ीन का ऐसा मालूम होता है कि हर एक मत में जुदा जुदा तौर और तरीक़े से हिदायत मोक्ष की प्राप्ति के वास्ते की है और कोई तरकीब बहुत आसान और कम ख़र्च और कोई बहुत मुशकिल और किसी में धन का ख़र्च ज़्यादा तजवीज़

किया है और जो कि मालिक एक समझा जाता है और तरीक़े हर एक क़ौम और हर एक मत में जुदा जुदा मुक़र्रर किये हैं, इस वजह से सब के दिलों में सन्देह और भरम पैदा होते रहते हैं, लेकिन उनको ब-ख़ौफ़ पेशवाओं अपने अपने मत के, कि वे बजाय दूर करने उन शुभों और भरमों के, उसको नास्तिक और काफ़िर बतलावेंगे, कोई शख़्स अपने मन और बुद्धि के हाल और कैफ़ियत को खोल कर आम तौर पर बयान नहीं करता।।

७ - सिवाय इसके लोगों को दुनिया के कारोबार और भोग बिलास और दुनिया की ख़्वाहिशों और तरंगों के हुजूम के सबब से इस क़दर फ़ुर्सत भी नहीं होती कि वे आख़िरत के मुआमले में तहक़ीक़ात माक़ूल करके अपने शुभे और भरम दूर करें और न इस क़दर ज़रूरत इस काम की उनकी नज़र में मालूम होती है कि उसके वास्ते खोज और तलाश ज़रूरी और मुक़द्दम[१] समझें।।

८ - सन्त सतगुरु जो कुल मालिक के प्यारे और उसके भेद से ख़बरदार हैं, फ़रमाते हैं कि सबब ना-इत्तिफ़ाक़ी कुल मतों का और जारी होने जुदा जुदा तरीक़े का हर एक मत में यह है कि वे सच्चे मालिक और उसके धाम और भेद से ना-वाक़िफ़ हैं और यह भी उनको मालूम नहीं है कि सच्चा उद्धार और सच्ची मोक्ष किसे कहते हैं और वह किस तरह प्राप्त हो सकती है। इस वास्ते जो जो जतन और मेहनत कि सब मत वाले अपनी अपनी समझ के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं, वह

१ - मुख़्य

मेहनत उनकी अक्सर बरबाद जाती है और असली फ़ायदा उनको हासिल नहीं होता यानी न तो सच्ची मुक्ति उनको प्राप्त होती है और न सच्चे मालिक का दर्शन जिस से परम आनन्द को प्राप्त होवें, मिलता है।।

९ - ऐसी हालत जगत के जीवों की देख कर सन्तों ने दया करके अनेक तरह से उनको समझौती देना चाहा और भेद और तरीक़ा अभ्यास का भी वर्णन किया लेकिन बहुत कम जीवों ने, ब-सबब ज़ोर शोर होने विद्या और बुद्धिवान पेशवाओं अपने अपने मत के, सन्तों के बचन को माना और बाक़ी के जीव उनकी दया लेने से ख़ाली रहे, बल्कि लिबासी और नक़ली परमार्थियों के बहकाने और भरमाने से उलटी सन्तों और उनके उपदेश की निंदा करने लगे और आम जीवों को उनके सतसंग में शामिल होने से रोकते रहे।।

१० - ऐसी हालत जीवों की देख कर कि कोई भी मुक्ति पद को प्राप्त नहीं होता और सब के सब चौरासी के चक्कर यानी माया के घेर में भरमते चले जाते हैं, कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत सतगुरु रूप धारन करके जगत में प्रकट हुए और आम तौर से भेद अपने निज धाम और तरीक़ा उसकी प्राप्ति का समझाया और पुकार कर जीवों को सुनाया कि जो काल और माया के जाल और जनम मरन और नरकों के दुक्खों से बचना चाहें तो उनके चरन सरन में आवें और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का, कि जिस के सिवाय दूसरा रास्ता प्राप्ति सच्चे उद्धार और कुल

मालिक के दर्शनों का नहीं है, लेकर जिस क़दर बन सके, अभ्यास करें तो एक ही जनम में उनके मुक्ति और परम आनन्द के प्राप्ति का थोड़ा बहुत सामान मुयस्सर होकर उसका रास्ता जारी होना मुमकिन है।।

११ - इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि वास्ते कल्यान और प्राप्ति सुख और आनन्द अपने जीव के हर कोई संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज करके सतसंग में शामिल होवे और जो संत सतगुरु न मिलें तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे और सतसंग भी होशियारी के साथ करता रहे तो उस का आहिस्ते आहिस्ते कारज बनना शुरू होगा और जो विरह और शौक़ सच्चा होगा तो रफ़्ते रफ़्ते संत सतगुरु भी मेहर और दया से दर्शन देंगे और उस पर अपनी कृपा करेंगे।।

१२ - इस जगह इस बात का ज़िक्र करना मुनासिब है कि इस ज़िंदगी में जिस क़दर ज़रूरत वास्ते सुख और आराम के दुनिया में है, उससे बहुत ज़्यादा ज़रूरत वास्ते करने उस जतन और तदबीर के है जिससे हमेशा का सुख और आराम मिले, मगर जीव नादान हैं और अपने हाल से बे-ख़बर। इस सबब से उनको आइन्दे के सुख की प्राप्ति के निमित्त जतन करने का कुछ ख़याल नहीं, नहीं तो जो उनको समझ माक़ूल और पूरी ख़बर होती तो हरगिज़ ऐसी ग़फ़लत और बे-परवाही न करते।।

१३ - अब यह बात खोल कर समझाई जाती है कि जिस क़दर मेहनत और मशक़्क़त जीव अनेक तरह के कामों के सीखने और करने में कर रहे हैं और अनेक

तरह की तकलीफ़ों और जान के ख़तरों को गवारा कर रहे हैं, उसमें जो पूरा पूरा फ़ायदा भी हुआ और उनकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ आराम और सुख भी मिला तो वह चंद-रोज़ा या इस ज़िंदगी भर फल देगा लेकिन जो जीव अमर और अजर है यानी उसका नाश नहीं है तो बाद छोड़ने इस देह और देश के जब तक माया के घेर में रहेगा, किसी न किसी देश में फिर देह धरेगा और वही मेहनत और तकलीफ़ उद्यम और रोज़गार के वास्ते, काम सीखने की, उठानी पड़ेगी और फिर चंद रोज़ उसका फ़ायदा हासिल करके अपनी देह और देश को वक़्त मरने के छोड़ेगा और इसी तरह जनम मरन और कर्म यानी मेहनत और तकलीफ़ का चक्कर बराबर जारी रहेगा और कभी ज़्यादा सुख और कभी ज़्यादा दुख भोगता रहेगा।।

१४ - इस चक्कर और बारम्बार की मेहनत और तकलीफ़ के बचाने के वास्ते कुल मालिक राधास्वामी दयाल दया करके फ़रमाते हैं कि जब एक जनम यानी ज़िंदगी के सुख और आराम के वास्ते ऐसी सख़्त तकलीफ़ और ख़तरनाक मेहनत गवारा करते हो तो फिर हमेशा के आराम और सुख की प्राप्ति और जनम मरन से बचाव के लिये किस क़दर तवज्जह के साथ मेहनत करना मुनासिब और लाज़िम है।।

१५ - और फिर कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने ऐसी भारी दया फ़रमाई है और ऐसी जुगत और तदबीर कृपा करके बताई है कि जो उसकी कार्रवाई कम से कम दो घंटे और ज़्यादा से ज़्यादा चार पाँच या छः घंटे रोज़मर्रा थोड़े बहुत शौक़ के साथ की जावे तो एक

ही ज़िंदगी में बहुत कुछ काम बन जावे और आइंदे को सिलसिला उस का जारी हो जावे और दो तीन, हद्द चार, जनम में, काम पूरा बन जावे यानी सुरत धुर धाम में पहुँच कर अपने मालिक के चरनों में बासा पाकर हमेशा को सुखी हो जावे और फिर किसी क़िस्म का कष्ट और क्लेश या जनम मरन का दुख न सतावे।।

१६ - और जो जतन और जुगत वास्ते हासिल होने इस भारी न्यामत के समझाई है, वह यह है कि अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से जहाँ जाग्रत अवस्था में उसकी बैठक है और वही कर्म और दुख सुख के भोग और देह और दुनिया के साथ बंधन का स्थान है, आहिस्ते आहिस्ते शब्द को सुनते हुए यानी जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी धार को पकड़ के ऊँचे की तरफ़ चलाना और चढ़ाना शुरू करे तो इसी ज़िन्दगी में अपनी मुक्ति और विशेष आनंद की प्राप्ति होती हुई देख सकता है और यह वही रास्ता है कि जहाँ हो कर मरते वक़्त सब जीवों को लाचार होकर जाना पड़ेगा और यही रास्ता निज घर का है जो कि सच्चा मुक्ति पद है। फिर बजाय अख़ीर वक़्त पर ज़बरदस्ती से तकलीफ़ के साथ खींचे जाने के ख़ुशी और शौक़ के साथ उस रास्ते पर जीते जी चलना और अपने सच्चे मालिक के जलवे को देखते हुए धुर मुक़ाम पर पहुँच कर उसका दर्शन और चरनों में बासा हासिल करना, कुल जीवों को, चाहे औरत होवे या मर्द, ज़रूर मुनासिब और लाज़िम है।।

१७ - यह भेद और उपदेश इस वक़्त में सिर्फ़ राधास्वामी मत में जोकि संतों का निज मत है, जारी है और जो कोई सच्चा शौक़ीन होवे, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर उस भेद को दरियाफ़्त कर सकता है और मुवाफ़िक़ हिदायत के कोई दिन अभ्यास करके थोड़ी बहुत कैफ़ियत अपने अन्तर में देख सकता है और थोड़ा बहुत आनंद और सरूर हासिल करके इस बचन की तसदीक़ और जाँच करके अपना परमार्थी भाग बढ़ा सकता है।।

१८ - जो कोई संत बचन को नहीं मानेंगे और बे-परवाही और ग़फ़लत करके दुनिया के भोग व बिलास और मेहनत और मशक़्क़त में अटके रहेंगे, वे बारम्बार नीच ऊँच जोन और नीच ऊँच देश में देह धारन करके दुख सुख और मेहनत और मशक़्क़त के चक्कर में पड़े रहेंगे और चाहे जैसी करतूत रस्मी और नक़ली परमार्थ की करें, उनका सच्चा उद्धार हरगिज़ नहीं होगा यानी जनम मरन और कष्ट और क्लेश और माया के घेर से कभी छुटकारा नहीं होवेगा।।

प्रकार साठवाँ

बाहरमुख शब्द के वसीले से यह जीव देह, इंद्रिय और मन और भोगों के रस में बँध गया है और दुख सुख भोगता है। अब जो कोई अन्तर के शब्द में सतगुरु से भेद लेकर चित्त लगावे तो वह आहिस्ते आहिस्ते चढ़

कर एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त हो सकता है।।

१ - सुरत रूह ऊँचे से ऊँचे धाम यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से उतर कर पिंड में नेत्र के स्थान में बैठी है। इसी जगह इसका बंधन देह और दुनिया के साथ हुआ और यही स्थान कर्म करने का है और यहाँ ही दुख सुख का भोग होता है।।

२ - इसी आँखों के स्थान पर बैठ कर सुरत इंद्रियों के वसीले से भोगों में और बाहरमुख शब्द में रची और दुनिया और उसके सामान का विस्तार किया।।

३ - सुरत असल में धुन रूप थी सो पिंड में बैठ कर इस लोक में भी शब्द के साथ मेल करके कुटुम्ब परिवार और धन माल और भोगों में फँस गई और इसी देश के शब्द के वसीले से कुल कार्रवाई कर रही है।।

४ - बालकपन से माता पिता और कुटुम्ब परिवार और जिन जिन से काम पड़ता गया और व्यवहार बर्ता गया, उनके शब्द में रची और बँधी और दुनिया की कार्रवाई सीखी और उसमें बर्तने लगी और नाच रंग और गाने बजाने का रस और आनन्द लेने लगी।।

५ - दुनिया में मन और इन्द्रिय और भोगों का संग करके इस क़दर फँसाव और घिराव सुरत का हो गया है कि अब बग़ैर मदद सतगुरु के इस क़ैद से छुटकारा मुमकिन नहीं है। बल्कि दिन दिन बंधनों के बढ़ाने की कोशिश की जाती है और जिस क़दर विस्तार होता जाता है, उसी क़दर ख़ुश होकर अपने भागों को सराहती है।।

६ - इस देश में जिस क़दर कि आदमी आपस में मिलते हैं और मुहब्बत करते हैं, उसी क़दर काल पुरुष यानी निज मन उनको आपस में बाँधता और फँसाता चला जाता है और यह सब एक दूसरे को संसार में बराबर मदद दुनिया की तरक़्क़ी के वास्ते देते हैं और उसकी हानि में दुखी होते हैं।।

७ - फिर ऐसी हालत में जीव की क्या ताक़त है कि अपने बल से अपने छुटकारे की कोई तदबीर या जतन कर सके बल्कि अपने निज मालिक और निज घर को इस क़दर भूल गया है और यहाँ के पदार्थों को देख करके इस क़दर उन में भरम रहा है कि कभी अपने घर की सुध भी नहीं लेता और न ऐसे लोगों से कि जो घर का भेद और रास्ता बतावें और चलने में मदद देवें, मिलना चाहता है बल्कि उनसे दूर भागता है और उनका बचन सुनना और मानना नहीं चाहता।।

८ - अब ख़याल करो कि जब जीव, सुरत, अमर है और इस देश में थोड़े अर्से ठहरता है, फिर किस क़दर नादानी और ग़फ़लत है कि इसी लोक के सामान और अपने कुटुम्ब, परिवार और बिरादरी के संग में दिल और जान से लिपटता है और उन्हीं को अपना आधार और सुख का कारन समझ कर उन में मज़बूत और गहरी प्रीति करता है और अपनी मौत और इस देह और देश के छोड़ने की और फिर आइंदा कहाँ जाना और रहना होगा और वहाँ दुख मिलेगा या सुख, ज़रा भी सुध नहीं लेता और न खोज इस बात का करता है कि उसका करतार कौन है और कहाँ है और आया कोई ऐसा भी स्थान है कि जो हमेशा एक रस

क़ायम रहे और वहाँ पहुँच कर यह जीव भी अमर हो जावे और परम आनंद और महा सुख इसको प्राप्त होवे।।

९ - यह भेद और यह हाल संतों के सतसंग से जो कि कुल मालिक के धाम के (जो महा आनंद और महा सुख का भंडार है) बासी हैं, मालूम हो सकता है और वे जीवों को ग़ाफ़िल और भूला हुआ देख कर अति दया करके इस लोक में नर रूप धारन करके प्रकट हुए और अनेक रीति से जीवों को अपनी तरफ़ खींच कर भेद उनके सच्चे माता पिता कुल मालिक और उसके निज धाम का जोकि उनका निज घर है, समझाते हैं, और भी हाल इस देश का जोकि मन और माया का धाम है और जहाँ कोई चीज़ स्थिर नहीं है और उसके सुखों के साथ दुख भी लगा हुआ है और जिसको मौत के वक़्त ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, सुना कर जुगत अपने निज घर यानी कुल मालिक राधास्वामी के धाम में चढ़ कर पहुँचने की बताते हैं और मेहर करके अपना बल और मदद देकर जो कोई बचन माने, उससे रास्ता तै करा कर निज घर में पहुँचाते हैं और बारम्बार देह धरने और जनम मरन के चक्कर से क़तई छुटकारा कराते हैं।।

१० - अब जो जीव संतों को, मुवाफ़िक़ माता पिता और कुटुम्ब परिवार के, अपना हितकारी समझ कर उनके बचन को चित्त से सुनें और मानें और प्रीति के साथ उनका सतसंग करें तो वे संसार और उसके भोगों की तरफ़ से आहिस्ते आहिस्ते हटा कर और उपदेश देकर अंतरमुख शब्द में जो हर दम हर एक के

घट में बोल रहा है, लगावें और तब रफ़्ते रफ़्ते अभ्यास करके अंतर में सुरत और मन जोकि संसार में लिपट रहे हैं, धुन का रस लेकर चलना और चढ़ना शुरू करेंगे।।

११ - इस तरह जिस क़दर संत सतगुरु और प्रेमी अभ्यासियों का संग बढ़ता जावेगा और बारम्बार सतसंग के बचन सुन कर संसार का मोह घटता जावेगा, उसी क़दर अंतर शब्द और स्वरूप में रस मिलेगा और प्रेम बढ़ेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की मेहर से रफ़्ते रफ़्ते एक दिन निज घर में बासा मिल जावेगा।।

१२ - जैसा कि अंतर और बाहर सतसंग करके रस और आनंद आवेगा, उसी क़दर घट के शब्द की महिमा और बड़ाई की ख़बर पड़ती जावेगी और उतना ही बाहर के शब्द से चित्त हटता जावेगा और वह रूखा और फीका मालूम पड़ेगा।।

१३ - इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अंतर शब्द की महिमा समझ कर संतों के सतसंग में ज़रूर, वास्ते अपने जीव के कल्यान के, शामिल होवें और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश जिसके सिवाय और कोई रास्ता कुल मालिक से मिलने और अपने निज घर में उलट कर जाने का नहीं है, सन्त सतगुरु और उनके निज प्रेमी से लेकर जिस क़दर बन सके, अभ्यास शुरू करें और अंतर का थोड़ा बहुत रस लेवें। जो यह काम सच्चे मन से शुरू किया जावेगा तो ज़रूर सन्त सतगुरु और कुल मालिक उस अभ्यासी पर दया करेंगे और अंतर में थोड़ा बहुत रस और

आनन्द बख़्शेंगे कि जिससे तरक़्क़ी दिन दिन होती जावे और एक दिन काम पूरा बन जावे।।

१४ - जो जीव कि इस दुनिया की नाशमानता और मौत को हर दम सिर पर खड़ा देख कर नहीं चेतेंगे यानी ग़फ़लत और बे-परवाही सच्चे परमार्थ की तरफ़ से, नहीं छोड़ेंगे और अपने जीव के हमेशा के वास्ते सुखी होने का फ़िक्र नहीं करेंगे तो वे हमेशा जनम मरन के चक्कर में रह कर बारम्बार देह धरेंगे और दुख सुख भोगते रहेंगे। यह फल उनको बाहरमुख शब्द और भोगों में रचने से मिलेगा और जो संतों के सतसंग में शामिल होकर अंतरमुख शब्द में लगेंगे तो एक दिन सच्चे मालिक के महल में बासा पाकर परम आनंद को प्राप्त होंगे और काल और माया के घेर से जहाँ जनम मरन का चक्कर जारी है, पार हो जावेंगे।।

प्रकार इकसठवाँ

दुनिया के भोगों और पदार्थों के लिये हर कोई सच्ची दीनता और मेहनत और हुकम बरदारी करता है, लेकिन परमार्थ के हासिल करने के लिये ऐसी कार्रवाई मुश्किल है, पर सच्चे खोजी और दर्दी से बन पड़ेगी और वही सतगुरु के सतसंग और उपदेश से पूरा पूरा फ़ायदा उठावेगा यानी मेहर और दया और नाम की बख़्शिश उसको मिलेगी।।

१ - दुनिया में धन और भोगों की प्राप्ति के वास्ते सब लोग सच्ची दीनता और मेहनत और ताबेदारी करते हैं और हर तरह से अपने अफ़सर और मालिक को प्रसन्न करना चाहते हैं ताकि उससे ज़्यादा फ़ायदा हासिल होवे।।

२ - इसी तरह वास्ते दूर होने बीमारी और दूसरी क़िस्म की तकलीफ़ों के हकीम और डाक्टर और सयानों की दीनता और ख़ुशामद और धन की ख़िदमत करते हैं और जब आराम हो जावे, तब निहायत इहसानमंदी और शुकरगुज़ारी ज़ाहिर करते हैं और वास्ते आइंदे के मदद और काम लेने के उनसे मुहब्बत और मेल जारी रखते हैं।।

३ - जब कभी किसी को ख़ौफ़ किसी दुशमन या जानवर वग़ैरा का होता है, तब भी किसी धनवान या बलवान या हुकूमतवान की जो उस दुशमन को हटा सकता है या और तरह उसको ज़ेर कर सकता है, ख़ुशामद और दीनता करके अपना काम निकालते हैं और उसके साथ मेल और मुहब्बत रखते हैं।।

४ - ख़ुलासा यह है कि दीनता और ख़ातिरदारी और ख़िदमत और ख़ुशामद ऐसी भारी तदबीर है कि जिसकी मदद से सब तरह के काम आदमी अपने बना सकता है और कुल जीव इससे राज़ी होते हैं, यहाँ तक कि जानवर भी चाहे पालतू होवें या ख़ूँख़ार, मुहब्बत और ख़िदमत से राज़ी होकर अपने पालने वाले को प्यार करते हैं और वक़्त सख़्ती के अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ उसकी मदद और रक्षा और पक्ष करते हैं।।

५ - दुनिया के कामों की सब को ज़रूरत पड़ती है और इस सबब से हर कोई आम तौर पर ऊपर के लिखे हुए तौर और क़ायदे के मुवाफ़िक़ जहाँ से उसका काम निकलना मुमकिन होवे, बे-तकल्लुफ़ जात पाँत और क़ौम और दरजे और मर्तबे का ख़याल छोड़ कर, बर्ताव करता है और कोई किसी की शिकायत नहीं करता और न किसी पर तान मारता है।।

६ - बाज़े काम जो सरीह नाक़िस और अपने मज़हब और धर्म के बर-ख़िलाफ़ हैं लेकिन जो उनकी कार्रवाई जहाँ तहाँ जारी है यानी जो कोई चाहता है, वही उनको बे-तकल्लुफ़ और बे-ख़ौफ़ करने लगता है जैसे जुवा खेलना, शराब पीना, मांस खाना, तमाशबीनी करना, ग़ैर क़ौम के शख़्स से दोस्ती और मेल जोल और खान पान का बर्ताव बे-धड़क करना और चोरी और दग़ाबाज़ी और जालसाज़ी वग़ैरा के काम करना वग़ैरा वग़ैरा तो जब वे किसी से अपनी बिरादरी में बन पड़ते हैं तो कोई रोक टोक नहीं लगाता और चाहे पीठ पीछे बुराई करें लेकिन मुक़ाबले में कोई तान नहीं मारता और न ऐसे काम करने वाले को धमकाता है या जात से ख़ारिज करने का इरादा या तदबीर करता है और सब उसके घर और बिरादरी के लोग उसके साथ व्यवहार और बर्ताव ब-दस्तूर जारी रखते हैं।।

७ - लेकिन सच्चे परमार्थ की क़दर लोगों के चित्त में बहुत कम मालूम होती है। हरचंद कि इस की ज़रूरत और बड़ाई दुनिया के कुल कामों और ज़रूरतों से ज़्यादा से ज़्यादा है यानी दुनिया के काम थोड़े दिन या ज़िंदगी भर फ़ायदा दे सकते हैं पर सच्चे परमार्थ

की कार्रवाई में हमेशा का फ़ायदा और आराम हासिल हो सकता है, फिर भी लोग ऐसे बे-परवाह और भूले हुए हैं कि उसकी ज़रूरत बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं समझते हैं और न उसके वास्ते कुछ तलाश या खोज या जतन करना चाहते हैं और परमार्थी शख़्सों से मिलने में भी किसी क़दर कराहियत और नफ़रत रखते हैं और उनको ओछा और नादान ख़्याल करते हैं।।

८ - जो कोई सच्चे परमार्थ की प्राप्ति के वास्ते किसी सन्त या साध या महात्मा का सतसंग और सेवा करे या उनके चरनों में प्रेम प्रीत और दीनता करे तो दुनिया के लोग अनेक तरह के भरम उसकी निसबत उठा कर उसकी और सन्त सतगुरु और साध महात्मा की निन्दा करने और अनेक तरह के ऐब और इलज़ाम लगाने से नहीं डरते हैं बल्कि तरह तरह के खौफ़ दिखाते हैं और धमकियाँ देकर उसको परमार्थ से रोकना और हटाना चाहते हैं।।

९ - परमार्थ के घर में सच्चे परमार्थियों को दीनता और सेवा करते हुए देख कर दुनिया के लोग बहुत नाराज़ होते हैं और हँसी उड़ाते हैं और धन ख़र्च करने वाले को नादान और दीवाना बताते हैं ताकि और कोई शख़्स उसके साथ शामिल न होवे।।

१० - सच्चे परमार्थियों को प्रेमा भक्ति के भाव और रीति में बर्ताव करते हुए देख कर उनके कुटुम्ब और बिरादरी के लोग जात पाँत से निकाल देने का जतन बे-धड़क करने को तैयार हो जाते हैं और अनेक तरह की तकलीफ़ें और दुख पहुँचाना चाहते हैं और आप उस जगह ज़रा भी दीनता और ख़िदमत नहीं करते हैं

बल्कि परमार्थ में ज़्यादा अहंकार और बे-परवाही दिखलाते हैं।।

११ - यह सब दुनिया के लोग रस्मी और नक्ली परमार्थ की कार्रवाई थोड़ी बहुत कर रहे हैं और वहाँ भक्ति के सर्व अंगों में आप और उनके कुटुम्बी और बिरादरी, क्या स्त्री क्या पुरुष, बर्त रहे हैं और कोई किसी की शिकायत नहीं करता और न कोई किसी पर तान मारता है और बा-वजूदे कि उन कामों में कुछ फ़ायदा ज़ाहिर या अंतर में मालूम नहीं होता पर ऐसी मज़बूत टेक और पक्ष उन कामों की बाँधी है कि छुड़ाये नहीं छोड़ते और जो कोई उन कामों को फ़िज़ूल और ओछा करके दिखलावे तो उसके साथ तकरार और हुज्जत बे-फ़ायदा करके लड़ने को तैयार हो जाते हैं।।

१२ - सबब इस क़िस्म के बर्ताव और चाल का इस दुनिया में यही है कि लोग सच्चे परमार्थ की महिमा और ज़रूरत नहीं जानते हैं और न सच्चे मालिक और उसके ऊँचे धाम से ख़बरदार हैं और न अपनी असलियत से वाक़िफ़ हैं कि वे कौन हैं और कहाँ से आये हैं और कहाँ जायँगे। जो संतों का सतसंग मयस्सर आता तो उनको ख़बर इन सब बातों की पड़ती और दुनिया के भी असल हाल को जानते, तब सच्ची क़दर सच्चे परमार्थ और परमार्थियों की करते, लेकिन ब-सबब हुजूम और कसरत यानी भीड़ भाड़ नक़ली और लिबासी और पाखंडी परमार्थियों और उनकी ख़ुद-मतलबी और बे-ख़बरी की कार्रवाई और रसूम वग़ैरा के, संतों का परमार्थ गुप्त रहा और ख़ास ख़ास लोगों को उसकी महिमा मालूम पड़ी, सो उनसे दुनिया के लोग जो

नक़ली और रस्मी परमार्थ में बँधे हुए हैं, दूर रहे और पाखंडी और ओछे परमार्थियों के बहकाने और भरमाने से बजाय संतों के सतसंग में शामिल होने के उनकी और उनके सतसंग की निंदा करते रहे।।

१३ - ऐसी हालत जगत के जीवों की देख कर कि सब चौरासी में चले जाते हैं और सच्चा उद्धार किसी का नहीं होता, कुल मालिक राधास्वामी दयाल आप संत सतगुरु रूप धारन करके इस दुनिया में प्रकट हुए और निज भेद अपना और तरीक़ा सच्चे उद्धार का सुरत शब्द मार्ग के वसीले से वर्णन किया और जीवों को दया करके समझाया कि जो इस देह में न चेते तो फिर चौरासी में भरमोगे और जुगत अभ्यास की ऐसी सहज कर दी कि लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द उसको आसानी से कर सकें और थोड़े दिन के अभ्यास के बाद कुछ रस और आनन्द अंतरी मिल जावे।।

१४ - जो कोई सच्चा परमार्थी होवे यानी जो बे-वास्ते और बे-सबब किसी की निंदा नहीं करता है और हर एक बात को तहक़ीक़ करके समझना चाहता है, वह संतों और उनके सतसंग की महिमा सुन कर ज़रूर उनके सनमुख आवेगा और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके मगन होवेगा और उसकी भारी ज़रूरत समझ कर फ़ौरन अभ्यास में लग जावेगा और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद लेकर अपने भागों को सराहेगा और गहरा प्रेम और सच्ची दीनता संत सतगुरु के चरनों में करेगा और कोई ख़ौफ़ या ख़्याल दुनियादारों

का या उनकी पुरानी चाल ढाल या पुरानी रस्मों का दिल में नहीं लावेगा।।

१५ - ऐसे जीव संत सतगुरु के दयापात्र कहलाते हैं और अपनी सेवा और करनी वग़ैरा से दिन दिन मेहर और दया विशेष हासिल करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में विश्राम पाते हैं और वही स्थान सच्चे और पूरे उद्धार का है और जो कोई ऐसे परमार्थियों का संग देगा, उस पर भी ऐसी ही बख़्शिश होवेगी।।

१६ - जो कोई मन हठ और अहंकार और मूर्खता करके संतों के परमार्थ की क़दर नहीं करेगा और बजाय उनके सतसंग में शामिल होने के उन की और उनके प्रेमी सेवकों की निंदा और बुराई करेगा या उनसे विरोध बाँधेगा, वह काल और कर्म और मन और माया के जाल में फँसा रहेगा और अपनी करनी के मुवाफ़िक़ नीच ऊँच जोन और नीच ऊँच देश में भरमता रहेगा यानी बारम्बार देह धरके दुख सुख का भोग करता रहेगा और कभी सच्चे मालिक का दर्शन उसको नहीं मिलेगा।।

१७ - इस वास्ते सब जीवों को जो अपने जीव का कल्यान चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है कि संत सतगुरु और उनकी संगत के साथ दीनता और भाव से बर्ताव करें और जैसे बने सतसंग और सेवा करके उनकी दया और प्रसन्नता हासिल करें तो उनके जीव का सहज में कारज बनना मुमकिन है यानी माया के घेर से निकल कर सच्चे मालिक के धाम में बासा मिलेगा और हमेशा के वास्ते महा आनंद और सुख को प्राप्त होंगे।।

प्रकार बासठवाँ

संसार में बाहर और अन्तरमुख करनी परमार्थ की, वास्ते हासिल करने अपने मत के सिद्धान्त के, बाज़े लोग करते हैं और तन मन धन भी लगाते हैं बल्कि कोई कोई निहायत कष्ट धारन करते हैं, लेकिन पूरा कारज उनका नहीं बनता, पर जो कोई इसी क़दर बल्कि थोड़ी उससे कम कार्रवाई संत सतगुरु के चरनों में करे तो उसको सच्चा परमार्थ हासिल होवे यानी अमर धाम में परम आनन्द को प्राप्त होवे।।

१ - दुनिया में अनेक मत जारी हैं और हर एक मत में अनेक फ़िरक़े हैं और हर एक मत और फ़िरक़े में कार्रवाई परमार्थ की बाहरमुख जैसे बाहर की पूजा और रसूम और कर्म और बानी का पाठ वग़ैरा और कुछ अंतरमुख जैसे सफ़ाई मन और इंद्रियों की सुमिरन और ध्यान या मुद्रा और प्राणों का साधन करके, जारी है।।

२ - बहुत से लोग तो बाहरमुख या ज़ाहिरी कार्रवाई बतौर पुरानी रसम और चाल के करते हैं और उनके दिल पर उसका असर बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं होता और उन में से बहुत कम ऐसे हैं कि जो इस कार्रवाई को साथ यक़ीन और पूरी तवज्जह के अंजाम देते हैं। इनके मन पर उस कार्रवाई का असर उसी

वक़्त थोड़ा बहुत होता है लेकिन बाद छोड़ने उस कार्रवाई के जबकि दुनिया के कामों में लग जाते हैं, तब उसका असर कुछ नहीं रहता।।

३ - बाज़े जीव कुछ अंतरमुख कार्रवाई करते हैं। इन में से अक्सर वास्ते हासिल होने सिद्धि या शक्ति या कोई और दुनियावी मतलब की नज़र से जैसे प्राप्ति तन्दुरुस्ती और धन और माल और तरक़्क़ी कुटुम्ब और परिवार वग़ैरा के, यह काम करते हैं और बहुत कम ऐसे हैं कि जिनका मतलब प्रसन्न करने अपने इष्ट और प्राप्ति उसके दर्शन और धाम के और बचाव दुक्खों और चिन्ता वग़ैरा से होता है। यह लोग वह कार्रवाई बग़ैर मदद और हिदायत, गुरू वाक़िफ़कार और अभ्यासी के, नहीं कर सकते हैं लेकिन ऐसे गुरू भी दुर्लभ और नायाब हैं और सच्चे शौक़ीन भी कोई बिरले जीव होते हैं।।

४ - जोकि हर एक मत और उसके फ़िरक़ों का इष्ट अक्सर जुदा जुदा है, इस सबब से इन परमार्थियों का सिद्धान्त भी अलेहदा अलेहदा होता है। लेकिन इन में से कोई भी सच्चे और कुल मालिक और उसके धाम के भेद से वाक़िफ़ नहीं हैं और न उनके मत के आचार्यों को इस हाल की ख़बर हुई।।

५ - और जो कि सब मतों का सिद्धान्त रास्ते में किसी न किसी मंज़िल तक रहा और धुर धाम का भेद और पता उनको मालूम नहीं हुआ, इस सबब से सब ओछे रहे और जब कुछ उनको फ़ायदा अपने मत की कार्रवाई से हासिल हुआ तब किसी न किसी अंग और ढंग से दुनिया की तरफ़ झोका खागये यानी उनके मन

में मुख्यता अपने इष्ट से मिलने की जैसा कि चाहिये, न रही यानी ज़ाहिरी मान बड़ाई और जीवों की भीड़ भाड़ बढ़ाने की ख़्वाहिश ज़बर पड़ी और मतलब इस काम में यह समझा गया कि अँधेरा और ग़फ़लत दूर करने और पर उपकार और जीव के कल्यान के निमित्त यह कार्रवाई की जाती है।।

६ - जो ऐसे पेशवा लोग पहिले अपने जीव का सच्चा कल्यान कर लेते यानी माया के घेर के पार हो जाते तो अलबत्ता उनका यह कहना और पर-उपकार का काम करना दुरुस्त होता यानी वह जीवों को ऐसी जुगत और तदबीर बताते कि जिससे उनके मन से हवा व हविस दुनिया और उसके सामान की, दूर या कम होती जाती और बजाय उसके थोड़ा बहुत प्रेम और भक्ति मालिक के चरनों की उनके मन में पैदा होती, लेकिन जो ऐसी हालत न हुई यानी मालिक के प्रेम का रंग नहीं चढ़ा तो यह काम कच्चा रहा और उसमें जीव का उपकार असल में कुछ नहीं हुआ।।

७ - जो ग़ौर और ताम्मुल से, बग़ैर पक्षपात के, नज़र फैला कर हाल हर एक मत के पेशवाओं और आचार्यों का इस ज़माने में देखा जाता है तो मालूम होता है कि उनके पास कोई जुगत या अभ्यास इस क़िस्म का कि जिससे अन्तःकरण की सफ़ाई होवे और मालिक के चरनों का प्रेम मन में पैदा होवे और बसे, नहीं है और न उन पोथियों और किताबों में जो वह पढ़ते और पढ़ाते हैं, इस क़िस्म का अभ्यास खोल कर थोड़ी बहुत तफ़सील के साथ लिखा है। इस सबब से वे और उनके संगी जीव अंतर में ख़ाली नज़र आते हैं।

हरचंद बाहर से बातें बहुत बनाते हैं, पर उनका अमल दरामद यानी अभ्यास उनकी रहनी और बर्ताव वग़ैरा से जैसा चाहिये, ज़ाहिर नहीं होता और इस सबब से उनके उद्धार और सिद्धान्त पद की प्राप्ति में भी शक और शुभा रहता है।।

८ - जो नतीजा कि ऊपर निकाला गया, इस का भारी सबूत यह है कि इन सब मतों में कहीं ज़िक्र मालिक के निज धाम का और भेद रास्ते और मंजिलों का, और भी पिंड में जीव की बैठक का, साफ़ तौर पर और सिलसिलेवार नहीं है और न चलने और चढ़ने का तरीक़ा और अभ्यास समझाया है बल्कि बहुत से लोग मालिक को सर्व व्यापक यानी हर जगह मौजूद समझ कर उससे मिलने के लिये चलने और चढ़ने को भरम मानते हैं और मालिक की ख़ुसूसियत किसी मुक़ाम या धाम से नहीं करते क्योंकि वे कहते हैं कि मुक़ाम और धाम मुक़र्रर करने में मालिक महदूद हो जाता है।।

९ - इस बयान से इन सब मत वालों की बे-ख़बरी और ना-वाक़िफ़कारी कमाल दरजे की ज़ाहिर होती है और इस भेद के न होने से इनके मत बिलकुल ओछे और मन और बुद्धि के बनाये और गढ़े हुए साबित होते हैं।।

१० - संत जो कुल मालिक के भेदी और उसके ख़ास मुसाहब या निज पुत्र हैं, फ़रमाते हैं कि वह मालिक अपनी किरनियों यानी चैतन्य धारों से सब जगह मौजूद है और वे किरनियाँ यानी रूहें कुल रचना का कारज दे रही हैं और उसका निज रूप और निज धाम सब से न्यारा और ऊँचे से ऊँचा है और वहाँ माया

का जिसके मसाले से तीन लोक की रचना की देहियाँ बनी हैं और उन में सुरतें यानी रूहें बैठ कर कार्रवाई कर रही हैं, नाम और निशान भी नहीं है।।

११ - वह कुल मालिक और उसकी किरनियाँ माया से जुदी हैं। लेकिन जब कि वे माया के घेर में उतर कर आईं, वहाँ से माया उनका ग़िलाफ़ या ख़ोल होती चली आई यानी जिस क़दर कि उनका उतार माया के घेर में हुआ, उसी क़दर उन पर ग़िलाफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ते चले आये क्योंकि माया में दरजे हैं, इस सबब से सामान्य और विशेष चैतन्य का भेद हर एक दरजे या मंडल में होता चला आया है।।

१२ - इस बयान का सबूत यह है कि हरचंद चैतन्य सब जगह मौजूद है, पर बग़ैर मदद अपने से विशेष चैतन्य के, कुछ कार्रवाई रचना वग़ैरा की नहीं कर सकता, जैसे इस लोक का चैतन्य बिदून मदद सूरज की किरनियों के, जो इसका विशेष चैतन्य है, कुछ कार्रवाई उत्पत्ति और पालन इस देश की रचना की, नहीं कर सकता। इसी तरह यह सूरज निरंजन रूपी सूरज के आधीन है और उसके गिर्द मय अपने तारों के घूम रहा है और वह सूरज पार-ब्रह्म रूपी सूरज के और यह सत्त पुरुष रूपी सूरज के और वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है। यह सब सूरज एक दूसरे के विशेष चैतन्य हैं और राधास्वामी दयाल महा विशेष चैतन्य हैं और वही कुल मालिक हैं।।

१३ - अब ख़याल करो कि जो लोग चैतन्य को सर्व व्यापक मान कर चलने चढ़ने को भरम कहते हैं, वे किस क़दर ग़लती में पड़े हैं और कितना भारी अपना

अकाज कर रहे हैं। इस वास्ते हर एक परमार्थी को चाहिये कि संत सतगुरु की जुगत लेकर अपने घट में चलने और चढ़ने का अभ्यास, इस मतलब से कि एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर उसका दर्शन करे और वहीं बासा पावे, करना मुनासिब और ज़रूर है और नहीं तो, भारी अकाज होगा।।

१४ - संत सतगुरु ने साफ़ साफ़ फ़रमाया है कि जीव यानी सुरत कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है और इस बेगाने यानी माया के देश में उतर कर देह और मन और इंद्रियों के साथ भोगों और पदार्थों में बँध गई है, सो जब तक इस देश को छोड़ कर अपने निज घर में न पहुँचेगी तब तक सुखी नहीं होगी और वास्ते छोड़ने इस देश के, सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास कराते हैं।।

१५ - शब्द, चैतन्य और जान और नूर की धार को कहते हैं। यही कुल का करतार है और इसी के वसीले से कुल रचना का काम चल रहा है। इसी चैतन्य धार पर सुरत पिंड में उतरी है और इसी को पकड़ के अपने घर की तरफ़ उलट सकती है। इस वास्ते जिस मत में शब्द का भेद और उसके अभ्यास की जुगत नहीं है, वह मत थोथा और ख़ाली है और चाहे कोई किसी क़िस्म का अभ्यास अंतरमुख करे, पर उससे सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा। जो उस अभ्यास में चढ़ाई भी है तो भी वह अभ्यासी कहीं न कहीं माया के घेर में रहेगा और जनम मरन के चक्कर से उसका बचाव हरगिज़ नहीं होगा।।

१६ - इस वास्ते संत अति दया करके फ़रमाते हैं कि सब जीवों को, चाहे औरत होवें या मर्द, जो अपने जीव का कारज बनाना चाहते हैं, लाज़िम है कि संतों के चरनों की सरन लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास शुरू करें तो उनका बचाव चौरासी और जनम मरन के चक्कर से सहज में हो जावेगा।।

१७ - सुरत शब्द मार्ग की ऐसी महिमा है कि जो कोई संत सतगुरु से उपदेश लेकर थोड़े दिन भी उसका अभ्यास करे तो भी वह जीव चौरासी में नहीं जावेगा और संत सतगुरु की दया से चार जनम में उसका काम पूरा बन जावेगा यानी धुर धाम में पहुँच जावेगा और जब तक ऐसा न होगा, वह अच्छे कुल में जनम लेकर ब-दस्तूर अपना अभ्यास संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर करता रहेगा और हर जनम उसका पहिले जनम से बेहतर होगा।।

१८ - हरचंद कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने सन्त सतगुरु रूप धारन करके शब्द के अभ्यास को निहायत सहज कर दिया है कि लड़का जवान और बूढ़ा बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के, सहज में कर सकते हैं, लेकिन जब तक कि राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया शामिल न होवे, तब तक इस अभ्यास का किसी से दुरुस्ती से बन पड़ना मुशकिल बल्कि ना-मुमकिन है।।

१९ - और मतों के अभ्यास को चाहे जो कोई काष्टा धारन करके या हठ के साथ कर लेवे पर राधास्वामी मत का अभ्यास सुरत शब्द योग का कोई

जीव कामयाबी के साथ बग़ैर संत सतगुरु की दया के नहीं कर सकता।।

२० - जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया शामिल हाल होवे तो थोड़ी सी मेहनत और तवज्जह के साथ कार्रवाई करने से पूरा फल मिल सकता है यानी संत सतगुरु अपनी दया का बल देकर अभ्यास करावेंगे और मेहर से उस में कामयाबी बख़्शेंगे।।

२१ - जीव निहायत निबल है और मन और माया और काल और कर्म वग़ैरा का जो परमार्थ में विघ्न कारक हैं, मुक़ाबला नहीं कर सकता और न उनको हटा सकता है लेकिन सन्त सतगुरु अपनी दया से उससे जिस क़दर कार्रवाई मुनासिब हो, करा सकते हैं और तीन चार जनम में धुर पद में पहुँचा सकते हैं और मन और माया और काल को भी हटा सकते हैं। इस वास्ते सच्चे परमार्थी और दर्दी जीवों को मुनासिब है कि संत सतगुरु और उनके सतसंग की सरन लेकर कार्रवाई शुरू करें तो उनका काम सहज में बन जावेगा।।

२२ - संतों का मार्ग प्रेमाभक्ति का है यानी बग़ैर संत सतगुरु और सच्चे मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्रेम और प्रीत लाने के शब्द का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन सकता है और यह प्रेम सन्त सतगुरु की दात और बख़्शिश है यानी उनके सतसंग और सेवा से पैदा होगा और अभ्यास करके दिन दिन बढ़ता जावेगा और एक दिन धुर घर में पहुँचा कर छोड़ेगा। प्रेमी से सब काम कैसे ही कठिन होवें, आसानी से बन सकते हैं

और उनके करने में उसको रस और आनंद मिलता है और न करने में दुख और क्लेश होता है।।

२३ - प्रेम ऐसी भारी दौलत और शक्ति है कि कुल मुशकिलों को आसान करके प्रेमी को उसके प्रीतम से मिला देती है और सब विघ्नों को सहज में हटाती चली जाती है और जोकि यह दौलत कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की मेहर की दात है, इस वास्ते सर्व शक्तियाँ इस अचरजी दया और शक्ति के आधीन हैं। जिसको यह दौलत थोड़ी बहुत मिली है या मिलती जाती है, वही जीव बड़भागी है और उसी को संत सतगुरु का मंज़ूर और अपनाया हुआ समझना चाहिये और उसी का एक दिन उनकी दया से सच्चा और पूरा उद्धार हो जावेगा।।

प्रकार तिरेसठवाँ

कुल जीव मालिक को मान कर और अपने अपने मत के मुवाफ़िक़ उसका निश्चय करके थोड़ी बहुत कार्रवाई भी कर रहे हैं, पर हालत किसी की नहीं बदलती यानी मन के विकार दूर नहीं होते और प्रेम का रंग नहीं चढ़ता, लेकिन जो जीव कि संत सतगुरु का निश्चय करके उनके सतसंग और सरन में आये हैं, उनकी हालत भी आहिस्ते आहिस्ते बदलती जाती है और सच्चे मालिक

राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीति और प्रतीत भी उनके मन में बढ़ती और मज़बूत होती जाती है और जोकि यह हालत बिना सतसंग सतगुरु के हासिल नहीं हो सकती, इस वास्ते सब से पहिले खोज करके संत सतगुरु या उनकी संगत से मिलना चाहिये और उपदेश लेकर सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करना चाहिये।।

१ - जितने मत दुनिया में जारी हैं और जो जो जीव उनमें शामिल हैं, वे सब मालिक का इष्ट बाँध कर अपने २ मत के आचार्यों की हिदायत के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की कर रहे हैं। यह कार्रवाई बहुत करके बाहरमुखी है और कहीं कहीं थोड़ी अंतरी भी जारी है, पर सिवाय बिरले भोले और प्रेमी जीवों के आम तौर पर किसी की हालत नहीं बदलती है यानी मन के विकार दूर नहीं होते और प्रेम का रंग नहीं चढ़ता है।।

२ - सबब इसका यह है कि जहाँ बाहरमुखी कार्रवाई परमार्थ की जारी है, वहाँ हरचंद प्रेम की बानी और बचन पढ़ते हैं और गाते हैं, लेकिन उनका असर उसी वक़्त तक रहता है, बाद उसके फिर कोई अभ्यास इस क़िस्म का नहीं किया जाता है कि जिससे वह प्रेम मन के अन्दर धसे और ठहरे।।

३ - और जहाँ कुछ अंतरी अभ्यास जारी है, वह बहुत करके वास्ते सफ़ाई अंतःकरण के या किसी अंग

के, स्थूल देह में करते हैं और इसी में उम्र गुज़ार देते हैं, पर मालिक के चरनों का प्यार दिल में नहीं आता, न उसके दर्शनों की इच्छा पैदा होती है।।

४ - बहुत से मज़हबों का ऐसा ख़याल है कि मालिक अगम है और कोई उसको लख नहीं सकता और न कोई उसका ख़ास स्थान है कि जहाँ चल कर कोई पहुँचे बल्कि वह सब जगह मौजूद है और जो कोई नेक काम करेगा और उसकी महिमा और स्तुति गावेगा तो उसको बहिश्त या बैकुंठ में बासा मिलेगा और वहाँ उमदा भोग व बिलास उसको प्राप्त होंगे।।

५ - लेकिन मालूम होना चाहिये कि यह बहिश्त या बैकुंठ या स्वर्ग एक ऊँचा लोक है और जोकि वह माया की हद्द में वाक़ै है, इस सबब से परलय या महा परलय में उसका अभाव हो जाता है और वहाँ के बासी जीव फिर जनम मरन के चक्कर में आते हैं।।

६ - बाज़े मज़हब वाले ऐसा ख़याल करते हैं कि ब्रह्म सब जगह मौजूद है और वे आप भी वही स्वरूप हैं और तन मन और इंद्रियाँ माया का कारज और नाशमान हैं और स्वाभाविक संसार और उसके भोगों में बर्तते हैं, सो इस बर्ताव का असर ब्रह्म तक नहीं पहुँचता, वह सदा निरलेप है और जीव भरम करके अपने ब्रह्म स्वरूप को भूल गये हैं सो ज्ञान की पोथियाँ पढ़ कर इस बात का निश्चय करना चाहिये कि हम ब्रह्म हैं और तन, मन और इन्द्रियाँ और कुल माया के पदार्थों से न्यारे हैं, ऐसा निश्चय करने से वक़्त मौत के जब इस देह और दुनिया से छुटकारा होगा, तब विदेह मुक्ति हासिल हो जावेगी और इस मुक्ति के हासिल

करने के वास्ते, और कोई जतन ज़रूर नहीं है और न चलना और चढ़ना दरकार है, क्योंकि ब्रह्म सब जगह मौजूद और भरपूर है।।

७ - लेकिन यह ख़याल इन लोगों का किसी क़दर ग़लत है, क्योंकि हरचन्द ब्रह्म सब जगह मौजूद है, पर माया के आवरण यानी ग़िलाफ़ों से ढका हुआ है और जब तक योग अभ्यास करके यह परदे नहीं फोड़े जायँगे, तब तक उसका दर्शन यानी उससे मिलना मुमकिन नहीं है। इस वास्ते यह लोग जब तक कि अपनी ज़िंदगी में ग़िलाफ़ों यानी देहियों के बंधन काट कर या ढीले करके ब्रह्म का दर्शन नहीं करेंगे, तब तक मरने के वक़्त ब्रह्म पद में पहुँच कर बासा नहीं पा सकते हैं यानी ब्रह्म से मिल नहीं सकते और अपने कर्म अनुसार और ज़बर स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़ फिर देह के बंधन में आवेंगे यानी उनको मुक्ति हासिल नहीं होगी।।

८ - जो किसी बिरले जीव से इस क़िस्म की धारना कि मैं ब्रह्म हूँ, दुरुस्त भी बन पड़ी और निश्चय उसका बहुत पक्का और मज़बूत हो गया तो वह मनाकाश के चैतन्य से मिल कर कुछ अर्से के वास्ते सुख स्थान पावेगा और फिर देह धारन करेगा और ब-दस्तूर जनम मरन के चक्कर में आवेगा।।

९ - बाज़े जीव किसी औतार स्वरूप या महात्मा या पैग़म्बर और औलिया वग़ैरा की टेक बाँध कर ऐसा निश्चय करते हैं कि जो वे उनके हुक्म के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की बाहरमुख करेंगे या अंतर में थोड़ा बहुत सुमिरन और ध्यान अपने इष्ट का

(चाहे वह बे-ठिकाने है) करेंगे तो वह इष्ट उनका अख़ीर वक़्त पर सहाई होगा और सुख स्थान में बासा देगा या जो वे किसी लोक में फिर जनमेंगे तो अच्छे कुल में पैदा होकर दौलत और उमदा भोग और पदार्थ पावेंगे और बहुत ख़ुशी के साथ गुज़रान करेंगे।।

१० - ऐसा निश्चय और यक़ीन धारन करना बग़ैर अंतरी अभ्यास के बहुत मुशकिल है, पर जो किसी बिरले जीव से यह कार्रवाई बन पड़ी तो यह बात मुमकिन है कि जो उससे शुभ कर्म बन पड़ेंगे और वह पूरे यक़ीन के साथ किसी औतार स्वरूप या महात्मा या पैग़म्बर का भरोसा करेगा तो उसको मरने के बाद कोई सुख स्थान में (संतों के तीसरे दरजे की हद्द में) कुछ अर्से के वास्ते बासा मिल जावेगा या इसी लोक में उम्दा जनम धारन करेगा, पर जनम मरन और सुख दुख का चक्कर इस करनी से नहीं मिटेगा और हमेशा का आनंद प्राप्त नहीं होगा।।

११ - इसी तरह जो किसी से प्राण योग या मुद्रा का साधन (जोकि निहायत कठिन और ख़तरनाक अभ्यास है) दुरुस्ती से बन पड़ा तो उसको इसी ज़िन्दगी में कुछ अंतर में रस और आनंद मिल जावेगा और अख़ीर वक़्त पर उसकी सुरत खिंच कर परमात्म पद या ब्रह्म के मुक़ाम तक पहुँचेगी और वहाँ कुछ काल आनंद का भोग करेगी या ब्रह्म में लीन होकर बे-ख़बर रहेगी लेकिन कुछ अर्से के बाद यानी प्रलय या महा प्रलय के समय फिर किसी न किसी लोक में जनम धारन करके देह के बंधन में आवेगी यानी सच्ची मुक्ति हासिल नहीं होवेगी।।

१२ - आम जीव कुल मतों के जो खान पान और भोग बिलास में अटके रहेंगे, वे अपनी करनी का फल भोगेंगे और जैसे शुभ अशुभ कर्म उनसे बनेंगे, उसके मुवाफ़िक़ बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे।।

१३ - अब मालूम करना चाहिये कि सच्चा और पूरा उद्धार जीव का बग़ैर दया संत सतगुरु के हरगिज़ नहीं हो सकता। इस वास्ते कुल जीवों को जो अपना कल्यान चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज लगा कर उस में शामिल होवें और सतसंग करके अपने भरम दूर करावें और भेद और महिमा सच्चे और कुल मालिक की समझ कर उसके चरनों का इष्ट मज़बूत बाँधें और जो जुगत कि संत सतगुरु बतावें, उसके मुवाफ़िक़ विरह और प्रीत के साथ अभ्यास शुरू करें, तब रास्ता उनके उद्धार का जारी होगा।।

१४ - संतों के सतसंग की ऐसी महिमा है कि जो जीव थोड़े शौक़ के साथ भी उनके चरनों में आवें तो वे बचन सुना कर दिन दिन उसके मन में से संसार का भाव और प्यार और भोगों में आशक्ति कम करते जावेंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की महिमा समझा कर उसके चरनों में प्यार और दर्शनों का शौक़ बढ़ाते जावेंगे और सुरत शब्द मार्ग का उपदेश देकर और भेद रास्ते और मंज़िलों का जना कर उसके मन और सुरत को अंतर में आँख के मुक़ाम से जहाँ कि कुल जीवों की बैठक है, ऊँचे यानी निज धाम की तरफ़ सरकाते जावेंगे और थोड़ा बहुत रस और आनन्द अंतर में देकर उसका शौक़ बढ़ाते जावेंगे।।

१५ - इस तरकीब से सच्चे और प्रेमी अभ्यासी की हालत आहिस्ते आहिस्ते बदलती जावेगी यानी मन की मलीनता और विकार किसी क़दर घटते जावेंगे और कुल मालिक के दर्शनों का शौक़ और चरनों में प्यार उसके मन में पैदा होकर बढ़ेगा और सुरत शब्द मार्ग के अभ्यास में प्रीत जागेगी और संसार और उसके भोग और सामान की तरफ़ से चित्त उदासीन होता जावेगा।।

१६ - ज़ाहिर है कि बिना प्रीत और शौक़ के कोई काम दुनिया और परमार्थ का दुरुस्ती के साथ नहीं बन सकता है और बग़ैर प्रेम और मुहब्बत के कोई किसी से नहीं मिल सकता है। इस वास्ते जब सच्चे परमार्थी के मन में मालिक के चरनों का प्रेम आया और शौक़ दर्शन का पैदा हुआ, तब ज़रूर वह एक दिन संत सतगुरु की दया से निज धाम में पहुँच कर राधास्वामी दयाल का दर्शन पावेगा और उसी शख़्स से अभ्यास भी आसानी और दुरुस्ती के साथ बन पड़ेगा यानी रास्ता आहिस्ते आहिस्ते तै होता जावेगा। इसी का नाम सच्ची मुक्ति और पूरा उद्धार है।।

१७ - यह हालत और कैफ़ियत सच्चे परमार्थी की जैसा कि दफ़ा (१५) - में लिखा है, इसी ज़िन्दगी में थोड़ी बहुत पैदा होती हुई नज़र आवेगी और अंतर में मालिक की दया के परचे पाकर उसकी प्रतीत और प्रीत मज़बूत होती जावेगी। तब सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा भाव मालिक का मन में पैदा होगा और फिर नाक़िस कर्म उस शख़्स से बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं बनेंगे और भक्तों और प्रेमियों के मुवाफ़िक़ उसकी रहनी और व्यवहार होता जावेगा और अंतर में उसको पूरा

यक़ीन हो जावेगा कि इसी कार्रवाई से मैं देह और दुनिया से न्यारा होकर और माया के घेर से निकल कर एक दिन धुर घर में जो महा सुख और महा प्रेम का भंडार है, पहुँच कर अपने मालिक का दर्शन और उसके चरनों में विश्राम पाऊँगा।।

१८ - सब मतों में मालिक को अरूप कहा है और इस सबब से उसका ध्यान कुछ नहीं बन सकता, सिर्फ़ आकाशवत अनुमान करके और उसको सर्व व्यापक समझ कर बे ठिकाने ध्यान लगाते हैं। इस सबब से चाहे मन और इंद्रियाँ कुछ सिमट जावें लेकिन चढ़ाई सुरत और मन की नहीं हो सकती और हालत भी जैसी चाहिये, नहीं बदलती और जो किसी क़दर बैराग पैदा हो जावे, उसके क़ायम रहने का एतबार नहीं हो सकता और न अख़ीर वक़्त पर संतों के तीसरे दरजे यानी मलीन माया के देश के ऊपर सुरत का गुज़र या ठहराव मुमकिन है।।

१९ - संत मत में भी मालिक को अरूप कहा है और शब्द स्वरूप से उसका ज़हूरा और प्रकाश वर्णन किया है और इसी स्वरूप से वह सब जगह प्रकट और भरपूर है और जो आदि धार शब्द की कुल मालिक के चरनों से निकली, वही उतार के वक़्त जगह जगह मंडल बाँधती हुई और रचना करती चली आई। उस आदि धुन और धार का भेद मुक़ामवार संतों ने खोल कर समझाया है। उसी धुन को चित्त से सुनना और उसके आसरे सुरत को उस मुक़ाम की तरफ़ जहाँ से कि वह धुन आती है, चढ़ाना, सुरत शब्द का अभ्यास कहलाता है। इस तरकीब से अरूप का ध्यान भी

दुरुस्त बनता है क्योंकि शब्द भी अरूप है और ऊँचे मुक़ामों पर चढ़ कर उस से मेला भी होता जाता है और रफ़्ता रफ़्ता धुर मुक़ाम पर जहाँ से आदि शब्द प्रकट हुआ, पहुँचना मुमकिन है। सिवाय इसके और कोई जुगत माया के घेर से निकल कर पार पद में जाने की नहीं रक्खी गई। इस वास्ते जिस मत में शब्द का मुक़ामवार भेद और उसके वसीले से सुरत की चढ़ाई का अभ्यास जारी नहीं है, वह मत थोथा है और उस में पूरा और सच्चा उद्धार जीव का हरगिज़ मुमकिन नहीं है।।

२० - अब दुबारा खोल कर कहा जाता है कि जिसको अपने जीव का कल्यान मंज़ूर है, उसको चाहिये कि संत सरन में आवे और उनके सतसंग में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मार्ग का लेकर जिस क़दर बन सके, अभ्यास शुरू करे, तब आहिस्ते आहिस्ते उसका कारज बन जावेगा। और किसी तरकीब से माया के जाल से निकलना और धुर पद में पहुँचना मुमकिन नहीं है।।

प्रकार चौंसठवाँ

बहुत से लोग मुक्ति के वास्ते अनेक तरह के कर्म करते हैं और तन मन धन भी ख़र्च करते हैं, फिर भी सच्ची मुक्ति प्राप्त नहीं होती। लेकिन जो कोई संतों के बचन के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत करनी करे तो वह

अपनी मुक्ति होती हुई कोई दिन में अपनी आँख से देख कर निचिन्त हो जावेगा और अन्तर में दिन दिन आनंद और सरूर बढ़ता जावेगा।

१ - दुनिया में अनेक मत जारी हैं और हर एक मत में कोई न कोई जतन वास्ते हासिल करने मुक्ति के वर्णन किया है। पर मुक्ति का भेद नहीं लिखा और न वह जतन करके जीते जी मुक्ति होती हुई नज़र आती है।।

२ - इस सबब से मुवाफ़िक़ संतों के बचन के, वह साधन जैसा चाहिये, दुरुस्त नहीं है और अक्सर ख़ुद मतलबी और रोज़गारी लोगों ने जीवों को धोखा दिया।।

३ - जो कोई सच्चा उद्धार चाहता है, उसको मुनासिब है कि पहिले इस बात को तहक़ीक़ करे कि मुक्ति पद यानी जिस स्थान में पहुँच कर दुनिया और हर क़िस्म की देह के बंधन छूट जावें और अमर आनन्द प्राप्त होवे, कहाँ है और वहाँ पहुँचने का रास्ता कहाँ और कैसा है और कौन जुगत से उस रास्ते पर चलना मुमकिन है।।

४ - यह भेद किसी मत में खोल कर नहीं लिखा। सिर्फ़ इस क़दर कहते हैं कि स्वर्ग या बैकुँठ या बहिश्त या परमेश्वर के लोक में पहुँचने से मुक्ति हासिल होती है। पर भेद उस धाम का कि कहाँ है और किस रास्ते और किस तरकीब से चलना होगा, बिलकुल बयान नहीं किया है।।

५ - योग शास्त्र में अलबत्ता सात मुक़ाम यानी छः चक्र और उनके ऊपर सहसदल कँवल सातवाँ लिखा है, मगर तरकीब चलने की प्राणों को रोकने और चढ़ाने के साथ लिखी है। लेकिन यह अभ्यास निहायत कठिन और ख़तरनाक है और ग्रहस्थियों से क़तई नहीं बन सकता, बल्कि विरक्तों से भी बनना उसका निहायत मुशकिल है। इस सबब से यह रास्ता मुक्ति का सहसदल कँवल तक बिल्कुल बंद समझना चाहिये।।

६ - सिवाय इसके जो मुद्रा वग़ैरा का साधन वर्णन किया है, उसमें भी चलने और चढ़ने की तरकीब साफ़ नहीं लिखी है। लेकिन जोकि वह साधन अक्सर ऊँचे चक्रों में किया जाता है, इस वास्ते अभ्यासी को कुछ रस और आनंद अभ्यास के समय प्राप्त होता है और मरने के बाद भी संतों के तीसरे दरजे की अभ्यास की हद्द में सुख स्थान मिलता है। पर सच्ची मुक्ति हासिल नहीं होती।।

७ - जिन मतों में सिर्फ़ बाहरमुखी साधन जारी हैं, वह मुक्ति के रास्ते से बहुत दूर पड़े हैं और मुक्ति पद या किसी ऊँचे स्थान का भेद भी नहीं जानते और न चलने की जुगत से वाक़िफ़ हैं। इस वास्ते इन मत वालों का आवागवन दूर नहीं होता और अपने कर्म और बासना के मुवाफ़िक़ सुख दुख का भोग करते हैं।।

८ - संत फ़रमाते हैं कि सच्चा मुक्ति पद वह है कि जहाँ माया का नाम व निशान भी नहीं है और वहाँ हमेशा आनंद ही आनंद रहता है और जहाँ कष्ट और क्लेश और जन्म और मरन का ज़िक्र भी नहीं है। यह स्थान ऊँचे से ऊँचा है और निर्मल चैतन्य देश और

कुल मालिक का धाम और महा आनंद और महा प्रेम का भंडार यही है। वहाँ पहुँच कर जीव का सच्चा और पूरा उद्धार और सच्ची मुक्ति मुमकिन है।।

९ - यह धाम पिंड और ब्रह्मांड के पार है और उसका रास्ता घट में नैन नगर में होकर जारी है और उसके तै करने की जुगत सिर्फ़ संतों के पास है। और किसी मत के आचार्य को इस स्थान का हाल और रास्ते का भेद मालूम नहीं हुआ।।

१० - जो कि शब्द कुल मालिक का ज़हूरा है और इसी की धार उतर कर जगह जगह मंडल बाँध कर रचना करती चली आई है और पिंड में आँख के मुक़ाम पर ठहरी है सो उसी धार के वसीले से सुरत का उलटना यानी घर की तरफ़ चलना और चढ़ना मुमकिन है। और कोई रास्ता या धार जिसका धुर पद से सिलसिला लगा हुआ है, रची नहीं गई और जो दूसरी धारें हैं, वे सब माया के देश से निकसी हैं और माया की हद्द में ही ख़त्म हो जाती है। जो कोई इन धारों पर जैसे प्राण और दृष्टि की धार पर सवार होकर चलेगा वह माया की हद्द में रह कर सबेर अबेर जनम मरन के चक्कर में आवेगा।।

११ - कुल मालिक शब्द और प्रेम और आनंद स्वरूप है और जीव जो कि उसकी अंस है, वह भी शब्द और प्रेम स्वरूप है और जो कि सुरत की धार का सिलसिला दसवें द्वार और वहाँ से सत्तलोक और राधास्वामी पद से लगा हुआ है, इस वास्ते जो कोई प्रेम अंग लेकर और शब्द की धार को पकड़ कर अपने घट में संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ उनकी सरन लेकर

चलेगा वह एक दिन ज़रूर धुर पद यानी निर्मल चैतन्य देश में जो शब्द और प्रेम और आनन्द का भंडार है, बासा पावेगा।।

१२ - जो कोई शब्द का अभ्यास बिना भेद रास्ते और मंज़िलों के इधर उधर से उपदेश लेकर या पोथियाँ पढ़ कर करेगा, उसका रास्ता हरगिज़ नहीं चलेगा। अलबत्ता शब्द की धुन सुन कर उसका मन एकाग्र हो जावेगा और कुछ रस भी आवेगा लेकिन ब-सबब न होने भेद काल और दयाल के वह शख़्स माया के घेर में अटका रहेगा और सच्चा मुक्ति पद नहीं पावेगा।।

१३ - इस वास्ते जो कोई शब्द का अभ्यास करे, उसको चाहिये कि संतों के सतसंग में शामिल होकर और उनसे उपदेश लेकर अपने अंतर में जुगत कमाना शुरू करे, तब उसकी प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में बढ़ेगी और अपनी मुक्ति होती हुई नज़र आवेगी यानी देह और दुनिया के बंधन ढीले और कम होते जावेंगे और भोगों में आशक्ति कम और दर्शनों का शौक़ ज़्यादा होता जावेगा।।

१४ - बहुत से मतों का सिद्धान्त किसी मंज़िल पर संतों के तीसरे दरजे में और जोगेश्वरों का अंत पद ब्रह्मांड यानी संतों के दूसरे दरजे में ख़तम हुआ है और पहिले दरजे यानी निर्मल चैतन्य देश में जो माया की हद्द के पार है, सिवाय संतों के कोई नहीं पहुँचा। इस सबब से सच्चा उद्धार किसी का नहीं हुआ क्योंकि माया के घेर में स्थूल या सूक्ष्म देह का बंधन और दुख

सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर बराबर जारी है।।

१५ - जो कोई सुरत शब्द मार्ग का अभ्यास करेगा, उसके मन और सुरत आहिस्ते आहिस्ते ऊँचे की तरफ़ को चढ़ेंगे और जिस क़दर पिंड देश से न्यारे होते जावेंगे, उसी क़दर उस अभ्यासी को दुनिया का दुख सुख कम व्यापेगा और तन मन और इन्द्रिय और भोगों में आशक्ति कम होती जावेगी। यही निशान मुक्ति के प्राप्त होते जाने का है। इसी तरह अभ्यास करने से एक दिन सुरत तन मन से न्यारी होकर संत सतगुरु के प्रताप से सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के देश में दाख़िल होगी और काल और माया के जाल को काट कर दयाल देश में अपने सच्चे माता पिता के चरनों में आनंद व बिलास करेगी।।

प्रकार पैंसठवाँ

दुनिया में लोग अनेक प्रकार के बाजे बजाते हैं और उनके साथ गाते हैं और हर एक की आवाज़ सुहावनी और प्यारी लगती है और जब कई बाजे सुर मिला कर इकट्ठे बजाते हैं और गाना होता है, उस वक़्त गहरा आनंद मालूम होता है। अब जो कोई अन्तर के बाजे और राग सुने, उसके आनन्द की सिफ़त क्या वर्णन की जावे। मन और सुरत

दोनों लीन होकर ऊँचे की तरफ़ चढ़ेंगे और एक दिन महा आनन्द के भंडार में पहुँच जावेंगे।

१ - दुनिया में लोग अनेक तरह के बाजे बजा कर मगन होते हैं और हर एक बाजे से आवाज़ सुरीली और रसीली अपने अपने दरजे के मुवाफ़िक़ निकलती है और सुनने वालों को रस देती है।।

२ - और जब कि कितने ही बाजे उनके सुर मिला कर एक दम बजाये जाते हैं तो कुल बाजों की आवाज़ मिल कर निहायत रसीली और मीठी मालूम होती है और दिल उसके सुनने को बे-इख़्तियार चाहता है।।

३ - सिर्फ़ मनुष्य नहीं बल्कि जानवर भी सुरीली और रसीली आवाज़ के आशिक़ मालूम होते हैं यानी जब उनके सामने कोई बाजा या कितने ही बाजे मिला कर बजाये जावें तो उन पर एक तरह की मस्ती छा जाती है और हिस्स व हरकत बंद हो जाती है।।

४ - इससे ज़ाहिर है कि मन और सुरत को क़ुदरती इश्क़ और शौक़, साथ आवाज़ के, है। जब यह सुरीली और रसीली सुनाई देती है, तब दोनों मन और सुरत उसके सुनने में लग जाते हैं और अंतर में किसी क़दर मस्त हो जाते हैं यानी चिन्ता और फ़िक्र और दूसरे ख़याल उस वक़्त दिल से दूर हो जाते हैं।।

५ - और जब कि बाजों के साथ एक दो या ज़्यादा मर्द या औरत अपनी आवाज़ को मिला कर कोई प्रेम या चितावनी या भेद के शब्द या गीत गाते हैं तो उस

वक़्त ज़्यादा समा बँध जाता है और सुनने वालों को बहुत आनंद मालूम होता है और हर कोई दूर से बाजे की आवाज़ सुन कर उस जलसे में पहुँच कर शामिल होते हैं और रस लेते हैं यानी सुरीली और रसीली आवाज़ में शक्ति है जोकि जीवों को अपनी तरफ़ खैंचती है और मर्द और औरत और लड़के बाले बल्कि छोटे बच्चे और जानवरों पर भी असर गाने बजाने का बराबर पहुँचता है।।

६ - सबब इस खिंचाव और आशक्ति का यह है कि सुरत यानी रूह आप ही धुन स्वरूप है और शब्द से ही इस का निकास हुआ है और शब्द यानी चैतन्य की धार के साथ ही यह हमेशा रहती है। इस सबब से जब और जहाँ सुरीली आवाज़ सुनाई देती है, वहाँ सुरत फ़ौरन लग जाती है और चाहे जैसा ज़रूरी काम हो, उस को मुल्तवी करके थोड़ी देर उस आवाज़ का रस लेकर ख़ुशी हासिल करती है।।

७ - यह सब बाजे जो कि दुनिया में जारी हैं, अंतरमुख अभ्यासियों ने, मिस्ल जोगी और जोगेश्वर, अपने घट में आकाशबानी यानी आसमानी आवाज़ें सुन कर बनाये हैं। फिर असल आवाज़ में जोकि ऐन रूहानी है यानी रूह की धार से निकलती है, किस क़दर रसीलापन और शीरीनी होगी और किस क़दर वह मन और सुरत में मस्ती और महवियत यानी लीनता पैदा करेगी।।

८ - संतों ने जो कुल मालिक के ख़ास पुत्र या मुसाहब हैं और कुल रचना के भेद से वाक़िफ़ हैं, शब्द की महिमा बहुत गाई है और वह शब्द रूह की आवाज़

है जोकि घट घट में ऊँचे देश यानी मस्तक में हो रही है और इस महिमा से मतलब यह है कि जीव जोकि मन और इन्द्रियों के साथ अपने निज देश और निज स्वरूप को भूल कर इस संसार के भोग और पदार्थों में लिपट कर माया में फँस गया है, उसको बजाय बाहर की आवाज़ों के उसके घट में सुरीली और रसीली धुनें सुना कर निज घर की तरफ़ जहाँ से वह आवाज़ें उठ रही हैं, चलावें और इस तरफ़ से उसके चित्त को आहिस्ते आहिस्ते हटा कर सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में जो प्रेम और आनन्द का भंडार है, प्रीत और लगन पैदा कराके ऊँचे और धुर स्थान में बासा देवें ताकि काल और माया के कष्ट और क्लेश और जनम और मरन के चक्कर से बच कर परम आनन्द को प्राप्त होवे।।

९ - जगत के जीव शब्द की महिमा से बिलकुल बे-ख़बर हैं और हरचंद सब मतों के आचार्यों ने जो कि अब दुनिया में जारी हैं, अपनी बानी में शब्द की बुज़ुर्गी बयान की है, मगर भेद उसका नहीं खोला और न जुगत उसको सुन कर घट में चढ़ने की वर्णन की है। इस सबब से यह महिमा गुप्त रही और किसी को इस क़दर जुरअत न हुई कि अपने घट में शब्द को सुने और न कोई भेदी मिला कि भेद रास्ते का और जुगत शब्द को सुन कर घट में चढ़ने और चलने की बतावे।।

१० - इस सबब से कुल जीव चाहे जिस मत में हैं, किसी न किसी क़िस्म की बाहरी पूजा पाठ या परमार्थी कार्रवाई में जिसको शुभ कर्म कहना चाहिये, लग गये और सच्चा तरीक़ा हासिल करने सच्ची और पूरी मुक्ति

का शब्द के अभ्यास के वसीले से किसी को मालूम नहीं हुआ।।

११ - लेकिन बाहरमुखी कार्रवाई में भी शब्द संग रहता है यानी हर एक मत में परमार्थी बानी को राग रागनी में बाजों के संग गाते हैं और जीवों को सुना कर उनके मन को परमार्थ की तरफ़ खींच कर लगाते हैं।।

१२ - जो कि शब्द आनंद और रस का भंडार है, इस वास्ते संसारी कामों में भी गाना बजाना जलसों और महफ़िलों और, ज्योनारों में, और भी राज दरबार और फ़ौज में, जारी रक्खा है कि जिससे मन और सुरत को सिर्फ़ आनंद ही नहीं बल्कि ताक़त करने कामों की और लड़ाई में लड़ने की, हासिल होती है।।

१३ - इसी तरह घट में आवाज़ सुन कर मन और सुरत को ताक़त चढ़ने की ऊँचे देश की तरफ़ हासिल होती है लेकिन बग़ैर भेद रास्ते और मंज़िलों के शब्द के और मदद पूरे गुरू के, यह कार्रवाई शब्द के अभ्यास की दुरुस्ती से नहीं बन सकती।।

१४ - जो कि सुरत कुल मालिक राधास्वामी के धाम से नीचे के देशों में उतर कर देह और माया के पदार्थों में रच गई है और मलीन माया के ख़ोल इस पर चढ़ गये हैं सो जब तक कि इस देश को छोड़ कर ऊपर की तरफ़ जहाँ निर्मल चैतन्य देश है, न चढ़ेगी, तब तक विकार दूर न होंगे और सफ़ाई प्राप्त नहीं होगी और अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक के धाम में पहुँचने और विश्राम पाने के क़ाबिल नहीं होवेगी और जो नीचे यानी माया के देश में पड़ी रही तो बारम्बार

देह धारन करके दुख सुख भोगेगी और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा।।

१५ - इस वास्ते लाज़िम पड़ा कि हर एक जीव, चाहे स्त्री होवे या पुरुष, थोड़ा बहुत जतन इसी ज़िंदगी में वास्ते चलने अपने घर की तरफ़ के करे और यह जतन सुरत शब्द का अभ्यास है कि जिसके सिवाय और कोई तरकीब घट में चलने और चढ़ने की नहीं रची गई है।।

१६ - अब सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि पूरे गुरू को (जो ज़रूर शब्द भेदी होंगे) तलाश करके उनसे भेद रास्ते का और तरकीब चढ़ाने मन और सुरत की शब्द के वसीले से दरियाफ़्त करें और जो वे न मिलें तो जो कोई उनका प्रेमी और दर्दी सेवक मिल जावे तो उससे उपदेश लेवें और एकान्त बैठ कर रोज़मर्रे अभ्यास प्रीत और प्रतीत के साथ करें तो दिन दिन आहिस्ते आहिस्ते चढ़ाई मन और सुरत की होती जावेगी और रस और आनंद भी मिलता जावेगा और जो शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा तो एक दिन संत सतगुरु भी इसको दर्शन देकर अपनी मेहर और दया से निहाल करेंगे यानी रफ़्ते रफ़्ते धुर घर में पहुँचा कर उसका कारज बनावेंगे।।

१७ - इसी कार्रवाई का नाम सच्चा परमार्थ है। और बाक़ी जो कुछ अंतर या बाहर कार्रवाई कर रहे हैं, उससे सच्चे परमार्थ का फ़ायदा हासिल न होगा यानी सच्चा उद्धार और सच्ची मुक्ति प्राप्त न होगी।।

* * * * *